



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 144]

नई दिल्ली, सोमवार, अप्रैल 23, 2018/वैशाख 3, 1940

No. 144]

NEW DELHI, MONDAY, APRIL 23, 2018/VAISAKHA 3, 1940

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 अप्रैल, 2018

(अंतिम जांच परिणाम)

विषय: चीन जनवादी गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "डिजिटल ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेट्स" के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा।

सं. 15/24/2016-डीजीएडी.—1. समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (जिसे यहां आगे अधिनियम भी कहा गया है) तथा समय-समय पर यथासंशोधित उसकी सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, मूल्यांकन तथा संग्रहण और क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (जिसे आगे यहां नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के संबंधित आयातों की मूल जांच प्राधिकारी द्वारा दिनांक 13.06.2011 की अधिसूचना संख्या 14/7/2011-डीजीएडी द्वारा शुरू की गई थी और अंतिम जांच परिणाम प्राधिकारी द्वारा दिनांक 03.10.2012 की अधिसूचना संख्या 14/7/2011-डीजीएडी द्वारा अधिसूचित किए गए थे। तदनुसार, संदर्भ कीमत के आधार पर शुल्क लगाते हुए दिनांक 03.12.2012 की अधिसूचना संख्या 51/2012-सीमा शुल्क (एडीडी) जारी की गई थी।

- और जबकि मैसर्स टेकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स (प्रा.) लिमिटेड (जिसे यहां आगे "याचिकाकर्ता" अथवा "आवेदक" अथवा "घरेलू उद्योग" भी कहा गया है) ने चीन जन. गण. (जिसे यहां आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित डिजिटल ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेट्स (जिसे यहां आगे संबद्ध सामान भी कहा गया है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा शुरू करने के लिए अधिनियम तथा नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे यहां आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) के समक्ष वर्तमान मामले में आवेदन पत्र जारी किया और संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क जारी रखने के लिए अनुरोध किया।
- और जबकि प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा जांच की शुरुआत का औचित्य बताने के लिए आवेदक द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर यह जांच करने के लिए दिनांक 25 अप्रैल, 2017 की अधिसूचना संख्या 15/24/2016-डीजीएडी द्वारा एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया कि क्या संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयातों पर उपर्युक्त

शुल्क की समाप्ति से घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना है। संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की वैधता को केंद्र सरकार द्वारा दिनांक 02 जून, 2017 की अधिसूचना संख्या 24/2017-सीमा शुल्क (एडीडी) द्वारा 03 जून, 2018 तक बढ़ा दिया गया था।

4. वर्तमान समीक्षा के क्षेत्र में संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयातों से संबंधित मूल जांच के सभी पहलू शामिल हैं।

क. प्रक्रिया

5. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त जांच की शुरुआत को अधिसूचित करने वाली सार्वजनिक सूचना जारी करने के बाद इस जांच के संबंध में नीचे निर्धारित प्रक्रिया अपनाई गई है:
 - i. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसार, जांच की कार्यवाही की शुरुआत करने से पहले पाटनरोधी आवेदन पत्र प्राप्त होने के संबंध में भारत में स्थित संबद्ध देश के दूतावास/प्रतिनिधियों को अधिसूचित किया।
 - ii. प्राधिकारी ने जांच की शुरुआत की एक प्रति भारत में संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, भारत में ज्ञात आयातकों/ प्रयोक्ताओं और आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार अन्य भारतीय उत्पादकों और घरेलू उद्योग को भेजी तथा उनसे अनुरोध किया कि वे जांच की शुरुआत के 40 दिन के भीतर लिखित में अपने ज्ञात विचार दें।
 - iii. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार, ज्ञात उत्पादकों/ निर्यातकों और भारत में संबद्ध देश के दूतावास को आवेदन पत्र के अगोपनीय रुपांतर की एक प्रति उपलब्ध कराई।
 - iv. भारत में स्थित संबद्ध देश के दूतावास से यह अनुरोध किया गया कि वे संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली के उत्तर दें। उत्पादकों/ निर्यातकों को भेजे गए पत्र एवं प्रश्नावली की प्रति संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादकों/ निर्यातकों के नामों एवं पतों सहित दूतावास को भी भेजी गई।
 - v. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, संगत सूचना मंगाने के लिए निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को निर्यातक प्रश्नावली तथा पूरक प्रश्नावली भेजी:
 - क. कोडक (चाइना) ग्राफिक कम्युनिकेशन, चीन जन. गण.
 - ख. फुजीफिल्म प्रिंटिंग प्लेट (चाइना) कं. लि., चीन जन. गण.
 - ग. जिंग्राफिक्स, चीन जन. गण.
 - घ. लकी ग्रुप, चीन जन. गण. की द सेकंड फिल्म फैक्ट्री
 - vi. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने उत्तर दिया और प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए:
 - क. मैसर्स फुजीफिल्म (चाइना) इन्वेस्टमेंट कं. लि.
 - ख. मैसर्स फुजी फिल्म्स प्रिंटिंग प्लेट्स (चाइना) कं. लि.
 - ग. कोडक (चाइना) इन्वेस्टमेंट कं. लि.
 - घ. कोडक (चाइना) ग्राफिक कम्युनिकेशन कं. लि.
 - ड. लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि.
 - vii. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध सामानों के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावली भेजी:
 - क. कोडक इंडिया प्राइवेट लि., मुंबई
 - ख. फुजीफिल्म इंडिया प्राइवेट लि., नई दिल्ली
 - ग. न्यूजटेक (इंडिया) प्रा. लि., मुंबई
 - घ. कपूर इमेजिंग प्राइवेट लि., चेन्नई
 - ड. हिंदेलबर्ग इंडिया प्रा. लि., चेन्नई
 - च. बेन्नेट, कोलमेन एंड कं. लि., मुंबई
 - छ. जागरण प्रकाशन लि., कानपुर
 - viii. संबद्ध सामानों के निम्नलिखित आयातकों ने प्रश्नावली के उत्तर दायर करते हुए उत्तर दिए:
 - क. फुजी फिल्म इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
 - ख. कोडक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
 - ग. कपूर इमेजिंग प्राइवेट लिमिटेड
 - ix. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुले में रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रुपांतर उपलब्ध कराया।
 - x. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था कि वे पिछले तीन वर्षों और जांच की अवधि के लिए संबद्ध सामानों के आयातों के लेन-देन वार व्यौरे दें जो प्राधिकारी को प्राप्त हो गए थे। प्राधिकारी ने लेन-

देनों की उचित जांच के बाद आयातों की मात्रा के परिकलन और अपेक्षित विश्लेषण के लिए डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों पर विश्वास किया है। प्राधिकारी ने जहां भी अपेक्षित हुआ डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों से मिलान करने के लिए डी जी प्रणालियों से आंकड़े भी प्राप्त किए।

- xi. सामान्यतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध सामानों की उत्पादन लागत और उसे निर्मित करने तथा उसकी बिक्री करने की लागत पर आधारित क्षति रहित कीमत (एनआईपी) इस तरह से निकाली गई है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- xii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को संगत सूचना मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए अवसर प्रदान करने हेतु 27 फरवरी, 2018 को एक मौखिक सुनवाई की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने भाग लिया। जिन पक्षकारों ने मौखिक सुनवाई में अपने विचार प्रकट किए, उनसे अनुरोध किया गया कि वे मौखिक रूप से व्यक्त अपने विचार लिखित रूप में दायर करें। पक्षकारों को यह भी सलाह दी गई थी कि वे विरोधी पक्षकारों द्वारा किए गए लिखित अनुरोधों को प्राप्त करें और उनसे उसके बाद प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।
- xiii. घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना का सत्यापन आवश्यक समझी जाने वाली सीमा तक किया गया था। केवल आवश्यक संशोधन के साथ उस सत्यापित सूचना, जहां तक लागू है, पर विश्वास किया गया है।
- xiv. वर्तमान समीक्षा जांच के लिए जांच की अवधि (पीओआई) अप्रैल, 2016 – मार्च, 2017 (12 माह) है। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में संभावित विश्लेषण के लिए 2013-14, 2014-15, 2015-16, जांच की अवधि और जांच की अवधि के बाद की अवधि (6 माह) शामिल है।
- xv. इस जांच की अवधि के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध, जहां भी संगत पाए गए, प्राधिकारी द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम में हल कर लिए गए हैं।
- xvi. गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच उनके गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने, जहां भी आवश्यक हुआ, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया गया है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय भाग उपलब्ध करावें।
- xvii. जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने न तो प्राधिकारी को उत्तर दिया है और न ही वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना अन्यथा उपलब्ध नहीं कराई है या जांच में काफी बाधा डाली है, उन्हें प्राधिकारी द्वारा असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर विचार/टिप्पणियां रिकार्ड की गई हैं।
- xviii. प्राधिकारी ने नियम 16 के अंतर्गत 09 अप्रैल, 2018 को एक प्रकटन विवरण जारी किया तथा 06 अप्रैल, 2018 तक प्रकटन विवरण पर टिप्पणियां देने का अवसर प्रदान किया।
- xix. इस अंतिम जांच परिणाम में *** किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इस प्रकार से विचार किये जाने का द्योतक है। इस अंतिम जांच परिणाम में () नकारात्मक संख्या/शृंखला दर्शाता है।
- xx. जांच की अवधि के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनायी गई विनिमय दर 1 अमेरिकी डॉलर = 67.96 रुपये है।

ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

ख.1 घरेलू उद्योग के विचार

6. घरेलू उद्योग के विचार निम्नलिखित हैं:

- i. विचाराधीन उत्पाद को मूल जांच में प्राधिकारी द्वारा अपने दिनांक 03 अप्रैल, 2012 के अंतिम जांच परिणाम में निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया गया था। संबद्ध सामानों के विवरण अथवा उसके प्रयोग में पिछले पांच वर्षों के दौरान कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की आवश्यकता की समीक्षा के लिए जांच होने का नाते विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र मूल जांच में निहित क्षेत्र की तरह रखा जाना चाहिए। विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र निर्णायक समीक्षा में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।
- ii. चीन जन. गण. से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। वर्तमान मामले में आयातित और घरेलू उत्पाद, दोनों में भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, प्रकार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विशिष्टियों, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा प्रशुल्क वर्गीकरण आदि जैसे मानदंडों के संदर्भ में तुलनीय विशेषताएं हैं।
- iii. डिजिटल प्लेटे सीमा प्रशुल्क की प्रशुल्क मद "8442.50.20" के तहत वर्गीकृत हैं। तथापि, संबद्ध सामानों का आयात अन्य प्रशुल्क मद, यथा - 3701.30.00, 3704.00.90, 3705.10.00, 7606.91.91, 7606.92.90, 8442.50.10, 8442.50.39,

8442.50.90, 3701.99.90, 3705.90.90, 3701.91.90, 7606.92.90, 7610.90.20, 7606.12.00, 7606.11.90 और 7616.99.90 के तहत किया गया है।

- iv. विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में परिवर्तन के लिए किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई नया साक्ष्य नहीं लाया गया है। आयातक द्वारा कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है जिसने सार्वजनिक सुनवाई के दौरान तर्क दिया कि कतिपय ग्रेडों की डिजिटल प्लेटें याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित नहीं की जातीं।
- v. याचिकाकर्ता डिजिटल प्लेटों की सभी किस्मों और ग्रेडों का विनिर्माण करता है, जैसा कि प्राधिकारी द्वारा स्थल सत्यापन के दौरान भी सत्यापित किया गया है।

ख.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

7. निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- i. कपूर इमेजिंग प्रा. लि., लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि. और शंघाई स्ट्रांग स्टेट प्रिंटिंग इन्क्रीपमेंट लि. की ओर से मैसर्स टीपीएम कंसल्टेंट्स ने अनुरोध किया है कि तीन प्रकार के विचाराधीन उत्पाद हैं और शुल्क भी विचाराधीन उत्पाद की इन तीनों किस्मों के लिए अलग-अलग निर्धारण आधार पर लगाए गए हैं। तथापि, याचिकाकर्ताओं ने तीन किस्मों के लिए अलग-अलग कोई आंकड़े नहीं दिए हैं।
- ii. मैसर्स निप्पो कलर ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:

पूर्व में हमने यह उल्लेख किया था कि भिन्न-भिन्न प्रकार की डिजिटल प्लेटें हैं जिनमें से कुछ का विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है और इसीलिए ऐसी प्लेटों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना अनुचित है। यह भी अनुरोध किया जाता है कि यहां तक कि यदि पाटनरोधी शुल्क की अधिसूचना बढ़ाई जा रही है तो जिन उत्पादों का विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा निश्चित रूप से नहीं किया जाता है जैसे हर प्रकार की मोटाई और आकार में प्रोसेसलेस थर्मल/ सीटीसीपी/वायलट प्लेटें, 0.24 मि.मी. की मोटाई में पीएस/ सीटीसीपी/ थर्मल और वायलट प्लेटें, हर प्रकार की मोटाई और आकारों में दोहरी परत वाली सीटीसीपी प्लेटें तथा हर प्रकार की मोटाई और आकारों में निगेटिव वर्किंग सीटीसीपी/ पीएस/ थर्मल प्लेटें, उन्हें पाटनरोधी शुल्क से विशेष रूप से छूट दी जानी चाहिए क्योंकि क्षेत्रीय सीमा शुल्क अधिकारी बिना किसी भिन्नता के सीटीसीपी/ थर्मल/ वायलट प्लेटों की पूरी खेप को रोक देते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि पाटनरोधी शुल्क अधिसूचना तीन किस्मों की डिजिटल प्लेटों के लिए विशिष्ट है। घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन पत्र में डिजिटल प्लेटों की विभिन्न किस्मों की मोटाई वार विनिर्माण तथा बिक्री के संबंध में आंकड़ों का विभाजन नहीं किया है। चूंकि, बाजार विभिन्न प्रकार की प्लेटों पर आधारित है तथा मोटाई और ऐसी डिजिटल प्लेटों की बिक्री के लिए मोटाई एक संगत कारक है। अतः आवेदन पत्र पूर्ण एवं समुचित आंकड़े प्रकट न करने के कारण दोषपूर्ण हैं तथा इसीलिए आवेदन पत्र स्वयं में दोषपूर्ण हैं और पाटनरोधी के विस्तार के लिए कार्यवाही आदितः निरर्थक होने के नाते छोड़ दी जानी चाहिए।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

8. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद डिजिटल ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेट्स (जिन्हें यहां आगे "डिजिटल प्लेटें" भी कहा गया है) है। डिजिटल प्लेटों का प्रयोग इमेज के रूप में प्रिंटिंग उद्योग में आंकड़ों का अंतरण पेपर पर अथवा नॉन ऑब्जर्वेंट सबस्ट्रेट्स यथा – टिन शीटों अथवा पॉलीफिल्लों आदि पर करने के लिए किया जाता है। डिजिटल प्लेटों का प्रयोग करने वाली प्रिंटिंग प्रक्रिया में डिजिटल वर्क फ्लो से समान वर्क फ्लो से भिन्न लेजरों का प्रयोग करते हुए इमेज का "कम्प्यूटर से प्लेट में" सीधा अंतरण होता है जिसके लिए इमेज को अंतरित करने के लिए मध्यवर्ती फिल्म की आवश्यकता होती है। डिजिटल प्लेटें रासायनिक कोटिंग से कोट की गई अत्यधिक शुद्धता वाली लिथो ग्रेड एल्युमीनियम कॉइलों से बनी होती हैं। डिजिटल प्लेटें या तो पॉजीटिव (खुला न रखा गया क्षेत्र इमेज बनाता है) अथवा निगेटिव (खुला हुआ क्षेत्र इमेज बनाता है) वर्किंग प्लेटें हो सकती हैं। कोटिंग संघटक विभिन्न प्रकार की प्लेटों के लिए अलग-अलग "सेसिटाइलर" के रूप में भी जाने जाते हैं।
9. सभी आयातों में सभी प्रकार की डिजिटल प्लेटें विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र के अंतर्गत शामिल हैं।
10. इस प्रकार, प्राधिकारी मानते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध सामान पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, संबद्ध देश से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद की समान वस्तु है।

ग. घरेलू उद्योग का क्षेत्र एवं आधार

ग.1 घरेलू उद्योग के विचार

11. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. यह याचिका मैसर्स टेकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स (प्रा.) लि. (जिसे यहां आगे "टेकनोवा" कहा गया है) द्वारा दायर की गई है। टेकनोवा का भारत में संबंधित उत्पाद के उत्पादन में पर्याप्त हिस्सा (लगभग 98 प्रतिशत) है।
- ii. देश में संबद्ध सामानों के कुछ अन्य लघु उत्पादक हैं। इसके अतिरिक्त, कई अन्य कंपनियां हैं जो संबद्ध सामानों के लिए संयंत्र स्थापित करने की प्रक्रिया में हैं जो निश्चित रूप से भारत में घरेलू उत्पादन क्षमता बढ़ाएगा।
- iii. इसके अतिरिक्त, भारत में संबद्ध सामानों के दो घरेलू उत्पादकों: मैसर्स मेट्रोस्टार प्रिंट्स सॉल्यूशंस प्रा. लि., मुंबई और मैसर्स ऑरियन फोटोसेंसिटिव सिस्टम्स, सतारा ने संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क जारी रखने के समर्थन में अपने संबंधित पत्र दायर किए हैं।
- iv. मूल जांच की तुलना में घरेलू उद्योग के संघटन में कोई परिवर्तन नहीं है।

ग.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

12. निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- i. मैसर्स मेट्रोस्टार प्रिंट्स सॉल्यूशंस प्रा. लि. ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

कंपनी ने 30 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया है जिसमें से संवर्धकों ने व्यावसायिक, कुशल और अर्धकुशल श्रेणी में 80 से अधिक परिवारों को रोजगार सुनिश्चित करते हुए महाराष्ट्र में अत्याधुनिक संयंत्र में अपनी 22 करोड़ रुपये से अधिक की निधियां लगाई हैं। यूनिट की आरंभिक संस्थापित क्षमता 4.0 मिलियन एम2 है और कारखाना 100 से अधिक विभिन्न विक्रेताओं को उनकी दैनिक आवश्यकताओं के लिए समर्थन देगा। हमने जून, 2017 तक संयंत्र को खड़ा करने और उसे चालू करने का कार्य पूरा किया तथा वाणिज्यिक उत्पादन अगस्त तक चलने लगा। अतः हमने केवल रोजगार सृजन ही सुनिश्चित नहीं किया है अपितु विक्रेताओं और ग्राहकों की एक पारि-प्रणाली सृजित की है जिससे महाराष्ट्र और भारत की जीडीपी का विस्तार होगा।

याचिकाकर्ता अर्थात् टेकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स प्रा. लि. (टेकनोवा) ने जांच की अवधि के दौरान क्षति के संबंध में तथा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति तथा पाटन की संभावना के संबंध में भी विस्तृत अनुरोध किए हैं। एमपीएसपीएल टेकनोवा द्वारा किए गए अनुरोधों का सशक्त रूप से समर्थन करता है।

- ii. कपूर इमेजिंग प्रा. लि., लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि. और शंघाई स्ट्रांग स्टेट प्रिंटिंग इन्क्रीपमेंट लि. की ओर से मैसर्स टीपीएम कंसल्टेंट्स ने अनुरोध किया है कि याचिकाकर्ता के अलावा केवल दो अन्य घरेलू उत्पादकों अर्थात् ऑरियन फोटोसिस्टम्स और ट्रांसटेक इमेजिंग मेट्रो स्टार प्रिंट सॉल्यूशंस प्रा. लि. द्वारा याचिका में दावा किया गया है। मेट्रो स्टार प्रिंट सॉल्यूशंस प्रा. लि. इस स्तर पर याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए नाम वाला नया उत्पादक है। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक रिकार्ड्स दर्शाते हैं कि उपर्युक्त कंपनी 24 मार्च, 2011 को अस्तित्व में आई तथा इस प्रकार वह नया उत्पादक नहीं है। याचिकाकर्ता ने प्राधिकारी के समक्ष तथ्यों को गलत प्रस्तुत किया है।
- iii. मैसर्स ऑरियन फोटोसेंसिटिव सिस्टम्स ने अनुरोध किया कि वे 2013 से डिजिटल ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेटों के विनिर्माता थे और उन्होंने लगभग 2500 लाख रुपये की पूंजी का निवेश किया था तथा 20 कामगारों को प्रत्यक्ष रोजगार तथा 30 लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार दिया है। उन्होंने मुख्य रूप से विचाराधीन उत्पाद की दो श्रेणियों अर्थात् यूवी (सीटीसीपी) और थर्मल प्रिंटिंग प्लेटों का उत्पादन करते हैं।

हमने पहले ही अगले पांच वर्षों के लिए पाटनरोधी शुल्क बढ़ाए जाने की मांग करने के लिए इस जांच में घरेलू उद्योग मैसर्स टेकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स प्रा. लि. को अपना पूरा समर्थन दिया है।

- iv. मैसर्स निष्पों कलर ने अनुरोध किया कि सुनवाई के दौरान कुछ लोगों, जो अपने को समाचार पत्र उद्योग के प्रतिनिधि मान रहे थे, ने पाटनरोधी शुल्क जारी रखने का अनुरोध किया था। हमारा अनुरोध है कि प्रिंटिंग उद्योग केवल समाचार पत्र उद्योग तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसमें पूरा प्रिंटिंग उद्योग शामिल है जो इस प्रकार की प्लेटों में लगा हुआ है तथा उनके हितों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

13. यह याचिका टेकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स प्रा. लि. द्वारा दायर की गई है जिसका भारत में संबंधित उत्पाद के उत्पादन में पर्याप्त हिस्सा (लगभग 98 प्रतिशत) है। याचिकाकर्ता ने न तो संबद्ध देश से संबद्ध सामानों का आयात किया है और न ही वह संबद्ध सामानों के किसी आयातक अथवा निर्यातक से संबंधित है।

14. याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादन में समान उत्पाद के भारतीय उत्पादन का "प्रमुख अनुपात" है। इस प्रकार, यह निर्धारित किया जाता है कि आवेदन पत्र घरेलू उद्योग द्वारा और उसकी ओर से दिया गया है तथा आवेदन पत्र पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के तहत

"आधार" की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रकार, याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार "घरेलू उद्योग" है।

15. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अपने प्रौद्योगिकी सहयोगकर्ता से जांच की अवधि के दौरान यूरोपीय संघ से 8 लाख वर्ग मीटर की प्रक्रियाहीन एवं रसायनहीन डिजिटल प्लेटों (वायलट एवं थर्मल, दोनों) का भी आयात किया है जो जांच की अवधि में उनके कुल उत्पादन का लगभग *** प्रतिशत है। ये संबद्ध देशों से आयातों सहित यूरोपीय संघ से अन्य उत्पादकों की कीमतों, अन्य गैर संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों की कीमतों के साथ तुलनीय कीमतों पर हैं। यह उत्पाद इस नए उत्पाद की किस्म के परीक्षण, विपणन के लिए आयातित किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोपीय संघ से इन ग्रेडों की आयात कीमतें *** अमेरिकी डॉलर/ वर्ग मीटर की सीआईएफ कीमतों और *** अमेरिकी डॉलर/ वर्ग मीटर की सीआईएफ कीमतों पर हैं जो उन कीमतों से अधिक हैं जिन पर चीन से सहयोगी उत्पादक/ निर्यातक ने भारत में समान वस्तुओं का निर्यात किया है। उपर्युक्त कीमत स्तरों पर गैर संबद्ध देशों इन आयातों के आधार पर प्राधिकारी मानते हैं कि इससे घरेलू उद्योग का आधार प्रभावित नहीं होगा। घरेलू उद्योग और किसी अथवा किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने संबद्ध देश से पाटनरोधी शुल्क के उपाय जारी रखने के दौरान कोई मध्यावधिक समीक्षा दायर नहीं की है और न ही गैर संबद्ध देशों में होने वाले संबद्ध देशों के पाटन के दावे के लिए कोई याचिका दायर की है। अन्य उपर्युक्त स्रोतों से तुलनीय कीमतों पर यूरोपीय संघ से घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध सामानों के आयात का न तो पाटन के रूप में दावा किया गया है, न क्षति के रूप में। प्राधिकारी यह मानते हैं कि इन आयातों की मात्रा और कीमत उन्हें क्षति का कारण नहीं रहा है और न ही इसका प्रतिकूल प्रभाव याचिकाकर्ता के स्थान पर पड़ा है।

घ. विविध मुद्दे

घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

16. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित विविध अनुरोध किए गए हैं:
- याचिकाकर्ता और ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ मास्टर प्रिंटर्स (प्रयोक्ताओं के एसोसिएशन) के बीच निष्पादित समझौता ज्ञापन विशिष्ट रूप से याचिकाकर्ता से प्लेटें खरीदने के लिए घरेलू उद्योग को बाध्य नहीं करता। प्रयोक्ता उद्योग किसी भी आपूर्तिकर्ता से प्लेटें खरीदने के लिए स्वतंत्र है।
 - समझौता ज्ञापन में डिजिटल प्लेटों के लिए उचित एवं पारदर्शी कीमत सिद्धांत का प्रावधान है जिसका उद्देश्य याचिकाकर्ता और प्रयोक्ता उद्योग, दोनों के हितों की सुरक्षा करना है।
 - यह आरोप कि एल्यूमीनियम की कीमतों में कमी के कारण क्षति हुई है, का कोई औचित्य नहीं बनता है। यद्यपि, यह सच है कि एलएमई कीमतों में क्षति की अवधि के एक भाग में गिरावट आई है, तथापि, उसके बाद कीमतें सही चली हैं, जैसा कि निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है। जैसे ही एलएमई की कीमतें नीचे की ओर गईं, याचिकाकर्ता ने विचाराधीन उत्पाद की अपनी कीमतें कम कर दीं; तथापि, याचिकाकर्ता को उन कीमतों से काफी कम कीमतें पेश करनी पड़ी जो समझौता ज्ञापन के आधार पर वसूल की जा सकती थीं, जैसा कि चीनी उत्पादक यूवी सीटीपी प्लेटों को पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत घोषित कर काफी कम कीमतों पर विचाराधीन उत्पाद को पार करके आए हैं।

घ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

17. इस संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित विविध अनुरोध किए गए हैं:
- मैसर्स फुजीफिल्म प्रिंटिंग प्लेट (चीन) कं. लि. (एफएफपीएस), फुजीफिल्म (चीन) इन्वेस्टमेंट कं. लि. (एफएफसीएन) और मैसर्स फुजीफिल्म इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एफएफआईपीएल) का प्रतिनिधित्व करने वाले मैसर्स एपीजे-एसएलजी विधि कार्यालयों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
 - बहुत ही अधिक संदर्भ कीमत के निर्धारण के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग तथा एक विशिष्ट निर्यातक अर्थात् कोडक के लिए शरण स्थल बाजार सृजित हुआ है। साथ ही, अनुपयुक्त रूप से अधिक कीमत के निर्धारण से अन्य सभी आपूर्तिकर्ताओं के निर्यात रुक गए हैं। पाटनरोधी शुल्क का एक मात्र उद्देश्य क्षतिकारक पाटन के प्रतिकूल प्रभाव को समाप्त करना है न कि कुछ निर्यातकों तथा घरेलू उद्योग के लिए शरणस्थली बाजार सृजित करना है। यह भी समझा जाता है कि कोडक एवं घरेलू उद्योग की विक्री कीमतें कहीं भी अन्य सभी आपूर्तिकर्ताओं के लिए निर्धारित संदर्भ कीमतों के निकट नहीं हैं।
 - निर्णायक समीक्षा के लिए अपने आवेदन में घरेलू उद्योग वर्तमान मामले में प्राधिकारी द्वारा की गई मध्यावधिक समीक्षा जांच के संबंध में उल्लेख करना बहुत ही सुविधाजनक ढंग से "भूल" गए। उपर्युक्त मध्यावधिक समीक्षा के अंतिम जांच परिणामों के अनुसार, उपर्युक्त समीक्षा उपर्युक्त मध्यावधिक समीक्षा के आवेदकों तथा घरेलू उद्योग के बीच समझौता ज्ञापन के बहाने रद्द की गई थी। समझौता ज्ञापन के आधार के बहाने उपर्युक्त मध्यावधिक समीक्षा की वह समाप्ति स्वयं ही अनुचित थी क्योंकि ऐसे निरस्तीकरण से यह माना जाता है कि ऐसे समझौता ज्ञापन से परिस्थितियों में परिवर्तन का मूल स्थिति में सहारा लिया जाएगा। यह एक स्थापित कानूनी स्थिति है कि पाटन एवं क्षति के लिए परिस्थितियों में परिवर्तन के अनुरोध पर मध्यावधिक समीक्षा जांच शुरू की जाती है। उत्तरदाता पक्षकारों की समझ से यह बाहर है कि घरेलू उद्योग और प्रयोक्ताओं के बीच समझौता ज्ञापन से परिस्थिति कैसे परिवर्तित हो गई। तथापि, उपर्युक्त समझौता ज्ञापन की आड़ में घरेलू उद्योग तथा कुछ प्रयोक्ता उद्योग एसोसिएशन मध्यावधिक समीक्षा जांच को समाप्त करने के लिए प्राधिकारी को भ्रमित करने में सक्षम रहे जिससे कि उसी समय वर्तमान मामले में शुल्क समाप्त हो जाते। यह बात बिना कहे ही बनती है कि जब प्रयोक्ताओं के क्षेत्र तथा

घरेलू उद्योग के बीच इस प्रकार की समझ से पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन बेकार हो जाता है, जिससे कि एक उचित प्रतिस्पर्द्धी बाजार बनता, यह भी समग्र उद्योग के व्यापक हित में कभी नहीं हो सकता।

- समझौता ज्ञापन की मौजूदगी से यह भी सिद्ध हुआ कि घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए आयातों के कारण कोई कीमत क्षति पूर्णतः आधारहीन है। यही वह समझौता ज्ञापन है जो घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें बढ़ाने से रोकता है तथा परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग उस कीमत पर संबद्ध सामान बेच रहा है जो प्राधिकारी द्वारा निर्धारित संदर्भ कीमत से काफी कम है।
- घरेलू उद्योग द्वारा अपने लिखित अनुरोधों में उल्लिखित व्यवस्थाओं की इसकी योजना अपने आप में सिद्ध करती है कि समझौता ज्ञापन कुछ नहीं है, बल्कि निर्यातकों और अन्य प्रयोक्ताओं को बाजार से बाहर रखने के लिए प्रयोक्ता उद्योग के एक भाग तथा घरेलू उद्योग के बीच एक अनुचित व्यापार व्यवस्था है। यह उपर्युक्त पैराग्राफ में घरेलू उद्योग द्वारा दी गई समझौता ज्ञापन की समय-सीमा द्वारा भी दर्शाई गई है। घरेलू उद्योग द्वारा स्वयं ही स्वीकार किए गए अनुसार पीएस एनालॉग प्लेटों से संबंधित समझौता ज्ञापन घरेलू उद्योग तथा प्रयोक्ता उद्योग द्वारा 17.12.2007 को (डीजीएडी द्वारा दिनांक 23.08.2007 की अधिसूचना संख्या 14/6/2006-डीजीएडी द्वारा पीएस एनालॉग प्लेटों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के 3 माह बाद) किया गया था। उन्होंने पक्षकारों ने 14.01.2014 को (डीजीएडी द्वारा दिनांक 03.10.2012 की अधिसूचना संख्या 14/7/2011-डीजीएडी द्वारा संबद्ध सामानों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लगभग 14 माह बाद) संबद्ध सामानों से संबंधित एक समझौता ज्ञापन किया।
- यह तथ्य कि घरेलू उद्योग ने प्रयोक्ता उद्योग के एक भाग के साथ उनके द्वारा विनिर्मित प्रत्येक उत्पाद अर्थात् डिजिटल प्लेटों (संबद्ध सामानों) और एनालॉग प्लेटों (जो उसी संयंत्र एवं मशीनरी के माध्यम से विनिर्मित किए जाते हैं) पर शुल्क लगाए जाने के बाद कीमत से संबंधित एक समझौता ज्ञापन किया, यह दर्शाता है कि यह प्रयोक्ता उद्योग के एक भाग और घरेलू उद्योग के बीच अनुचित जुड़ाव अन्य निर्यातकों एवं प्रयोक्ताओं को व्यापार से बाहर रखने के लिए है। इसके अतिरिक्त, उसी समझौता ज्ञापन के बहाने मध्यावधिक समीक्षा का निरस्तीकरण भी याचिकाकर्ता तथा प्रयोक्ता उद्योग के एक भाग द्वारा अपनाए गए अनुचित व्यापार सिद्धांतों को दर्शाता है जो कि उनके अपने संदर्भ में दोनों के लिए "विन-विन" स्थिति है। वस्तु स्थिति यह है कि घरेलू उद्योग ने आयातित सामानों से कीमत न्यूनीकरण एवं ह्रास का दावा करते हुए पीएस एनालॉग प्लेटों तथा डिजिटल ऑफसेट प्लेटों पर बड़ी चतुराई से पाटनरोधी शुल्क लगवाया, जबकि इसके साथ-साथ उन्होंने उनके साथ कीमत से संबंधित समझौता ज्ञापन करके प्रयोक्ता उद्योगों को मना लिया जिससे उपर्युक्त समझौता ज्ञापन के अनुसार उनकी अपनी कीमतों का न्यूनीकरण एवं ह्रास प्रभावी रूप से हुआ।
- घरेलू उद्योग ने अपने लिखित अनुरोधों में स्वयं ही स्वीकार किया है कि "उत्पादन लागत एवं पर्याप्त मार्जिन से संबद्ध सिद्धांत पर क्रेता एवं विक्रेता के बीच कीमतें विशिष्ट रूप से स्थापित हैं"। दूसरे शब्दों में, यह कहना पूर्णतः सारहीन है कि आयातों से किसी भी तरीके से संबद्ध सामानों की कीमतें प्रभावित हो रही हैं अथवा यहां तक कि घरेलू बाजार में संबद्ध सामानों की कीमतों को प्रभावित करने वाले आयातों का कोई खतरा है। अतः जैसा कि घरेलू उद्योग ने खुद ही स्वीकार किया है, आयातित सामानों के कारण घरेलू उद्योग को कोई कीमत क्षति की संभावना नहीं है।
- याचिकाकर्ता ने यह विश्वास करने में खुद ही गलती की है कि किसी समझौता ज्ञापन के कारण पाटनरोधी शुल्क उनकी उम्मीदों की रक्षा करते हैं। पाटनरोधी के तहत सुरक्षा पाटन के नकारात्मक प्रभावों से घरेलू उद्योग की सुरक्षा करने तक सीमित है, घरेलू उद्योग का दावा सिद्ध करता है कि वे बार-बार पाटनरोधी शुल्कों का अनुचित लाभ लेने में लगे हुए हैं जो व्यवस्था को भंग करने के अलावा कुछ नहीं है।

ii. मैसर्स कोडक चाइना ग्राफिक कम्युनिकेशन कं. लि. ("केसीजीसीसीएल"), मैसर्स कोडक चाइना इन्वेस्टमेंट कं. लि. ("केसीआईसीएल") और मैसर्स कोडक इंडिया प्रा. लि. ("केआईपीएल") की ओर से मैसर्स दुआ एसोसिएट्स ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- टेकनोवा ने आरंभ में निर्णायक समीक्षा जांच शुरू करने के लिए अक्तूबर, 2015 से सितंबर, 2016 को जांच की अवधि प्रस्तावित करते हुए आवेदन पत्र जारी किया था। तथापि, प्राधिकारी ने दिनांक 25 अप्रैल, 2017 को जांच की शुरुआत की अधिसूचना जारी करते समय जांच की अवधि बढ़ा दी थी और उसे 01 अप्रैल, 2016 से 31 मार्च, 2017 तक निर्धारित कर दिया था। अतः यह सिद्ध है कि बढ़ाई गई जांच की अवधि के लिए पर्याप्त आंकड़े वर्तमान जांच की शुरुआत से पूर्व टेकनोवा द्वारा प्राधिकारी को उपलब्ध नहीं कराए गए थे और इसीलिए रिकार्ड में वर्तमान जांच की शुरुआत के लिए अपेक्षित क्षति एवं पाटन के दावे की प्रथम दृष्टया जांच के लिए रिकार्ड में अपर्याप्त आंकड़े थे। उपर्युक्त के मद्देनजर, वर्तमान जांच की शुरुआत पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) के विपरीत है।
- बढ़ाई गई जांच की अवधि के लिए संशोधित आवेदन टेकनोवा द्वारा बहुत ही देर से दायर किया गया था और वह हितबद्ध पक्षकारों को जांच की शुरुआत की तारीख से 63 दिन बाद उपलब्ध कराया गया था।
- टेकनोवा तथा प्रयोक्ता उद्योग अर्थात् ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ मास्टर प्रिंटर्स ("एआईएफएमपी") द्वारा दायर अनुरोधों को सामूहिक रूप से पढ़ने पर यह बात सामने आती है कि घरेलू विनिर्माता और प्रयोक्ताओं ने घरेलू बिक्री कीमत निकालने के लिए समझौता ज्ञापन किया। समझौता ज्ञापन की शर्तों में विशेष रूप से यह प्रावधान है कि कीमतें उत्पादन लागत एवं पर्याप्त मार्जिन से संबद्ध सिद्धांत पर विक्रेता/क्रेता के बीच विशेष रूप से स्थापित हैं। अतः यह एक स्वीकृत स्थिति है कि घरेलू बिक्री कीमतें आयात कीमत से प्रभावित नहीं हुईं क्योंकि वे एल्युमीनियम की तिमाही कीमतों के आधार पर थीं।

- निवेश जुटाने की क्षमता: आवेदक ने लिखित अनुरोधों के पैरा 15 में यह पुष्ट किया है कि उसका अपनी क्षमता 10 मिलियन वर्ग मीटर तक बढ़ाने का विचार है। उपर्युक्त अनुरोध के आलोक में यह स्वतः सिद्ध है कि पूंजी निवेश बढ़ाने की उसकी योग्यता और घरेलू उद्योग के निष्पादन पर आयातों का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं है।
 - मूल जांच में कोडक ने वायलट अथवा सीटीसीपी प्लेटों का निर्यात नहीं किया था और इसीलिए प्राधिकारी ने कोडक द्वारा निर्यात न की गई उप श्रेणी/ग्रेडों के लिए पाटनरोधी शुल्क/निर्णायक कीमत निर्धारित नहीं की। यह नोट करना भी आवश्यक है कि प्राधिकारी के उपर्युक्त निर्धारण को विशेष रूप से टेक्नोवा द्वारा सेसटेट के समक्ष चुनौती दी गई थी, तथापि, विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के विस्तृत अनुरोधों के बाद माननीय सेसटेट ने ऐसे ग्रेडों के लिए निर्णायक कीमत की सिफारिश न करने के प्राधिकारी के निर्णय सहित अंतिम जांच परिणामों को माना। उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी से अनुरोध है कि वर्तमान जांच में जांच की अवधि के दौरान कोडक द्वारा निर्यातित न किए गए ग्रेडों के लिए पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश न की जाए।
- iii. कपूर इमेजिंग प्रा. लि., लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि. और शंघाई स्ट्रांग स्टेट प्रिंटिंग इक्विपमेंट लि. की ओर से मैसर्स टीपीएम कंसल्टेंट्स ने निम्नलिखित अनुरोध किये हैं:
- याचिकाकर्ता ने अन्य क्षेत्रों जैसे ब्राजील और साउथ कोरिया द्वारा चीन पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क का संदर्भ दिया है। यह नोट करना व्यावहारिक है कि इन देशों द्वारा लगाया गया पाटनरोधी शुल्क पीएस प्लेटों पर है न कि संबद्ध सामानों पर।
 - एक बार याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि समझौता जापान पर हस्ताक्षर कर दिए गए हैं और कीमतें उस समझौता जापान के आधार पर हैं तो याचिकाकर्ता यह दावा नहीं कर सकता कि समझौता जापान निरर्थक हो गया है।
 - पीएस प्लेट पर भी पाटनरोधी शुल्क लग रहा है और शुल्क का स्वरूप निर्धारित मात्रा में है। इस प्रकार, यहां तक कि यदि सामानों को पीएस प्लेट के रूप में घोषित किया जाए तो उस पर पाटनरोधी शुल्क देय होगा। किसी भी दशा में यह शुल्क को टालने का मुद्दा बन जाता है और इस प्रकार सीमा शुल्क धोखाधड़ी का मुद्दा है। सही उपाय पाटनरोधी शुल्क जारी न रखना है।
 - चीन के निर्यात आंकड़ों को गोपनीय माने जाने के दावे का कोई आधार नहीं है। इसके अतिरिक्त, कुछ देशों को चुनिंदा निर्यात चीन में निर्यातकों के व्यवहार तथा विशेष रूप से पाटनरोधी शुल्क रोक दिए जाने की स्थिति में भारत के प्रति उन निर्यातकों के व्यवहार को नहीं दर्शाते।
 - चीन में उत्पादकों की क्षमता संबंधी सूचना को गोपनीय होने का दावा नहीं किया जा सकता। ऐसी महत्वपूर्ण सूचना को प्रकट किए बिना जांच में प्रभावी रूप से भाग लेने के लिए हितबद्ध पक्षकारों के अधिकार को बाधित करना है।
- iv. मैसर्स निप्पो कलर ने अनुरोध किया है कि आंकड़े गोपनीय दर्शाए गए हैं तथा इसीलिए उसके सही होने को चुनौती देना संभव नहीं है। आशा है कि डीजीएडी तुलन-पत्र के आंकड़ों के संबंध में उसके सही होने की जांच करने के लिए योग्य सनदी लेखाकारों की सहायता से उसकी जांच कराएंगे। तथापि, यह उल्लेख करना है कि विनिर्माण एवं बिक्री से संबंधित तालिका 4 से यह देखा जाता है कि वाईओवाई आधार पर विनिर्मित लगभग पूरी मात्रा आवेदक द्वारा बेची गई है। अतः तथाकथित पाटन से आवेदक द्वारा सामानों के विनिर्माण पर वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ा है।
- डिजिटल प्लेटों पर पाटनरोधी शुल्क बंद किया जाए। यदि वह बढ़ाया जाता है तो यह उन विशिष्ट सामानों पर ही लगाया जाना चाहिए जिनका विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा किया जाता है तथा पाटनरोधी शुल्क उजागर प्रिंट्स बनाम भारत संघ (1989 एआईआर 516) के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा माने गए अनुसार पूर्व माह के अंत में एलएमई एल्युमीनियम कीमत (मोटाई आधारित) + परिवर्तन प्रभार + उपयुक्त लाभ के सूत्र पर आधारित होना चाहिए।
- v. कोहली ग्राफिक्स सिस्टम्स ("केजीएस") की ओर से मैसर्स केंडटी विधि कार्यालय ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध सामान के कीमत निर्धारण के संबंध में सही सांख्यिकी एवं आंकड़े प्रकट करने में अत्यधिक गोपनीयता और सूचित उत्तर देने के लिए एसएसआर के लिए की गई उसकी जांच के संबंध में डीजीएडी द्वारा तैयार की गई जांच रिपोर्ट न दिए जाने से गंभीर पूर्वाग्रह तथा गलत न्याय हो सकता है।
 - प्राधिकारी को चाहिए कि वे पक्षकारों और केजीएस को उपर्युक्त दस्तावेज दें तथा अन्य पक्षकारों को उन दस्तावेजों का उत्तर देने के लिए एवं गलत किए गए अनुरोधों (यदि कोई हैं) का खंडन करने के लिए अवसर दिया जाना चाहिए।
 - संबद्ध सामानों के विक्रेताओं और उसके क्रेताओं के बीच समझौता जापान की मौजूदगी में यह स्पष्ट है कि वे एक सशक्त व्यापारिक संबंध में हिस्सेदारी करते हैं जो पाटनरोधी शुल्क के रूप में डीजीएडी द्वारा कोई हस्तक्षेप न किए जाने की स्थिति में जारी रह सकते हैं।
- vi. मैसर्स एचटी मीडिया लिमिटेड ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- हिंदुस्तान टाइम ग्रुप पूरे भारत में 1997 से मुद्रण करता है और भारत में वह डिजिटल प्रिंटिंग ऑफसेट प्लेटों का सबसे बड़ा उपभोक्ता है।
 - ऐतिहासिक रूप से 2008 में टेक्नोवा जैसे स्थानीय विनिर्माता ने भारत में वायलट प्लेटों का विनिर्माण आरंभ किया। इस महत्वपूर्ण परिवर्तन से पूर्व एचटी मीडिया विभिन्न देशों से आयातित प्लेट टेक्नोलॉजी और खपत की वस्तुओं पर पूरी तरह निर्भर था जिससे नकद प्रवाह सहित हमारे प्रचालन और वित्त पर दबाव बढ़ गया था।
 - स्थानीय विनिर्माताओं द्वारा डिजिटल वायलट प्लेट प्रौद्योगिकी शुरू करने पर इन प्लेटों की लागत लगभग 30 प्रतिशत तक कम हो गई है जिसमें 30 दिनों के आयात के लिए पूर्व के 120 से मालसूची की समय-सीमा कम होने का भी अतिरिक्त लाभ मिला है।
 - एक प्रमुख न्यूज पेपर पब्लिशिंग हाउस के रूप में हम आपसे न्यूज पेपर प्रिंटिंग के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण आवश्यकता पर विचार करने का अनुरोध करते हैं जो व्यावहारिक रूप से आयातों का प्रतिस्थापन करने के लिए असंभव हैं:-

- (क) सप्ताह में 24 घंटे x 7 दिन पूर्ण तकनीकी सहायता।
- (ख) सीमा शुल्क घरेलू बाजार आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रौद्योगिकी उन्नयन तथा उत्पादों का उपभोक्ताकरण करने की सतत आवश्यकता।
- (ग) आपूर्ति श्रृंखला: हमारे स्थानीय विनिर्माता < 4 सप्ताह (~ 30 दिन) की मालसूची सहायता तथा हमारे प्रिंटिंग के स्थानों के आसपास मालसूची के स्तरों का तैयार रूप में उपलब्ध स्टॉक प्रदान करते हैं। कम मालसूची के लीड टाइम के लिए यह सहायता आयात विकल्पों तथा वे भी स्थानीय लागत पर संभव नहीं है।
- (घ) उचित कीमत तंत्र: टेकनोवा जैसे स्थानीय विनिर्माताओं ने फॉरेक्स तथा एलएमई संदर्भ जैसे प्रत्यक्ष लागत इनपुट मानदंडों से संबद्ध बहुत ही परिपक्व, उचित एवं पारदर्शी कीमत तंत्र कार्यान्वित किया है। पुनः ऐसे उचित और पारदर्शी कीमत आयातकों से कभी भी उपलब्ध नहीं होगी जिससे यदि घरेलू विनिर्माताओं से आपूर्ति के लिए कोई विकल्प नहीं छोड़ा जाता है तो डिजिटल प्लेटों के आयातक एवं निर्यातकों द्वारा हमें हमेशा जोखिम में रखा जाएगा।
- (ङ) मूल्यवर्धित सेवाएं: यह स्पष्ट तथ्य है कि टेकनोवा जैसे भारतीय विनिर्माताओं की स्थानीय रूप से मौजूदगी, जानकारी और अनुभव, सुरक्षा, पर्यावरण जांच, प्रौद्योगिकी और अन्य परामर्शी सेवाओं जैसी सेवाओं के संबंध में हमारी सहायता की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं जो कि हमारी आवश्यकताओं के लिए विशिष्ट हैं। यह सहायता डिजिटल प्लेटों के आयातकों से संभव नहीं है।
- टेकनोवा जैसे घरेलू विनिर्माताओं को बने रहने के लिए हमारी आवश्यकता क्यों है, उसका कारण यह है कि निर्यातक समय-समय पर गलत एवं अनुचित परिपाटी अपनाएंगे। हम हाल के उदाहरण का उल्लेख करना चाहेंगे कि आयातों पर अत्यधिक निर्भरता से हाल ही में विगत में हम कैसे प्रभावित हुए हैं:-
- (क) 2017 के प्रारंभ में, नीदरलैंड से प्लेटों के हमारे छोटे आपूर्तिकर्ता फुजी इंडिया ने अनावश्यक रूप से और स्वच्छंद रूप से किसी वैध तर्क के बिना अपनी कीमतें लगभग 30 प्रतिशत तक बढ़ाने का निर्णय लिया। अंततः उन्होंने भारतीय बाजार से उसे वापस लेने के बहाने के रूप में प्रयोग किया। यदि घरेलू विनिर्माताओं की स्थिति शक्ति में उपलब्ध न होने की होती तो हम गंभीर स्थिति में होते।
- (ख) न्यूज प्रिंट (पेपर) एक प्रमुख कच्ची सामग्री है और विदेशी आयातों पर हमारी निर्भरता लगभग 70 प्रतिशत है। न्यूज प्रिंट की आयात कीमतें भावी पूर्वानुमान के बिना पिछली दो तिमाहियों में लगभग 60 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं। हम पूरी तरह विदेशी आपूर्तिकर्ताओं की दया पर हैं।
- यदि डिजिटल प्लेटों के आयातों पर वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो न्यूज पेपर प्रिंटिंग उद्योग पूर्णतः चीन से निर्यातकों की दया पर छूट जाएगा। निर्यातकों के साथ हमारे व्यवहार के अनुभव से हम यह बात रख सकते हैं कि उनका कीमत व्यवहार वृद्धिपूर्ण, अपूर्वानुमानीय, अनुचित और प्रायः इतना अपमानपूर्ण है कि वे स्थानीय विनिर्माताओं से उनके लाभ के लिए आपूर्ति न किए जाने का लाभ लेंगे। अतः चीन से प्लेटों के पाटन से स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं की सुरक्षा करना हमारे हित में है। अल्पकाल में सस्ते आयात आकर्षक लगेंगे, परंतु एचटी मीडिया यहां अल्पकाल के लिए नहीं है और करोड़ों भारतीय लोगों को समय पर संगत सूचना उपलब्ध कराने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आगे भी, चीनी निर्यातक टेकनोवा जैसे घरेलू आपूर्तिकर्ताओं को मारने में सक्षम होते हैं तो वे स्वच्छंद रूप से कीमतें बढ़ाएंगे और हम पूर्णतः उनकी दया पर रह जाएंगे।
 - मैसर्स दैनिक जागरण ने भी वही अनुरोध दर्शाए हैं जो मैसर्स एचटी मीडिया ने दिए हैं।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

18. पक्षकारों द्वारा जांच में उठाए गए सामान्य मुद्दों की जांच की गई और निम्नलिखित रूप में उनका समाधान किया गया:
- गोपनीय आधार पर घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच उनके गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने, जहां भी आवश्यक हुआ, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया गया है। विभिन्न दस्तावेजों के "अगोपनीय रूपांतर" को सार्वजनिक फाइल में रखते समय प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा पाटनरोधी नियमावली के अनुसार गोपनीयता के दावों पर विचार करने पर अपनी सतत परिपाटी अपनाई है।
 - प्राधिकारी घरेलू उद्योग तथा प्रिंटर एसोसिएशन, यथा – ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ मास्टर प्रिंटर के बीच हस्ताक्षरित समझौता जापान के संबंध में घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को नोट करते हैं। उपर्युक्त समझौता जापान जनवरी, 2014 में हस्ताक्षरित किया गया था जबकि एसोसिएशन के दो सदस्यों (आयातकों) द्वारा दायर मध्यावधिक समीक्षा सितंबर, 2014 में शुरू की गई थी। समझौता जापान का आशय उन प्रयोक्ताओं के लिए घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध सामानों की कीमत के निर्धारण को दर्शाता है जो एल्युमीनियम की एलएमई कीमतों से संबद्ध है। प्राधिकारी ने समझौता जापान के द्वारा और अन्य स्रोतों अर्थात् चीन के उत्पादकों/निर्यातकों तथा अन्य संबद्ध उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा भी पेशकश की जाने वाली कीमतों के बीच घरेलू उद्योग द्वारा वास्तविक रूप में प्राप्त की गई कीमत की जांच की है। इस तथ्य के संबंध में मूल्यांकन की कथा समझौता जापान की व्यवस्था में घरेलू उद्योग की चिंताओं को दूर कर दिया है और इसके अलावा पाटनरोधी शुल्क के जारी रहने की आवश्यकता की जांच इस जांच परिणाम के बाद के पैराओं में की गई है।
 - प्राधिकारी नोट करते हैं कि सेसटेट ने प्राधिकारी के मूल जांच परिणाम को माना है और इसीलिए प्राधिकारी ने सहयोगी उत्पादक/निर्यातक के लिए उनके द्वारा निर्यातित उत्पाद की किस्म के संबंध में अलग से तीन उत्पाद किस्मों के लिए पाटन मार्जिन/क्षति मार्जिन का मूल्यांकन करने के संबंध में समान सिद्धांत को अपनाया है।

- iv. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों तथा डीजीएडी द्वारा भी 15 मार्च, 2018 को जारी हाल के व्यापार नोटिस को नोट करते हुए उन्हें सार्वजनिक फाइल के माध्यम से घरेलू उद्योग द्वारा विक्षेपित आयात आंकड़े उपलब्ध कराए और साथ ही घरेलू उद्योग और प्रयोक्ता संघ के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (अगोपनीय रूपांतर) की प्रति भी उपलब्ध कराई।

ड. बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी), सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

ड.1 घरेलू उद्योग के विचार

19. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित अनुरोध किए:

- चीन जन. गण. से तीन उत्पादक कंपनियों/समूहों ने आंशिक रूप से वर्तमान जांच में निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दिया। किसी भी उत्पादक/ निर्यातक कंपनी ने सहयोगी स्तर होने के लिए निर्यातक प्रश्नावली का पूरा उत्तर दायर नहीं किया और इसीलिए प्राधिकारी को उन्हें विगत परिपाटियों के आधार पर अलग पाटन मार्जिन प्रदान नहीं करना चाहिए।
- कोडक ग्रुप को असहयोगी माना जाना चाहिए। यद्यपि, कोडक इंडिया प्रा. लि. ने आयातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं, तथापि, उसने भारत में अलग-अलग ग्राहकों को की गई बिक्री के लिए लेन-देन वार आंकड़े दायर नहीं किए हैं। कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कं. लि. और कोडक इंडिया प्रा. लि. (जो संबंधित पक्षकार हैं) के बीच निर्यात कीमत अविश्वसनीय है।
- फुजीफिल्म ग्रुप के लिए निर्यात कीमत उपलब्ध नहीं है और वह तीसरे देश की बिक्री के आधार पर निर्मित की जानी चाहिए।
- यद्यपि, चीन अभिगम नयाचार का अनुच्छेद 15(क)(ii) 11 दिसंबर, 2016 को समाप्त हो गया, तथापि, प्राधिकारी को निम्नलिखित कारणों से वर्तमान जांच में चीन जन. गण. को एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था (एनएमई) वाला देश मानना चाहिए:
 - जांच की अवधि का प्रमुख भाग (लगभग 9 माह) 11 दिसंबर, 2016 से पूर्व का था।
 - अभिगम नयाचार की धारा 15(क)(ii) की समाप्ति के कानूनी प्रभाव का मुद्दा डब्ल्यूटीओ के विवाद निपटान निकाय के समक्ष न्यायाधीन है।
 - डब्ल्यूटीओ के अंतर्गत, अधिकतर सदस्य देशों ने अभी तक यह नहीं माना है कि धारा 15(क)(ii) की समाप्ति का अर्थ चीन जन. गण. के लिए बाजार अर्थव्यवस्था में स्वतः आ जाना है।
 - प्राधिकारी ने अन्य जांचों के लिए भी समान दृष्टिकोण अपनाया है।

ड.2 हितबद्ध पक्षकारों के विचार

20. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- मैसर्स कोडक चाइना ग्राफिक कम्युनिकेशन कं. लि. ("केसीजीसीसीएल"), मैसर्स कोडक चाइना इन्वेस्टमेंट कं. लि. ("केसीआईसीएल") और मैसर्स कोडक इंडिया प्रा. लि. ("केआईपीएल") की ओर से मैसर्स दुआ एसोसिएट्स ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
 - कोडक चाइना ग्राफिक कम्युनिकेशन कं. लि. (केसीजीसीसीएल) भारत को संबद्ध सामानों का उत्पादक/ निर्यातक है। केसीआईसीएल संबद्ध सामानों का व्यापारी है जो चीन जन. गण. में घरेलू बिक्री में लगा हुआ है और केआईपीएल चीन जन. गण. से भारत को केसीजीसीसीएल द्वारा निर्यातित संबद्ध सामानों का आयातक एवं व्यापारी है। केसीजीसीसीएल और केसीआईसीएल ने निर्यातक प्रश्नावली, बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली और निर्णायक समीक्षा प्रश्नावली पर अपने उत्तर दायर किए हैं। उपर्युक्त के अतिरिक्त, केआईपीएल (संबंधित आयातक) ने आईक्यूआर तथा अतिरिक्त सूचना भी प्रस्तुत की है जो कि प्राधिकारी ने मांगी है। कोडक द्वारा दायर सूचना का डीजीएडी के अधिकारियों द्वारा स्थल सत्यापन के दौरान विधिवत सत्यापन किया गया है।
 - सतत समीक्षा जांच की जांच की अवधि के दौरान संबद्ध सामानों की तीन उप श्रेणियों में से कोडक ने ही थर्मल प्लेटों का निर्यात किया है।
 - आवेदकों ने अप्रैल-जून, 2014 के दौरान एलएमई एल्युमीनियम कीमत 2200-2250 अमेरिकी डॉलर/मी. टन की श्रृंखला में होने का दावा किया है। तथापि, उपर्युक्त समयावधि के लिए एल्युमीनियम की कीमत एलएमई वेबसाइट 1750-1850 अमेरिकी डॉलर/मी. टन की श्रृंखला में दर्शाती है।
 - जांच की अवधि और क्षति की अवधि के दौरान औसत एलएमई एल्युमीनियम कीमत 1800 अमेरिकी डॉलर/मी. टन तक रही है। तथापि, आवेदक ने तदनुसारी समयावधि के दौरान विद्यमान उच्चतम कीमत से अधिक तिमाही औसत कीमत का दावा किया है।
 - जांच की अवधि और क्षति जांच की अवधि के दौरान एलएमई वेबसाइट पर सूचित किए गए अनुसार अधिकतम एल्युमीनियम कीमत 2113 अमेरिकी डॉलर/मी. टन थी (29 अगस्त, 2014 को)। तथापि, आवेदक ने औसत एल्युमीनियम एलएमई कीमतें 2400 अमेरिकी डॉलर/मी. टन (जुलाई-दिसंबर, 2015) तक होने का दावा किया है। अतः यह स्पष्ट है कि आवेदक ने उच्चतर तिमाही औसत एल्युमीनियम कीमतें दर्शाने के लिए झूठे एवं भ्रामक आंकड़े दायर किए हैं।
 - जांच की अवधि के बाद (अर्थात् अप्रैल-जून, 2017) आवेदक ने औसत एलएमई एल्युमीनियम कीमत 2000 अमेरिकी डॉलर/मी. टन होने का दावा किया है। तथापि, वेबसाइट पर सूचित किए गए अनुसार तदनुसारी अवधि के दौरान उच्चतम कीमत 1960 अमेरिकी डॉलर/मी. टन थी (05 अप्रैल, 2017)।
 - उपर्युक्त के मद्देनजर और सामान्य मूल्य एवं एनआईपी का सही-सही निर्धारण सुनिश्चित करने के लिए प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे पाटन एवं क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए मांगी गई एल्युमीनियम कीमतों को प्रकट करें।

- एलएमई बनाम एसएमई: शंघाई मेटल एक्सचेंज ("एसएमई") में सूचित की गई एल्युमीनियम की कीमत एलएमई की कीमतों के अनुरूप है और इसीलिए आवेदक का यह दावा कि चीनी उत्पादक कच्ची सामग्री की कम कीमत के कारण अनुचित रूप से लाभान्वित हो रहे हैं, आधारहीन है और इसे रद्द किया जाना चाहिए। क्षति जांच की अवधि के दौरान एसएमई और एलएमई के संबंध में मासिक औसत कीमत (क्षति अवधि और जांच की अवधि के दौरान) में केवल 1 प्रतिशत का अंतर है। अतः आवेदक का यह दावा कि चीनी उत्पादक कच्ची सामग्री की खरीद अनुचित कीमतों पर कर रहे हैं, रिकार्ड में उपलब्ध आंकड़ों के विपरीत है और इसे रद्द किया जाना चाहिए।
- ii. कपूर इमेजिंग प्रा. लि., लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि. और शंघाई स्ट्रांग स्टेट प्रिंटिंग इन्क्रीपमेंट लि. की ओर से मैसर्स टीपीएम कंसल्टेंट्स ने निम्नलिखित अनुरोध किये हैं:
- याचिकाकर्ता ने काफी प्रबंधना, मात्रा दर्शाने वाला आयात विवरण, संबंधित उत्पाद के आयातों का मूल्य एवं औसत कीमत, उत्पाद किस्म वार सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन अथवा स्पष्टीकरण जैसे विभिन्न मुद्दों पर जोर दिया है कि क्या पाटन मार्जिन भारत औसत के आधार पर ही निर्धारित किया गया था।
 - याचिकाकर्ता द्वारा सूचित की गई कीमत गौण स्रोत से सह संबंधित होने के रूप में संबद्ध सामानों की वास्तविक निर्यात कीमत का प्रतिनिधित्व नहीं करती। आयात घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई अत्यधिक उच्च कीमत पर किए गए हैं। सही निर्यात कीमत अपनाए जाने पर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन नकारात्मक हैं।
 - गौण स्रोत से प्राप्त किए गए आंकड़ों का प्रयोग करते हुए हमारे द्वारा किए गए आयात विश्लेषण और याचिकाकर्ता द्वारा किया गया आयात विश्लेषण आयात कीमत में उस सीमा तक काफी अंतर दर्शाता है जो कि याचिकाकर्ता ने नकारात्मक क्षति मार्जिन होने का दावा किया है, गौण स्रोतों के अनुसार आयात कीमत (जो लकी द्वारा सूचित की गई निर्यात कीमत के अनुरूप है) यह दर्शाती है कि क्षति मार्जिन नकारात्मक हैं। हमारे द्वारा किया गया विश्लेषण यह दर्शाता है कि आयात घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई कीमत से अधिक उच्च कीमत पर किए गए हैं।
 - कच्ची सामग्री की प्रमुख लागत के स्वरूप में मूल जांच में मानी गई जांच की अवधि से वैश्विक आधार पर एल्युमीनियम की कीमत में काफी गिरावट है (दी गई कीमतें एलएमई के अनुसार हैं)। इस प्रकार, कच्ची सामग्री की कीमत में गिरावट से निर्धारित किए गए मानक पूर्व में निर्धारित मार्जिनों से कहीं अधिक हो गए हैं।
 - चीन ने एल्युमीनियम की कीमतों के संबंध में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा लगाए गए धारा 232 के उपाय के प्रभाव का पूर्वानुमान लगाना निराधार है। इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ता ने माना कि जबकि धारा 232 के उपायों से चीन में इनपुट कीमतों में गिरावट आएगी, तो ऐसा भारत में नहीं होता। इस प्रकार की अवधारणा के लिए कोई आधार नहीं है।
 - लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि. ने मूल जांच में एमईटी का दावा किया था। तथापि, प्राधिकारी ने उससे इंकार कर दिया और इस प्रकार याचिकाकर्ता ने अपनी निर्यात कीमत निर्धारित करने के लिए सभी संगत सूचना प्रदान की है।
- iii. मैसर्स निप्पो कलर ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- मैसर्स निप्पो कलर ने चीन से जांच की अवधि के दौरान एल्युमीनियम पीएस प्लेटों तथा गैर संबद्ध देशों अर्थात् वियतनाम, स्पेन और ताइवान से सीटीसीपी प्लेटों के आयातों के संबंध में आयातक प्रश्नावली के उत्तर में ब्यौरे दायर किए हैं। आयातक ने चीन से एक आयात का उल्लेख किया है जो सेसेट ने अपील में है।
 - यूरोप, वियतनाम, ताइवान और कोरिया जैसे अन्य देशों से समान सामानों की अंतर्राष्ट्रीय कीमत डीजीएडी द्वारा निर्धारित कीमत से काफी कम है अर्थात् थर्मल प्लेटों के लिए सीटीसीपी प्लेटों के लिए 4.87 अमेरिकी डॉलर तथा थर्मल प्लेटों के लिए 5.39 अमेरिकी डॉलर की तुलना में सीटीसीपी के लिए लगभग 2.65 अमेरिकी डॉलर तथा थर्मल प्लेटों के लिए 3.00 अमेरिकी डॉलर है। अतः पाटनरोधी शुल्क असंगत है। अतः यह अनुरोध है कि भारत में सामानों का कोई पाटन नहीं है और यह कि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध के अनुसार पाटनरोधी शुल्क जारी रखने का कोई मामला नहीं है।
 - चीन में सामानों की स्थानीय बाजार कीमत के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा कोई सत्यापन योग्य आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। ऐसे मामलों में यह उपयुक्त होगा कि या तो ऐसे व्यापारित सामानों की अंतर्राष्ट्रीय कीमत ली जाए अथवा घरेलू उद्योग की निर्यात कीमत ली जाए क्योंकि वह स्वयं ऐसे सामानों का एक निर्यातक है। घरेलू उद्योग द्वारा और समाचार पत्र उद्योग से दो प्रयोक्ताओं द्वारा सुनवाई के दौरान प्रतिनिधित्व में यह कहा गया था कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद विश्व श्रेणी का है। ऐसी स्थिति में पाटनरोधी शुल्क के निर्धारण के लिए ऐसे सामानों की अंतर्राष्ट्रीय कीमत को अपनाया उपयुक्त होगा।
 - हमने अपने पूर्व के पत्रों द्वारा आयात आंकड़ों और आवेदक की वित्तीय स्थिति के संबंध में आंकड़े मांगे थे जिसके बिना घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत तालिकाओं से अर्थ निकालना कठिन है। डीजीसीआईएस के तथाकथित आंकड़ों की आवेदन पत्र में की गई टाल-मटोल की सत्यता का सत्यापन करने के लिए जांच करवाई जाए। डीजीसीआईएस के आंकड़ों में एनालॉग प्लेटों आदि तथा उपर्युक्त एचएस कोड के तहत आने वाले अन्य सामानों सहित प्रिंटिंग प्लेटों की सभी किस्मों के आंकड़े शामिल हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में पाटन यदि कोई है, का सत्यापन करने के प्रयोजन के लिए उन आंकड़ों पर विचार करना अनुचित होगा।

- कारखानागत कुल निर्यात कीमत उचित प्रतीत नहीं होती। यह दर्शाने के लिए कोई अनुभवजन्य आंकड़ा नहीं है कि पीओआर में किसी पत्तन में *** रुपए में सामान आयातित किए गए हैं। आयातित वास्तविक मद चाहे वह डिजिटल है अथवा एनालॉग है अथवा सीटीसीपी है अथवा वायलट है अथवा थर्मल आदि है, के ऐसे आंकड़ों के बिना ऐसा प्रतीत होता है कि आवेदक ने भारत को बेचे गए सामानों की कीमत छिपाई है।
- यह भी ज्ञात नहीं है कि समुद्री भाड़ा 7.56/वर्ग मीटर पर कैसे परिकलित किया गया है, जबकि आवेदक ने चीन से एक भी सामान आयात नहीं किया है। उसे एफओबी कीमत का 20 प्रतिशत लेने का सीमा शुल्क मूल्यांकन नियम सिद्धांत लेना चाहिए था जब वह अनिश्चित हो। यदि कोई तथाकथित सीआईएफ कीमत से 20 प्रतिशत लेता है तो कारखानागत निर्यात कीमत 154.86 (अमेरिकी डॉलर 2.27) हो जाता है जो कि बेड़गा है। अतः आवेदन पत्र अपनी घोषणा में स्वतः दोषपूर्ण है।
- आवेदक द्वारा दिए गए आंकड़ों का उस कीमत के संबंध में कोई भी आंकड़ा समर्थन नहीं करता जिस पर विभिन्न प्रकार की डिजिटल प्लेटें चीन से आयातित की जा रही हैं। जिस तरीके से कीमत 238 रुपए निकाली गई है, वह भी प्रकट नहीं किया गया है। आवेदक ने कटौती की मात्रा बताने के लिए अपनी घरेलू बिक्री कीमत नहीं दर्शाई है, तथापि, उपर्युक्त तालिका में दर्शाई गई कीमत कटौती मार्जिन निकालने पर ऐसा प्रतीत होता है कि आवेदक ने अपनी घरेलू बिक्री कीमत 214-203/वर्ग मीटर पर दी है। किसी भी दशा में यदि कीमत कटौती केवल लगभग 10 प्रतिशत – 15 प्रतिशत है तो पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि एल्युमीनियम की कीमतों के मानदंड और उतार-चढ़ाव की दक्षताएं स्वतः कीमतों को प्रभावित करेंगी।
- आवेदक का कहना है कि उनके द्वारा विनिर्मित सामानों की गुणवत्ता अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता के मानकों से तुलनीय हैं। यदि चीन द्वारा भारत में पाटन किया जा रहा है तो विनिर्माता 2 मिलियन वर्ग मीटर तक निर्यात कर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्द्धा करने में कैसे सक्षम हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है। आवेदक के निर्यात कीमत आंकड़ों को प्राप्त किया जाना चाहिए ताकि यह सत्यापन किया जा सके कि क्या वह चीनी आयात कीमत के आंकड़ों से तुलनीय हैं। यदि दोनों लगभग मेल खाते हैं तो कोई पाटन नहीं है।
- सुनवाई के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा यह उल्लेख किया गया था और समाचार पत्र उद्योग के कुछ प्रतिनिधियों द्वारा उसका समर्थन किया गया था कि उन्होंने एलएमई एल्युमीनियम कीमत + परिवर्तन प्रभाओं की दर पर कीमत निर्धारित करने के लिए आवेदक के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किए हैं। अतः यह अनुरोध है कि यदि पाटनरोधी शुल्क जारी रखा ही जाता है तो वह उसी फॉर्मूले पर आधारित होना चाहिए।

iv. कोहली ग्राफिक सिस्टम की ओर से मैसर्स केएंडटी विधि कार्यालय ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं।

प्रमुख निर्यातकों/आयातकों के सभी अनुरोधों को ध्यान में रखने के बाद केजीएस निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचा है:

- निर्यातक कंपनी ने कीमत, लागत और इनपुट तथा बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के बाजार संकेतों पर निर्धारित।
- उत्पादन लागत और वित्तीय स्थितियां कम नहीं हुई हैं।
- उत्पादक/ निर्यातक दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अधधीन हैं जो प्रथम सूचना रिपोर्टों के प्रचालन के लिए कानूनी सुनिश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं।
- विनिमय परिवर्तन बाजार दरों पर किए जाते हैं।
- निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना नहीं की गई है।

ऊ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

ऊ.3.1 बाजार अर्थव्यवस्था दावों की जांच

21. 9क(1)(ग) के अधीन, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है :

(i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा

(ii) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-

(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा

(ख) उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्भूत वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उदगम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

22. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन अभिगम नयाचार के अनुच्छेद 15(क)(i) में उत्पादक/निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार के लिए अपना दावा सिद्ध करने की अपेक्षा है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 तथा पैरा 8 में भी ऐसे दावों के लिए अपेक्षाएं निर्धारित हैं।
23. शंघाई फ्यूचर एक्सचेंज (एस एच एफ ई) की कीमतों की लंदन मेटल एक्सचेंज की कीमतों के साथ एक-एक के आधार पर तुलना करने पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि शंघाई मेटल एक्सचेंज की एल्युमीनियम की एस एच एफ ई कीमतें (वैट को अलग करके) एल एम ई की कीमतों (संगत प्रीमियम सहित) से कम हैं और इसीलिए चीन से संबद्ध सामानों की लागत (जहां एल्युमीनियम एक प्रमुख कच्ची सामग्री है) वास्तविक लागत की प्रतिनिधित्व नहीं है। साथ ही व्यापार विस्तार अधिनियम की धारा 232 के तहत अमेरिका द्वारा हाल ही के निर्धारण में चीन में एल्युमीनियम की कीमतों का उल्लेख किया गया है जो बाजार बलों का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं। प्राधिकारी यह मानते हैं कि 'एस एच एफ ई' फ्यूचर कीमतें हैं, मूल्यवर्धित कर को शामिल करते हुए फ्यूचर कीमतें हैं, जिसकी तुलना एल एम ई प्रीमियम कीमतों से एप्पल टू एप्पल आधार पर की गई है। विचार किया गया प्रीमियम संगत भौगोलिक क्षेत्र अर्थात् टोकियो का है। इसके अलावा, जहां तक यू. एस. 232 जांच परिणाम का संदर्भ लिया गया है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि कच्चे एल्युमीनियम के निर्यात पर निर्यात कर के माध्यम से चीन द्वारा राज्य के हस्तक्षेप ने 'एल्युमीनियम' के मूल्यवर्धित निर्यातों के लिए प्रोत्साहन का एक वातावरण तैयार किया है जिसमें वर्तमान जांचाधीन उत्पाद शामिल हैं। 'एल्युमीनियम' एक प्रमुख कच्चा माल है और इस तरह का राज्य का हस्तक्षेप लागतों और कीमतों के संबंध में एल्युमीनियम की मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन करने के लिए प्रतिष्ठान बनाने के निर्णय पर प्रभाव डालता है। अतः प्राधिकारी ने यू. एस. 232 के निर्धारण में निहित तथ्यों के साथ साथ तुलनात्मक एस एच एफ ई कीमतों और एल एन ई कीमतों के आधार पर कोडक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया है। मौके पर सत्यापन के बाद भी जारी किया गया सत्यापन रिपोर्ट कोडक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रमाणित नहीं करता है और यह दर्जा उन्हें नहीं देता है। अतः प्राधिकारी चीन के सभी उत्पादकों/निर्यातकों को कोडक सहित बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार के लिए योग्य नहीं मानते हैं जिसमें बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा किया है। इसीलिए प्राधिकारी ने नियम 6(8) के आधार पर अर्थात् पाटनरोधी नियमावली की सर्वोत्तम सूचना के आधार पर सभी उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य आंकलित किया है। पाटनरोधी नियमावली में यह उल्लेख है, "ऐसे मामले में, जहां कोई हितवद्ध पक्षकार उसकी पहुँच आवश्यक सूचना तक न होने अथवा एक पर्याप्त अवधि के भीतर आवश्यक सूचना उपलब्ध न कराए अथवा जांच में काफी अड़चन डाले, वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी उसके पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम रिकार्ड कर सकता है और केंद्र सरकार को ऐसी सिफारिश कर सकता है जो उन परिस्थितियों में उपयुक्त हो।"

तदनुसार, संबद्ध देशों के लिए सामान्य मूल्य उपयुक्त परिवर्तन लागत, व्याज, एसजीए और उपयुक्त लाभ आदि सहित प्रमुख कच्ची सामग्री एवं यूटिलिटियों, खरीदा गई कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों, कैपिटल रूप से उत्पादित कच्ची सामग्री की कीमतों के लिए इष्टतम खपत मानदंडों पर विचार करते हुए निर्मित किया गया है। 3 उत्पाद किस्मों अर्थात् थर्मल, वायलट और यूवी-सीटीसी प्लेटों के लिए सामान्य मूल्य क्रमशः *** रुपए/वर्ग मीटर, *** रुपए/वर्ग मीटर और *** रुपए/वर्ग मीटर निर्मित किया गया है।

च.3.2 चीन जन. गण. में सहयोगी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

- क. मैसर्स कोडक चाइना ग्राफिक कम्युनिकेशन कं. लि. ('कोडक' समूह के रूप में इसके बाद संदर्भित) ('केसीजीसीसीएल'), मैसर्स कोडक चाइना इन्वेस्टमेंट कं. लि. ('केसीआईसीएल')

24. मैसर्स कोडक चाइना ग्राफिक कम्युनिकेशन कं. लि. ('केसीजीसीसीएल') संबद्ध सामानों का उत्पादक/निर्यातक है। इसकी संबंधित कंपनी मैसर्स कोडक चाइना इन्वेस्टमेंट कं. लि. ('केसीआईसीएल') है जो संबद्ध देश में घरेलू बिक्री में लगी हुई है। केसीजीसीसीएल द्वारा निर्यातित सामान कोडक इंडिया प्रा. लि. ('केआईपीएल') द्वारा आयातित किए जाते हैं जो बाद में असंबंधित अंतिम ग्राहकों को बेचे जाते हैं।

प्राधिकारी ने उत्पादन लागत, घरेलू बिक्री कीमत, भारत और अन्य देशों को निर्यात कीमत तथा भारत में निर्यात कीमत के संबंध में दावा किए गए समायोजनों के विभिन्न पहलुओं के संबंध में मैसर्स केसीजीसीसीएल और मैसर्स केसीआईसीएल, दोनों द्वारा दायर आंकड़ों का स्थल सत्यापन किया है।

उत्पादक/निर्यातक ने चीन में उनकी घरेलू बिक्री के आधार पर "सामान्य मूल्य" का परिकलन करने के लिए बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा किया है।

प्राधिकारी सामान्य मूल्य, कारखानागत निर्यात और पहुँच मूल्य पर विचार करने के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव करते हैं:

(क) सामान्य मूल्य

जांच की अवधि के दौरान, केसीजीसीसीएल ने घरेलू बाजार में पूरी बिक्री केसीआईसीएल के माध्यम से की है जिसमें संबद्ध सामानों को आगे घरेलू बाजार में अंतिम ग्राहकों को बेचा। मैसर्स केसीआईसीएल ने *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर की औसत कीमत पर *** अमेरिकी डॉलर मूल्य पर असंबद्ध ग्राहकों को घरेलू बाजार में *** वर्ग मीटर थर्मल प्लेटों बेची हैं। उत्पादक ने थर्मल प्लेटों की उत्पादन लागत *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर (प्रत्येक उप ग्रेड के लिए) होने का दावा किया है जिसका स्थल पर सत्यापन किया गया था। तथापि, जैसा कि ऊपर कहा गया है, उत्पादक/निर्यातक द्वारा दावा की गई एल्युमीनियम की लागत सही लागत नहीं दर्शाती है और इसीलिए बाजार अर्थव्यवस्था के लिए मैसर्स कोडक का दावा स्वीकार नहीं किया गया है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि 'एस एच एफ ई' कीमतें जो शंघाई फ्यूचर एक्सचेंज की फ्यूचर कीमतें हैं, जिसकी तुलना एल एम ई प्रीमियम कीमतों से एप्पल टू एप्पल आधार पर की गई है। विचार किया गया प्रीमियम संगत भौगोलिक क्षेत्र अर्थात् टोकियो का है। इसके अलावा, जहां तक यू. एस. 232 जांच परिणाम का प्रश्न है प्राधिकारी यह मानते हैं कि कच्चे एल्युमीनियम के निर्यात पर निर्यात कर के माध्यम से राज्य के हस्तक्षेप ने 'एल्युमीनियम' के मूल्यवर्धित निर्यातों के लिए प्रोत्साहन का एक वातावरण तैयार किया है जिसमें वर्तमान जांचाधीन उत्पाद शामिल हैं। 'एल्युमीनियम' एक प्रमुख कच्चा माल हैं और इस तरह का राज्य का हस्तक्षेप लागतों और कीमतों के संबंध में एल्युमीनियम की मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन करने के लिए प्रतिष्ठान बनाने के निर्णय पर प्रभाव डालता है। अतः प्राधिकारी अपनी सतत परिपाटी के अनुसार पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर निर्मित सामान्य मूल्य को अपनाने का प्रस्ताव करते हैं। थर्मल प्लेटों के लिए निर्मित सामान्य मूल्य *** रुपए/वर्ग मीटर माना गया है।

(ख) निर्यात कीमत

मैसर्स केसीजीसीसीएल ने भी कारखानागत स्तर पर *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर मूल्य पर मैसर्स केआईपीएल (संबंधित आयातक) को केवल *** वर्ग मीटर थर्मल डिजिटल प्लेटों का लगभग निर्यात किया है। उपर्युक्त कारखानागत निर्यात कीमत निकालने के लिए भाड़ा, ऋण लागत, बैंक प्रभार आदि सहित सभी कारखाना पश्चात् व्यय क्रमशः *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर, *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर, *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर तक समायोजित किए जाने का प्रस्ताव है।

भारित औसत सीआईएफ के प्रयोजन के लिए केसीजीसीसीएल द्वारा निर्यातों की तुलना आयातक द्वारा दायर उत्तर से की गई है। भारित औसत सीआईएफ *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर के रूप में प्रस्तावित है।

संबंधित आयातक अर्थात् केआईपीएल द्वारा जांच की अवधि के दौरान कुल आयात *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर के सीआईएफ मूल्य पर *** वर्ग मीटर के रूप में सूचित किया गया है। मैसर्स केआईपीएल ने *** रुपए/वर्ग मीटर (*** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर) के मूल्य पर औसत रूप से *** प्रतिशत के साथ विभिन्न असंबद्ध ग्राहकों को उपर्युक्त आयातित संबद्ध सामानों की बिक्री की है। भारत में स्वतंत्र क्रेताओं को मैसर्स केआईपीएल द्वारा सभी लेन-देन लाभप्रद नोट किए गए हैं।

पहुँच मूल्य का परिकलन पहुँच प्रभार जोड़कर तथा उसके बाद मूल सीमा शुल्क *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर के रूप में उप कर जोड़कर किया गया है।

चूंकि 201 वर्ग किलोमीटर की एक छोटी खेप की पहचान ई एक्स ई पी सी आई एफ की वायलट श्रेणी के रूप में पहचान की गई है और इसके लिए एल वी की गणना कोडक द्वारा प्रदान किए गए आंकड़ों के आधार पर और डी जी प्रणाली के साथ उपयुक्त रूप से मिलान किए गए आंकड़ों पर क्रमशः *** अमेरिकी डॉलर/प्रति वर्ग मीटर, *** अमेरिकी डॉलर/प्रति वर्ग मीटर और *** अमेरिकी डॉलर/प्रति वर्ग मीटर के रूप में की गई है।

ख. मैसर्स लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि. ("लकी")

सामान्य मूल्य

उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा नहीं किया है और तदनुसार, प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार, सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के अनुसार निर्मित सामान्य मूल्य अपनाने का प्रस्ताव करते हैं। चूंकि, उत्पादक/निर्यातक ने केवल थर्मल डिजिटल प्लेटों का निर्यात किए जाने का दावा किया है, अतः प्राधिकारी ने थर्मल प्लेटों के लिए निर्मित सामान्य मूल्य का संदर्भ पाटन मार्जिन के मूल्यांकन के लिए जांच की अवधि हेतु *** रुपए/वर्ग मीटर के रूप में दिया है।

निर्यात कीमत

मैसर्स लकी उत्पादक/निर्यातक ने जांच की अवधि के दौरान भारत को *** अमेरिकी डॉलर मूल्य पर *** वर्ग मीटर थर्मल प्लेटों का निर्यात किया है। ये संबद्ध सामान मैसर्स कपूर इमेजिंग्स प्रा. लि. को निर्यात किए गए हैं जिसमें भी आयातक उत्तर दायर किए हैं। प्राधिकारी ने निर्यातक के संबद्ध सामानों की निर्यात कीमत और मात्रा का सत्यापन करने के लिए स्थल सत्यापन किया था। उसे भी आयातक की प्रश्नावली के उत्तर से सह संबद्ध किया गया है। जहां तक कारखानागत निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यात कीमत पर विभिन्न समायोजनों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि, स्थल सत्यापन के दौरान ईआरपी प्रणाली में विभिन्न समर्थक साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराए गए, अतः प्राधिकारी कारखानागत निर्यात कीमत निकालने के लिए समायोजनों के संबंध में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना का संदर्भ देने का प्रस्ताव करते हैं।

प्राधिकारी ने अन्य सहयोगी उत्पादकों के आंकड़ों तथा ऐसे समायोजनों के लिए सतत रूप से अपनाए गए मानदंडों के आधार पर *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर, *** प्रतिशत सीआईएफ, *** प्रतिशत एफओबी, *** प्रतिशत बैंक ब्याज दर पर *** दिन ऋण लागत और *** प्रतिशत एफओबी की सीमा तक समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा, ऋण लागत और बैंक प्रभारों का संदर्भ दिया है। उपर्युक्त समायोजनों के बाद कारखानागत निर्यात कीमत *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर तथा लागू पहुँच प्रभार और मूल सीमा शुल्क/उप कर लागू करने के बाद पहुँच मूल्य *** अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर बनती है।

ग. मैसर्स फुजीफिल्म प्रिंटिंग प्लेट (चीन) कं. लि. (एफएफपीएस), फुजीफिल्म (चीन) इन्वेस्टमेंट कं. लि. (एफएफसीएन) (फुजीफिल्म)

25. मैसर्स फुजीफिल्म प्रिंटिंग प्लेट (चीन) कं. लि. (एफएफपीएस) (उत्पादक) तथा उसके संबंधित निर्यातक अर्थात् फुजीफिल्म (चीन) इन्वेस्टमेंट कं. लि. (एफएफसीएन) ने उसके संबंधित आयातक अर्थात् फुजीफिल्म इंडिया प्रा. लि. (एफएफआईपीएल) सहित निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं। जांच की अवधि के दौरान मैसर्स एफएफसीएन ने भारत को संबद्ध सामानों का निर्यात नहीं किया है। प्राधिकारी ने एफएफसीएन द्वारा किए गए वैश्विक निर्यात और घरेलू बिक्री के संबंध में एफएफपीएस और एफएफसीएन द्वारा दायर किए गए आंकड़ों का स्थल सत्यापन किया था। उत्पादक/निर्यातक ने अपनी घरेलू बिक्री के आधार पर "सामान्य मूल्य" निर्धारित करने के प्रयोजन से बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा नहीं किया है।

च.3.3 पाटन मार्जिन

26. संबद्ध सामानों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण संबद्ध सामानों के लिए कारखानागत स्तर पर निर्मित सामान्य मूल्य और निवल निर्यात कीमत की तुलना करके किया गया है। निम्नलिखित तालिका तापीय प्लेटों के लिए संबद्ध देश के सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए भारत औसत पाटन मार्जिन दर्शाती है:

तालिका

उत्पादक/निर्यातक	उत्पाद का प्रकार	निर्यात कीमत अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर में	पाटन मार्जिन अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर में	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन % रेंज में
कोडक (चाइना) ग्राफिक कम्युनिकेशन्स कंपनी लि. और मैसर्स कोडक (चाइना) इन्वेस्टमेंट कं. लि.	तापीय	***	***	***	5 - 10
	वायलट		***	***	0 - 5
मैसर्स फुजीफिल्म (चाइना) इन्वेस्टमेंट कं. लि. और मैसर्स फुजी फिल्म्स प्रिंटिंग प्लेट्स (चाइना) कं. लि.		कोई निर्यात नहीं			
मैसर्स लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि.	थर्मल	***	***	***	(5 - 10)

छ. क्षति का निर्धारण एवं कारणात्मक संपर्क

छ.1 घरेलू उद्योग के विचार

27. जहां तक क्षति एवं कारणात्मक संपर्क का संबंध है, घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :
- पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद संबद्ध देश से आयात काफी बढ़े हैं। आयात पूर्ण मात्रा में (72 सूचकांक तक) और उत्पादन के संबंध में (45 सूचकांक तक) तथा जांच की अवधि के दौरान भारत में खपत (27 सूचकांक तक) बढ़े हैं।
 - घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण और विशेष रूप से मूल्यांकित जांच की अवधि तथा क्षति की अवधि में यूवी-सीटीपी प्लेटों को पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत रूप से घोषित किए जाने के कारण वास्तविक क्षति हो रही है।
 - याचिकाकर्ता का बाजार हिस्सा आधार वर्ष 2013-14 से गिरता जा रहा है, चीन जन. गण. आयातों का बाजार हिस्सा निरंतर बढ़ता जा रहा है। याचिकाकर्ता का बाजार हिस्सा 76 प्रतिशत से घटकर 69 प्रतिशत हो गया है, जबकि संबद्ध देश से आयात का हिस्सा 15 प्रतिशत से बढ़कर 19 प्रतिशत हो गया है।

- iv. चीन जन. गण. से आयातों से क्षति की अवधि में याचिकाकर्ता की घरेलू बिक्री कीमत की निरंतर कटौती हुई है। यद्यपि, क्षति की अवधि के आरंभ में नकारात्मक कटौती थी, तथापि, पाटित आयातों से जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की कीमतों में निरंतर कटौती हुई है।
- v. यद्यपि, उत्पादन लागत में जांच की अवधि में आंशिक गिरावट आई है, तथापि, चीन जन. गण. से आयातों की पहुँच कीमत में निर्माण एवं बिक्री में दो सूचकांक की गिरावट से तुलना करने पर 19 सूचकांक तक की गिरावट आई है। आयात कीमतों में भारी गिरावट को देखते हुए याचिकाकर्ता अपनी कीमतों को कम करने के लिए मजबूर हो गया है जो कि प्रयोक्ता उद्योग के साथ सहमत समझौता जापन की कीमतों से कम है।
- vi. चीन जन. गण. से निर्यातित यूवी-सीटीपी प्लेटों का पहुँच मूल्य इतना कम है कि वह एलएमई कीमतों पर आधारित लीथो ग्रेड एल्युमीनियम की याचिकाकर्ता की लागत को भी पूरा नहीं करता है।
- vii. कीमत कटौती और कीमत न्यूनीकरण के प्रभावों के कारण, याचिकाकर्ता की लाभप्रदता क्षति की अवधि में काफी कम हुई है।
- viii. जांच की अवधि के दौरान, नियोजित पूंजी पर आय में 40 सूचकांक तक गिरावट आई है और नियोजित पूंजी पर आय प्रति यूनिट में 48 सूचकांक तक गिरावट आई है। उपर्युक्त वित्तीय मानदंड यह दर्शाते हैं कि याचिकाकर्ता को पूरी क्षति की अवधि में मुख्य रूप से सामानों की गलत घोषणा के कारण और परिणामस्वरूप पाटनरोधी शुल्क से बचाव के कारण वास्तविक रूप से निरंतर क्षति हुई है।
- ix. यूवी सीटीपी प्लेटों को पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत रूप से घोषित किया गया है अर्थात् यूवी सीटीपी प्लेटें चीन जन. गण. से भारत में पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में आयातित की जाती हैं और इस प्रकार विचाराधीन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क की सुरक्षा बेकार हो जाती है।
- x. कोई भी पूर्ण क्षमता उपयोग प्राप्त कर सकता है और उससे हानियां हो सकती हैं अथवा लाभ में गिरावट आ सकती है क्योंकि क्षमता उपयोग का क्षति कारक कीमत प्रभाव से कोई संबंध नहीं है। आयात उचित कीमतों पर नहीं आ रहे हैं जो कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए याचिका में प्रमुख कारण है।

छ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

28. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- i. मैसर्स मैट्रोस्टार प्रिंट सॉल्यूशन प्रा. लि. ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
 - प्रिंटिंग उद्योग प्रिंटिंग में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं के पूरे क्षेत्र में आयातों के धीमे न हुए प्रवाह के प्रति अतिसंवेदनशील है। संवर्धक प्राथमिक रूप से जोखिम लेते हैं क्योंकि परिष्कृत उत्पाद पाटनरोधी शुल्क के तहत थे और इसीलिए वे उन अनैतिक व्यापारियों और डीलरों से संरक्षित होंगे जो गलत घोषणा और अन्य अनुचित साधनों के माध्यम से चीन से सस्ते उत्पादों का आयात करते हैं। यूवीसीटीपी के आयात भारी मात्रा में गलत घोषित मार्ग के तहत निरंतर आ रहे हैं और हमारे देश को भारी क्षति पहुँचा रहे हैं। कंपनी पहले ही गलत घोषित आयातों और परिणामस्वरूप कम कीमतों के कारण कम क्षमता उपयोग के निमित्त भारी हानियों का सामना कर रही है जिससे विनिर्माण गैर अर्थक्षम होता है। यदि पाटनरोधी शुल्क द्वारा दिया गया संरक्षण एवं सहायता वापस ली जाती है तो संयंत्र को बंद करना होगा जिससे न केवल रोजगार की हानियां होंगी अपितु उन बैंकों का ऋण वापस करने के लिए संवर्धकों पर वित्तीय भार भी पड़ेगा जिन्होंने यूनिटों में प्रदर्शन किया है।
 - टेकनोवा द्वारा प्रस्तुत आंकड़े जांच की अवधि के दौरान क्षति दर्शाते हैं। यह नोट किया जाता है कि एनपीएसपीएल वर्तमान में यूवीसीटीपी प्लेटों का विनिर्माण एवं आपूर्ति करता है। टेकनोवा द्वारा प्रस्तुत आंकड़े एवं साक्ष्य यह दर्शाएंगे कि यूवीसीटीपी प्लेट में क्षति सामानों की काफी गलत घोषणा की अपेक्षा तथा पाटनरोधी शुल्क के अध्यधीन न होने वाले अन्य देशों के मामले में चीनी सामानों के आने के कारण बहुत अधिक है। संभावित मुद्दों पर टेकनोवा ने चीन में उपलब्ध भारी क्षमताओं तथा सस्ती कीमतों पर विचाराधीन उत्पाद की बिक्री करने की उनकी तैयारी दर्शाते हुए व्यापक साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं।
 - एनपीएसपीएल ने इस उम्मीद पर भारी निवेश किए हैं कि माननीय प्राधिकारी चीनी उत्पादकों की अनुचित व्यापारिक परिपाटियों से हमारे जैसे छोटे विनिर्माताओं की सुरक्षा करेंगे। एनपीएसपीएल अन्य प्रकार की डिजिटल प्लेटों अर्थात् थर्मल एवं बायलट का विनिर्माण करने तथा आपूर्ति करने के लिए अतिरिक्त निवेश करने की योजना बना रहा है। यदि शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो चीनी विनिर्माता एनपीएसपीएल जैसे लघु विनिर्माताओं को पूरी तरह नष्ट कर देंगे।
 - हम इस बात को दोहराते हैं कि हमारे लघु विनिर्माता होने के कारण हम चीनी पाटन के प्रति अत्यधिक सुभेद्य हैं। एनपीएसपीएल व्यावसायिक, कुशल एवं अर्ध कुशल श्रेणी में 80 से अधिक परिवारों रोजगार सुनिश्चित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, कारखाना 100 से अधिक विभिन्न विक्रेताओं को उनकी दैनिक आवश्यकताओं के लिए सहायता देने का इरादा रखता है। यदि शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो इससे केवल "मेक इन इंडिया" मिशन की विफलता तथा रोजगार की हानि ही नहीं होगी अपितु बैंक ऋणों के लिए दोषी होने वाले एनपीएसपीएल के संवर्धकों का जोखिम भी होगा।

- पाटनरोधी शुल्क की सहायता से एनपीएसपीएल भारतीय ग्राहकों को गुणवत्ता के भारतीय उत्पाद ही नहीं देगा बल्कि बड़ी हुई मांग और निर्यात का ध्यान रखने के लिए अतिरिक्त क्षमताएं स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित भी करेगा।
 - हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करें और हमारे जैसे उन युवा उद्यमियों के उद्देश्य में सहायता करें जो मेक इन इंडिया में गौरव रखते हैं और स्थानीय प्रिंटिंग उद्योग की सेवा करते हैं।
- ii. कपूर इमेजिंग प्रा. लि., लकी हुआगुआंग ग्राफिक्स कं. लि. और शंघाई स्ट्रांग स्टेट प्रिंटिंग इक्विपमेंट लि. की ओर से मैसर्स टीपीएम कंसल्टेंट्स ने निम्नलिखित अनुरोध किये हैं:
- न्यूनतम स्तर से अधिक की मात्रा वाले विभिन्न अन्य देशों से आयात तथा संबद्ध देश से कम कीमत पर आयात, जैसे यूरोप, जापान, कोरिया और ताइवान। तथापि, ये कीमतें स्वीकार्य रूप से उन्हें क्षति नहीं पहुँचा रही हैं।
 - आयात देश में मांग एवं आपूर्ति के अंतराल की मात्रा के लगभग बराबर है। इस प्रकार, आयातों में वृद्धि तथा घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट स्वाभाविक है।
 - बिक्री लागत में गिरावट के मद्देनजर आयात कीमत में गिरावट आई है।
 - उद्योग इष्टतम स्तर पर संचालित हो रहा है और उसका उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, क्षति की अवधि में सुधरा है। इस संबंध में किसी क्षति का दावा नहीं किया जा सकता।
 - घरेलू उद्योग पूरी अवधि में लाभ अर्जित करता रहा है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि लाभप्रदता में कम कीमत पर आयात में वृद्धि के कारण 2015-16 में गिरावट आरंभ हुई।
 - घरेलू उद्योग पूर्व में असामान्य रूप से उच्च कीमत लगा रहा था, परंतु 26 सितंबर, 2014 को शुरू की गई मध्यावधिक समीक्षा जांच की शुरुआत से याचिकाकर्ता ने आयातकों और उपभोक्ताओं के साथ एक समझौता ज्ञापन किया और अपनी कीमतों को कुछ पारस्परिक रूप से सहमत अनुपात में कच्ची सामग्री की कीमतों में उन्हें संबद्ध किया। इस प्रकार, 2015-16 से लाभ में गिरावट आई।
 - संबद्ध सामान शुल्क का निर्धारित स्वरूप अपना रहे हैं। इस प्रकार, आयात निर्धारित स्तर से कम कीमत पर नहीं आ सकते। इस प्रकार संबद्ध आयातों से तथाकथित कोई भी क्षति नहीं हो सकती।
 - कच्ची सामग्री की कीमतों में गिरावट आई है जो संबद्ध सामानों की प्रमुख उत्पादन लागत है। तथापि, घरेलू उद्योग की लागत में वृद्धि दर्शाई है। प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे कृपया लागत में वृद्धि के कारण सुनिश्चित करें।
 - घरेलू उद्योग की एनआईपी में प्राधिकारी द्वारा मानी गई पूर्व की जांच अवधि से काफी गिरावट आई है क्योंकि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि के कारण कम होनी चाहिए थी। तथापि, सबसे बुरी स्थिति के रूप में यदि एनआईपी वही मानी जाती है और कच्ची सामग्री की लागत समायोजित की जाती है तो क्षति मार्जिन नकारात्मक होगा।
 - केवल क्षति एवं पाटन की मौजूदगी से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि पाटन एवं क्षति की संभावना मौजूद है। इसे इस रूप में देखे जाने की आवश्यकता है कि क्या घरेलू उद्योग को हो रही क्षति आयातों के कारण है अथवा नहीं है। यदि क्षति आयातों के कारण नहीं है तो निश्चित रूप से दावा नहीं किया जा सकता कि वर्तमान पाटन एवं क्षति की मौजूदगी (अन्य कारणों से) से घरेलू उद्योग को बार-बार क्षति होगी।
 - भारी क्षमता का दावा सिद्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त, भारी क्षमता स्वतंत्र रूप से निपटान योग्य क्षमताओं से भिन्न है। इसके अतिरिक्त, जैसा कि प्राधिकारी द्वारा विगत जांचों में माना गया है, केवल अधिशेष क्षमता संभावना सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह सिद्ध किया जाना चाहिए कि ऐसी क्षमता भारतीय बाजार में क्यों ले जाई जाएगी।
 - यह दावा किया गया है कि बहुत से प्रयोक्ता वहां नहीं लौटे हैं जिनको उन्होंने पूर्व में आपूर्ति की थी। तथापि, यह अनुरोध है कि उन्होंने यह नहीं दर्शाया है कि क्या ऐतिहासिक ग्राहकों को आदेशों में गिरावट आई है। उत्पादन एवं बिक्री में वृद्धि हुई है।
 - मांग में गिरावट के संबंध में प्रस्तुत लेख यह दर्शाता है कि मांग में 2012 से गिरावट आरंभ हुई। तथापि, आयातों ने तब से काफी वृद्धि नहीं दर्शाई है।
 - आयात राष्ट्र में मांग एवं आपूर्ति के अंतराल के बराबर है। यदि यूरोपीय संघ से बायलट एवं थर्मल प्रिंटिंग प्लेटों के आयात चीन जन. गण. की कीमत की तरह उन्हीं कीमतों पर आ रहे थे तो चीन से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क बढ़ाना उपाय नहीं हो सकता।
 - जहां तक इस दावे का संबंध है कि कोडक ने पाटन शुरू किया जिस पर कि शून्य शुल्क लगता है, यह अनुरोध है कि घरेलू उद्योग को इसके समाधान के लिए मध्यावधिक समीक्षा जांच की मांग करनी चाहिए थी। तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा इस संबंध में कोई प्रयास नहीं किए गए।

- आयात देश में मौजूद मांग आपूर्ति अंतराल की सीमा तक हैं। यहां तक कि यदि यह माना जाए कि आने वाले नए उत्पादकों के संबंध में घरेलू उद्योग के दावे सही हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग ने अन्य नए उत्पादकों का हिस्सा लिया है क्योंकि अन्य उत्पादकों की बिक्री का अनुमान पूरी क्षति की अवधि में 0.6 मिलियन वर्ग मीटर रहा है।
 - घरेलू उद्योग के पास घरेलू मांग पूरी करने के लिए पर्याप्त क्षमता नहीं है और इस प्रकार बाजार हिस्से में गिरावट स्वाभाविक है। आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि देश में मांग-आपूर्ति के अंतराल के कारण सीधे ही हो सकती है।
 - घरेलू उद्योग पूरी क्षति की अवधि में लाभ अर्जित करता रहा है। इसके अतिरिक्त, जैसा कि पहले कहा गया है कि लाभ में गिरावट का कारण आयात नहीं है, कोई अन्य कारक जिससे लाभप्रदता में गिरावट आई है, आयातों के कारण नहीं होना चाहिए। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि संबद्ध सामानों पर निर्धारित शुल्क लग रहा है। इस प्रकार, आयात निर्धारित स्तर से कम कीमत पर नहीं आ सकते।
 - घरेलू उद्योग की एनआईपी में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा मानी गई पूर्व जांच की अवधि से काफी गिरावट आनी चाहिए क्योंकि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि तथा कच्ची सामग्री की कीमतों में गिरावट के कारण कम होनी चाहिए। इस प्रकार, क्षति मार्जिन नकारात्मक होगा।
 - ब्राजील एवं कोरिया के प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए जांच परिणाम पर विश्वास करना गलत है क्योंकि वे जांच परिणाम पीएस प्लेट से संबंधित हैं न कि डिजिटल प्लेटों से। केवल अधिशेष क्षमता संभावना सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह सिद्ध किया जाना चाहिए कि ऐसी क्षमता भारतीय बाजार में क्यों दी जाएगी।
- iii. मैसर्स फुजीफिल्म प्रिंटिंग प्लेट (चीन) कं. लि. (एफएफपीएस), फुजीफिल्म (चीन) इन्वेस्टमेंट कं. लि. (एफएफसीएन) और मैसर्स फुजीफिल्म इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एफएफआईपीएल) की ओर से मैसर्स एपीजे-एसएलजी विधि कार्यालयों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- घरेलू उद्योग ने लगभग सभी क्षति मानदंडों के संबंध में भारी सुधार दर्शाए हैं। वर्तमान क्षति की मौजूदगी का अभाव एक सख्त संकेतक है कि क्षति विशेष रूप से तब होने की संभावना नहीं है जब घरेलू उद्योग द्वारा पेश की गई कीमतें प्राधिकारी द्वारा निर्धारित संदर्भ कीमतों के कहीं भी आसपास न हो।
 - जहां तक चीन में भारी बेकार क्षमताओं के दावे का संबंध है, यहां यह उल्लेखनीय है कि घरेलू उद्योग इस संबंध में कोई साक्ष्य देने में विफल रहा है। यह एक निर्धारित कानून है कि क्षति से संबंधित कोई भी दावा वास्तविक साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए न कि केवल आरोप, अनुमान अथवा सुदूर संभावना पर। घरेलू उद्योग स्पष्ट रूप से घरेलू उद्योग क्षति के संबंध में अपने दावे को सिद्ध करने के लिए कानून के तहत अपने दायित्व को पूरा करने में स्पष्ट रूप से विफल रहा है। किसी भी दशा में अतिरिक्त क्षमता की मौजूदगी से क्षति की संभावना का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।
 - घरेलू उद्योग द्वारा खोए गए आदेशों के संबंध में आधारहीन एवं खोखले दावे किए गए हैं। घरेलू उद्योग की याचिका स्पष्ट रूप से एक भारी विरोधाभासी स्थिति स्थिति दर्शाते हैं। घरेलू उद्योग द्वारा खोए आदेशों के खोखले दावे के विरुद्ध घरेलू उद्योग का उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में काफी वृद्धि हुई है। यहां तक कि यदि ऐसे झूठे और आधारहीन दावे को सही भी माना जाए तो यह हमारी समझ से परे है कि घरेलू उद्योग ने उपर्युक्त आदेशों की आपूर्ति इस समय कैसे की, जब उन्होंने पहले ही अपने उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री की ऊंचाई हासिल कर ली थी।
 - घरेलू उद्योग के इस दावे के संबंध में कि ब्राजील ने चीन से संबद्ध सामानों के आयात पर शुल्क लगाए हैं, यह अनुरोध है कि किसी अन्य देश में शुल्कों का भारतीय बाजार में चीन के निर्यातों पर कोई प्रभाव नहीं है। ऊपर यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि मौजूदा संदर्भ कीमत शुल्क के बावजूद घरेलू उद्योग भारतीय बाजार में संबद्ध सामानों की बिक्री उसी के आसपास करता है जो चीनी उत्पादकों द्वारा पेश की गई कीमतें हैं, वास्तविक रूप से आयातित कीमत और घरेलू कीमत के बीच कोई अंतर नहीं है।
 - जहां तक चीन में घटी हुई मांग के दावे का संबंध है, हम सम्मान के साथ अनुरोध करते हैं कि ऐसा दावा करने के लिए कोई विश्वसनीय आधार नहीं है। जिस रिपोर्ट पर विश्वास किया गया है वह न्यूज प्रिंट के संबंध में है न कि संबद्ध सामानों के संबंध में। संबद्ध सामानों की संभावित मांग के संबंध में भी कोई संकेत नहीं है। इसके अतिरिक्त, हमारे द्वारा प्रस्तुत आंकड़े, जिनका प्राधिकारी ने विधिवत सत्यापन किया है, स्पष्ट रूप से सिद्ध करते हैं कि चीन में हमारी घरेलू बिक्री में वृद्धि हुई है। हमारी समझ से यही स्थिति अन्य चीनी उत्पादकों के साथ ही है जो कि चीन में संबद्ध सामानों की बढ़ी हुई घरेलू मांग के कारण हो सकती है।
 - आयातों की पहुँच कीमत में गिरावट को अलग से नहीं देखा जा सकता जब तक कि लागत संबंधी कारकों की भी साफ-साफ जांच न की जाए। पहुँच मूल्य में गिरावट लगभग पूर्णतः एल्युमीनियम – विचाराधीन उत्पाद के लिए प्रमुख कच्ची सामग्री की कीमतों में भारी गिरावट के कारण है। यह इस तथ्य से भी सुनिश्चित किया जा सकता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में भी गिरावट आई है।

- एल्युमीनियम की कीमतों में लगभग 25 प्रतिशत की गिरावट है जब हम वर्तमान जांचों के दौरान जांच की अवधि के दौरान विद्यमान कीमतों से मूल जांच में जांच की अवधि के दौरान की विद्यमान कीमतों की तुलना करते हैं। यह रिकार्ड करने का मामला है कि विचाराधीन उत्पाद के विनिर्माण में प्रयुक्त प्राथमिक कच्ची सामग्री एल्युमीनियम है और यह विचाराधीन उत्पाद की कुल लागत का लगभग 70 प्रतिशत है।
- इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा पेश की गई कम कीमतों के बावजूद टेकनोवा की लाभप्रदता वित्तीय वर्ष 2010 में 1997 लाख रुपए से बढ़कर वित्तीय 2015-16 में 4600 लाख रुपए तक बढ़ी जो कि 130 प्रतिशत की भारी वृद्धि है। लाभप्रदता में यह वृद्धि इस तथ्य का साक्ष्य है कि घरेलू उद्योग ने कम कीमतों पर संबद्ध सामानों की बिक्री करने के विकल्प लिया, परंतु अपनी पूरी क्षमता तक बाजार हिस्सा लेकर अपनी समग्र लाभप्रदता बढ़ाई।
- यह स्पष्ट है कि क्षति, यदि कोई है, पूर्णतः अन्य कारणों से हुई है और अन्य कारणों के निमित्त किसी क्षति को संबद्ध देश से आयातों के कारण स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। चीन जन. गण. से आयातों ने घरेलू उद्योग के कीमत मानदंडों अथवा मात्रा पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाला। कुछ भी हो, कारणात्मक संपर्क इस तथ्य के मद्देनजर देखे जाने की आवश्यकता है कि गैर विचाराधीन उत्पाद और घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री क्षति की अवधि में भारी मात्रा में गिरी है तथा घरेलू उद्योग को कोई भी क्षति उसी के कारण है।

iv. मैसर्स कोडक चाइना ग्राफिक कम्युनिकेशन कं. लि. ("केसीजीसीसीएल"), मैसर्स कोडक चाइना इन्वेस्टमेंट कं. लि. ("केसीआईसीएल") और मैसर्स कोडक इंडिया प्रा. लि. ("केआईपीएल") की ओर से मैसर्स दुआ एसोसिएट्स ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- नकारात्मक कीमत कटौती – भारत में चीन जन. गण. से कोडक द्वारा निर्यातों से घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके अतिरिक्त, केसीजीसीसीएल द्वारा निर्यातित सामानों का पहुँच मूल्य पूरी जांच की अवधि में टेकनोवा की बिक्री कीमत से अधिक रही है।

विवरण	स्रोत	2014-15	2015-16	जांच की अवधि
चीन जन. गण. से विचाराधीन उत्पाद का पहुँच मूल्य	एनसीवी आवेदन	272	252	238
कीमत कटौती रेंज	एनसीवी आवेदन	0-5%	5-10%	10-15%
उच्चतम रेंज पर घरेलू बिक्री कीमत	व्युत्पन्न	286	277	274
केसीजीसीसीएल द्वारा निर्यातित वस्तुओं का सीआईएफ मूल्य	केआईपीएल का उत्तर (अनुबंध 2)	***	***	***
केसीजीसीसीएल द्वारा निर्यातित वस्तुओं का पहुँच मूल्य	केआईपीएल का उत्तर (अनुबंध 1 व 2) केआईपीएल निर्धारणीय मूल्य + बीसीडी	***	***	***
कीमत कटौती		नकारात्मक	नकारात्मक	नकारात्मक

- नकारात्मक कम कीमत पर बिक्री – कोडक द्वारा निर्यातित सामानों का पहुँच मूल्य टेकनोवा द्वारा दावा की गई एनआईपी से अधिक है तथा नकारात्मक कम कीमत पर बिक्री है।

विवरण	स्रोत	2014-15	2015-16	जांच की अवधि
चीन जन. गण. से विचाराधीन उत्पाद का पहुँच मूल्य	एनसीवी आवेदन	272	252	238
एनआईपी क्षति मार्जिन	एनसीवी आवेदन	-	-	15-25%

उच्चतम मार्जिन पर अनुमानित एनआईपी	व्युत्पन्न	-	-	285
केसीजीसीपीएल द्वारा निर्यातित वस्तुओं का पहुँच मूल्य	केआईपीएल का उत्तर (अनुबंध 1 व 2) केआईपीएल निर्धारणीय मूल्य + बीसीडी	***	***	***
कीमत कटौती		-	-	नकारात्मक

- कीमत न्यूनीकरण/ह्रास – भारत में कोडक से निर्यातों द्वारा कोई कीमत न्यूनीकरण अथवा ह्रास नहीं है। इसे टेकनोवा की निर्माण लागत एवं बिक्री से तुलना करने पर कोडक के पहुँच मूल्य से समुचित रूप से निकाला जा सकता है।
- कोडक द्वारा निर्यातों की मात्रा पूरी क्षति जाँच अवधि में लगभग स्थिर रही है। अतः कोडक के आयातों में कोई उछाल नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को कोई क्षति हुई हो।

विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	जाँच की अवधि
चीन जन. गण. से आयात	मिलियन वर्ग मीटर	5.6	7.73	7.3
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	138	130
कोडक से निर्यात	मिलियन वर्ग मीटर	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	108
घरेलू बिक्री	मिलियन वर्ग मीटर	23.6	24.9	26.6
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	113
टेकनोवा घरेलू बिक्री से संबंधित कोडक निर्यात मात्रा	% रेंज	10 - 20	10 - 20	10 - 20

- नकारात्मक मात्रात्मक क्षति – कोडक से संबंधित आयातों अथवा आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई मात्रात्मक क्षति नहीं है। क्षति जाँच अवधि के दौरान टेकनोवा इष्टतम क्षमता उपयोग के स्तर पर पहुँचा है और बाजार हिस्से को बढ़ाने के लिए कोई और गुंजाइश नहीं है। यहां तक कि अन्यथा घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा सकारात्मक प्रवृत्ति दर्शा रहा है।

विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	जाँच की अवधि
मांग/खपत	मिलियन वर्ग मीटर	32.3	36.2	37.9
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	117
कोडक से निर्यात	मिलियन वर्ग मीटर	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	108
घरेलू बिक्री	मिलियन वर्ग मीटर	23.6	24.9	26.6
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	113

मांग से संबंधित कोडक निर्यात	% रेंज	10 - 20	10 - 20	10 - 20
------------------------------	--------	---------	---------	---------

- कोडक से निर्यातों में कोई वृद्धि नहीं : कोडक द्वारा संबद्ध सामानों के निर्यातों का प्रतिशत हिस्सा जांच की अवधि के दौरान मांग के संबंध में काफी कम हुआ है। अतः यह अनुरोध है कि कोडक द्वारा निर्यातों का घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर कोई प्रभाव नहीं है। इसके अतिरिक्त, कोडक में उपयोग में लाई गई उत्पादन क्षमता नहीं है और उत्पाद क्षमता बढ़ाने की कोई योजना नहीं है। उपर्युक्त के आलोक में कोडक से निर्यात की मात्रा में उछाल आने की कोई संभावना नहीं है।

विवरण	यूनिट	2014-15	2015-16	जांच की अवधि
कोडक द्वारा निर्यात	मिलियन वर्ग मीटर	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	108
घरेलू उत्पादन	मिलियन वर्ग मीटर	29.94	27.34	28.53
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	114
घरेलू उत्पादन से संबंधित कोडक निर्यात	% रेंज	10 - 20	10 - 20	10 - 20

- मांग आपूर्ति अंतराल – टेकनोवा ने इष्टतम स्तर पर उत्पादन हासिल कर लिया है। आयातक/प्रयोक्ता भारी मांग आपूर्ति अंतरालों के कारण संबद्ध सामानों का आयात करने के लिए बाध्य हैं।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि
टेकनोवा क्षमता	मिलियन वर्ग मीटर	34.77	34.77	34.77	34.77
घरेलू उत्पादन	मिलियन वर्ग मीटर	23.88	24.94	27.34	28.53
कुल क्षमता उपयोग	%	95	95	97	94
मांग	मिलियन वर्ग मीटर	28.47	32.27	36.24	37.91

- भारत में निर्यात कीमत में गिरावट की कोई संभावना नहीं – कोडक निर्यात कीमत का अवलोकन यह दर्शाता है कि तीसरे देशों (भारत को छोड़कर) को संबद्ध सामानों की कीमत भारत में निर्यात कीमत के संदर्भ में अधिक है। तदनुसार, कोडक के लिए कम कीमत पर भारत में संबद्ध सामानों की बिक्री करने की कोई संभावना अथवा तर्क आधार नहीं है।

क्रम सं.	निर्यात कीमत (अमेरिकी डॉलर)	ईएलईसी एक्सडी	ईईएम	एसडब्ल्यू	सीएपी जीटी	सोनोरा	टीएनजी
1.	भारत	***	***	***	***	***	***
2.	तृतीय देश	***	***	***	***	***	***

- चीनी बाजार कोडक द्वारा उत्पादित सामानों के लिए स्थिर मांग दर्शाता है। कोडक ने पूरी क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध सामानों की घरेलू बिक्री में कोई गिरावट नहीं देखी है।

क्रम सं.	वर्ष	चीन जन. गण. में कोडक बिक्री (अमेरिकी डॉलर में मूल्य)
1.	वित्तीय वर्ष 2015	***
2.	वित्तीय वर्ष 2016	***
3.	जांच की अवधि	***

- उप श्रेणी के आधार पर आयात की मात्रा तथा मूल्य का कम होना – मूल जांच में प्राधिकारी ने संबद्ध सामानों को तीन श्रेणियों अर्थात् थर्मल, वायलट और सीटीसीपी में वर्गीकृत किया था। तथापि, वर्तमान जांच में आवेदक ने तीनों उप श्रेणियों के प्रत्येक के तहत आयातों की मात्रा और मूल्य का विवरण नहीं दिया है। इसके मद्देनजर, घरेलू उद्योग अनुरोधों/दावों की उपयुक्त समझ प्रदान करने में विफल रहा है। यह नोट करना भी आवश्यक है कि उप श्रेणी आधार पर आयातों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण यह निर्धारित करने के लिए अपेक्षित है कि क्षति संबद्ध आयातों के कारण हो रही है न कि गैर संबद्ध आयातों के कारण। किसी भी दशा में यह अनुरोध है कि कोडक ने जांच की अवधि के दौरान थर्मल प्लेटों का ही आयात किया है न कि वायलट अथवा सीटीसीपी का।
 - गलत घोषणा – यह नोट करना व्यावहारिक है कि आवेदक ने क्षति के कारण के रूप में गलत घोषणा स्वीकार की है। विशेष रूप से, टेकनोवा ने अनुरोध किया है कि *"याचिकाकर्ता समझौता जापान के पूर्ण लाभ लेने में असमर्थ रहा है। यह बताते हुए कि यूवी सीटीपी प्लेटों के संबंध में गलत घोषणा तथा एक उस निर्यातक फुजी फिल्म द्वारा मूल देश में परिवर्तन हुआ है, जो यूरोपीय संघ से हाल ही तक वायलट एवं थर्मल प्रिंटिंग प्लेटों की बिक्री वास्तव में उन्हीं कीमतों पर कर रहा था जिन पर चीन जन. गण. कर रहा था।"* अतः यह सिद्ध है कि आवेदक को भी अन्य निर्यातकों द्वारा भारत में आयातित होने पर सीटीसीपी प्लेटों की गलत घोषणा के कारण क्षति हो रही है। यह बात दोहराई जाती है कि कोडक भारत में सीटीसीपी प्लेटों का निर्यात नहीं करता है।
 - अन्य देशों के आयात – आवेदक द्वारा अनुरोध किए गए अनुसार गैर संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद की आयात मात्रा और मूल्य भी यह दर्शाते हैं कि गैर संबद्ध देशों से आयात उस कीमत पर हो रहे हैं जो चीन से कीमत की अपेक्षा लगभग 20-40 प्रतिशत कम है। यह भी सिद्ध है कि गैर संबद्ध देश (सामूहिक रूप से मलेशिया, ताइवान और कोरिया से) काफी कम कीमतों पर भारतीय बाजार में सामानों का निर्यात कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, क्षति जांच अवधि के दौरान मलेशिया, ताइवान और कोरिया से आयात मात्रा एवं मूल्य के विश्लेषण की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि गैर संबद्ध देशों से संबद्ध आयात काफी बढ़े हैं और न्यूनतम स्तर काफी अधिक भी रहे हैं।
 - मूल जांच के अनुरूप प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे संबद्ध सामानों के लिए एनआईपी का परिकलन (प्रेस पूल रसायनों के निमित्त उचित समायोजन/कटौती के बाद) व्यापार से समान स्तर पर पाटन एवं क्षति निर्धारण निर्धारित करने के लिए करें। प्राधिकारी से यह भी अनुरोध है कि वे एनआईपी का परिकलन कमीशन, छूट, भारी भाड़ा, अनुसंधान एवं विकास, संबद्ध सामानों के लिए बिक्री पश्चात् सेवाएं/तकनीकी सहायता तथा गैर संबद्ध सामानों पर किए गए अन्य व्यय जैसे विनिर्माण पश्चात् खर्चों के निमित्त किए गए व्यय को अलग करने के बाद करें।
 - कोडक की संबद्ध सामानों की निर्यात कीमत कच्ची सामग्री की कीमतों में परिवर्तन के अनुरूप है। यह नोट करना भी व्यावहारिक है कि मूल जांच के दौरान कोडक की निर्यात कीमत *** भारतीय रुपए/वर्ग मीटर थी तथा समीक्षा की अवधि के दौरान पहुँच मूल्य *** भारतीय रुपए/वर्ग मीटर है। यह अंतर केवल विनिमय दर के कारण है। इसके अतिरिक्त, असंबद्ध ग्राहकों को केआईपीएल की बिक्री कीमत टेकनोवा की बिक्री कीमत से अधिक है। अतः टेकनोवा को क्षति कोडक से आयातों के कारण नहीं है।
- v. मैसर्स ऑरियन फोटोसेंसिटिव सिस्टम्स ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- हम डिजिटल ऑफसेट प्लेटों, विशेषकर हमारे द्वारा उत्पादित प्लेटों की श्रेणी के भारी पाटन के कारण संबद्ध देश से भारी वित्तीय दबाव का सामना कर रहे हैं। पाटित कीमतों के कारण हमारे कुछ ग्राहक हमें चीनी आयात कीमतों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए मजबूर करते हैं जो हमें उपयुक्त मार्जिन बनाने के लिए अनुमति नहीं देते। इसके अतिरिक्त, ऐसे भी उदाहरण रहे हैं जहां हमने पाया है कि चीनी आपूर्तिकर्ता और कुछ नकली आयातकों ने लागू पाटनरोधी शुल्कों से बचने के लिए यूवी (सीटीसीपी) प्लेटों की गलत घोषणा करके धोखाधड़ी करते आ रहे हैं। हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि उसे सही ठहराने के लिए सीमा शुल्क एवं डीआरआई प्राधिकारियों से और सूचना मांगें। इन दोनों मुद्दों से स्पष्ट रूप से बड़ नहीं पाते हैं और हम सरकार द्वारा घोषित मेक इन इंडिया योजना के तहत संधारणीय व्यापार नहीं कर पाते।
 - हमारा विश्वास है कि यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क वापस लिए जाते हैं तो देश में सस्ती चीनी डिजिटल ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेटों की भारी मात्रा आ जाएगी जो वास्तव में घरेलू उद्योग को मिटा देगी।
 - यदि मौजूदा शुल्क हटाए जाते हैं तो डिजिटल प्लेटों के उत्पादन में लगे घरेलू विनिर्माता की समाप्ति आसन्न होगी।
- 1) निवेश की गई पूंजी

- 2) इन नई प्रौद्योगिकियों का विकास करने के लिए प्रयास एवं कठिनाईयां
 - 3) कामगारों का कार्य
 - 4) बैंकों का वकाया ऋण, ये सब हमेशा के लिए समाप्त हो जाएंगे।
 - घरेलू विनिर्माताओं के नष्ट होने से स्थानीय प्रिंटिंग उद्योग को गंभीर क्षति होगी क्योंकि फिर भारतीय प्रिंटिंग उद्योग चीन से आयातित डिजिटल प्लेटों की दया पर होगा।
- vi. मैसर्स निम्नों कलर ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- आवेदक के पास भारत में अन्य विनिर्माताओं के संबंध में कोई आंकड़े नहीं हैं। वह उसकी किसी जानकारी के बिना 0.60 एम वर्ग मीटर का अनुमान लगाता है। समान उद्योग में होने के नाते आवेदक को प्रतिस्पर्द्धियों और सह विनिर्माताओं के कुछ आंकड़े लेने चाहिए थे। अतः उसे स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।
 - आवेदक ने अपने आंकड़ों में यह दर्शाया है कि आवेदक की बिक्री में 19 प्रतिशत की वृद्धि है तथा जैसा कि निर्यातक पक्षकार ने उल्लेख किया है, लगभग 97 प्रतिशत क्षमता उपयोग है। यदि इतना अधिक क्षमता उपयोग है तो पाटन का कोई प्रश्न ही नहीं है। तुलन पत्र आंकड़ों के अभाव में यह भी सत्यापित करना संभव नहीं है कि क्या इस अवधि के दौरान क्षमता विस्तार हुआ है तथा इसीलिए यह अनुरोध है कि उसका सत्यापन किया गया है।
 - चीन से कुल आयात आवेदक के उत्पादन के 25 प्रतिशत से कम हैं, परंतु जिस तरीके से उसे निकाला गया है तथा जिस किस्म की प्लेट के लिए निकाला गया है, वह ज्ञात नहीं है क्योंकि डीजीसीआईएस के कच्चे आंकड़े हमको नहीं दिए गए हैं और इसीलिए यह आरोप कि सतत पाटन हो रहा है, दूर की बात और अनुचित है।
 - आवेदक ने प्लेट की किस्म और उसकी मोटाई के विस्तृत ब्यौरों के बिना उत्पाद की कुल बिक्री निकाली है। ऐसे समुचित आंकड़ों की आपूर्ति के बिना आवेदन पत्र स्वयं में दोषपूर्ण है और रद्द किए जाने योग्य है। अन्य देशों से आयात आंकड़ों का डीजीसीआईएस के आंकड़ों द्वारा समर्थन नहीं किया गया है, न ही वे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को बताए गए हैं।
 - हमने स्थानीय बाजार में आवेदक के सामानों की बिक्री के बीजक प्रदान किए थे जो स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि आवेदक स्वयं 230 रुपए/वर्ग मीटर पर सामानों की बिक्री कर रहा था, जबकि पाटनरोधी शुल्क 350 रुपए तक था जिसमें उसने यह दर्शाया था कि सामानों की वास्तविक कीमत लगभग 230/वर्ग मीटर है तथा इसीलिए लगाया गया पाटनरोधी शुल्क अनुचित है।
 - कीमत हास संबंधी तालिका का आवेदक द्वारा घरेलू बिक्री कीमत के संबंध में किसी भी स्पष्ट आंकड़े द्वारा समर्थन नहीं किया गया है। ये आंकड़े आवेदक द्वारा विनिर्मित की जा रही प्रत्येक किस्म की डिजिटल प्लेट के लिए मोटाई-वार वास्तविक बिक्री कीमत द्वारा समर्थित होने चाहिए।
 - कीमत न्यूनीकरण से संबंधित तालिका यह नहीं दर्शाती है कि प्रत्येक किस्म की डिजिटल प्लेट अर्थात् सीटीसीपी, थर्मल और वायलट के लिए मोटाई-वार विनिर्माण की लागत कैसे निकाली गई है। पूरे आंकड़े गोपनीय दर्शाए गए हैं और इसीलिए डीजीएडी को घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए आंकड़ों की सत्यता के संबंध में टिप्पणी करना संभव नहीं है।
 - वाईओवाई आधार पर लागत में सूचकांक परिवर्तन के संबंध में पूरी पंक्ति गलत प्रतीत होती है। यह परिकलन गलत प्रतीत होता है यथा 100-24-(264)।
 - जबकि लागत 101-101-98 से परिवर्तित होनी कही गई है। इसी प्रकार, वाईओवाई आधार पर बिक्री में सूचकांक परिवर्तन भी गलत प्रतीत होता है। परिकलन गलत प्रतीत होता है, यथा 100-(129)-(184), जबकि बिक्री 102-99-96 से परिवर्तित होनी बताई गई है। कीमत न्यूनीकरण में भी 450 का आंकड़ा भी गलत प्रतीत होता है। उपर्युक्त के मद्देनजर, पूरी तालिका गलत रूप से परिकलित/प्रस्तावित की गई प्रतीत होती है और इसीलिए आवेदन पत्र रद्द किए जाने योग्य है।
 - किया गया परिकलन कि चीन से 15 प्रतिशत की वृद्धि है, गलत प्रतीत होता है क्योंकि पीओआर में आयात में वास्तविक गिरावट 21 प्रतिशत से 19 प्रतिशत है न कि 15 प्रतिशत की वृद्धि।
- vii. कोहली ग्राफिक्स सिस्टम्स ("केजीएस") की ओर से मैसर्स केएंडटी विधि कार्यालय ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- हमारे दृष्टिकोण में पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी घरेलू बाजार में संबद्ध सामानों के आयात में वृद्धि इस कारण नहीं है कि घरेलू बाजार में गैर-कानूनी तरीके से पाटन है; और संबद्ध देश से संबद्ध सामान अनुचित रूप से आ रहे हैं बल्कि इस कारण है कि वे घरेलू बाजार की क्षमता आवश्यकताओं/बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकते। इस प्रकार, घरेलू बाजार पाटनरोधी शुल्क के रूप में अत्यधिक एवं अतिरिक्त शुल्क देने के बाद भी संबद्ध देश से भारत में संबद्ध सामानों के आयातों से अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मजबूर है।
 - प्राधिकारी को घरेलू बाजार के हित में इस पर विचार करना चाहिए कि क्या भारत में पूर्ण मात्रा में अथवा उत्पादन या खपत के संबंध में पाटित आयातों में काफी वृद्धि हुई है, परंतु ऐसी सुरक्षा अच्छी नहीं होगी, यदि आयात आयातित सामानों के सस्ता होने के कारण विरोध किए जाने पर देश/घरेलू बाजार की क्षमता आवश्यकताओं/घरेलू मांग को पूरा कर रहे हैं।

- ऐसे परिदृश्य में, जहां घरेलू उद्योग घरेलू मांग को पूरा करने में असमर्थ है, कोई भी पाटनरोधी शुल्क लगाना अनौचित्यपूर्ण होगा क्योंकि घरेलू मांग मोनोपॉलिस्टिक डिजाइन के संरक्षण तथा घरेलू उद्योग की आकांक्षाओं के समक्ष अलंघनीय है।
- वर्ष 2012 में पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से ही परिस्थितियों में काफी परिवर्तन आए हैं और सुविधा के लिए वे तथा उनका परिणाम यहां दिए गए हैं।
- पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद घरेलू बाजार को मात्रात्मक क्षति की कोई कीमत नहीं है। वस्तुतः कोडक के लिए आयात की मात्रा में 4 सूचकांक की गिरावट है तथा घरेलू उद्योग के लिए 7 सूचकांक की वृद्धि है।
- जब संबद्ध सामान पर शुल्क लगाया गया था तो एल्युमीनियम की कीमत 2,200 डॉलर प्रति टन थी। जो अब घटकर 1700 डॉलर प्रति टन हो गई है जो कीमत में लगभग 40 प्रतिशत की गिरावट है।
- टेकनोवा इस संबंध में कोई सबूत देने में समर्थ नहीं रहा है कि क्या वे भारतीय/घरेलू बाजारों की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए 97 प्रतिशत क्षमता से आगे जा सकते हैं।
- यह कि कोरिया तथा अन्य देशों में कीमतों का घरेलू मूल्य चीन की कीमतों के मूल्य से काफी कम था।
- घरेलू उत्पादक उनके द्वारा अन्य देशों से आयातित सामानों की कीमतों के संबंध में सुविधाजनक रूप से मौन है। जो मूल्य घरेलू उत्पादक द्वारा दिए गए हैं अर्थात् जीसीएनएस मूल्य डॉलर में थे जिस पर प्रश्न उठ सकता है।
- यह कि वर्तमान में लगाया जा रहा पाटनरोधी शुल्क बहुत अधिक है क्योंकि संबद्ध सामान की अंतर्राष्ट्रीय कीमत 2 1/1 डॉलर – 3 डॉलर के बीच है और इस प्रकार इतने अधिक पाटनरोधी शुल्क को लेने के पीछे कोई तार्किक आधार नहीं है। विशेष रूप से जबकि यह एक स्वीकृत तथ्य है कि संबद्ध सामानों पर पाटनरोधी शुल्क होने के बावजूद घरेलू बाजार में आयातित संबद्ध सामानों का हिस्सा वृद्धि पर है क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए उत्पादन की तुलना में घरेलू मांग के बीच अंतराल है।
- यह तथ्य कि चीन अब गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं रह गया है क्योंकि डब्ल्यूटीओ नयाचार द्वारा चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश घोषित करना समय के साथ समाप्त हो गया है और यह कि इस तथ्य को ध्यान में रखने में समर्थ है।
- यह कि टेकनोवा बाजार में एकमात्र व्यापारी होने के नाते, जिसका घरेलू उत्पादन 90 प्रतिशत है और वर्तमान एसएसआर के द्वारा उसे यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि पाटनरोधी शुल्क अपनी जगह है क्योंकि उससे उसके मोनोपॉलिस्टिक डिजाइनों में बने रहने में सहायता मिलती है।
- भारत में आयातित डिजिटल प्लेटों की कीमतें विश्व में सबसे कम हैं।
- उन्होंने उल्लेख किया कि बाजार में मात्रा प्रदान करने के अनुसार टेकनोवा संबद्ध सामानों का 24-25 मिलियन वर्ग मीटर प्रदान करके आराम से शेष सेव पर है, जो बाजार का 70 प्रतिशत है। अन्य विनिर्माता संबद्ध सामान का लगभग 0.5 मिलियन वर्ग मीटर प्रदान करते हैं, जो बाजार का लगभग 1 प्रतिशत है। संबद्ध देश से आयात लगभग 7.5 मिलियन वर्ग मीटर है जो बाजार का लगभग 21 प्रतिशत है और अन्य देशों से आयात लगभग 3 मिलियन वर्ग मीटर है जो पूरे बाजार का लगभग 8 प्रतिशत है।
- उनका कहना है कि जब टेकनोवा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के समय से ही भारत में संबद्ध सामान का आसानी से प्रमुख उत्पादक है तो तीन नए व्यापारी अर्थात् अक्षय इमेजिंग, मैट्रोस्टार और कपूर इमेजिंग भी बाजार में आ गए।
- यह तथ्य कि चीन स्वीकार्य रूप से अब भी भारत में घरेलू बाजार में कुल 30 प्रतिशत आयात का लगभग 21 प्रतिशत आयात करता है, स्पष्ट संकेतक है कि टेकनोवा 97 प्रतिशत क्षमता पर उत्पादन करने का दावा करने के बावजूद तथा अन्य घरेलू विनिर्माता छोटे अल्पसंख्यक में होने के बावजूद भारत में संबद्ध सामान की भारी मांग मुश्किल से ही पूरा कर सकते हैं। अंतिम रूप से घरेलू बाजार में उभरते हुए तथाकथित नए व्यापारियों के बावजूद वे घरेलू उद्योग द्वारा सम्पूर्ण उत्पादन का 1 प्रतिशत से भी अधिक नहीं बनते जो स्वतः मात्रा बतलाता है।
- निर्यातकों द्वारा यह उल्लेख करते हुए प्रकट किए गए तथ्य कि भारत में उनके निर्यात के लिए उपलब्ध संबद्ध सामान बनाने के लिए चीन में घरेलू उद्योग को कोई सब्सिडी नहीं दी जा रही है, की तुलना में घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए की गई तथाकथित क्षति के बीच कोई कारणात्मक संपर्क नहीं है और इस पर प्राधिकारी द्वारा विचार किया जाना चाहिए।

छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

29. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुसार क्षति के संबंध में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों और घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों को ध्यान में रखा है।
30. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान समझौता ज्ञापन के अनुसार कीमत तीनों किस्मों की डिजिटल प्लेटों के लिए घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त की गई तथा सहमत निवल बिक्री वसूली (एन एस आर) से अधिक है। थर्मल एवं वायलट उत्पाद किस्मों के मामले में जांच की अवधि में "एन एस आर" जांच की अवधि के दौरान इन दो उत्पाद किस्मों के लिए निर्धारित एन आई पी से अधिक

है जो कोई कीमत ह्रास नहीं दर्शाता। इसके अतिरिक्त, जांच की अवधि के दौरान "थर्मल" डिजिटल प्लेटों के लिए क्षति मार्जिन नकारात्मक नोट किया गया है। जांच की अवधि के दौरान वायलट प्लेटों का आयात नहीं किया जा रहा है। घरेलू उद्योग डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों का मुख्य रूप से अलग किए जाने की प्रक्रिया में 22098 वर्ग मीटर की सीमा तक वायलट प्लेटों के रूप में दावे किए प्लेट्स व्यापक रूप से तापीय प्लेट थे, जिनका सत्यापन प्राधिकारी द्वारा किया गया था परंतु केवल 201 सेक्वायर मीटर की एक खेप वायलट श्रेणी की है जिसका सत्यापन प्राधिकारी द्वारा डी जी प्रणाली के आंकड़ों तथा मैसर्स कोडक से प्राप्त सदृश्य बीजक/ साक्ष्य के माध्यम से किया गया है।

31. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि उन दो उत्पाद किस्मों की कीमत कोडक द्वारा निर्यात से उनमुक्त रही जिस पर कोई पाटनरोधी उपाय नहीं थे तथा फुजीफिल्म ने भी यूरोपीय संघ और जापान में अपने अन्य उत्पादन संयंत्रों से थर्मल एवं वायलट, दोनों प्लेटों की आपूर्ति की। तथापि, यूवी-सीटीसीपी के मामले में जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त "एनएसआर" क्षति मार्जिन के सकारात्मक होने पर भी एनआईपी से नीचे ह्रासमान रहा।
32. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि के दौरान थर्मल और वायलट की घरेलू कीमतें वसूल की हैं जो कोई कीमत ह्रास नहीं दर्शाता। संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के सतत आयातों और गैर संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के आयातों से दो उत्पाद किस्मों अर्थात् वायलट और थर्मल के लिए जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग हेतु कीमत ह्रास नहीं हुआ है। इन दो उत्पाद किस्मों के लिए कोई गलत घोषणा भी घरेलू उद्योग द्वारा सूचित अथवा दावा नहीं की गई है।
33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी देश में किसी उत्पाद की कीमत विभिन्न प्रतिस्पर्द्धी स्रोतों से सिद्ध की जाती है, चाहे वे पाटित हों अथवा गैर पाटित। इसके अतिरिक्त, पाटनरोधी उपाय के अध्यधीन रखे जा रहे पाटित स्रोत की स्थिति में किसी देश में ग्राहक दूसरे स्रोतों अर्थात् घरेलू अथवा अन्य स्रोतों में बिना किसी पाटनरोधी उपाय के जा सकते हैं। इस मामले में, जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद की अवधि में गैर पाटित स्रोतों से संबद्ध सामानों के पहुँच मूल्य पर गैर संबद्ध स्रोतों से संबद्ध सामानों की कीमतों, पाटनरोधी उपाय के तहत न रखे गए उत्पादकों/ निर्यातकों के संबद्ध देश की कीमतों और घरेलू उद्योग की बिक्री पर उत्पाद किस्मों की गलत घोषणा के संभावित प्रतिकूल प्रभाव (मात्रा और मूल्य, दोनों) को ध्यान में रखते हुए जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद की अवधि में घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत न्यूनीकरण प्रभाव का विश्लेषण कर क्षति की किसी संभावना को सिद्ध करने के लिए विचार किया गया है।
34. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान उत्पाद किस्मों अर्थात् सीटीसीपी, तापीय और वायलट प्लेटों बहुत कम मात्रा का आयात हुआ है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि वायलट डिजिटल प्लेटों का आयात तथा चीन से कम मात्रा में आयात हुए हैं। तथापि, प्राधिकारी सहयोगी उत्पादकों/ निर्यातकों अर्थात् मैसर्स कोडक और डी जी प्रणाली द्वारा दायर आंकड़ों का सत्यापन करने के बाद नोट करते हैं कि उत्पादक प्रकार वायलट का वास्तव में *** वर्ग मीटर की मात्रा तक आयात किया गया है। अतः जांच की अवधि के दौरान संबद्ध सामानों के आयात केवल दो किस्मों अर्थात् थर्मल और यूवी-सीटीसीपी प्लेटों के हुए हैं।
35. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि जैसे उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संगत आर्थिक कारकों और तथ्यों पर नियमावली के अनुबंध-II (iv) के अनुसार विचार किया है। प्राधिकारी निम्नलिखित नोट करते हैं:

छ.3.1 पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

क. मांग एवं बाजार हिस्सा

36. भारत में उत्पाद की मांग अथवा खपत सभी भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्री की मात्रा तथा सभी स्रोतों से आयातों की मात्रा है, जैसा कि नीचे तालिका में निर्धारित किया गया है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री	वर्ग मीटर	21,451,992	23,610,884	24,913,963	26,603,132
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	वर्ग मीटर	539,076	568,037	546,798	559,514
संबद्ध देश से आयात	वर्ग मीटर	4,245,703	5,467,025	7,611,422	7,319,298
अन्य देशों से आयात	वर्ग मीटर	2,144,859	2,492,027	5,037,583	4,102,556
मांग/ खपत	वर्ग मीटर	28,381,630	32,137,973	38,109,765	38,584,500

मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	76	73	65	69
अन्य भारतीय उत्पादक	%	2	2	1	1
संबद्ध देश	%	15	17	20	19
अन्य देश	%	8	8	13	11
मांग/खपत	%	100	100	100	100

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग पूरी क्षति की अवधि के दौरान बढ़ी है। घरेलू मांग/ खपत में संबद्ध देश से आयातों का हिस्सा भी बढ़ा है। मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में दूसरी ओर आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है। हालांकि, चूंकि घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग 95 प्रतिशत से अधिक स्तर पर रहा है, अतः बाजार हिस्से में गिरावट को क्षमता संकुचन के संदर्भ में ही न कि पाटन के एक प्रतिकूल प्रभाव के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है।

ख. आयात मात्रा तथा संबद्ध देश का हिस्सा

38. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को इस पर विचार करने की अपेक्षा है कि क्या भारत में संपूर्ण मात्रा में अथवा उत्पादन या खपत के संबंध में पाटित आयातों में काफी वृद्धि हुई है। संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के आयात की मात्रा का विश्लेषण निम्नलिखित रूप में किया गया है:

आयात मात्रा	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
चीन जन. गण.	वर्ग मीटर	4,245,703	5,467,025	7,611,422	7,319,298
अन्य देश	वर्ग मीटर	2,144,859	2,492,027	5,037,583	4,102,556
कुल आयात	वर्ग मीटर	6,390,562	7,959,052	12,649,004	11,421,854
आयात में बाजार हिस्सा					
संबद्ध देश	%	66	69	60	64
अन्य	%	34	31	40	36
कुल आयात	%	100	100	100	100
भारतीय उत्पादन	वर्ग मीटर	24,476,404	25,539,456	27,938,007	29,128,095
मांग	वर्ग मीटर	28,381,630	32,137,973	38,109,765	38,584,500
के संबंध में संबद्ध देश से आयात-					
भारतीय उत्पादन	%	17%	21%	27%	25%
खपत	%	15%	17%	20%	19%

39. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से आयात की मात्रा जांच की अवधि में थोड़ी सी गिरावट को छोड़कर पूर्ण दृष्टि से क्षति की अवधि में बढ़ी है। अन्य देशों से आयात भी बढ़े हैं। संबद्ध देश से आयातों की मात्रा खपत एवं उत्पादन, दोनों के अनुपात के रूप में क्षति की अवधि में जांच की अवधि में थोड़ी सी गिरावट को छोड़कर बढ़ी है। आयात की मात्रा पर यूवी-सीटीसीपी प्लेटों को

एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत घोषित किए जाने पर उपयुक्त रूप से विचार करने के साथ डीजीसीआईएस के आंकड़ों के आधार पर विचार किया गया है। इसका वैधकरण एनालॉग के रूप में यू वी - सी टी सी पी प्लेटों पर विचार करने के लिए सीमा शुल्क प्राधिकारी द्वारा गलत घोषणा के रूप में विचार किए गए विवरण से किया गया है।

च.3.2 पाटित आयातों पर कीमत प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर प्रभाव

40. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में यह विश्लेषित किए जाने की अपेक्षा है कि क्या तथाकथित पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में काफी कीमत कटौती हुई है, अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों के ह्रास तथा कीमत वृद्धि को रोकने के लिए अन्यथा है जो अन्यथा सामान्य अवधि में हुई होती। संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत न्यूनीकरण एवं कीमत ह्रास, यदि कोई है, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजन के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री वसूली (एन एस आर) तथा क्षति रहित कीमत (एन आई पी) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच लागत से नीचे दिए गए अनुसार की गई है।

पाटित आयातों का कीमत न्यूनीकरण एवं ह्रास प्रभाव

41. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों का न्यूनीकरण अथवा ह्रास हो रहा है और क्या ऐसे आयातों का प्रभाव काफी मात्रा में कीमतों का न्यूनीकरण करना अथवा कीमत वृद्धि को रोकना है, जो काफी मात्रा तक हो गई होती, प्राधिकारी ने क्षति की अवधि में लागत एवं कीमत में परिवर्तनों पर विचार किया है। यह स्थिति निम्नलिखित तालिका के अनुसार दर्शाई गई है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
बिक्री की लागत	रु./वर्ग मीटर	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	101	101	98
बिक्री कीमत	रु./वर्ग मीटर	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	102	99	96
पहुँच कीमत	रु./वर्ग मीटर	295	275	254	237
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	93	86	81

बिक्री कीमत पहुँच कीमत और बिक्री की लागत से भी अधिक पर की गई है जो कीमत पर किसी प्रकार के दबाव को नहीं दर्शाता है।

42. प्राधिकारी ने तीन उत्पाद किस्मों के लिए अलग-अलग कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री का विश्लेषण किया है।

क) कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री

43. कीमत कटौती संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच कीमत की तुलना भारत में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से करके निर्धारित की गई है। प्राधिकारी ने संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई कम कीमत पर बिक्री संबंधी क्षति की भी जांच की है।

विवरण	यूनिट	2016-17 जांच की अवधि		
		सीटीसीपी	थर्मल	वायलट
आयातों की पहुँच कीमत	रु./ वर्ग मीटर	167	282.5	-
प्राप्त किया गया एनएसआर	रु./ वर्ग मीटर	***	***	***
एमओयू निर्धारित कीमत	रु./ वर्ग मीटर	***	***	***
क्षति रहित कीमत	रु./ वर्ग मीटर	***	***	***

कीमत कटौती (रेंज)	रु./ वर्ग मीटर	30 - 40	0 से (10)	-
कम कीमत पर बिक्री (रेंज)	रु./ वर्ग मीटर	50 - 60	(15 से 25)	-

जांच की अवधि के दौरान आयात किए गए वायलट प्लेटों की अल्प मात्रा पर विचार उपर्युक्त विश्लेषण में किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि तापीय और वायलट प्लेट की कीमत में कटौती और उसकी कम कीमत पर बिक्री दोनों नकारात्मक हैं।

च.3.3 घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मानदंडों की जांच

44. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा।

45. तदनुसार, घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मानदंडों का विश्लेषण यहां निम्नलिखित रूप में किया जाता है।

क) उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्री पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नलिखित है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
क्षमता	वर्ग मीटर	3,47,70,000	3,47,70,000	3,47,70,000	3,47,70,000
सूचीबद्ध		100	100	100	100
उत्पादन (विचाराधीन उत्पाद + गैर विचाराधीन उत्पाद)	वर्ग मीटर	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	100	102	101
उत्पादन - विचाराधीन उत्पाद	वर्ग मीटर	23,876,404	24,939,456	27,338,007	28,528,095
सूचीबद्ध		100	104	114	119
क्षमता उपयोग (विचाराधीन उत्पादन + गैर विचाराधीन उत्पादन)	%	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	100	102	101
घरेलू बिक्री	वर्ग मीटर	2,14,51,992	2,36,10,884	2,49,13,963	2,66,03,132
सूचीबद्ध		100	110	116	124
मांग/खपत	वर्ग मीटर	2,83,81,630	3,21,37,973	3,81,09,765	3,85,84,500

सूचीबद्ध		100	113	134	136
----------	--	-----	-----	-----	-----

46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने क्षति की अवधि में बहुत अधिक उच्च स्तर पर अपनी क्षमता का उपयोग किया है। घरेलू उद्योग की उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्री की मात्रा में क्षति की अवधि की तुलना में वृद्धि हुई है।

ख) मांग में बाजार हिस्सा

47. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव की निम्नलिखित रूप में जांच की गई है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में पूरी क्षति की अवधि में गिरावट आई है और अन्य भारतीय उत्पादकों का बाजार हिस्सा बहुत ही आंशिक स्तर पर रहा है। चीन जन. गण. से आयातों का बाजार हिस्सा पूरी क्षति की अवधि में बढ़ा है। अन्य देशों से आयातों का बाजार हिस्सा उसी स्तर पर रहा है और पूरी क्षति की अवधि में 10 प्रतिशत से कम है।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
घरेलू उद्योग	%	76	73	65	69
अन्य भारतीय उत्पादक	%	2	2	1	1
संबद्ध देश	%	15	17	20	19
अन्य देश	%	8	8	13	11
मांग/ खपत	%	28,381,630	32,137,973	38,109,765	38,584,500

जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट बढ़ती हुई मांग को देखते हुए घरेलू उद्योग के क्षमता संकुचन के कारण और न की पाटित आयातों के प्रतिकूल प्रभाव का एक संकेतक है।

ग) मालसूची

48. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार का औसत मालसूची स्तर संपूर्ण दृष्टि से तथा घरेलू उद्योग की कुल बिक्री के अनुपात के रूप में क्षति की अवधि में बढ़ा है। माल सूची में वृद्धि घरेलू उद्योग को क्षति के एक संकेतक के रूप में विचार करने के लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं है।

विवरण	यूओएम	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
औसत स्टॉक	वर्ग मीटर	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	84	110	129
घरेलू उद्योग की कुल बिक्री		23,493,354	25,083,738	26,498,569	28,131,448
घरेलू उद्योग की कुल बिक्री के अनुपात के रूप में मालसूची	%	10	8	10	11
सूचीबद्ध		100	78	98	108

घ) लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह

49. लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नलिखित है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
प्रति यूनिट लाभ/(हानि)	रु./वर्ग मीटर	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	116	64	62
लाभ/(हानि) – कुल	रु. लाख	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	127	74	77
नकद लाभ	रु. लाख	***	***	***	***
नकद लाभ (रु. लाख)	सूचीबद्ध	100	113	76	74
ब्याज और कर पूर्व लाभ	रु. लाख	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	107	74	65
नियोजित पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	92	67	60

50. आधार वर्ष से बाद के वर्ष तक वृद्धि के बाद उपर्युक्त मानदंडों के आधार पर घरेलू उद्योग के आर्थिक निष्पादन में गिरावट आई है। तथापि, प्राधिकारी ने इसका विश्लेषण किया है कि क्या जांच की अवधि के लिए निर्धारित एन आई पी से तुलना करने पर "एन एस आर" का ह्रास हुआ है। लाभप्रदता, नकद लाभ में यद्यपि कमी आई है परंतु उद्योग इसके लिए पात्र नहीं हो सकता है कि इसे पाटन के कारण हुई क्षति हुई है क्योंकि इस उद्योग का 'एन एस आर' उससे अधिक है जो एन आई पी है और इस कारण से इन मापदण्डों का यह आशय नहीं है कि घरेलू उद्योग को क्षति को क्षति हुई है।

ऊ) रोजगार एवं उत्पादकता

51. निम्नलिखित तालिका से यह नोट किया जाता है कि क्षति की अवधि में केवल आंशिक वृद्धि से रोजगार समान स्तर पर रहा है।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
रोजगार	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	102	103
उत्पादकता	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	112	116

रोजगार और उत्पादकता दोनों सूचकांकों को स्थिर और मजबूत के रूप में नोट किया गया है।

च) वृद्धि

52. निम्नलिखित तालिका यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग ने उत्पादन एवं बिक्री, दोनों के लिए सकारात्मक वृद्धि दर्ज की है। तथापि, क्षमता उपयोग, लाभप्रदता और निवेश पर आय जैसे अन्य मानदंडों ने वृद्धि के मामले में कम गिरावट दर्शाई है जो स्वतंत्र संख्याओं और उद्योग के लिए निर्धारित 'एन आई पी' और प्राप्त की गई 'एन एस आर' के संदर्भ में देखे जाने पर किसी क्षति के निष्कर्ष पर नहीं पहुंचते हैं।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
उत्पादन	%	-	4%	10%	4%
घरेलू बिक्री	%	-	10%	6%	7%
क्षमता उपयोग	%	-	0%	3%	-1%
प्रति यूनिट लाभ/(हानि)	%	-	16%	-45%	-3%
निवेश पर आय	%	-	-8%	-27%	-11%

छ) पूंजीगत निवेश बढ़ाने की क्षमता

53. घरेलू उद्योग की पूंजीगत निवेश बढ़ाने की क्षमता के संबंध में किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने कोई अनुरोध नहीं किए हैं। प्राधिकारी विभिन्न मापदण्डों को ध्यान में रखकर यह मानते हैं कि इस उद्योग को इसकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए इस आधार पर कोई नुकसान नहीं हुआ है।

ज) पाटन एवं पाटन मार्जिन (डीएम) का स्तर

54. प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातकों तथा शेष श्रेणी के लिए भी इस मामले में वास्तविक मैट्रिक में उपर्युक्त विचार किए गए सीमा तक विशिष्ट पाटन मार्जिन का मूल्यांकन किया है। इस संबंध में प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान परिदृश्य में चूंकि घरेलू उद्योग के लिए मूल्यांकन किए जाने वाले क्षति के मापदण्डों को बाद के पैरा में दिए गए विवरण के अनुसार पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने के समर्थन में नहीं पाया गया है, शेष श्रेणी के उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का मूल्यांकन अनावश्यक प्रतीत होता है। फिर भी, प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों तथा विचाराधीन उत्पाद के निर्यात किए गए प्रकारों के लिए यथा उपलब्ध सहयोगी उत्पादक/ निर्यातक के आंकड़ों के अनुसार कम से कम कीमत लेन देन के आधार पर इस प्रकार के श्रेणी के लिए पाटन मार्जिन/ क्षति मार्जिन का मूल्यांकन किया है। उसका सारांश नीचे दिया गया है।

	पाटन मार्जिन (रु./प्रति वर्ग मीटर)	पाटन मार्जिन % (रु./प्रति वर्ग मीटर)	पाटन मार्जिन % रेंज	क्षति मार्जिन (रु./प्रति वर्ग मीटर)	क्षति मार्जिन % (रु./प्रति वर्ग मीटर)	क्षति मार्जिन % रेंज
यू वी सीटी पी (सहयोगी सहित सभी उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए)	***	***	50 - 60	***	***	30 - 40
तापीय (शेष श्रेणी के लिए)	***	***	50 - 60	***	***	20 - 30
वायलट (शेष श्रेणी के लिए)	***	***	0 - 10	***	***	(0 - 10)

झ) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

55. प्राधिकारी ने संबद्ध देश और गैर संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू कीमतों के स्तरों का मूल्यांकन किया है और घरेलू बाजार में कीमतों की प्राप्ति में प्रयोक्ता एसोसिएशनों के साथ घरेलू उद्योग द्वारा हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के प्रभाव का भी मूल्यांकन किया है।

ख) क्षति एवं क्षति मार्जिन की मात्रा

56. प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अनुसार निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध सामानों की क्षति रहित कीमत की तुलना जांच की अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए संबद्ध देश के आयातों के पहुँच मूल्य के साथ की गई है तथा निकाला गया क्षति मार्जिन निम्नलिखित है:

तापीय प्लेट

उत्पादक/निर्यातक	प्लेट का प्रकार	पहुँच मूल्य अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर में	एनआईपी अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर में	क्षति मार्जिन अमेरिकी डॉलर/वर्ग मीटर	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन % रेंज
कोडक	तापीय	***	***	***	***	(0-10)
	वायलट*	***	***	***	***	(0-10)
लकी	तापीय	***	***	***	***	(20-30)

* प्रकटन के बाद की टिप्पणियाँ/ आंकड़े/ विश्लेषण के उत्तर में शामिल किया गया है।

ट) अन्य ज्ञात कारक एवं कारणात्मक संपर्क

57. घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभाव की जांच कीमत कटौती तथा कीमत ह्रास और ह्रासमान प्रभाव, भारतीय नियमावली के तहत अन्य निर्देशात्मक मानदंडों और पाटनरोधी संबंधी करार के अनुसार करने पर प्राधिकारी द्वारा यह देखने के लिए जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों के अलावा कोई अन्य कारक घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा सकते हैं जो निम्नलिखित हैं।

क) तीसरे देशों से आयातों की मात्रा तथा कीमत

58. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से आयातों में वृद्धि हुई है। तथापि, अन्य देशों से आयातों की मात्रा भारत में कुल आयातों के हिस्से के रूप में पूरी क्षति की अवधि में लगभग समान स्तर पर रही है। साथ ही, अन्य देशों से आयातों की मात्रा भारत में समग्र मांग के हिस्से के रूप में पूरी क्षति की अवधि में समान स्तर पर रही है तथा 15 प्रतिशत से कम है।

अन्य देशों का विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
बाजार हिस्सा	%	8	8	13	11
आयात मात्रा	वर्ग मीटर	2,144,859	2,492,027	5,037,583	4,102,556
आयात में बाजार हिस्सा	%	34%	31%	40%	36%

ख) मांग में परिवर्तन

59. क्षति की अवधि में संबंधित उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है। अतः यह मापदण्ड घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक कारण नहीं है।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
घरेलू उद्योग	%	75.58	73.47	65.37	68.95
अन्य भारतीय उत्पादक	%	1.90	1.77	1.43	1.45

संबद्ध देश	%	14.96	17.01	19.97	18.97
अन्य देश	%	7.56	7.75	13.22	10.63
मांग	वर्ग मीटर	28,381,630	32,137,973	38,109,765	38,584,500

उपर्युक्त तालिका भारत में संबद्ध सामानों की कुल मांग दर्शाती है। संबद्ध सामानों के लिए मांग बढ़ी है। चीन जन. गण. से आयातों के बाजार हिस्से में क्षति की अवधि में गिरावट आई है जबकि घरेलू बाजार ने जांच की अवधि में अपना बाजार हिस्सा भी खोया है। अन्य उत्पादकों का बाजार हिस्सा भी जांच की अवधि में कम हुआ है।

ग) प्रौद्योगिकी में विकास

60. संबंधित उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं आया है। इस प्रकार, प्रौद्योगिकी में विकास को घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचाने वाले कारक के रूप में नहीं माना जा सकता।

घ) प्रतिस्पर्द्धा की स्थितियां और व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटियां

61. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटी नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

ङ) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

62. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने यूवी-सीटीसीपी, थर्मल तथा वायलट के लिए क्रमशः 2.905, 3.992 और 4.359 के औसत एफओबी (अम.डॉ./वर्गमी.) पर तीनों उत्पाद किस्मों का निर्यात किया है। घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन निम्नलिखित है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 जांच की अवधि
घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री	वर्ग मी.	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	72	78	75

घरेलू उद्योग की तापीय और वायलट की निर्यात कीमतें संबद्ध देश से आयात कीमतों के अनुकूल हैं और इसलिए घरेलू उद्योग का यह तर्क की तापीय और वायलट प्लेट की कीमतें विश्वसनीय नहीं हैं, औचित्यपूर्ण नहीं है।

च) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बेचे गए अन्य उत्पादों का निष्पादन

63. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित किए जा रहे और बेचे जा रहे अन्य उत्पादों के निष्पादन से घरेलू उद्योग के निष्पादन का प्राधिकारी द्वारा किया गया मूल्यांकन प्रभावित नहीं हुआ है। प्राधिकारी द्वारा मानी गई सूचना केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में है।

छ. घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना का निर्धारण

छ.1 घरेलू उद्योग के विचार

64. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित विचार दिए गए हैं:

- वर्तमान निर्णायक समीक्षा नियम 23(1ख) के अनुसरण में शुरू की गई है जिसमें यह निर्धारित है कि माननीय प्राधिकारी के लिए, यदि शुल्क समाप्त किए जाते हैं, पाटन एवं क्षति के "जारी रहने अथवा बार-बार होने" की संभावना की जांच करना अपेक्षित है।
*"23. समीक्षा - (1) अधिनियम की धारा 9 क के उपबंध के अंतर्गत लगाया गया कोई पाटनरोधी शुल्क क्षति पहुँचाने वाले पाटन को समाप्त करने के लिए उस अवधि तक और उस सीमा तक लागू रहेगा।
(1ख) उप नियम (1) या (1क) में किसी बात के होते हुए भी अधिनियम के अंतर्गत लगाया गया कोई निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क उसके लगाए जाने की तारीख से 5 वर्ष की अवधि तक प्रभावी रहेगा बशर्ते निर्दिष्ट प्राधिकारी उक्त अवधि से पूर्व अपनी खुद की पहल पर या घरेलू उद्योग की ओर से किए गए विधिवत पुष्टिकृत अनुरोध के आधार पर उक्त अवधि समाप्त होने से पूर्व उचित*

अवधि के भीतर इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उक्त शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।" (जोर दिया गया)

- यह सिद्ध है कि कानूनी पत्र में स्पष्ट रूप से दो संभावित कारकों में से किसी एक कारक को सिद्ध किया जाना अपेक्षित है:

क. पाटन एवं क्षति का जारी रहना; अथवा

ख. पाटन एवं क्षति का बार-बार होना।

- वस्तुतः कानून में यह कहना एक घिसी-पिटी बात है कि पाटन एवं क्षति के जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना निर्णायक समीक्षा जांच में की जाने वाली प्राथमिक जांच है। माननीय प्राधिकारी ने विगत जांचों¹ में संभावना के आधार पर शुल्क जारी रखा, यहां तक कि यदि जांच की अवधि में और जांच की अवधि के बाद की अवधि में पाटन एवं क्षति मार्जिन नकारात्मक थे। इस बिंदु पर चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित जिंक ऑक्साइड के आयात पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा में अंतिम जांच परिणाम दिनांक 25 जून, 2013 से संगत पैराग्राफ नीचे दिया जाता है:

"85..... घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दों, दी गई सूचना और किए गए अनुरोधों तथा प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और पाटन एवं क्षति के जारी रहने की संभावना के विश्लेषण सहित उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर और घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात विवरण के संबंध में किए गए अनुरोधों के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं और सिफारिश करते हैं कि:

- i. उत्पादन, घरेलू बिक्री, बाजार हिस्सा, मालसूची और क्षमता उपयोग के संदर्भ में घरेलू उद्योग का निष्पादन जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक रहा है।
 - ii. लाभ, निवेश पर आय, नकद प्रवाह आदि के संदर्भ में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार आया है। तथापि, यद्यपि घरेलू उद्योग लाभ अर्जित कर रहा है, तथापि, इसकी लाभप्रदता में पूर्व वर्षों की तुलना में जांच की अवधि में गिरावट आई है।
 - iii. संबद्ध देश से संबद्ध सामान जांच की अवधि में पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में नहीं आ रहे हैं और पाटन मार्जिन नकारात्मक है।
 - iv. कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री पाटनरोधी शुल्क जोड़े बिना नकारात्मक है। इसके अतिरिक्त, क्षति मार्जिन भी नकारात्मक है और आयातों से जांच की अवधि में घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही है।
 - v. तथापि, चीनी घरेलू बाजार में संबद्ध सामानों के वास्तविक उत्पादन और खपत, निपटान योग्य क्षमता, भारत में चीनी उत्पादकों की निर्यातोन्मुखता तथा संभावित निर्यात मात्रा और चीनी उत्पादों के लिए भारतीय बाजार कीमत आकर्षकता के विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि संबद्ध देश में संबद्ध सामानों के उत्पादन के लिए अधिशेष निपटाय योग्य क्षमताएं हैं तथा पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में प्रत्यक्ष रूप से अथवा लगाने के माध्यम से पाटित कीमतों पर भारत में संबद्ध सामानों के निर्यात को बढ़ाने के लिए चीन जन. गण. में कंपनियों द्वारा उपयोग में लाई जा रही अधिशेष निपटान योग्य क्षमताओं की संभावना है।
 - vii. इस प्रकार, प्राधिकारी घरेलू उद्योग को संभावित क्षति समाप्त करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा दिनांक 07 मई, 2007 की अपनी अधिसूचना संख्या 64/2007-सीमा शुल्क द्वारा संबद्ध देश से संबद्ध सामानों पर लगाए गए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की सिफारिश रखना आवश्यक समझते हैं।
- इस तथ्य को भी ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि क्षति के जारी रहने अथवा उसके बार-बार होने, दोनों अंतर्निहित रूप से पारस्परिक रूप से विशिष्ट स्थितियां हैं। यदि पाटन एवं क्षति जारी रहने का मामला है, तो संभवतः पाटन एवं क्षति बार-बार होने की संभावना नहीं हो सकती क्योंकि पाटन एवं क्षति के बार-बार होने के लिए पाटन के बार-बार होने का अभाव अपेक्षित है। यह तार्किक रूप से अपनाता है कि एक बार पाटन एवं क्षति का जारी रहना सिद्ध हो गया है तो उसके बार-बार होने की संभावना सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। इस स्थिति का माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी² द्वारा पूर्व जांच में समर्थन किया गया है।

70. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में चीन जन. गण. से संबद्ध सामानों का सतत है जो घरेलू उद्योग को निरंतर क्षति पहुंचा रहा है जो यथा तथ्यतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देश से पाटन एवं क्षति की संभावना दर्शाता है। उपर्युक्त स्थितियों के मद्देनजर और जहां तक संबद्ध सामानों के लिए मांग और कीमत का संबंध है, भारतीय बाजार में विद्यमान अनुकूल बाजार स्थितियों के कारण प्राधिकारी के पास यह विश्वास करने का कारण है कि पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने की स्थिति में चीन जन. गण. से पाटन गहन हो सकता है। इसके अतिरिक्त, चीन जन. गण. विश्व में संबद्ध सामानों का प्रमुख उत्पादक होने के नाते और भारत में एक मात्र निर्यातक होने के नाते तथा चीनी आयातों

¹ चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित जिंक ऑक्साइड के आयात पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा में अंतिम जांच परिणाम दिनांक 25 जून, 2013 पैरा 85

² चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित बेरियम कार्बोनेट के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्कों की अंतिम जांच परिणाम निर्णायक समीक्षा (एसएसआर), अधिसूचना संख्या 15/27/2014-माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी दिनांक 23 फरवरी, 2016 पैरा 70

के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत द्वारा पाटनरोधी शुल्क बंद किए जाने/हटाए जाने की स्थिति में पूरी भारतीय मांग चीनी आयातों द्वारा पूरी की जा सकती है और घरेलू उद्योग को बाजार से बाहर होना पड़ सकता है। यद्यपि संभावना संबंधी विश्लेषण इस प्रकार के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को सतत पाटन एवं सतत क्षति के कारण वर्तमान समीक्षा जांच में एक आवश्यकता नहीं है। तथापि, प्राधिकारी ने इस तर्क को पुनः बल देने के लिए निम्नलिखित संभावना संबंधी विश्लेषण किए हैं कि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क को बंद करने/हटाने से गहन पाटन एवं क्षति हो सकती है"। (जोर दिया गया)

- उपर्युक्त कानूनी स्थिति के मद्देनजर, पहले ही रिकार्ड में रखी गई सूचना तथा पर्याप्त अनुरोधों पर विश्वास किया जाता है जो पर्याप्त रूप से सिद्ध करते हैं कि पाटन और क्षति शुल्क लगाए जाने के बाद भी जारी रहे। अतः याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि उपर्युक्त का जारी रहना नियम 23 की अपेक्षाओं को पर्याप्त रूप से पूरा करता है और अब याचिकाकर्ता पर क्षति के बार-बार होने को सिद्ध करने का भी कोई भार नहीं रहना चाहिए।
- उपर्युक्त के पूर्वाग्रह के बिना याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि पाटन एवं क्षति के जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना सिद्ध करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं। यद्यपि संभावना के मानदंड पाटनरोधी नियमावली में स्पष्ट रूप से चिन्हित नहीं किए गए हैं, तथापि, अनुबंध-II के पैरा vii का निर्बचन³ संभावना के कारकों पर शासित होने वाले प्रावधान के रूप में किया गया है। यह पैरा निम्नलिखित है:

“(vii) वास्तविक क्षति की आशंका का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होगा और न कि आरोप, निराधार कल्पना या सुदूर संभावना पर। परिस्थितियों में परिवर्तन जिनसे ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जिनमें पाटन से क्षति होगी, स्पष्ट रूप से दिखने चाहिए और असन्नवर्ती होने चाहिए। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के संबंध में निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे कारकों पर विचार करेंगे और;

- (क) भारत में पाटित आयातों में वृद्धि की अधिक दर जिससे आयातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।
- (ख) निर्यातक की क्षमता में पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य, या आसन्नवर्ती, पर्याप्त वृद्धि जिनसे किसी अतिरिक्त निर्यात को खपाने के लिए अन्य बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में पाटित निर्यातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।
- (ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं, जिनसे घरेलू कीमतों पर काफी हासकारी या न्यूनकारी प्रभाव पड़ेगा और इनसे अधिक उत्पादों की मांग बढ़ने की संभावना है तथा
- (घ) उस वस्तु की वस्तु सूची की जांच की जा रही हो।”

- तदनुसार, माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने हाल की निर्णायक समीक्षा जांचों में अपने संभावना विश्लेषण के भाग के रूप में उपर्युक्त मानदंडों की जांच की है। कतिपय रबर केमिकल निर्णायक समीक्षा⁴ तथा सोडियम नाइट्राइट निर्णायक समीक्षा⁵ में जारी किए गए अपने जांच परिणाम में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने संभावना के निम्नलिखित आधारों पर शुल्क जारी रखे:
 - i. बढ़े हुए आयात की संभावना दर्शाते हुए संबद्ध आयातों की वृद्धि हुई थी।
 - ii. घरेलू उद्योग ने संबद्ध देश में वे अतिरिक्त क्षमताएं दर्शाते के लिए पर्याप्त साक्ष्य दायर किए जिनके यदि शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो भारत में जाने की संभावना है।
 - iii. प्रत्येक संबद्ध रबर केमिकल के मामले में पाटनरोधी शुल्क के बिना जांच की अवधि के दौरान कीमत कटौती हुई, जबकि वह उत्पाद क्षेत्र के भाग के लिए पाटनरोधी शुल्क के साथ सकारात्मक थी – यह भी न्यूनीकरण/हासमान प्रभाव दर्शाता है।
 - iv. रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों में जांच की जा रही वस्तुओं की मालसूची के संबंध में कोई निर्भर योग्य साक्ष्य नहीं है।
- उपर्युक्त मानदंडों के अलावा, माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने हाल की जांच⁶ में अन्य मानदंडों का भी विश्लेषण किया है:

³ निरमा लिमिटेड बनाम भारत संघ तथा अन्य, 2017 (358) ईएलटी 146 (गुजरात) दिनांक 23 फरवरी, 2017 में माननीय गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा माना गया है, पैराग्राफ 33.9, 33.9, 34 और 40

⁴ यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित कतिपय रबर केमिकल यथा – टीडीक्यू एवं पीएक्स – 13 और चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एमओआर एवं एमबीटीएस के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा जांच के मामले में अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना संख्या फा. सं. 15/5/2016-डीजीएडी दिनांक 02 सितंबर, 2017 पैरा 172 से 174

⁵ चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सोडियम नाइट्राइट के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा में अंतिम जांच परिणाम, अधिसूचना संख्या फा. सं. 15/06/2016/माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी दिनांक 19 जुलाई, 2017 पैरा 85 से 89

- i. पूर्व जांचों में पाटन मार्जिन
- ii. भारतीय बाजार की कीमत आकर्षकता
- iii. उत्पाद एवं भारतीय बाजार की कीमत संवेदनशीलता के संदर्भ में घरेलू उद्योग की सुभेद्यता।
- उपर्युक्त प्रत्येक मानदंड का हाल की जांचों तथा घरेलू उद्योग द्वारा रिकार्ड में रखी गई सूचना के मद्देनजर तदनुसार विश्लेषण किया गया है।

(क) पर्याप्त रूप से बड़े हुए आयात की संभावना दर्शाने वाले पाटित आयातों की वृद्धि की पर्याप्त दर।

- याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी का ध्यान क्षति के खंड में आयात आंकड़ों के विश्लेषण पर आकर्षित करते हैं जो यह दर्शाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में चीन जन. गण. से 69 प्रतिशत तक आयातों की वृद्धि हुई है।
- यह कि चीनी आयात गहन पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार को चोट पहुँचायेंगे, भी एलएमई और एसएचएफई कीमतों के बीच बढ़ती हुई खाई से सिद्ध है। एलएमई कीमतें 2017 की पहली तिमाही से उत्तर की ओर जा रही हैं और अक्तूबर-दिसंबर, 2017 में वह 2219 अमेरिकी डॉलर प्रति मी. टन तक पहुँच गई अर्थात् अप्रैल-जून, 2014 की ऊँचाई तक पहुँच गई। इसके अतिरिक्त, चीन जन. गण. से एल्युमीनियम के आयातों पर हाल के अमेरिकी प्रशुल्क से एसएचएफई की कीमतें (जो विशिष्ट रूप से एलएमई से कम हैं) और अधिक घट गई⁷। इसका अर्थ यह है कि चीन जन. गण. में विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत और कम हो जाएगी जबकि भारत में उत्पादन लागत एलएमई की कीमतों के अधिक होने से बढ़ जाएगी। अतः यह संभावना कि पाटनरोधी शुल्क रद्द किए जाने पर पाटित कीमतों पर आयातों की और वृद्धि होगी, आसन्न है। पाटनरोधी शुल्क न बढ़ाए जाने से याचिकाकर्ता आज जिस स्थिति में हैं, उससे अधिक सुभेद्य स्थिति में आ जाएगा।
- माननीय प्राधिकारी नोट करेंगे कि फुजीफिल्म (चाइना) ने पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद चीन से विचाराधीन उत्पाद का निर्यात रोक दिया है। तथापि, फुजीफिल्म ने अपने निर्यात यूरोपीय संघ से बदल दिए और शीघ्र ही महसूस किया कि वह अपना व्यापार नीदरलैंड से पूर्व की चीनी कीमतों पर जारी नहीं रख सकता तथा कीमतें 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक बढ़ाने का निर्णय लिया। माननीय प्राधिकारी इसे कुछ प्रयोक्ता उद्योगों अथवा स्वयं फुजीफिल्म से भी सत्यापित कर सकते हैं। अतः यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो यह स्पष्ट है कि फुजीफिल्म पाटित कीमतों पर चीन से निर्यात करने लगेगा।

(ख) कठोर घरेलू उद्योग को व्यापार उपचारात्मक उपायों की अपेक्षा है

- जिन देशों में विचाराधीन उत्पाद के अर्थक्षम उत्पादक हैं, वहां व्यापारिक उपचारात्मक उपाय लगाए गए हैं/बढ़ाए गए हैं। चीन जन. गण. से डिजिटल प्लेटों का आयात ब्राजील और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में पाटनरोधी शुल्क के अध्येक्षित किया गया है। वस्तुतः ब्राजील ने चीन जन. गण. से आयातों के संबंध में हाल ही में की गई निर्णायक समीक्षा में अगले पांच वर्षों के लिए पाटनरोधी शुल्क बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, हाल ही में 2017 में चीन जन. गण. से डिजिटल प्लेटों के आयातों पर दक्षिण कोरिया में भी पाटनरोधी शुल्क लगाए गए हैं। दक्षिण कोरिया और ब्राजील द्वारा लागू किए गए पाटनरोधी उपायों से यदि भारत में पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो चीनी निर्यातक स्वाभाविक रूप से भारत में भारी मांग के कारण भारत को इन बाजारों से अपने निर्यात करेंगे। दूसरे शब्दों में, इन शुल्कों के प्रचालन के कारण (जो चीनी उत्पादकों के लिए निर्यात बाजार सीमित करते हैं) भारत पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने पर आसान लक्ष्य बन जाएगा।
- इसके अतिरिक्त, यह तथ्य कि चीनी उत्पादक अपनी अतिरिक्त क्षमताओं को ग्राहक की मनमर्जी कीमतों पर उतारना चाह रहे हैं, भी चीन जन. गण. से एक प्रमुख उत्पादक से याचिकाकर्ता द्वारा प्राप्त कोटेशनों से सिद्ध है। कोटेशन का एक अवलोकन यह दर्शाएगा कि चीनी उत्पादक *** अमेरिकी डॉलर से *** प्रति वर्ग मीटर की रेंज में यूवी-सीटीपी तथा थर्मल प्लेटें पेश कर रहा है जो याचिकाकर्ता की निवल बिक्री वसूली से बहुत कम है।
- इसके अतिरिक्त, चीन जन. गण. से अफ्रीका एवं सार्क जैसे कतिपय अन्य बाजारों को निर्यात कीमत का विश्लेषण यह दर्शाएगा कि ये कीमतें उन कीमतों से कम हैं जिन पर भारत में आयात किया जा रहा है। चीन जन. गण. से इन कुछ चुनिंदा बाजारों को निर्यात कीमतों संबंधी आंकड़े। निहित सूचना का अवलोकन यह दर्शाएगा कि कुछ चीनी उत्पादक *** अमेरिकी डॉलर से *** अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ग मीटर की रेंज में यूवी-सीटीपी और थर्मल प्लेटों की बिक्री कर रहे हैं जो याचिकाकर्ता की वर्तमान निवल बिक्री वसूली से बहुत कम है।
- अतिरिक्त रूप से, यद्यपि संदर्भ रूप में पाटनरोधी शुल्क थर्मल और वायलट प्लेटों के संबंध में याचिकाकर्ता को कुछ सीमित राहत प्रदान करने में सक्षम रहा है, तथापि, तीसरे देशों में चीनी उत्पादकों का कीमत संबंधी व्यवहार स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि

⁶ चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "पॉलीटेट्राफ्लोरोथिलीन अथवा पीटीएफई" के आयातों के संबंध में लागू पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा (एसएसआर) में अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना संख्या 15/11/2016-डीजीएडी दिनांक 23 जून, 2017 पैरा 69 से 80

⁷ भावी क्षमता कटौती के संबंध में स्पष्टता के अभाव में एसएचएफई एल्युमीनियम कीमतों में गिरावट, 07 मार्च, 2018 <https://www.fastmarkets.com/base-metals-news/aluminium/shfe-aluminium-prices-dip-lack-clarity-regarding-future-capacity-cuts/>

पाटनरोधी शुल्क के अभाव में घरेलू उद्योग चीनी उत्पादकों द्वारा पेश की गई कम कीमतों (कम एसएचएफई, सरकारी सहायता तथा भारी अधिशेष क्षमताओं द्वारा समर्थित) से मेल नहीं खा पाएगा। यह कि चीनी पाटित कीमतों के सामने व्यापार को अर्थक्षम बनाए रखना संभव नहीं है। यह फुजीफिल्म (नीदरलैंड) के निर्णय से सिद्ध है, जब उसने यह पाया कि वह चीनी कीमतों से प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकता और अपनी कीमतें 30 प्रतिशत तक बढ़ाने का इरादा किया। चीन की कम कीमतों से अत्यधिक दबाव के कारण फुजीफिल्म (नीदरलैंड) अपनी कीमतें नहीं बढ़ा पाया और भारतीय बाजार से पीछे हट गया। इस मुद्दे की भारतीय माननीय प्राधिकारी द्वारा जांच की जा सकती है और प्रयोक्ता उद्योग द्वारा संगत सूचना मांगी जा सकती है।

- यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाएं तो चीनी उत्पादक अपना पाटन गहन करने जा रहे हैं और बहुत ही निचली कीमतों पर भारतीय बाजार में सामान की बाढ़ लगाई हुई है। एलएमई कीमतों में वृद्धि से याचिकाकर्ता के लिए चीन जन. गण. से कीमतों के साथ मेल करना असंभव होगा और इस प्रकार, घरेलू उद्योग को अपूर्ण क्षति होगी और वह समाप्त हो जाएगा।

(ग) *संबद्ध देश में पर्याप्त निपटान योग्य क्षमताओं (अथवा क्षमताओं में आसन्न वृद्धि) से आयात बढ़ेगा।*

- याचिकाकर्ता के पास उपलब्ध बाजार सूचना के अनुसार, चीन जन. गण. में भारी अतिरिक्त और बेकार क्षमता उपलब्ध है। ये क्षमताएं चीन जन. गण. में कुल खपत से कहीं अधिक हैं। संबद्ध सामानों के लिए कुल भारतीय बाजार लगभग 38 मिलियन वर्ग मीटर प्रति वर्ष है। चीन जन. गण. में उत्पादकों के पास उपलब्ध अतिरिक्त क्षमता भारत में कुल घरेलू मांग से अधिक है। चीनी उत्पादकों के क्षमता आंकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाएगा कि चीनी वार्षिक क्षमता लगभग 381 मिलियन वर्ग मीटर है, जबकि इसके विपरीत घरेलू खपत लगभग 150 से 200 मिलियन वर्ग मीटर की है। इसका अर्थ यह है कि चीन जन. गण. के पास लगभग 180 से 230 मिलियन वर्ग मीटर की अधिशेष क्षमता है जिसका एक भाग पाटित कीमतों पर पहले ही निर्यात किया जा रहा है। यह स्पष्ट है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर चीनी उत्पादक इस अधिशेष क्षमता को भारत में ग्राहक की मनमर्जी की कीमतों पर उसी तरह पाटित करेंगे जैसे वे उन अन्य निर्यात बाजारों में करते आए हैं, जहां पाटनरोधी शुल्क नहीं हैं।
- पिछले 15 वर्षों में वैश्विक प्लेट उद्योग परिदृश्य में भारी परिवर्तन आया है। चीन जन. गण. में नई प्लेट विनिर्माण क्षमताएं पर्याप्त रूप से शामिल की गई हैं जो अब लगभग 381 मिलियन वर्ग मीटर हैं जो वैश्विक मांग की लगभग 60 प्रतिशत हैं। चीन जन. गण. में विद्यमान एनएमई स्थितियों द्वारा समर्थित चीनी विनिर्माताओं द्वारा अपनाई गई उनकी कीमत परिपाटियों से चीनी विनिर्माता भारत सहित विभिन्न देशों में बाजार हिस्सा लेने में समर्थ हैं। इसके परिणामस्वरूप, यूरोप एवं अन्य देशों में कई प्लेट विनिर्माताओं ने अपना काम बंद कर दिया है। ब्राजील एवं कोरिया में स्थित स्थानीय विनिर्माताओं जैसे विनिर्माताओं वाले कुछ देशों में संबंधित प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क के रूप में अधिक संरक्षण दिया है।
- चीन की अतिरिक्त क्षमता इस तथ्य से भी सिद्ध है कि चीन जन. गण. से 9 उत्पादकों ने ब्राजीली पाटनरोधी जांच में भाग लिया, जबकि केवल 3 उत्पादकों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में भाग लिया। इसके अतिरिक्त, कोरियाई बाजार में विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग के लगभग 70 प्रतिशत की पूर्ति चीनी आयातों द्वारा की जा रही है। कोरिया का बाजार आकार लगभग 111 मिलियन अमेरिकी डॉलर है। यह चीनी उत्पादकों के पास उपलब्ध भारी क्षमताएं दर्शाता है। बढ़ती हुई प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच से आरआईएसआई विश्लेषकों ने यह पूर्वानुमान लगाया है कि चीन जन. गण. के लिए न्यूज प्रिंट के लिए मांग अगले 10 वर्षों में 7.6 प्रतिशत तक गिर जाएगी और प्रिंटिंग एवं राइटिंग पेपर की मांग 0.7 प्रतिशत प्रति वर्ष घट जाएगी जिससे कुल 3.5 मिलियन टन की मांग हानि होगी। यदि भारत में पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो चीन जन. गण. में और दो प्रमुख बाजारों अर्थात् ब्राजील और कोरिया में पाटनरोधी शुल्क के माध्यम से रोके जाने के नाते, घरेलू न्यूज प्रिंट और प्लेट खपत में गिरावट से चीनी उत्पादकों के पास अधिशेष क्षमता है जिसे वे ग्राहक की मनमर्जी की कीमतों पर बाजार में उतारेंगे।

(घ) *संबद्ध देश से उत्पादकों की निर्यातानुसूचना*

- चीन जन. गण. में अतिरिक्त क्षमताओं का उपयोग दो मुख्य कारणों से भारत में बाजार को लक्ष्य बनाने के लिए अधिक संभावित रूप से किया जाता है। प्रथमतः चीन जन. गण. में मांग स्वयं ही पर्याप्त रूप से कम हो रही है। आरआईएसआई विश्लेषणात्मक आंकड़ों के अनुसार (ऊपर दर्शाए गए) संबंधित सामानों की चीन जन. गण. में मांग में गिरावट आ रही है। इसे सिद्ध करने के लिए संगत आरआईएसआई रिपोर्ट माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचारार्थ पहले ही रिकार्ड में रख दी गई है। ऐसे परिदृश्य में चीन जन. गण. में उत्पादकों को अतिरिक्त उत्पादन के निपटान के लिए अन्य वैकल्पिक बाजार देखने होते हैं। भारत चीनी उत्पादकों के लिए एक स्वाभाविक विकल्प होगा क्योंकि भारत में मांग भविष्य में काफी सशक्त रहेगी। दूसरे, जैसा कि ऊपर कहा गया है, कोरिया और ब्राजील पर चीन जन. गण. से विचाराधीन उत्पादों के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगने से चीनी उत्पादक पाटनरोधी शुल्क के अभाव में अपना निर्यात भारत में करेंगे।

(ङ) *कीमत न्यूनीकरण अथवा ह्रास*

⁸ चीन की न्यूज प्रिंट की मांग अगले दशक में 7.6 प्रतिशत तक कम होने की आशा है, 30 नवंबर, 2015 <http://www.wan-ifa.org/articles/2015/12/01/china-s-newsprint-demand-expected-to-decline-by-76-percent-per-year-over-next-de>

- जैसा कि ऊपर क्षति संबंधी विश्लेषण में सिद्ध किया गया है, क्षति की अधिकतर अवधि तथा जांच की अवधि में पर्याप्त कीमत कटौती पाई गई है। इससे उल्लेखनीय कीमत न्यूनीकरण तथा ह्रास हुआ है, जैसा कि ऊपर भी दर्शाया गया है।

(च) जांच की जा रही वस्तुओं की मालसूची

- यद्यपि याचिकाकर्ता के पास चीन जन. गण. से विशिष्ट उत्पादकों के पास उपलब्ध मालसूची के संबंध में सीमित सूचना है, तथापि, विभिन्न सहयोगी उत्पादक (जो चीन जन. गण. में उत्पादकों के प्रमुख हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं) परिशिष्ट-4 में इस सूचना को दायर कर सकते थे तथा उसका माननीय प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया जा सकता था। हम माननीय प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे चीन जन. गण. से उत्पादकों के पास उपलब्ध मालसूची का मूल्यांकन करने के लिए उस पर विचार करें।

(छ) भारतीय बाजार की कीमत आकर्षकता

- संबद्ध सामानों का भारत में आयात घरेलू कीमत से काफी कम कीमत पर किया जा रहा है। वसूल की गई वास्तविक कीमतों के संदर्भ में भारत को एक आकर्षक बाजार नहीं होना चाहिए। चीनी निर्यातक कोई अन्य आकर्षक बाजार उपलब्ध न होने के कारण बहुत कम कीमतों पर विचाराधीन उत्पाद का पाटन निरंतर कर रहे हैं।

(ज) उत्पाद एवं भारतीय बाजार की कीमत संवेदनशीलता के संदर्भ में घरेलू उद्योग की सुभेद्यता

- विचाराधीन उत्पाद के लिए बाजार प्रभाव कीमत से काफी प्रभावित होते हैं अर्थात् बाजार बहुत ही कीमत संवेदनशील है। यह याचिकाकर्ता द्वारा ऊपर दिए गए बाजार हिस्से के विश्लेषण से स्पष्ट रूप से देखा जाता है। संबद्ध आयात अपनी कीमत कटौती के कारण याचिकाकर्ता के बाजार हिस्से का लगभग 6 प्रतिशत लेने में सक्षम रहे हैं। इसके अतिरिक्त, इस कीमत कटौती से याचिकाकर्ता के लिए लाभप्रदता में काफी गिरावट आई है – इसको भी ऊपर दिए गए लाभ विश्लेषण से सिद्ध किया जा सकता है।
- जिन कई ग्राहकों ने वर्ष 2014-15 और 2015-16 के दौरान याचिकाकर्ता से खरीददारी की, उन्होंने उनसे प्राप्त कीमत पूछताछ के प्रस्ताव बार-बार होने के बावजूद जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ता से खरीददारी नहीं की। यह इसलिए नहीं है कि उन्होंने विचाराधीन उत्पाद का प्रयोग करना बंद कर दिया है। यह संभावना है कि उन्होंने चीन से गलत घोषित सस्ते सामानों का विकल्प लिया।
- याचिकाकर्ता यह भी अनुरोध करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क के अभाव में पूरा घरेलू उद्योग पूरी निश्चिंतता के साथ प्रचालन बंद कर देंगे। याचिकाकर्ता तीसरे देशों के बाजारों में चीनी उत्पादकों की कीमत व्यवहार, चीनी उत्पादकों को उपलब्ध भारी अधिशेष तथा भारत में बढ़ती हुई मांग पर विश्वास करते हैं। तीसरे देशों में चीनी निर्यात कीमतों के संबंध में आंकड़े पहले ही दिनांक 12 मार्च, 2018 के लिखित अनुरोध का भाग हैं। इसके अतिरिक्त, चीनी उत्पादकों से याचिकाकर्ता द्वारा कोटेशन प्राप्त किए गए। उपर्युक्त सूचना का अध्ययन यह दर्शाएगा कि चीनी उत्पादक बाजार अर्थव्यवस्था में प्रचालन करने पर जो कीमतें पूर्णतः अवास्तविक हैं, उन कीमतों पर यूवी-सीटीपी, थर्मल और वायलट प्लेटों की पेशकश करने को तैयार हैं। ये कीमतें भी घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम हैं। इस समय याचिकाकर्ता चीनी उत्पादकों की अनुचित परिपाटी से पाटनरोधी शुल्क के संरक्षण के तहत प्रचालन कर रहा है (यहां तक कि यद्यपि इस संरक्षण को यूवी-सीटीपी प्लेटों को एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत घोषित करने के माध्यम चीनी उत्पादकों द्वारा व्यापक रूप से टाला गया है)। यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो चीनी उत्पादक उन कीमतों पर सभी प्रकार की प्लेटों अर्थात् यूवी-सीटीपी, थर्मल और वायलट का पाटन करने के लिए स्वतंत्र होंगे जो कि याचिकाकर्ता की बिक्री लागत से कहीं कम होंगी। चीनी उत्पादकों द्वारा पाटन, एलएमई कीमतों के उत्तर में जाने तथा एसएचएफई के दक्षिण में जाने, जिसे चीनी सरकार से कई प्रोत्साहनों द्वारा सहायता है, के आलोक में और भी बढ़ जाएगा। याचिकाकर्ता का समाप्त होना निचले स्तर के प्रयोक्ता उद्योग, विशेषकर वाणिज्यिक प्रिंटिंग एवं समाचार पत्र प्रिंटिंग की स्थिति और प्रतिस्पर्धा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- यह कि चीनी उत्पादकों की अनुचित परिपाटियों में कई देशों में स्थानीय बाजारों को नष्ट किया है, इस तथ्य से सिद्ध है कि यूरोप और उत्तरी अमेरिका में कई देश, जिनके पास पूर्व में अच्छा स्थानीय विनिर्माण उद्योग था, आज व्यापक रूप से चीनी आयातों पर निर्भर हैं जो दो दशक पीछे प्रिंटिंग प्लेटों में वैश्विक बाजार में छोटा सा हिस्सा रखते थे। यदि चीनी उत्पादकों की अनुचित व्यापार परिपाटियों को रोकने के लिए लगाए गए पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो भारत स्थानीय विनिर्माता बने रहने में अमसर्थ होगा, दूसरे उद्योग भारी आपदा में होंगे जिससे रोजगार की हानि होगी जो कि कुछ "मेक इन इंडिया" अभियान के उद्देश्यों के लिए बाधक होगा।
- उपर्युक्त कारक यह दर्शाते हैं कि याचिकाकर्ताओं तथा बाजार में नए प्रवेशकों को एक सुभेद्य स्थिति में हैं तथा संबद्ध देश से पाटन एवं पूर्वी आयातों से सतत संरक्षण की आवश्यकता है।
- जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है, पाटनरोधी नियमावली के तहत संगत माने गए सभी मानदंड और माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी की निर्णायक परिपाटी यह दर्शाती है कि यदि वर्तमान शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो पाटन एवं क्षति के जारी रहने अथवा बार-बार होने की प्रबल संभावना है।

क. पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति के परिणाम

(क) घरेलू उद्योग की बंदी

- ऐतिहासिक साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि चीन से पाटन के कारण विश्व भर में संयंत्रों की बंदी हुई है। बाजार आसूचना के आधार पर यह देखा जाएगा कि पूरे विश्व में एक दशक पूर्व सौ से अधिक प्रिंटिंग प्लेट उत्पादक थे और चीन में कोई नहीं था। पिछले 10 वर्षों में चीन सरकार की गैर बाजार परिपाटी द्वारा समर्थित आक्रामक पाटन से विश्व भर में प्लेट विनिर्माता 10 से भी कम हो गए हैं, जबकि चीन में प्लेट उत्पादकों में भारी वृद्धि देखी है। आज चीनी क्षमता लगभग 500 मिलियन वर्ग मीटर है जो एक दशक पूर्व विश्व बाजार में छोटे से हिस्से के विपरीत वैश्विक क्षमता का लगभग 70 प्रतिशत है।

छ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

65. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- तथाकथित रूप से पाटित चीनी आयातों के लिए मूल जांच में निर्धारित संदर्भ कीमत शुल्क को अपनाने वाले घरेलू उद्योग को कोई क्षति होने की संभावना नहीं है और यह तथ्य घरेलू उद्योग की कीमतों तथा आयात संदर्भ कीमतों से कहीं कम हैं।
- घरेलू उद्योग चीन में भारी बेकार क्षमताओं का दावा करने के संबंध में कोई साक्ष्य देने में विफल रहा है।
- घरेलू उद्योग द्वारा खोए आदेशों के संबंध में असिद्ध एवं खोखले दावे किए गए हैं। खोए आदेशों का दावा, यदि कोई है, घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री के सख्त विपरीत है। घरेलू उद्योग का उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग काफी बढ़ा है।
- किसी अन्य देश (ब्राजील) ने शुल्कों का भारतीय बाजार में चीन के निर्यातों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
- चीन में संबद्ध सामानों के लिए मांग में गिरावट का दावा करने के लिए कोई विश्वसनीय आधार नहीं है।
- घरेलू मांग में और संबद्ध सामानों के घरेलू चीनी उत्पादकों की घरेलू बिक्री में भी वृद्धि है।
- यदि मौजूदा शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो पूंजी निवेश परिश्रम और नई प्रौद्योगिकियों का विकास, कामगारों का रोजगार, बैंकों के बकाया ऋण, सभी हमेशा के लिए समाप्त हो जाएंगे। नई प्रौद्योगिकियों का विकास करने के लिए घरेलू विनिर्माताओं की गति नष्ट हो जाएगी।
- घरेलू विनिर्माताओं के विनाश से स्थानीय प्रिंटिंग उद्योग को गंभीर क्षति होगा, क्योंकि फिर भारतीय प्रिंटिंग उद्योग चीन से आयातों की दया पर होगा।

प्राधिकारी द्वारा जांच

- प्राधिकारी जांच की अवधि के पूर्व के दो वर्षों तथा जांच के अवधि के बाद की अवधि में भी मैसर्स केसीजीसीसीएल द्वारा निर्यात कीमतों की प्रवृत्ति नोट करते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान विभिन्न ग्रेडों के भारत के सिवाय अन्य देशों में निर्यातक की कीमतें औसत रूप से भारत में उन कीमतों से अधिक हैं जो पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने पर भारत में आयातों की संभावना न दर्शाएँ। इसके अतिरिक्त, कोडक के मामले में यह मुद्दा तुच्छ है क्योंकि वह पाटनरोधी उपाय के अध्यधीन नहीं है और इसका व्यापार प्रकटन उन पर गैर मौजूद पाटनरोधी उपायों की स्थिति में भारत में अन्य वैश्विक स्थानों से उसके निर्यात होने पर कोडक की ओर से कोई प्रवृत्ति नहीं दर्शाते। इसके अतिरिक्त, कोडक द्वारा निर्यातों के पहुँच मूल्य से घरेलू उद्योग की बिक्री पर कीमत न्यूनीकरण/ह्रास नहीं हुआ है क्योंकि कीमत कटौती एवं क्षति मार्जिन, दोनों नकारात्मक पाए गए हैं।
- प्राधिकारी नोट करते हैं कि फुजीफिल्म ने चीन पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद यूरोपीय संघ और जापान में अपनी अन्य उत्पादन सुविधाओं से भारत में संबद्ध सामानों का निर्यात किया है। उत्पादक/ निर्यातक से यह भी अनुरोध किया गया था कि वे भारत में जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद की अवधि में तथा जापान में अपने अन्य उत्पादन सुविधाओं से संबद्ध सामानों का उनके द्वारा किए गए निर्यात के संबंध में होता। उत्पादक/ निर्यातक तथा उसके सहयोगी आयातक ने जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद की अवधि में (6 माह) इन आयातों की मात्रा और मूल्य के संबंध में आंकड़े दिए हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध सामानों की कीमत वसूली विभिन्न स्रोतों से आयात कीमतों पर आकस्मिक हैं, चाहे वह पाटित हों अथवा गैर पाटित। संबद्ध सामानों के ग्राहकों को स्रोतों पर ध्यान न देते हुए पहुँच मूल्यों के संबंध में चिंता है। फुजीफिल्म ने एक समूह के रूप में यूरोपीय संघ और जापान से, न कि संबद्ध देश चीन से, भारत में अपने ग्राहकों को जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद की अवधि में संबद्ध सामानों की कीमत लगाई और आपूर्ति की। प्राधिकारी यह मानने का प्रस्ताव करते हैं कि चीन से आयातों पर गैर मौजूद पाटनरोधी शुल्क की स्थिति में फुजीफिल्म ने एक समूह के रूप में चीन से इन कीमत स्तरों को बनाए रखा होता क्योंकि ग्राहक स्रोत के बजाए अंतिम कीमत स्तरों में रुचि रखेंगे क्योंकि संबद्ध सामानों का निर्यात करने वाले समूह समान हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिस्पर्द्धा के बावजूद घरेलू उद्योग जांच की अवधि के लिए आंकलित की गई एनआईपी से ऊपर घरेलू कीमतें वसूल करने में समर्थ रहे हैं। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद फुजीफिल्म द्वारा निर्यात के फलस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतों पर दबाव नहीं पड़ेगा और उसके कारण क्षति नहीं होगी और पाटनरोधी शुल्क को हटाये जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति की कोई संभावना नहीं है।
- संभावना के प्रयोजन के लिए प्राधिकारी इसका मूल्यांकन की गई संभावना के प्रयोजन से प्राधिकारी ने इस बात की भी जांच की है कि क्या घरेलू उद्योग उन कीमतों पर वसूल करने में सक्षम रहा है जिनसे वे क्षति को रोकने के लिए पर्याप्त आय लेने में समर्थ हों। इस

प्रयोजन के लिए प्राधिकारी जांच की अवधि के लिए निर्धारित तथा जांच की अवधि के बाद की अवधि (6 माह) के लिए आंकलित "एनआईपी" को देखने का प्रस्ताव करते हैं। ऐसा करते समय प्राधिकारी "समझौता ज्ञापन" द्वारा दर्शाई गई कीमतों तथा विभिन्न प्रतिस्पर्द्धी स्रोतों से आयात कीमतों (पाटित/गैर पाटित) द्वारा दर्शाई गई कीमतों की जांच भी की है।

प्रकटन पश्चात् टिप्पणियां

69. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

- माननीय प्राधिकारी ने वर्तमान समीक्षा में विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को सही रखा है।
- याचिकाकर्ता प्राधिकारी से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे संबद्ध देश से आयातों और याचिकाकर्ता को क्षति के बीच कारणात्मकता निर्धारित करने के लिए यूरोपीय संघ से आयात कीमतों पर विचार न करें। यूरोपीय संघ से उत्पाद अर्थात् फुजीफिल्म का प्रमुख आयातक केवल एक है और पूरी संभावना में उनका अंतरालों में मूल देश में जाने का रिकार्ड है। अतः कोई भी तुलना अस्थायी आधार पर होगी। यदि कुल मिलाकर माननीय प्राधिकारी को यूरोपीय संघ से आयात कीमतों और संबद्ध देश से आयात कीमतों के बीच कारणात्मकता के प्रयोजन से यूरोपीय संघ से आयात कीमतों पर विचार करना है तो उसे याचिकाकर्ता द्वारा किए गए यूरोपीय संघ से आयातों को अलग करना चाहिए।
- याचिकाकर्ता विचाराधीन उत्पाद के गलत घोषित आयातों के कम पहुँच मूल्य के निमित्त कीमत दबाव के कारण समझौता ज्ञापन के अनुसार सहमत कीमतों को प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहा है।
- जहां तक प्राधिकारी का पैरा 18(iii) में जांच परिणाम का संबंध है, सेसटेड ने विशेष रूप से सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए उनके द्वारा निर्यातित उत्पाद के संबंध में तीनों किस्मों की प्लेटों के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन/क्षति मार्जिन का मूल्यांकन करने हेतु माननीय प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए सिद्धांत को विशेष रूप से माना है। पूर्वाग्रह के बिना यह भी माना जाता है कि मूल जांच में अपनाया गया सिद्धांत उन तथ्यों के कारण पुनः देखा जा सकता है जो प्रस्तुत किए गए हैं और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित किए गए हैं।
- याचिकाकर्ता यह अनुरोध करते हैं कि बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार व्यवस्था के संबंध में प्राधिकारी का जांच परिणाम सहमति में है। प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे अंतिम जांच परिणाम में इस निर्धारण को बनाए रखें।
- याचिकाकर्ता से सामान्य मूल्य के परिकलन के गोपनीय रूपांतर को रोककर रखने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रयोग में लाये जा रहे आंकड़े या तो सामान्य अंतर्राष्ट्रीय कीमत के आंकड़े हैं अथवा याचिकाकर्ता की सूचना है।
- याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी से यह पुष्ट करने का अनुरोध करते हैं कि प्रीमियम तथा परिवर्तन प्रभारों सहित लंदन मेटल एक्सचेंज (एलएमई) संबंधी एल्युमीनियम की कीमतों के संबंध में अत्यधिक आंकड़े, जैसा कि याचिकाकर्ता द्वारा दिया गया है, सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विचार में लाए गए हैं और यदि नहीं तो तो सामान्य मूल्य इस साक्ष्य के आधार पर परिकलित किया जाना चाहिए।
- याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि उपलब्ध सूचना सीमित होने के कारण प्राधिकारी को सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए सहयोगी निर्यातकों द्वारा अर्जित उच्चतम क्षति मार्जिन पर विचार करना चाहिए।
- कोडक ने यह उल्लेख करते हुए प्राधिकारी के समक्ष बहुत ही गलत प्रतिनिधित्व किया है कि उसने भारत में केवल थर्मल प्लेटों का निर्यात किया है, जबकि वस्तुतः कोडक ने थर्मल प्लेटों के तहत जांच की अवधि के दौरान भारत को वायलट प्लेटों का निर्यात किया है। उपर्युक्त के आलोक में कोडक का उत्तर पूरी तरह रद्द किया जाना चाहिए और पाटन का अवशिष्ट मार्जिन तदनुसार पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के तहत लागू किया जाना चाहिए।
- उपर्युक्त के पूर्वाग्रह के बिना माननीय प्राधिकारी प्रकटन विवरण के अनुसार वर्तमान जांच परिणाम को जारी रखते हैं तो यह प्रबल अनुरोध किया जाता है कि जांच की अवधि और जांच की अवधि के बाद की अवधि के दौरान कोडक द्वारा भारत को निर्यात न किए गए उत्पाद किस्मों के संबंध में अलग-अलग मार्जिन की सिफारिश नहीं की जानी चाहिए क्योंकि पाटन मार्जिन का परिकलन करने के लिए अथवा क्षति मार्जिन का परिकलन करने के लिए कोई निर्यात कीमत नहीं थी जिसके आधार पर संदेह का लाभ दिया जाना चाहिए।
- याचिकाकर्ता एकमात्र आयातक अर्थात् लकी द्वारा परिशिष्ट-5 और 6 के बिना दायर की गई अपूर्ण आयातक प्रश्नावली के उत्तर से सीमित आंकड़ों का प्रयोग करते हुए माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के सिद्धांत का सशक्त रूप से विरोध करते हैं। यह देखना आश्चर्यजनक है कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत मात्रा और मूल्य पर प्रश्रुत आयातित किस्मों की प्लेटों की आगे की कीमत संबंधी पुनः बिक्री सूचना तथा लकी की निर्यात कीमत को स्वीकार किए बिना, जो कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के रिकार्ड के अनुसार भी सत्यापित न की गई रहती है, पर विचार किए बिना निर्यात कीमत मात्रा और मूल्य पर विश्वास कर रहे हैं। इस मामले के निम्नलिखित तथ्यों पर पुनः विचार किए जाने की आवश्यकता है: (क) प्राधिकारी ने किस आधार पर लकी के परिसरों में सत्यापन किया जबकि उन्होंने अपूर्ण उत्तर दिए थे? (ख) कानून एवं पूर्वोदाहरण के किस आधार पर माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटन मार्जिन के लिए निर्यात कीमत का पुनः परिकलन कर रहे हैं जबकि वस्तु स्थिति यह है कि ईआरपी समर्थक

आंकड़े प्रदान नहीं करते? (ग) कानून एवं पूर्वोदाहरण के किस आधार पर एकमात्र आयातक अर्थात् कपूर इमेजिंग के आंकड़ों पर विचार किया जा रहा है जबकि प्रश्रावली के उत्तर अपूर्ण हैं तथा उनके घरेलू प्रचालन गलत घोषणा और/अथवा सीमा शुल्क मूल्यांकन मुद्दों के द्वारा निगरानी के तहत हैं।

- याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे निर्यात कीमत आंकड़ों को तथा लकी द्वारा दी गई सूचना को रद्द करें क्योंकि लकी द्वारा उसकी प्रश्रावली के उत्तर से विश्वास की गई सूचना का सत्यापन नहीं किया जा सकता।
- लकी का भारत में विशिष्ट आयातक अर्थात् कपूर इमेजिंग प्रा. लि. ("कपूर") है जो भारत में एक व्यापारी के रूप में उत्पाद की आगे बिक्री करने में लगा है। कपूर लकी से डिजिटल प्लेटों का आयात उच्च कीमत पर करता है और फिर उसे काफी कम कीमत पर अपने भारतीय ग्राहकों को बेचता है।
- लकी कपूर से सहायता लेकर पाटनरोधी शुल्क देने से बचने के लिए व्यापक व्यवस्था में लगा हुआ है। माननीय प्राधिकारी को लकी द्वारा सूचित की गई कीमत ग्राहकों द्वारा दी गई कीमत का सही-सही प्रतिनिधित्व नहीं करती। माननीय प्राधिकारी को लकी की गलत परिपाटी के लिए दिए जा रहे साक्ष्य को संज्ञान में लेना चाहिए और तत्काल उसके उत्तर को रद्द कर देना चाहिए।
- लकी ने जांच की अवधि के दौरान भारत को केवल थर्मल प्लेटों के निर्यात का दावा किया है। तथापि, याचिकाकर्ता ने यह सिद्ध करने के लिए पूरे साक्ष्य दिए हैं कि लकी ने भारत को यूवी-सीटीपी प्लेटों का निर्यात किया है और पाटनरोधी शुल्क से बचने के लिए उसे पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत घोषित किया है।
- यह माननीय प्राधिकारी की सुस्थापित परिपाटी है कि गलत दिए गए आंकड़ों को रद्द किया जाता है और ऐसे आंकड़े गलत सूचित करने वाले पक्षकार को असहयोगी माना जाता है। कानून तथा स्थापित परिपाटी के विपरीत माननीय प्राधिकारी ने लकी को अलग मार्जिन देने का प्रस्ताव किया है।
- वर्तमान मामले के तथ्यों के भीतर माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए पुष्ट आंकड़े हैं कि गलत घोषित यूवी-सीटीपी प्लेटों की मात्रा संबंधी आंकड़े मेल नहीं खाते अथवा उपर्युक्त निर्यातक और प्रश्रुत आयातक द्वारा अलग-अलग क्षति मार्जिन की मांग करने के लिए उनमें घालमेल किया गया है जो कि जांच के क्षेत्र के अंतर्गत आता है। अतः तथाकथित सहयोगी पक्षकार अलग-अलग पाटन मार्जिन के योग्य नहीं हो सकते।
- याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी से प्रबल अनुरोध करते हैं कि लकी और कपूर द्वारा दायर किए गए उत्तरों तथा अपर्याप्तताओं के कारण लकी को विशेष स्तर प्रदान करने का कोई कारण नहीं है जो कि अलग-अलग मार्जिन योग्य हो।
- याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि यदि कोई उत्पादक/ निर्यातक जांच की अवधि के दौरान संबद्ध सामानों का निर्यात नहीं करता तो उत्तरदाता उत्पादक/ निर्यातक को अलग-अलग मार्जिन नहीं दिया जा सकता। अतः याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे प्रश्रावली के उत्तर को रद्द करें और फुजीफिल्म के लिए निर्यात कीमत का परिकलन न करें क्योंकि उसने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध सामानों का निर्यात नहीं किया।
- याचिकाकर्ता ने चीन से जांच की अवधि में वायलट प्लेटों के निर्यात के संबंध में विचलित टाल-मटोल पहले ही किए हैं। उन पर विश्वास किया गया है और दोहराया गया है। यह बात भी दोहराई जाती है कि कोडक ने अपनी वायलट प्लेटों के निर्यात को थर्मल प्लेटों के रूप में गलत घोषित किया है।
- यद्यपि, ऐतिहासिक रूप से याचिकाकर्ता कोडक के निर्यातों में "निरापद" होना लग सकता है तो इसकी पूरी संभावना है कि कोडक की निर्यात कीमत हासमान होनी शुरू हो रही है जिसका याचिकाकर्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना निश्चित है।
- यह तथ्य कि फुजीफिल्म ने अन्य उत्पादन संयंत्रों से थर्मल एवं वायलट प्लेटों की आपूर्ति की, यह दर्शाता है कि फुजीफिल्म भारत में निरंतर निर्यात करने का इच्छुक है – यह केवल मौजूदा शुल्कों के कारण है कि उसने स्थान परिवर्तित कर दिया है जहां से वह सामानों का निर्यात करता है। उसका भारत में पर जोर होने के आधार पर यह पर्याप्त रूप से माना जा सकता है कि फुजीफिल्म शुल्क समाप्त किए जाते ही चीन से कम कीमत के निर्यात तत्काल ले लेगा।
- कीमत न्यूनीकरण का अभाव दर्शाने वाली थर्मल एवं वायलट प्लेटों की याचिकाकर्ता की वसूली के संबंध में यह अनुरोध है कि कीमत न्यूनीकरण का माना गया अभाव इस अभिप्राय से नहीं दिया जाना चाहिए कि पाटनरोधी शुल्कों की निम्नलिखित कारणों से अब आवश्यकता नहीं है:
 - याचिकाकर्ता ने यह सिद्ध करने के लिए पूरे साक्ष्य दायर किए हैं कि यदि शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो बार-बार भारी रूप से क्षति होगी। जांच की अवधि के बाद की अवधि में सकारात्मक क्षति मार्जिन यह दर्शाता है कि याचिकाकर्ता पर पहले ही आयातों से काफी दबाव है।
 - कीमत न्यूनीकरण का माना गया अभाव स्वतः ही मौजूदा पाटनरोधी शुल्कों के कारण है। इसे इस आशय से नहीं माना जाना चाहिए कि अब शुल्कों की कोई आवश्यकता नहीं है।
- घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में गिरावट आती रही है, जबकि संबद्ध देश और अन्य देशों के बाजार हिस्से में आधार वर्ष से जांच की अवधि तक वृद्धि पाई गई है।

- चीन में 75 से अधिक प्रमुख उत्पादक पर्याप्त निपटान योग्य क्षमताओं वाले हैं (जिसके ब्यौरे पहले ही रिकार्ड में रखे गए हैं)। यदि शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो ये निर्यात क्षतिकारक एवं पाटित कीमतों पर भारत में आने की संभावना है।
- कोडक ने जांच की अवधि में वायलट प्लेटों का निर्यात आरंभ किया जो जांच की अवधि के बाद की अवधि में 1366 प्रतिशत तक पर्याप्त रूप से बढ़ गया। मात्राओं में वृद्धि की इस अवधि के दौरान कोडक की कीमतें भी कुछ कम हो गईं। इसके अतिरिक्त, ये निर्यात याचिकाकर्ता की एनआईपी से काफी कम कीमत पर किए गए थे। यह पाटित एवं क्षतिकारक आयातों की पूरी संभावना दर्शाता है, यदि शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है।
- चीन से वही प्रमुख व्यापारी भारतीय बाजार को नियंत्रित करने और कीमतें कम रखने के लिए उन्हें अनुमति देते हुए अपने अन्य निर्यात स्थानों से कीमत संबंधी दबाव लागू करने की क्षमता भी रखते हैं। इससे क्षति के बार-बार होने की संभावना बढ़ जाएगी जिससे अंतिम कुछ वर्षों में शुल्क पूर्णतः बेकार हो जाएगा।
- याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि "भारत को जांच की अवधि तथा जांच की अवधि के बाद की अवधि के दौरान जापान और यूरोपीय संघ में उनकी अन्य उत्पादन सुविधाओं से संबद्ध सामानों का उन्हें किए गए निर्यातों" के संबंध में प्रवृत्ति अगोपनीय रूप में याचिकाकर्ता को उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि सार्थक विश्लेषण सुकर हो सके।
- यूरोपीय संघ और जापान से फुजीफिल्म द्वारा किए गए निर्यात चीन के माध्यम से किए जाएंगे जिसके पास कम उत्पादन लागत होगी। इस प्रकार, यूरोपीय संघ और जापान की अपेक्षा निर्यात का अधिक किफायती एवं अर्थक्षम विकल्प होगा।
- प्राधिकारी ने लकी द्वारा किए गए निर्यातों के लिए क्षति जारी रहने अथवा बार-बार होने की संभावना पर निष्कर्ष नहीं निकाला है। इस संबंध में, याचिकाकर्ता यह अनुरोध करते हैं कि सतत क्षति का भारी खतरा एवं संभावना है जो लकी के तीसरे देशों को कीमत संबंधी व्यवहार द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। इस संबंध में, याचिकाकर्ता प्राधिकारी का ध्यान प्रदर्श-1 की ओर आकर्षित करते हैं जिसमें याचिकाकर्ता ने तीसरे देशों को कुछ नमूना निर्यात बीजक दिए हैं। वह स्पष्ट रूप से लकी के कीमत व्यवहार तथा घरेलू उद्योग को आसन्न खतरा दर्शाते हैं।
- याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में यूरोपीय संघ से किए गए निर्यातों तथा उनकी मात्रा और मूल्य के लिए याचिकाकर्ता के कारणों को सही-सही स्वीकार किया है।
- यदि माननीय प्राधिकारी को अपने कारणात्मक संपर्क विश्लेषण के लिए यूरोपीय संघ से कीमतों का प्रयोग करना ही है तो याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकार से अनुरोध करते हैं कि वे उन आयातों को अलग करें जो याचिकाकर्ता द्वारा किए गए हैं। आयातों को हटाने के लिए प्रमुख कारण यह होगा कि माननीय प्राधिकारी संबद्ध आयातों और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मकता की जांच करने के लिए यूरोपीय संघ के आयातों का प्रयोग करने का प्रस्ताव कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में उन आयातों को अलग करना महत्वपूर्ण है जो घरेलू उद्योग द्वारा खुद किए गए थे अर्थात् वे आयात (कीमत को ध्यान में न रखते हुए) अलग करना महत्वपूर्ण है जिनसे घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो सकती क्योंकि वह इन आयातों के विरुद्ध प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर रहा था। इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि चूंकि ये आयात केवल उत्पादन का 2.64 प्रतिशत हैं, तथा देश की मांग का 2.34 प्रतिशत हैं, अतः कारणात्मकता की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा किए गए आयातों का कोई विश्लेषण मामले के तथ्यों के मद्देनजर उपयुक्त एवं तर्कहीन होगा। विश्लेषण से यह भी पुष्ट है कि कीमत संबंधी तुलना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि यूरोपीय संघ से आयात की गई सीमित किस्मों की प्लेटें (घरेलू उद्योग द्वारा किए गए आयातों को हटाकर) संबद्ध देश से आयातों से बहुत अधिक कीमत पर बाजार में आ रही हैं।
- उपर्युक्त के मद्देनजर, याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे संबद्ध देश से आयातों और याचिकाकर्ता को क्षति के बीच कारणात्मकता निर्धारित करने के प्रयोजन से यूरोपीय संघ से आयात कीमतों पर विचार न करें। इसके अतिरिक्त, यह भी एक वस्तु स्थिति है कि यूरोपीय संघ से निर्यात वर्तमान जांच में पाटनरोधी शुल्क जारी रहने पर स्पष्ट रूप से निर्भर हैं। यूरोपीय संघ से उत्पाद का केवल एक प्रमुख निर्यातक अर्थात् फुजी है और पूरी संभावना में उनका अंतरालों पर मूल देश में जाने का रिकार्ड है। अतः कोई भी तुलना अस्थायी होगी। यदि कुल मिलाकर माननीय प्राधिकारी को यूरोपीय संघ से आयात कीमतों और संबद्ध देश से आयात कीमतों के बीच कारणात्मकता के लिए यूरोपीय संघ से आयात कीमतों पर विचार करना है तो उन्हें याचिकाकर्ता द्वारा किए गए यूरोपीय संघ से आयातों को अलग करना चाहिए।
- माननीय प्राधिकारी के प्रकटन विवरण के पैरा 18(ii) में कोई टंकण संबंधी त्रुटि प्रतीत होती है जब "अन्य संबद्ध देशों" को दर्शाया गया है क्योंकि चीन के अलावा वर्तमान समीक्षा में कोई अन्य संबद्ध देश नहीं है।
- जहां तक समझौता जापान के तहत कीमत तथा अन्य स्रोतों द्वारा पेश की गई कीमतों के साथ याचिकाकर्ता द्वारा वसूल की गई कीमत की जांच करने का माननीय प्राधिकारी का प्रस्ताव है, याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि बाजार में कीमतें संबद्ध देश अर्थात् चीन से आयात कीमतों के प्रति सुभेद्य रहें। याचिकाकर्ता अधिकतर क्षति की अवधि के लिए समझौता जापान में सहमत कीमतों को प्राप्त करने तथा वसूल करने में सक्षम नहीं रहे हैं। समझौता जापान के अनुसार, कीमतों की तुलना, चीन से संबद्ध सामानों का पहुँच मूल्य और जांच की अवधि तथा जांच की अवधि के बाद की अवधि के लिए विचाराधीन उत्पाद के प्रत्येक ग्रेड के लिए निवल विक्री वसूली नीचे दी गई है।

तालिका

मूल्य भारतीय रुपए/वर्ग मीटर में

विवरण	यूवी सीटीपी		थर्मल		वायलट	
	जांच की अवधि	जांच की अवधि के बाद की अवधि	जांच की अवधि	जांच की अवधि के बाद की अवधि	जांच की अवधि	जांच की अवधि के बाद की अवधि
समझौता जापान के अनुसार एनएसआर	***	***	***	***	***	***
वास्तविक एनएसआर	***	***	***	***	***	***
पहुँच लागत	***	***	***	***	***	***

स्रोत: डीजीसीआईएंडएस आयात आंकड़ा

- उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि विचाराधीन उत्पाद के गलत आयातों के कम पहुँच मूल्य के निमित्त कीमत दबाव के कारण समझौता जापान के अनुसार सहमत कीमतों को प्राप्त करने में याचिकाकर्ता सक्षम नहीं रहे हैं।
- समझौता जापान का आशय प्रयोक्ताओं को यह आश्वासन प्रदान करने के लिए एल्युमीनियम की कीमतों से विचाराधीन उत्पाद की कीमतों को जोड़ना था कि याचिकाकर्ता पाटनरोधी शुल्कों के संरक्षण के बाद अपनी कीमत स्वेच्छिक रूप से नहीं बढ़ाएगा। तथापि, जैसा कि उपर्युक्त तालिका से देखा जा सकता है, याचिकाकर्ता चीनी आयातों से कीमत संबंधी दबावों के कारण निर्धारित कीमतें प्राप्त कर रहे हैं/वसूल करने में कभी भी सक्षम नहीं रहा है।
- प्रकटन विवरण के पैरा 24 में माननीय प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोडक ने भारत को केवल थर्मल प्लेटों का निर्यात किया है। यह ससम्मान अनुरोध किया जाता है कि यह निर्धारण वास्तविक रूप से गलत है और कोडक द्वारा दायर की गई झूठी एवं भ्रामक सूचना पर आधारित है। इस संबंध में याचिकाकर्ता ने 12 अप्रैल, 2018 के पत्र द्वारा मजबूर करना वाला साक्ष्य दायर किया है जो संदेह के घेरे से परे सिद्ध होता है कि कोडक ने थर्मल प्लेटों के नाम पर जांच की अवधि के दौरान भारत को वास्तव में वायलट प्लेटों का निर्यात किया है। कोडक ने भारतीय सीमा शुल्क को ही धोखा देने का प्रयास नहीं किया है बल्कि माननीय प्राधिकारी को भी भारी रूप से गलत सूचना दी है जिसके आलोक में उनका उत्तर पूर्णतः रद्द किया जाना चाहिए और तदनुसार, पाटन के लिए अवशिष्ट मार्जिन पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के तहत लागू किया जाना चाहिए।
- उपर्युक्त के पूर्वाग्रह के बिना माननीय प्राधिकारी प्रकटन विवरण के अनुसार वर्तमान जांच परिणाम को जारी रखते हैं तो यह प्रबल अनुरोध किया जाता है कि जांच की अवधि और जांच की अवधि के बाद की अवधि के दौरान कोडक द्वारा भारत को निर्यात न किए गए उत्पाद किस्मों के संबंध में अलग-अलग मार्जिन की सिफारिश नहीं की जानी चाहिए क्योंकि पाटन मार्जिन का परिकलन करने के लिए अथवा क्षति मार्जिन का परिकलन करने के लिए कोई निर्यात कीमत नहीं थी जिसके आधार पर संदेह का लाभ दिया जाना चाहिए। तदनुसार, कोडक (और वास्तव में सभी अन्य निर्यातक) को उन सभी उत्पादों के लिए अवशिष्ट पाटन मार्जिन प्राप्त करना चाहिए जिन्होंने सभी उत्पाद किस्मों के लिए माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अलग-अलग क्षति मार्जिन की सिफारिश किए जाने के कारण निर्धारित अवधि के दौरान भारत को निर्यात नहीं किया है।
- माननीय प्राधिकारी ने लकी के लिए निर्यात कीमत का परिकलन किया है। यहां तक कि यद्यपि, लकी द्वारा उसके लिए दावा किए गए समायोजनों को सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया गया था।
- याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि माननीय प्राधिकारी को उत्पादक/ निर्यातक के लिए अलग-अलग मार्जिन नहीं देना चाहिए, जब पक्षकार की ईआरपी प्रणाली तथा दस्तावेजीकरण समायोजनों के लिए दायर आंकड़ों को सिद्ध करने में विफल हो। इस बात पर विचार करते हुए कि केवल लकी ने निर्यात कीमत संबंधी आंकड़े दायर किए, सत्यापन के संदर्भ में यह कम भार था क्योंकि उसे अपनी घरेलू बिक्री, लागत अथवा अन्य मानदंडों का औचित्य नहीं देना था। ऐसी स्थिति में केवल निर्यात कीमत का ही सत्यापन किए जाने की आवश्यकता थी, माननीय प्राधिकारी को लकी के दावों की बड़ी सतर्कता से जांच करनी चाहिए थी। वस्तुतः लकी ने प्रश्नावली के उत्तर के भाग-2 का उत्तर भी नहीं दिया है जो निर्णायक समीक्षा जांच में उत्तर दिए जाने के लिए अनिवार्य रूप से अपेक्षित है।
- उपर्युक्त के मद्देनजर, याचिकाकर्ता प्राधिकारी से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे लकी द्वारा दिए गए निर्यात कीमत संबंधी आंकड़ों और सूचना को रद्द करें क्योंकि लकी द्वारा अपनी प्रश्नावली के उत्तर द्वारा विश्वास की गई सूचना का सत्यापन नहीं किया जा सकता। माननीय प्राधिकारी ने *नायलॉन फिलामेंट यार्न* के संबंध में पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा जांच में अंतिम जांच⁹ परिणाम में

उत्तरदाता निर्यातक के लिए अलग मार्जिन निर्धारित नहीं किया क्योंकि समर्थक दस्तावेज और सूचना उत्पादक तथा निर्यातक द्वारा नहीं दी गई थी।

- ऐसा पहले कभी नहीं हुआ और यह देखना आश्चर्यजनक है कि प्राधिकारी ने उन मामलों में अपने पूर्वोदाहरण के मद्देनजर जहां निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है, आगे कार्रवाई की है और लकी के आंकड़ों को स्वीकार किया है। यह *हलडोर टोपसो*¹⁰ में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का पूरी तरह उल्लंघन है जिसमें माननीय न्यायालय ने असहयोग के सिद्धांतों के संबंध में स्पष्ट पूर्वोदाहरण उल्लिखित किया है। इसके अतिरिक्त, यह माना जाता है कि लकी और उसके भारत में एकमात्र आयातक कपूर इमेजिंग के व्यवहार पर इस कारण से पुनः विचार करने की आवश्यकता है कि अपूर्ण प्रश्नावली उत्तर दायर करने के बावजूद और अपने आंकड़ों को सिद्ध करने में विफल रहने पर भी लकी को अलग मार्जिन दिया गया है।
- याचिकाकर्ता एकमात्र आयातक अर्थात् लकी द्वारा परिशिष्ट-5 और 6 के बिना दायर की गई अपूर्ण आयातक प्रश्नावली के उत्तर से सीमित आंकड़ों का प्रयोग करते हुए माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के सिद्धांत का सशक्त रूप से विरोध करते हैं। यह देखना आश्चर्यजनक है कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत मात्रा और मूल्य पर प्रश्नगत आयातित किस्मों की प्लेटों की आगे की कीमत संबंधी पुनः बिक्री सूचना तथा लकी की निर्यात कीमत को स्वीकार किए बिना, जो कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के रिकार्ड के अनुसार भी सत्यापित न की गई रहती है, पर विचार किए बिना निर्यात कीमत मात्रा और मूल्य पर विश्वास कर रहे हैं। इस मामले के निम्नलिखित तथ्यों पर पुनः विचार किए जाने की आवश्यकता है: (क) प्राधिकारी ने किस आधार पर लकी के परिसरों में सत्यापन किया जबकि उन्होंने अपूर्ण उत्तर दिए थे? (ख) कानून एवं पूर्वोदाहरण के किस आधार पर माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटन मार्जिन के लिए निर्यात कीमत का पुनः परिकलन कर रहे हैं जबकि वस्तु स्थिति यह है कि ईआरपी समर्थक आंकड़े प्रदान नहीं करते? (ग) कानून एवं पूर्वोदाहरण के किस आधार पर एकमात्र आयातक अर्थात् कपूर इमेजिंग के आंकड़ों पर विचार किया जा रहा है जबकि प्रश्नावली के उत्तर अपूर्ण हैं तथा उनके घरेलू प्रचालन गलत घोषणा और/अथवा सीमा शुल्क मूल्यांकन मुद्दों के द्वारा निगरानी के तहत हैं। इन सभी प्रश्नों का उत्तर दिया जाना है क्योंकि सामान्य अवधि में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी की सर्वोत्तम परिपाटियां किसी उत्पादक विशेष/निर्यातक विशेष को अलग मार्जिन का कोई व्यवहार नकारती हैं।
- उपर्युक्त के पूर्वाग्रह के बिना यहां तक कि यदि लकी के आंकड़ों को सत्यापन और सिद्ध होने की आवश्यकता को पूरा न करने के बावजूद स्वीकार किया जाता है तो याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि लकी तथा उसके एकमात्र आयातक कपूर इमेजिंग द्वारा सूचित किए गए आंकड़ों में अन्य खतरनाक गलत सूचनाएं हैं।
- भारत में थर्मल प्लेटों की कीमत का बीजक अधिक है: यह सुविदित तथ्य है कि भारत में लकी का भारत में विशिष्ट आयातक अर्थात् कपूर इमेजिंग प्रा. लि. ("कपूर") है जो भारत में एक व्यापारी के रूप में उत्पाद की आगे बिक्री करने में लगा है। तथापि, लकी ने माननीय प्राधिकारी को यह प्रकट नहीं किया है कि जिन कीमतों पर उसने कपूर को सामग्री का निर्यात किया है, वे पर्याप्त रूप से बड़ी हुई हैं – उसी अवधि में कपूर द्वारा आगे की बिक्री कीमतों से पर्याप्त रूप से सत्यापित तथ्य है। दूसरे शब्दों में, कपूर लकी से डिजिटल प्लेटों का आयात उच्च कीमत पर करता है और फिर उसे काफी कम कीमत पर अपने भारतीय ग्राहकों को बेचता है।
- इस संदेहास्पद व्यवहार को सिद्ध करने के लिए याचिकाकर्ता माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के गंभीर विचारार्थ निम्नलिखित साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं:
 - इंडोनेशिया में उसी उत्पाद (अर्थात् थर्मल प्लेटों) की लकी की कीमतों का सबूत: यह देखा जा सकता है कि इंडोनेशिया के लिए लकी की कीमतें इंडोनेशिया में शुल्क न होने पर भी भारत के लिए कीमतों से कहीं कम हैं, जैसा कि प्रस्तुत साक्ष्य से देखा जा सकता है कि कीमतों में *** प्रतिशत का अंतर है।
 - भारत ग्राहकों के लिए कपूर की कीमत का सबूत: लकी से आयातित थर्मल प्लेटों के लिए कपूर के बीजक और कोटेशन अपने ग्राहकों के लिए यह दर्शाते हैं कि वे कीमतें, लकी द्वारा सूचित की गई कीमतों से कहीं कम हैं। यहां केवल दो संभावनाएं हैं: या तो कपूर जानबूझकर हानियों में जा रहा है अथवा कपूर और लकी ने आयात कीमत बढ़ाकर गैर-कानूनी रूप से शुल्कों से बचने का प्रयास किया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि दोनों के बीच इस प्रतिपूरक व्यवस्था को जारी रहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि वे पाटनरोधी शुल्क को बेकार करने का प्रयास कर रहे हैं।
 - कोडक और लकी के बीच कीमत: जांच की अवधि में थर्मल प्लेटों के लिए कोडक अथवा फुजीफिल्म द्वारा पेश की गई कीमतों और लकी द्वारा पेश की गई कीमतों में दूसरा विशिष्ट अंतर है। कोडक और लकी के कीमतों के बीच *** प्रतिशत से अधिक का स्पष्ट अंतर है और फुजीफिल्म और लकी की कीमतों के बीच *** प्रतिशत से अधिक का अंतर है अर्थात् लकी की कीमतें पुनः संदेहास्पद रूप से अधिक हैं।
 - उपर्युक्त के मद्देनजर यह स्पष्ट है कि लकी कपूर से सहायता लेकर पाटनरोधी शुल्क देने से बचने के लिए व्यापक व्यवस्था में लगा हुआ है। माननीय प्राधिकारी को लकी द्वारा सूचित की गई कीमत ग्राहकों द्वारा दी गई कीमत का सही-सही प्रतिनिधित्व नहीं

- करती। माननीय प्राधिकारी को लकी की गलत परिपाटी के लिए दिए जा रहे साक्ष्य को संज्ञान में लेना चाहिए और तत्काल उसके उत्तर को रद्द कर देना चाहिए।
- यूवी-सीटीपी प्लेटों को पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत घोषित करना: यह सुविदित है कि लकी ने जांच की अवधि के दौरान भारत को केवल थर्मल प्लेटों के निर्यात का दावा किया है। तथापि, याचिकाकर्ता ने यह सिद्ध करने के लिए पूरे साक्ष्य दिए हैं कि लकी ने भारत को यूवी-सीटीपी प्लेटों का निर्यात किया है और पाटनरोधी शुल्क से बचने के लिए उसे पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में गलत घोषित किया है।
 - याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी द्वारा पाए गए साक्ष्य का संदर्भ देते हैं जिसमें राजस्व एवं आसूचना निदेशालय ("डीआरआई") तथा सीमा शुल्क प्राधिकारियों द्वारा स्वीकृत तथ्य निहित हैं कि जांच की अवधि में यूवी सीटीपी प्लेटों को पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में व्यापक रूप से *** मिलियन वर्ग मीटर तक गलत घोषित किया गया है। माननीय प्राधिकारी को यह भी विदित है कि यद्यपि माननीय प्राधिकारी को उपर्युक्त पत्रों के माध्यम से यह भी विदित है कि गलत घोषित की गई *** मिलियन वर्ग मीटर प्लेटों में से लकी द्वारा *** मिलियन वर्ग मीटर का निर्यात किया गया था। याचिकाकर्ता ने गलत घोषणा संबंधी अपने दावों को सिद्ध करने वाले अन्य महत्वपूर्ण तर्कों जैसे भारत में मांग, प्रश्रुत सामानों के ब्रांड (टोपाज) के संबंध में अन्य महत्वपूर्ण तर्क भी दिए थे। यूवी सीटीपी प्लेटों को एनालॉग प्लेटों के रूप में घोषित करना प्रकटन विवरण के पैरा 39 में माननीय प्राधिकार द्वारा नोट किया गया है। इसके मद्देनजर, माननीय प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे लकी द्वारा किए गए अनुरोधों को रद्द करें और लकी को अलग मार्जिन नहीं दिया जाना चाहिए।
 - तथापि, यदि गलत घोषणा को स्वीकार करने की कोई स्थिति है तो उसका मतलब है कि वस्तुतः जांच की अवधि में यूवी सीटीपी प्लेटों का निर्यात किया गया था। तथापि, प्राधिकारी ने पैरा 24(ख) में विरोधीभासी रूप से उल्लेख किया है कि लकी ने जांच की अवधि में भारत को केवल थर्मल प्लेटों का निर्यात किया है। जिस प्रश्न पर विचार किए जाने की आवश्यकता है, वह यह है कि यदि वास्तव में आंकड़े गलत घोषित किए गए थे तो लकी ने परिशिष्ट-2 में सही-सही बिक्री सूचित न की होती, जो उसने माननीय प्राधिकारी के पास दायर की।
 - याचिकाकर्ता इस बात से परेशान हैं कि लकी के आंकड़ों को कैसे स्वीकार किया गया जबकि उसने भारत में थर्मल प्लेटों की बिक्री की ही सूचना दी, यहां तक कि जब प्राधिकारी जानते थे कि उसने जांच की अवधि के दौरान यूवी सीटीपी प्लेटों का निर्यात किया। यह माननीय प्राधिकारी की सुस्थापित परिपाटी है कि गलत सूचित किए गए आंकड़ों को रद्द किया जाता है और इस प्रकार गलत आंकड़े सूचित करने वाले पक्षकार को असहयोगी माना जाता है। कानून एवं स्थापित परिपाटी के विपरीत माननीय प्राधिकारी ने लकी को अलग मार्जिन देने का प्रस्ताव किया है।
 - उसे सिद्ध करने के लिए याचिकाकर्ता ने टोपाज ब्रांड (लकी और कपूर के विशिष्ट ब्रांड) वाली पीएस एनालॉग प्लेटों के रूप में आयातित की जा रही प्लेटों का सत्यापन करने वाली स्वतंत्र सरकारी मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला से एक परीक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त किया है कि वे वास्तव में यूवी सीटीपी प्लेटें हैं। यह नोट करना रोचक है कि उसका भारी लेवल भी यह दर्शाता है कि वे यूवी प्लेटें हैं जो कि और कुछ नहीं बल्कि यूवी सीटीपी प्लेटें हैं।
 - याचिकाकर्ता 12 अप्रैल, 2018 के पत्र की ओर माननीय प्राधिकारी का ध्यान आकर्षित करते हैं जिसमें याचिकाकर्ता ने उपर्युक्त के संबंध में विस्तृत अनुरोध प्रस्तुत किए हैं तथा संक्षिप्तता की दृष्टि से उन्हें दोहराया नहीं गया है।
 - याचिकाकर्ता चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित टायरों के लिए टायर क्योरिन प्रेसेस के आयातों के संबंध में जांच में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सिफारिश किए गए अंतिम जांच परिणामों पर भी विश्वास करते हैं जो समान तथ्यों के आधार पर हैं, जहां निर्यात एवं आयात की मात्रा मेल नहीं खाती। इस प्रकार, उपर्युक्त निर्यातक को अलग व्यवहार प्रदान करने का कोई प्रश्न नहीं है।
 - वर्तमान मामले के तथ्यों के अधीन, अमाननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को पुष्टि किए गए आंकड़े उपलब्ध कराये गए हैं कि गलत रूप से घोषित की गई यू वी सीटी पी प्लेट्स की मात्रा से संबंधित आंकड़े सही नहीं मिलते हैं और इसकी घोषणा प्रश्नगत उक्त निर्यातक और आयातक द्वारा की गई है जिसे इस जांच के क्षेत्र के भीतर शामिल किया गया है और इस कारण से तथाकथित सहयोगी पक्षकार किसी अलग अलग पाटन मार्जिन प्राप्त करने के हकदार नहीं हो सकते।
 - उपर्युक्त तर्कों के आलोक में, याचिकाकर्ता दृढ़तापूर्वक माननीय प्राधिकारी को यह अनुरोध करता है कि लकी और कपूर द्वारा दायर किए गए उत्तरों और भयानक कमियों को देखते हुए, लकी को विशेष दर्जा देने का कोई कारण नहीं है जो अलग अलग मार्जिन के लिए उपयुक्त है।
 - माननीय प्राधिकारी ने यह टिप्पणी की थी कि फूजीफिल्म ने जांच की अवधि के दौरान भारत में संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है :

"25. ... जांच की अवधि की दौरान मैसर्स एफ एफ सी एन ने भारत में संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया है। प्राधिकारी ने एफ एफ पी एस और एफ एफ सी एन द्वारा वैश्विक निर्यात के संबंध में और एफ एफ सी एन द्वारा घरेलू बिक्री के द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों का स्थल पर सत्यापन किया था। उत्पादक/निर्यातक ने अपनी घरेलू बिक्री द्वारा 'सामान्य मूल्य' का निर्धारण करने के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का दावा नहीं किया है।"

- याचिकाकर्ता का यह अनुरोध है कि यदि कोई उत्पादक/ निर्यातक जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं करता है तब अलग अलग मार्जिन उत्तर देने वाले निर्यातक/ उत्पादक को नहीं दी जा सकती है। *विस्कोस स्टेल् फाइबर पर लगाये गये पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा* में माननीय प्राधिकारी ने उन निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण नहीं किया जिन्होंने जांच की अवधि में संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया यद्यपि उन्होंने अपने प्रश्नावली का उत्तर भी प्रस्तुत किया :
- उपर्युक्त को देखते हुए याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी से यह अनुरोध करते हैं कि ये प्रश्नावली के उत्तर को अस्वीकार कर दें और फूजीफिल्म के लिए एक निर्यात कीमत की गणना नहीं करें क्योंकि इसने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया।
- याचिकाकर्ता आदरपूर्वक यह अनुरोध करता है कि इस प्रकटन के पैरा 30 में किया गया विवरण रिकार्ड पर उपलब्ध तथ्यों द्वारा विरोधाभासी के रूप में प्रतीत होता है। याचिकाकर्ता ने पहले ही चीन से जांच की अवधि में वायलट प्लेट्स के निर्यात पर विस्तृत स्वीकारोक्ति उपलब्ध कराई है; उस पर विश्वास किया गया है और उसे दोहराया गया है। यह भी दोहराया गया है कि कोडक ने तापीय प्लेटों के रूप में अपनी वायलट प्लेट्स के निर्यात की गलत घोषणा की है।
- माननीय प्राधिकारी ने नोट किया कि फूजीफिल्म ने यूरोपीय संघ और जपान में अपने उत्पादन संयंत्रों से तापीय प्लेटों और वायलट प्लेटों का निर्यात किया था।
- जबकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह पाया होगा कि कोडक की कीमतें जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ता के एन आई पी से अधिक हैं, यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में कोडक की कीमतें एन आई सी से कम थीं। यह इस तथ्य का एक मजबूत संकेत है कि जबकि ऐतिहासिक रूप में याचिकाकर्ता कोडक की कीमतों से सुरक्षित प्रतीत हुए होंगे, इस बात की एक मजबूत संभावना है कि कोडक की निर्यात की कीमत अब दबावकारी होना शुरू हो रहा है जो निश्चित रूप से याचिकाकर्ता पर भी एक नकारात्मक प्रभाव डालेगा।
- इसके अलावा, यह तथ्य कि फूजीफिल्म अन्य उत्पादन संयंत्रों से तापीय और वायलट प्लेटों की आपूर्ति की है, कि यह दर्शाता है कि फूजीफिल्म भारत में निर्यात जारी रखने के लिए उत्सुक है – यह केवल मौजूदा शुल्कों के कारण होता है कि इसने उस स्थान में परिवर्तन किया है जहां से यह इन वस्तुओं का निर्यात करता है। भारतीय बाजार पर इसका ध्यान होने के आधार पर, उचित रूप में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि फूजीफिल्म तत्परता से चीन से कम कीमत पर निर्यातों को उस स्थिति में फिर से शुरू करेगा, जब इन शुल्कों को हटा लिया जायेगा और उसके द्वारा घरेलू उद्योग को आक्रामक पाटित कीमतों से सुरक्षा प्रदान करने के लिए इन शुल्कों को जारी रखने की आवश्यकता है।
- प्रकटन के पैरा 32 के संबंध में यह उल्लेख किया जाता है कि कीमत पर दबाव के न होने को दर्शाते हुए तापीय और वायलट प्लेटों की याचिकाकर्ता द्वारा प्राप्ति के संबंध में यह अनुरोध किया जाता है कि कीमत के दबाव की एक देखी गयी अनुपस्थिति का अभिप्राय बिलकुल यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि निम्नलिखित कारणों से पाटनरोधी शुल्कों के लिए अब कोई आवश्यकता नहीं है :
 - एक निर्णायक समीक्षा में प्राथमिक जांच का संबंध संभावना से है। अन्य शब्दों में, केवल इस बात की जांच करना ही महत्वपूर्ण नहीं है कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति हुई है बल्कि इस बात की भी जांच की जानी चाहिए कि क्या इन शुल्कों को समाप्त किए जाने के फलस्वरूप क्षति के फिर से होने की कोई संभावना है। याचिकाकर्ता ने इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य दिए हैं कि यदि शुल्कों को समाप्त होने दिया जाए तब गंभीर रूप से बार-बार क्षति होगी। जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में सकारात्मक क्षति मार्जिन यह दर्शाता है कि याचिकाकर्ता को पहले से आयातों के कारण पर्याप्त क्षति का सामना करना पड़ रहा है।
 - कीमत पर दबाव की दृष्टिगत उपस्थिति अपने आप में मौजूदा पाटनरोधी शुल्कों के कारण हुई है। इसका गलत रूप में यह आशय नहीं निकाला जाना चाहिए कि अब शुल्कों की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए रिकार्ड पर पर्याप्त साक्ष्य हैं कि इन शुल्कों को समाप्त करने के फलस्वरूप कीमत पर दबाव फिर से होगा।
- उपर्युक्त विवरण को देखते हुए, माननीय प्राधिकारी द्वारा प्रकटन विवरण के पैरा 30 से 34 पर निकाले गए निष्कर्षों पर फिर से विचार किया जाना चाहिए क्योंकि उसकी पुष्टि रिकार्ड पर दिए गए तथ्यों से नहीं होती है।
- माननीय प्राधिकारी ने यह टिप्पणी की है कि *क्षति की अवधि के तुलना में संबंधित उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है।*
- जैसा कि ऊपर में दिए गए तथ्यों में देखा जा सकता है, घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में गिरावट देखी जाती रही है जबकि संबद्ध देश और अन्य देशों के बाजार हिस्से में आधार वर्ष से लेकर जांच की अवधि तक वृद्धि देखी गयी है।

- प्रारंभ में, याचिकाकर्ता पर्याप्त साक्ष्य पर विश्वास करता है जिसे इसने यह सिद्ध करने के लिए रिकार्ड पर उपलब्ध कराया है कि यदि शुल्कों को समाप्त होने दिया जाता है तब घरेलू उद्योग को क्षति के फिर से होने अथवा उसके जारी रहने की एक प्रबल संभावना है।
- चीन में 75 से अधिक बड़े उत्पादक हैं (इनका विवरण पहले ही रिकार्ड में दिया गया है) जिसके पास बिक्री योग्य पर्याप्त क्षमताएं हैं। यदि शुल्कों को समाप्त होने दिया जाता है, तब उनका निर्यात संभवतः भारत में क्षतिकारक और पाटित कीमतों पर किया जायेगा। याचिकाकर्ता ने इस संबंध में अपने दावों की पुष्टि करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं।
- हालांकि, माननीय प्राधिकारी, ने संभावना संबंधी अपने विश्लेषण में कोई विश्लेषण नहीं किया है और उन आंकड़ों को प्रकट नहीं किया है जिस पर यह भरोसा करने का प्रस्ताव करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सहयोगी प्रतिष्ठानों द्वारा उनके चीन/नीदरलैंड/जापान के संयंत्रों से अन्य तीसरे देशों में इस बात का आकलन करने के लिए किए गए निर्यातों का कोई विश्लेषण नहीं हुआ है कि क्या जहां तक तापीय और वायलट प्लेटों का संबंध है, पाटन अथवा क्षति की कोई संभावना है।
- माननीय प्राधिकारी ने इस संभावना को नोट किया है कि भारत में कोडक की निर्यात कीमत कम नहीं होगी :

"67. प्राधिकारी जांच की अवधि के पूर्व के दो वर्षों के दौरान और जांच की अवधि के बाद भी मैसर्स के सी जी सी सी एल द्वारा निर्यात की कीमतों की प्रवृत्ति को नोट करते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विभिन्न ग्रेडों की जांच की अवधि के दौरान भारत को छोड़कर अन्य देशों में निर्यातक की कीमतें भारत में प्रचलित कीमतों से औसतन अपेक्षाकृत अधिक हैं, जो इस कारण से पाटनरोधी शुल्क को वापस लिए जाने पर भारत में विपथित किए जाने की संभावना को नहीं दर्शाते हैं। इसके अलावा, कोडक के मामले में यह मुद्दा बिना किसी महत्व के है क्योंकि यह किसी पाटनरोधी उपाय के अधीन नहीं है और इसका व्यापार पैटर्न कोडक की ओर से अन्य वैश्विक स्थानों से अपने निर्यातों को भारत में उन पर पाटनरोधी उपाय नहीं लगाये जाने की स्थिति में विपथित करने के बाद किसी प्रवृत्ति को नहीं दर्शाता है। इसके अलावा, कोडक द्वारा निर्यातों के पहुंच मूल्य के फलस्वरूप न तो घरेलू उद्योग की बिक्री पर कीमत संबंधी कोई दबाव/ह्रास हुआ है क्योंकि कीमत में कटौती और क्षति मार्जिन दोनों नकारात्मक देखे गए हैं।"

- याचिकाकर्ता यह अनुरोध करता है कि कोडक ने जांच की अवधि में वायलट प्लेटों का निर्यात शुरू किया है जो जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में बहुत अधिक रूप में *** प्रतिशत तक बढ़ गया है। मात्राओं में वृद्धि की इस अवधि के दौरान, कोडक की कीमतों में भी थोड़ी गिरावट आई है। इसके अलावा, ये निर्यात उस कीमत पर किए गए थे जो उल्लेखनीय रूप में याचिकाकर्ता की एन आई पी से कम थी। यदि शुल्कों को समाप्त होने दिया जाता है तब यह पाटित और क्षतिकारक आयातों की प्रबल संभावना को दर्शाता है।
- माननीय प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के पैराग्राफ 68 में दिए गए अनुसार तथ्यों को माना है :

"प्राधिकारी नोट करते हैं कि फूजीफिल्म ने भारत में संबद्ध वस्तुओं का निर्यात चीन पर पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने के बाद यूरोपीय संघ और जापान में अपने अन्य उत्पादन सुविधाओं से निर्यात किया है। उत्पादक/निर्यातक से यह अनुरोध किया गया था कि वे जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद जापान और यूरोपीय संघ में अपनी अन्य उत्पादन सुविधाओं से संबद्ध वस्तुओं का उनके द्वारा भारत में किए गए निर्यात के संबंध में सूचना भी उपलब्ध कराये। उत्पादक/निर्यातक और इसके सहयोगी आयातक ने जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद (6 महीने) इन निर्यातों की मात्रा और मूल्य के संबंध में आंकड़े उपलब्ध कराये हैं। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तुओं की कीमत की प्राप्ति विभिन्न स्रोतों से चाहे वह पाटित हो अथवा गैर-पाटित के आयात कीमतों पर निर्भर करता है।" (इस पर जोर दिया गया है)

- प्राधिकारी यह अनुरोध करते हैं कि माननीय प्राधिकारी ने बिलकुल सही निष्कर्ष निकाला है कि याचिकाकर्ता पर आयात संबंधी कीमतों का प्रभाव पड़ सकता है। यहां यह भी ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि चीन के वही प्रमुख उत्पादक उनके अपने अन्य निर्यात स्थानों से कीमत पर दबाव डालने में सक्षम है और इस प्रकार से उन्हें भारतीय बाजार पर नियंत्रण करने तथा कीमतों को कम करने की अनुमति मिल जायेगी। यदि शुल्कों को समाप्त होने दिया जाता है तब यह क्षति के फिर से होने की संभावना को और अधिक बढ़ा देगा, जिससे शुल्क के अंतिम कुछ वर्षों में यह पूर्ण रूप से निष्प्रभावी हो जायेगा।
- याचिकाकर्ता यह अनुरोध करते हैं कि भारत में "जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद जापान और यूरोपीय संघ में उनके अन्य उत्पादन सुविधाओं से संबद्ध वस्तुओं का उनके द्वारा किए गए निर्यात" के संबंध में इस प्रवृत्ति को याचिकाकर्ता को सार्थक विश्लेषण आसान बनाने के उद्देश्य से एक अगोपनीय रूप में उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- प्राधिकारी, ने डी वी डी - आर और डी वी डी आर डब्ल्यू⁴ पर लगाये गये पाटनरोधी शुल्क पर निर्णायक समीक्षा के अंतिम जांच परिणाम के माध्यम से तब भी हॉगकांग पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जब इस तथ्य के कारण जांच की अवधि के

दौरान हाँगकाँग से कोई निर्यात नहीं किया गया था कि संबद्ध वस्तु पाटनरोधी शुल्क हटाये जाने की स्थिति में हाँगकाँग के द्वारा परिवर्तित हो जायेगी।

“129. जहाँ तक हाँगकाँग का संबंध है, यद्यपि जांच की अवधि उस देश से कोई आयात नहीं हुआ है यह सिद्ध कर दिया गया है कि यदि हाँगकाँग पर शुल्कों को समाप्त कर दिया जाता है तब इस बात को ध्यान में रखते हुए हाँगकाँग के द्वारा अन्य मूल के देशों के सामानों के परिवर्तित किए जाने की प्रबल संभावना है कि इस देश में इन संबद्ध वस्तुओं के लिए कोई उत्पादन क्षमता नहीं है और इस देश से निर्यात की गई अधिकांश वस्तुओं का निर्माण वास्तव में अन्य स्थानों पर होता है।” उसी प्रकार से, वर्तमान जांच में, यूरोपीय संघ और जापान से फूजीफिल्म द्वारा किए गए निर्यात तब चीन के माध्यम से किए जाएंगे जिसके उत्पादन की लागत अपेक्षाकृत कम होगी और इस प्रकार से यूरोपीय संघ और जापान के बजाय अन्य देशों से निर्यात का एक अपेक्षाकृत किफायती और व्यावहारिक विकल्प मौजूद रहेगा। इसके अलावा, वर्तमान जांच में, ऊपर में दिए गए जांच परिणाम के विपरीत, फूजीफिल्म का संयंत्र चीन में है। इसके कारण फूजीफिल्म के इस विचाराधीन उत्पाद को विपश्चित नहीं करना पड़ेगा बल्कि यह चीन में ही इसका निर्माण करेगा और इस प्रकार से इस पर कोई अतिरिक्त लागत भी नहीं आयेगी।

- प्राधिकारी ने लकी द्वारा किए गए निर्यातों के लिए फिर से होने वाली क्षति के जारी रहने की संभावना के संबंध में निष्कर्ष नहीं निकाला है। इस इस संबंध में, याचिकाकर्ता का अनुरोध है कि सतत क्षति का बहुत बड़ा खतरा और संभावना है जिसकी पुष्टि लकी के कीमत निर्धारण संबंधी व्यवहार द्वारा तीसरे देशों को की जा सकती है। इस संबंध में याचिकाकर्ता माननीय प्राधिकारी का ध्यान उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए बीजकों की ओर आकर्षित करता है। वह स्पष्ट रूप से लकी के कीमत निर्धारण संबंधी व्यवहार और घरेलू उद्योग को आसन्न खतरे को दर्शाता है।
- याचिकाकर्ता ने दिनांक 12 मार्च, 2018 के अपने लिखित अनुरोध में सतत क्षति और क्षति के फिर से होने की संभावना के संबंध में विस्तृत अनुरोध किए हैं और दिनांक 19 मार्च, 2018 के प्रतिउत्तर संबंधी अनुरोध जिस पर निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रकटन विवरण में विचार नहीं किया गया है, में भी इसका उल्लेख किया गया है। उसके सारांश को नीचे फिर से दोहराया गया है और विस्तृत अनुरोध को संक्षिप्तता के वास्ते यहां फिर से प्रस्तुत किया गया है।
 - पर्याप्त रूप से बढ़े हुए आयात की संभावना को दर्शाते हुए पाटित आयातों की वृद्धि की एक अत्यधिक दर
 - चीन जन. गण. से व्यापार विपथन और कीमत की क्षति की संभावना
 - संबद्ध देश में पर्याप्त बिक्री योग्य क्षमताओं (अथवा क्षमताओं की एक आसन्न वृद्धि) से संभवतः बढ़ा हुआ आयात हो सकता है
 - चीन के उत्पादकों का तीसरे देशों में कीमत निर्धारण संबंधी व्यवहार
 - चीन के उत्पादकों से भारत में क्षतिकारक कीमतों पर पेशकश
 - संबद्ध देश से उत्पादकों का निर्यात उन्मुखीकरण
 - दो प्रमुख बाजारों द्वारा चीन के विरुद्ध विचाराधीन उत्पाद अर्थात् कोरिया जन. गण. और ब्राजील में पाटनरोधी उपाय जारी हैं
 - कीमत पर दबाव और उसका हास
 - जांच की जा रही वस्तुओं का माल भंडार
 - भारतीय बाजार की कीमत आर्कषता
 - घरेलू उद्योग की इस उत्पाद की कीमत संवेदनशीलता और भारतीय बाजार के मामले में जोखिम की संभावना

70. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों/ अन्य पक्षकारों द्वारा किया गया अनुरोध

विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई टिप्पणियां नीचे दिए गए अनुसार हैं :

(I) **मैसर्स मैट्रोस्टार प्रिंट सॉल्यूशन प्रा. लिमि.**

- हम इस बात को दोहराना चाहेंगे कि हमने अपने क्रियाकलाप मुख्य रूप से पाटनरोधी शुल्क जिसे चीन के सस्ते आयातों के विरुद्ध विचाराधीन उत्पाद (पी यू सी) पर आपके कार्यालय द्वारा दिया गया था, के रूप में समर्थन के कारण शुरू किया। यदि यह सहयोग और पाटनरोधी शुल्क के रूप में सुरक्षा वापस ले ली जाती है तब हम चीन के सामान जिसे बिलकुल सस्ती पर पाटित किया जाता है, से प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में नहीं होंगे।

- आपके कार्यालय द्वारा जारी किए गए प्रकटन विवरण का अध्ययन किए जाने के बाद, यह निष्कर्ष निकालना आश्चर्यजनक था कि मैसर्स लकी ने केवल तापीय प्लेटों का निर्यात किया है जबकि यह तथ्य बाजार में अच्छी तरह से पता है कि और हमारी बाजार संबंधी यह है कि कपूर टोपाज़ के ब्रांड नाम के अंतर्गत भारत में यू बी सीटी पी प्लेटों का सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता में से एक हैं। यदि प्राधिकारी उसकी आवश्यकता समझें तो हम साक्ष्य उपलब्ध कराने में प्रसन्न होंगे।
- इसके अलावा, हमें यह जांच परिणाम निकालने के बाद आश्चर्य हो रहा था कि लकी को आपके कार्यालय को अपूर्ण और गलत सूचना उपलब्ध कराये जाने के बावजूद नकारात्मक क्षति मार्जिन दिया गया है। इसके साथ ही हम नोट करते हैं कि लकी की लेखांकन पद्धति निर्यात कीमत की गणना का बैकअप प्रदान नहीं कर सका।
- हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि एक नव-स्थापित कंपनी होने के कारण हम चीन के उत्पादकों के आचरण और गलत घोषणा और गलत ढंग से प्रस्तुत किए जाने की अनुचित व्यापार प्रथाओं के विरुद्ध सभी तीन प्रकार की प्लेटों पर पाटनरोधी शुल्क की सुरक्षा आवश्यक समझते हैं। इस कारण से प्राधिकारी से अनुरोध किया जाता है कि वे लकी दावे को अस्वीकार करें और लकी एवं सभी अन्य चीन के निर्यातकों पर शुल्क लगायें।

(II) अखिल भारतीय मास्टर प्रिंटर्स संघ

- प्रकट किए गए क्षति संबंधी विभिन्न मापदण्ड यह दर्शाते हैं कि यदि पाटनरोधी शुल्क को इस मामले में जारी नहीं रखा जाता है तब इस बात की प्रबल संभावना है कि घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहेगी जो बाद में कुल मिलाकर प्रयोक्ताओं अर्थात् भारतीय मुद्रण उद्योग पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव डालता है। घरेलू निर्माता के न रहने पर भारतीय मुद्रण उद्योग अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता खो देगी। प्रकटन विवरण में सूचीबद्ध क्षति संबंधी मापदण्डों से यह स्पष्ट है।
- जबकि घरेलू उद्योग की बिक्री में क्षति के अवधि के दौरान 24 प्रतिशत तक वृद्धि, संबद्ध देश से आयातों में 72 प्रतिशत तक वृद्धि हुई, जो घरेलू उद्योग की बिक्री में तीन गुणा वृद्धि है। यद्यपि अन्य भारतीय उत्पादकों की वृद्धि में 4 प्रतिशत तक वृद्धि हुई और तीसरे देशों से आयातों में उसी अवधि में 91 प्रतिशत तक वृद्धि हुई, इन दो श्रेणियों द्वारा भारित हिस्सा क्रमशः 1 प्रतिशत और 11 प्रतिशत ही था। घरेलू उद्योग को भारत में अन्य उत्पादकों से क्षति का सामना नहीं करना पड़ रहा था।
- दूसरी ओर, संबद्ध देश से आयातों का बाजार हिस्सा में आधार वर्ष में 15 प्रतिशत से बढ़कर जांच की अवधि के दौरान 19 प्रतिशत हो गया। घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तुओं के आयातों का अपना बाजार हिस्सा खोना पड़ा क्योंकि इसके बाजार हिस्से में आधार वर्ष में 76 प्रतिशत से बहुत अधिक कम होकर जांच की अवधि के दौरान 69 प्रतिशत हो गया। यह घरेलू उद्योग के स्वास्थ्य पर बहुत अच्छा प्रभाव नहीं दर्शाता है।
- जबकि संबद्ध वस्तुओं की मांग में क्षति की अवधि में 38 प्रतिशत तक वृद्धि वहीं, घरेलू उद्योग को उसी अवधि में 7 प्रतिशत बाजार हिस्से को खोना पड़ा जबकि संबद्ध देश से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि और इसने जांच की अवधि द्वारा इस बाजार का 19 प्रतिशत प्राप्त कर लिया था।
- प्रकटन विवरण से, कोई भी व्यक्ति आसानी से यह समझ सकता है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता भी अच्छी नहीं लगती है।
- प्रति इकाई लाभप्रदता में आधार वर्ष में 100 सूचीबद्ध बिन्दुओं से कम होकर जांच की अवधि के दौरान 62 सूचीबद्ध बिन्दु तक हो गया। कुल लाभप्रदता में 100 सूचीबद्ध बिन्दु से गिरावट होकर जांच की अवधि के दौरान 77 सूचीबद्ध बिन्दु हो गया। इस मामले के लाभ में भी वैसी ही प्रवृत्ति रही जिसने आधार वर्ष में 100 सूचीबद्ध बिन्दुओं से जांच की अवधि के दौरान 74 सूचीबद्ध बिन्दु तक की गिरावट दर्ज की है। कर और व्याज पूर्व लाभ ने आधार वर्ष में 100 सूचीबद्ध बिन्दुओं से जांच की अवधि के दौरान 65 सूचीबद्ध बिन्दु की तेजी से गिरावट को दर्शाया है। नियोजित पूंजी पर आय में आधार वर्ष में 100 सूचीबद्ध बिन्दुओं से जांच की अवधि के दौरान 60 सूचीबद्ध बिन्दुओं तक की गिरावट देखी गई।
- भारत में घरेलू उद्योग और प्रयोक्ताओं के हित में हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की सिफारिश करें। हम इस संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी की सिफारिश की प्रतीक्षा करते हैं।

(III) मैसर्स ओरियन पोटोसेनस्टिब सिस्टम

- प्रकट किए गए क्षति संबंधी विभिन्न मापदण्ड यह दर्शाते हैं कि यदि पाटनरोधी शुल्क को इस मामले में जारी नहीं रखा जाता है तब इस बात की प्रबल संभावना है कि घरेलू उद्योग को क्षति होती रहेगी। यह प्रकटन विवरण में सूचीबद्ध क्षति संबंधी सभी मापदण्डों से स्पष्ट है।
- संबद्ध देश से आयातों के बाजार हिस्से में आधार वर्ष में 15 प्रतिशत की तुलना में जांच की अवधि के दौरान 19 प्रतिशत तक वृद्धि। घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण अपने बाजार हिस्से को खोना पड़ा क्योंकि इसके बाजार हिस्से में आधार वर्ष में 76 प्रतिशत की तुलना में बहुत अधिक कमी जांच की अवधि के दौरान हुई और यह 69 प्रतिशत हो गया। ऐसा मुख्य रूप से व्याप्त पाटन और गलत घोषणा करने संबंधी पद्धतियों के कारण मुख्य रूप से हुई है जिसका घरेलू उद्योग पर प्रभाव बहुत खराब पड़ा है।

- यद्यपि संबद्ध वस्तुओं की मांग में क्षति की अवधि में 38 प्रतिशत तक वृद्धि हुई, घरेलू उद्योग को उसी अवधि में अपने बाजार हिस्से का 7 प्रतिशत खोना पड़ा, जबकि संबद्ध देश से आयातों के कारण बाजार हिस्से में वृद्धि हुई और इसने जांच की अवधि तक 19 प्रतिशत तक बाजार पर कब्जा कर लिया था।
- हमने प्रकटन विवरण में यह टिप्पणी की कि लकी हुआग्वांग ग्राफिक्स कं. लिमि. को एक नकारात्मक पाटन मार्जिन दिया गया है। परंतु वास्तव में लकी हुआग्वांग ग्राफिक्स लिमि. एनालॉग के रूप में उनकी गलत घोषणा करते हुए (पी. एस. प्लेट्स) द्वारा यू वी सीटी सी पी प्लेटों की भारी मात्रा ला रहा है।
- हम आपसे अनुरोध करते हैं कि लकी हुआग्वांग ग्राफिक्स कं. लिमि. और सभी अन्य चीन के निर्माताओं को सभी अन्य चीन के निर्माताओं और निर्यातकों के साथ उसी श्रेणी पर पाटनरोधी शुल्क में शामिल किया गया जाए।
- हम ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेट्स के निर्माता हैं जिसमें यू वी (सीटी सी पी) डिजिटल प्लेट्स और तापीय डिजिटल प्रिंटिंग प्लेट्स शामिल हैं। हम 2006 से एनालॉग ऑफसेट प्रिंटिंग प्लेट्स और 2012 से डिजिटल प्लेट्स का निर्माण कर रहे हैं।
- हम मैसर्स ओरियन पोटोसेनस्टिव सिस्टम, विशेष रूप से चीन जन. गण. यू वी (सीटी सी पी) किस्म के डिजिटल ऑफसेट प्लेटों की व्याप्त पाटन के कारण बहुत अधिक वित्तीय कठिनाईयों का सामना कर रहे हैं। वर्तमान में मौजूद पाटनरोधी शुल्क के बावजूद, ऐसा इसलिए हो रहा है कि आयातकों ने पाटनरोधी शुल्क से बचने के लिए तरीके और साधनों को ढूंढ लिया है और वे उचित शुल्कों से अपना बचाव करते हैं। ऐसा इन वस्तुओं को पी. एस. प्लेटों के रूप में गलत घोषणा करने के बाद किया जाता है। यद्यपि वे वास्तव में यू पी सीटी सी पी प्लेट्स हैं।
- हमारा यह विश्वास है कि यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्कों को वापस ले लिया जाता है तब, इस देश में चीन से सस्ते डिजिटल प्लेटों का प्रवेश भारी मात्रा में होगा जिससे यह घरेलू उद्योग वास्तविक रूप में बर्बाद हो जायेगा।
- यदि मौजूदा शुल्कों को समाप्त कर दिया जाता है तब घरेलू निर्माता उत्पादन करना शुरू कर देंगे यदि डिजिटल प्लेट का आना असंभवभावी होगा।
- हम यह अनुरोध करते हैं कि डिजिटल प्लेटों के सभी तीन प्रकारों पर नामतः (1) यू वी सीटी सी पी (2) तापीय सी टी पी और (3) वायलट सी टी पी पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। यह प्रावधान आयातकों द्वारा किए जाने वाले गलत घोषणाओं को रोकने तथा घरेलू उद्योग को भारी हानि उत्पन्न करने से रोकने के लिए आवश्यक है।

(iv) कपूर इमेजिंग प्रा. लिमि., लकी हुआग्वांग ग्राफिक्स लिमि. और शंघाई स्ट्रॉग स्टेट प्रिंटिंग इक्यूमेंट लिमि. की ओर से मैसर्स टी पी एम कंसल्टेंट

- अनुच्छेद 6 में इसके संगत भाग में यह उल्लेख किया गया है कि एक अंतिम निर्धारण किए जाने के पूर्व प्राधिकारी विचाराधीन आवश्यक तथ्यों के सभी हितवद्ध पक्षकारों को सूचित करेंगे जो इस निर्णय का आधार बनेगा कि क्या निश्चयात्मक उपायों को लागू किया जाए। जिस व्यापार संघटन के पैनल रिपोर्ट में, चीन में डब्ल्यू टीओ/ डीएस-414/आर – संयुक्त राज्य अमरीका से ग्रेन ओरियंटिड फ्लेट-रोलड इलेक्ट्रिकल स्टील पर प्रतिस्थानापन्न और पाटनरोधी शुल्क के संबंध में, यह टिप्पणी की गई थी कि पाटनरोधी जांच का निष्कर्ष निकाले जाने पर निश्चयात्मक उपायों को लागू करने के उद्देश्य से, एक जांच प्राधिकारी को पाटन, क्षति एक कारणात्मक संबंध का अवश्य पता लगाना चाहिए। इस कारण से इस जांच परिणाम के निहित “आवश्यक तथ्यों” और इन कारकों के संबंध में निष्कर्ष निश्चयात्मक उपायों को लागू करने के लिए निर्णय का आधार बनेगा और इसे प्रकट किया जाना चाहिए।
- इस प्रकार से पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध का निर्धारण करने के लिए संगत तथ्यों के संबंध में जांच परिणाम को प्राधिकारी द्वारा प्रकट किए जाने की आवश्यकता है। प्राधिकारी ने विभिन्न आर्थिक मापदण्डों जैसे उत्पादन, बिक्री और क्षमता का उपयोग आदि पर वर्ष दर वर्ष प्रवृत्तियों को ही उपलब्ध कराया है। यह अनुरोध किया जाता है कि क्षति के इन मापदण्डों के संबंध में प्राधिकारी का निष्कर्ष “आवश्यक तथ्य” बन जाता है। इन तथ्यों को प्रकट किए जाने के बिना, हम सार्थक टिप्पणियां करने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। सार्थक टिप्पणियां करने के लिए, इन सभी तथ्यों का एक प्रभावी प्रकटन जो अंतिम जांच परिणाम का आधार बनेगा, किया जाना अपेक्षित है। इस संबंध में, अहमदाबाद स्थित माननीय गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा निरमा लिमिटेड बनाम संघ सरकार के मामले में दिए गए फैसले भी संगत हैं और उसे यहां नीचे फिर से प्रस्तुत किया जाता है।
- “जबकि अनुच्छेद 6.9 में आवश्यक तथ्यों के प्रकटन के लिए किसी विशेष रूप का निर्धारण नहीं किया गया है, लेकिन यह सभी मामलों में अपेक्षित है कि जांच प्राधिकारी उन तथ्यों को इस प्रकार से प्रकट करें कि कोई हितवद्ध पक्षकार उसे स्पष्ट रूप से समझ सके कि जांच प्राधिकारी द्वारा इन आंकड़ों को उपयोग किया गया है और किस प्रकार से उन आंकड़ों का उपयोग पाटन के मार्जिन का निर्धारण करने के लिए किया गया था। इस कारण से प्रकटन विवरण में आवश्यक तथ्यों के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी के मध्यवर्ती जांच परिणाम और निष्कर्ष निहित हैं जो इस निर्णय के लिए आधार बनेगा कि क्या निश्चयात्मक उपायों और न कि अंतिम निष्कर्षों को इस तथ्य पर लागू किया जाये अथवा नहीं कि क्या निश्चयात्मक उपायों को लागू किया जाना अपेक्षित है अथवा नहीं। इस न्यायालय के मत से, जिसे विद्वान अधिवक्ता द्वारा याचिकाकर्ताओं के लिए सही ढंग से प्रस्तुत किया

गया है, प्रकटन विवरण में उन आवश्यक तथ्यों जो इस बात का निर्णय किए जाने के लिए आधार बनेंगे कि क्या पाटनरोधी उपायों, और न की उन आवश्यक तथ्यों के आधार पर इसके निष्कर्षों को लागू किया जाए अथवा नहीं, के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी के निष्कर्ष निहित होने चाहिए। इन आवश्यक तथ्यों के आधार पर निष्कर्षों को अंतिम जांच परिणामों में दर्ज किया जाना है अर्थात् इस प्रकार के तथ्यों के आधार पर पाटनरोधी उपायों को लागू किया जाना अपेक्षित है अथवा नहीं।”

- इस कारण से निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रकटन विवरण जारी किए जाने के पूर्व इन तथ्यों के संबंध में निष्कर्ष निकालने की आवश्यकता है कि, निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रकटन विवरण के चरण में इन जांचों को समाप्त नहीं करने की आवश्यकता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचार आवश्यक तथ्यों के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं
- “विचार उत्पाद का क्षेत्र, घरेलू उद्योग द्वारा पेशकश की जाने वाली समान वस्तु का क्षेत्र, याचिकाकर्ता का क्षेत्र घरेलू उद्योग होता है, पाटन एवं क्षति मार्जिन, क्या घरेलू उद्योग को सतत रूप से क्षति हुई है। यदि ऐसा नहीं है तब क्या घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है, क्या घरेलू उद्योग को क्षति अन्य ज्ञात सूचीबद्ध कारकों के कारण हुई है। क्या घरेलू उद्योग को क्षति ज्ञात सूचीबद्ध कारकों के पाटित आयातों के अलावा अन्य कारकों के कारण हुई है, क्या घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है, क्या ये वही कारक हैं जो पाटन और क्षति की संभावना को सिद्ध करते हैं।”
- प्रकटन विवरण में विभिन्न हिस्सों में यह उल्लेख किया गया है कि वे इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए कुछ तथ्यों पर विचार करने का प्रस्ताव करते हैं, हालांकि उन्होंने यह उपलब्ध नहीं कराया है कि वे तथ्य कौन कौन से हैं। इस प्रकार से प्राधिकारी ने यह उपलब्ध कराया है कि वे कौन कौन से मापदण्ड हैं जिस पर प्राधिकारी आवश्यक तथ्य के रूप में विचार करने का प्रस्ताव करते हैं। इस कारण से प्राधिकारी ने विचाराधीन आवश्यक तथ्यों को उपलब्ध नहीं कराया है।
- प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की एम ओ यू कीमतों के संबंध में यह उल्लेख किया है कि
 - “प्राधिकारी ने एम ओ यू के अंतर्गत उस कीमत की जांच करने का प्रस्ताव किया जिस पर सहमति बन सकती है और अन्य स्रोतों अर्थात् चीन के उत्पादकों/ निर्यातकों तथा अन्य संबद्ध देशों के उत्पादकों/ निर्यातकों से भी इस तथ्य का मूल्यांकन करने के लिए पेशकश की जाने वाली कीमतों के बीच घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किया गया है कि क्या एम ओ यू की व्यवस्था ने घरेलू उद्योग की चिंताओं का समाधान किया है और इस तथ्य का भी कि क्या पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की आवश्यकता थी।”
- प्राधिकारी ने इस कारण से उस तथ्य को प्रकट नहीं किया है जो एम ओ यू की कीमतों, घरेलू उद्योग की कीमतों और गैर पाटित स्रोतों के बीच तुलना दर्शाता है जो स्वीकार्य रूप से विचाराधीन आवश्यक तथ्य है और वह अंतिम जांच परिणाम का आधार बनेगा।
- प्राधिकारी तीसरे देश से किए जाने वाले आयातों के संबंध में नीचे दिए गए अनुसार उल्लेख करते हैं
वर्तमान मामले में जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद गैर पाटित स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य पर इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत दबाव संबंधी प्रभाव का विश्लेषण करते हुए क्षति की किसी संभावना को सिद्ध करने के लिए विचार किए जाने का प्रस्ताव है कि उत्पादकों/ निर्यातकों के संबद्ध देश से कीमतों, गैर पाटित स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं की कीमतों पर पाटनरोधी उपाय नहीं लगाया गया है और संभवतः घरेलू उद्योग की बिक्री पर उत्पाद के प्रकारों का (मात्रा और मूल्य दोनों) की गलत घोषणा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- प्राधिकारी ने कीमत में कटौती का विश्लेषण किया है। हालांकि प्रकटन विवरण में इस बात का उल्लेख नहीं है कि क्या संबद्ध देशों से आयातों के कारण अथवा गैर संबद्ध देशों के कारण कीमत में कटौती की है। इसके अलावा, कीमत में कटौती का निर्धारण एम ओ यू की कीमतों पर विचार करने के बाद ही किया गया है, हालांकि कटौती की एक सीमा को प्रकट नहीं किया गया है।
- इसी प्रकार से प्रकटन विवरण में कीमत पर दबाव और ह्रास की जांच करने के लिए लागतों, बिक्री कीमत और आयातों की पहुंच कीमत की प्रवृत्तियों का एक तालिका दी गई है। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि क्या वर्तमान मामले में कीमत पर कोई दबाव/ इसमें ह्रास हुआ है।
- प्रकटन विवरण में घरेलू उद्योग के लाभों के संबंध में निम्नानुसार उल्लेख किया गया है :
“हालांकि, प्राधिकारी ने इस तथ्य पर विचार करने का प्रस्ताव किया कि क्या जांच की अवधि के लिए निर्धारित किए गए ‘एन आई पी’ की तुलना किए जाने पर ‘एन एस आर’ पर दबाव पड़ा है।
- हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि क्या एन एस आर उस कीमत से कम अथवा अधिक है जो एन आई पी है। घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर विचार करने के बाद हमारी समझ यह है कि एन आई पी को एन एस आर से बहुत कम होना चाहिए। हालांकि, हम उसे प्रकट किए जाने का अनुरोध करते हैं।
- घरेलू कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले कारकों के संबंध में, प्रकटन विवरण में किये गये विश्लेषण का अंतिम निष्कर्ष शामिल नहीं है।

- हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि क्या जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद क्षति मार्जिन नकारात्मक है (जो बाजार की स्थिति के बारे में हमारी समझ है) अथवा क्या इन आयातों का जांच की अवधि के बाद में दबावकारी अथवा ह्रासकारी प्रभाव पड़ा था। ये आवश्यक तथ्य हैं जिन पर अंतिम जांच परिणाम आधारित होगा। इस प्रकार से हम उसे प्रकट किए जाने का अनुरोध करते हैं।
- जारी किए गए प्रकटन विवरण यह दर्शाता है कि निम्नलिखित पर तथ्यों के रूप में विचार किया गया है जबकि या तो मापदण्ड हैं अथवा सूचना हैं।
 - i. भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में अथवा स्वतंत्र रूप में आयातों की मात्रा की प्रवृत्तियां;
 - ii. क्या घरेलू उद्योग की कीमतों में इन आयातों के कारण कटौती हो रही है;
 - iii. क्या बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर इन आयातों के कारण दबाव पड़ रहा है अथवा इसमें ह्रास हो रहा है;
 - iv. क्या घरेलू उद्योग का कार्य निष्पादन बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता का उपयोग, नकदी का प्रभाव, माल भंडार, रोजगार, मजदूरी, विकास, पूंजी निवेश प्राप्त करने की क्षमता आदि में वास्तविक अथवा संभावित गिरावट को दर्शाता है;
 - v. क्या जांच की अवधि के लिए निर्धारित की गई 'एन आई पी' से तुलना करने पर 'एन एस आर' पर दबाव पड़ा है
 - vi. जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद गैर पाटित स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य
 - vii. गैर पाटित स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं की कीमतों, उन उत्पादकों/ निर्यातकों के संबद्ध देश से कीमतों जो पाटनरोधी उपाय के अधीन नहीं हैं, को ध्यान में रखकर जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत ह्रास प्रभाव।
- क्या घरेलू उद्योग की बिक्री पर (मात्रा और मूल्य दोनों) उत्पाद के प्रकारों के गलत घोषणा का कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है – संयोग से, इस मुद्दे पर हम विस्कोज फिलामेंट यार्न (वी एफ वाई) के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा हाल में जारी किए गए प्रकटन विवरण से संगत उद्धरण को इसके साथ संलग्न कर रहे हैं, जिसमें निर्दिष्ट प्राधिकारी नीचे दिए गए अनुसार माना है -

(ड) संबद्ध देश से इन उत्पादकों द्वारा संबद्ध वस्तु से बचना।

119. पूर्व में यह आरोप लगाया गया है कि निर्यातक ने "इम्ब्रोयडरी यार्न" के नाम पर भारत में संबद्ध वस्तुओं से बचने की कोशिश की है। इसके अलावा, यह आरोप लगाया गया है कि शुल्क से बचना इन स्पष्टीकरण के बावजूद जारी है। यह नोट किया जाता है कि शुल्क से बचना एक अलग जांच है, जिसका समाधान उपयुक्त मंच पर किया जा सकता है, बचने की यह कथित कार्यवाही स्पष्ट रूप से भारत में संबद्ध वस्तुओं को पाटित करने के लिए किसी उद्देश्य को सिद्ध नहीं कर सकता है।

- वी एफ वाई के मामले में, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उस सीमा तक पाटनरोधी शुल्क से बचना स्वीकार किया था कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्व में स्पष्टीकरण को स्वतः जारी करने की सीमा तक गए थे (जिसका आशय यह होता है कि बचने का यह तथ्य निर्दिष्ट प्राधिकारी बहुत अच्छे तरीके से स्वीकार किया गया था) उसके बावजूद, निर्दिष्ट प्राधिकारी की उपर्युक्त टिप्पणी स्पष्ट है।
- हितबद्ध पक्षकार अनुरोध करते हैं उपर्युक्त से निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन आवश्यक तथ्य स्थापित नहीं होते हैं। उपर्युक्त केवल उन मापदण्डों अथवा सूचना को ही स्थापित करते हैं जो तथ्यों को सिद्ध करने के लिए संगत है। इस प्रकार से, प्रकटन विवरण को पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू उद्योग को क्षति के संबंध में विचाराधीन आवश्यक तथ्यों को प्रकटन विवरण में प्रकट नहीं किया गया है। प्रकटन विवरण इस कारण से नियम 16 के अंतर्गत अपेक्षाओं और दायित्व को पूरा नहीं करता है।
- इस प्रकार से यह देखा जायेगा कि प्रकटन विवरण ने उन मापदण्डों को उपलब्ध कराया है जो आवश्यक तथ्यों को सिद्ध करने के लिए संगत है। इस प्रकार से प्रकटन विवरण को पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू उद्योग को क्षति और उसकी संभावना के संबंध में विचाराधीन आवश्यक तथ्यों को प्रकटन विवरण में प्रकट नहीं किया गया है। इस प्रकार से हम इस प्रकार की सूचना को प्रकट करने का अनुरोध हमें प्रभावी टिप्पणियों को उपलब्ध कराने में सक्षम बनाने के लिए करते हैं।
- हितबद्ध पक्षकार प्राधिकारी से यह अनुरोध करता है कि वह सार्थक टिप्पणियां उपलब्ध कराने के लिए घरेलू उद्योग के लिए एक सार्थक प्रकटन जारी करें। हितबद्ध पक्षकार उपर्युक्त प्रकटन के लिए अत्यधिक आभारी होगा ताकि हितबद्ध पक्षकार प्रकटन विवरण के संबंध में अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सके। इसके अलावा, हितबद्ध पक्षकार इस मामले के न सुलझाये गए अनेक वास्तविक मुद्दों तथा निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष उन्हें उपयुक्त रूप से लाने की आवश्यकता को देखते हुए टिप्पणियां देने के लिए एक सुनवाई और अतिरिक्त समय के लिए अपने अनुरोध को दोहराते हैं।
- प्रकटन विवरण से यह स्पष्ट है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्राप्त किए गए तथ्य से स्पष्ट रूप से यह सिद्ध होता है कि -
पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन मैसर्स लकी हुआग्वांग ग्राफिक्स क. लिमि. के लिए नकारात्मक है।

घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में बिक्री और उत्पादन के कारण सुधार हुआ है। लाभप्रदता और निवेश पर आय में गिरावट आई है। हम अनुरोध करते हैं कि ये पाटित आयातों के कारण नहीं हुआ है। इन निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराई गई तृतीय देश की निर्यात कीमत यह दर्शाती है कि तृतीय देश की निर्यात कीमतें भारत की निर्यात कीमत की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक कीमत पर हुई है। एन आई पी की तुलना में एन एस आर अपेक्षाकृत अधिक है।

- प्राधिकारी ने निम्नलिखित मुद्दों पर विचार नहीं किया है/ इसकी जांच नहीं की है :

क. याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराई गई आयात कीमत पर विश्वास नहीं किया जा सकता है : हमारे द्वारा उठाये गए मौलिक बिंदुओं में से एक बिंदु (क) आयात की मात्रा और (ख) आयात की कीमत के संबंध में थी। यह तर्क दिया गया था कि (क) याचिकाकर्ता द्वारा सूचित किए गए आयात की मात्रा बहुत ही अधिक है, जबकि (ख) याचिकाकर्ता द्वारा सूचित की गई आयात की कीमत बहुत ही कम है। इसके अलावा, हमने डी जी सी आई एंड एस से आयात संबंधी आंकड़े एकत्रित किए थे। जबकि इसे समझा जा सकता है कि यह विचाराधीन उत्पाद के वर्गीकरण के प्रयोजन से ही था, किसी भी मामले में यह तर्क नहीं दिया जा सकता है कि विचाराधीन उत्पाद के प्रयोजन से वर्गीकरण में विचाराधीन उत्पाद के आयात विचाराधीन उत्पाद के कुल आयात का दसवां भाग भी नहीं है। जबकि, यह संभव है कि इस उत्पाद के आयातों की सूचना अलग अलग वर्गीकरण में दिया जा सकता है, यह संभव नहीं है कि 80-90 प्रतिशत आयातों का वर्गीकरण विचाराधीन उत्पाद के प्रयोजन से वर्गीकरण नहीं किए गए के अंतर्गत हो जाता है। किसी भी मामले में भारतीय सीमा शुल्क आंकड़ों के अनुसार आयात की कीमत याचिकाकर्ता दावा किए गए आयात की कीमत की तुलना में बहुत अधिक है। इस मुद्दे का समाधान नहीं किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता ने इस आयात कीमत जिसके समर्थन में आयात संबंधी आंकड़े नहीं दिए गए हैं, का दावा करने में इस उत्पाद की कथित गलत घोषणा के बारे में अपनी सोच बना रखी है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता ने एक ऐसे उत्पाद के आयात की सूचना दी है जो विचाराधीन उत्पाद नहीं है। हम पी एस प्लेटों के आयात संबंधी आंकड़ों को इसके साथ संलग्न कर रहे हैं। यह देखा जायेगा कि वास्तव में ये आयात पी एस प्लेटों के आयातों से संबंधित हैं। इस प्रकार से याचिकाकर्ता प्राधिकारी को यह विश्वास करने के लिए भ्रमित कर रहा है पी एस प्लेटों का आयात डिजिटल प्लेट्स के आयात हैं। किसी भी मामले में, हम अनुरोध करते हैं कि सीमा शुल्क के प्राधिकारियों द्वारा स्वीकार किए गए दावों का खंडन करने के लिए कोई औचित्य नहीं है। निर्दिष्ट प्राधिकारी सीमा शुल्क के प्राधिकारियों के निर्णय पर बैठा नहीं रहेगा यदि सीमा शुल्क के प्राधिकारियों ने कुछ आयात विवरण, मात्रा और कीमत को स्वीकार कर लिया है, तब याचिकाकर्ता इसे अस्वीकार करने का अनुरोध नहीं कर सकते हैं। एक प्राधिकारी दूसरे प्राधिकारी द्वारा किए गए कार्य की सत्यता और उपयुक्तता पर सवाल नहीं खड़ा कर सकता है। यह मुद्दा उससे बहुत अलग है जिसे प्राधिकारी द्वारा मेलामाइन के मामले में पाया गया था जिसमें प्राधिकारी ने वास्तव में यह पाया कि डी आर आई ने सीमा शुल्क प्राधिकारियों को की गई घोषणा को अस्वीकार कर दिया है और अतिरिक्त सीमा शुल्क वसूल कर लिया था। वर्तमान मामले में डी आर आई द्वारा शुल्कों को वसूलने का ऐसा कोई उदाहरण नहीं है।

एक अन्य तथ्य जो आयात की मात्रा और मूल्य के आकलन के लिए संगत है यह है कि चीन से डिजिटल प्रिंटिंग प्लेट के प्राथमिक रूप से तीन आपूर्तिकर्ता हैं - कोडक, फूजीफिल्म और लकी। स्वीकार्य तौर पर, फूजीफिल्म ने समग्र मात्राओं को चीन से अन्य स्रोतों (जापान और यूरोप) स्थानांतरित कर दिया है। इसके अलावा, कोडक पर शुल्क की शून्य दर लग रही थी और इस कारण से शुल्क से बचने के किसी प्रकार का सहारा लेने के लिए उसकी कोई मजबूरी नहीं थी। जहां तक लकी का प्रश्न है, लकी द्वारा दायर किए गए प्रश्नावली के उत्तर का पहले ही सत्यापन कर लिया गया है और उसमें स्पष्ट रूप से यह दर्शाया गया कि लकी द्वारा निर्यात किए गए आयात की मात्रा याचिकाकर्ता उपलब्ध कराई गई मात्रा की तुलना में बहुत अधिकतम है। ऐसा मामला होने के कारण हम यह जानना चाहते हैं कि किस कंपनी ने 71 लाख वर्ग मीटर का आयात किया है जब चीन का कोई निर्यातक नहीं है जो इस सीमा तक इन वस्तुओं का निर्यात किया है। केवल कोडक इतनी अधिक मात्रा में आपूर्ति नहीं कर सकता था। किसी भी मामले में कोडक ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है और उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर रिकार्ड पर हैं। प्राधिकारी कृपया कोडक और लकी द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर को याचिकाकर्ता द्वारा सूचित किए गए आयात की मात्राओं से तुलना करने के लिए सह-संबंध स्थापित कर सकते हैं। यह आसानी से सिद्ध हो जाएगा कि याचिकाकर्ता ने आयात की मात्राओं में बहुत अधिक वृद्धि की है और अपने मामले को सिद्ध करने के उद्देश्य से बहुत ही अनुचित रूप से आयात की कीमत में कटौती की है।

ख. याचिकाकर्ता द्वारा सूचित किए गए आयात की मात्राओं को बहुत ही बड़ा चढ़ाकर पेश किया गया है।

ग. अन्य देशों से आयात उन कीमतों पर हुआ है जो संबद्ध देश की कीमतों से कम है और इससे घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही है।

- घ. आयात इस देश में मांग और आपूर्ति के मौजूदा अंतर के बराबर किया जा रहा है।
- ङ. कच्चे माल की लागत में कमी आई है और इस प्रकार से उत्पादन की लागत में भी गिरावट आई है। लागत में वृद्धि अन्य कारकों के कारण हुई है।
- मैसर्स लकी हुआगवांग ग्राफिक्स कं. लिमि. से आयातों के कारण कोई वर्तमान पाटन और क्षति तथा संभावित पाटन और क्षति नहीं है।
 - जैसा कि प्रकटन विवरण से सिद्ध हो गया है कि मैसर्स लकी हुआगवांग ग्राफिक्स कं. लिमि. से आयातों पर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन नकारात्मक है। इसके अलावा, निर्देश दिए जाने पर निर्यातक ने जांच की अवधि के पश्चात की निर्यात सूचना भी उपलब्ध कराई थी। यह देखा जा सकता है कि जांच की अवधि में तथा जांच की अवधि के बाद की अवधि में पाटन मार्जिन नकारात्मक है। प्राधिकारी से यह अनुरोध किया जाता है कि वे मैसर्स लकी हुआगवांग ग्राफिक्स कं. लिमि. द्वारा उपलब्ध कराये गए जांच की अवधि के बाद के आंकड़ों पर विचार करें। इस प्रकार से मैसर्स लकी हुआगवांग ग्राफिक्स कं. लिमि. से निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो रही है और न ही पाटनरोधी शुल्क के समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति होने की कोई संभावना है।
 - घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई
 - यह दोहराया जाता है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है, और क्षति, यदि कोई हो, अन्य स्रोतों के कारण हुई है।
- i. घरेलू उद्योग की बिक्री, उत्पादन और क्षमता का उपयोग बहुत अधिक सुधार को दर्शाता है।
 - ii. संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। हालांकि, चूंकि घरेलू उद्योग के पास घरेलू उद्योग मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता नहीं है और इस प्रकार से बाजार हिस्से में गिरावट स्वभाविक है।
 - iii. प्रकटन विवरण के अनुसार, घरेलू उद्योग द्वारा कीमत में सकारात्मक कटौती के दावे की तुलना में, तापीय डिजिटल प्लेटों के लिए कीमत में कटौती नकारात्मक है और वायलट डिजिटल प्लेटों का कोई आयात नहीं हुआ। यहां इस तथ्य पर बल दिया जाता है कि मैसर्स हुआगवांग ग्राफिक्स कं. लिमि. ने केवल तापीय डिजिटल प्लेटों का निर्यात किया है।
 - iv. कीमत पर दबाव/ इसमें ह्रास आयातों के कारण नहीं हुआ है।
 - v. घरेलू उद्योग को इस पूरी अवधि में लाभ होता रहा है। संबद्ध वस्तुओं पर शुल्क का निर्धारित रूप लग रहा है और इस प्रकार से आयात उस कीमत पर नहीं हो सकता है जो निर्धारित बेंचमार्क से कम हो। इस प्रकार से कोई कथित क्षति इन संबद्ध आयातों के कारण नहीं हो सकता है। इस प्रकार से लाभ में गिरावट का कारण संबद्ध आयात नहीं है बल्कि एम ओ यू है। इसके अलावा, जहां तक इस तर्क का प्रश्न है कि पी एस प्लेटों के रूप में उनकी घोषण किए जाने के बाद आयात किए जाने वाले वस्तुओं के रूप में पाटनरोधी शुल्कों से बचा जा रहा है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। यह मुद्दा सीमा शुल्क से संबंधित मुद्दा है और पाटनरोधी शुल्क का विस्तार करना एक सही उपाय नहीं है और याचिकाकर्ता को उपयुक्त मंच के पास जाना चाहिए।
 - vi. घरेलू उद्योग के पास माल भंडार में मामूली वृद्धि दर्शायी गयी है।
- जारी किया गया प्रकटन विवरण यह दर्शाता है कि ऐसा कोई कारक नहीं है जिसे सिद्ध किया गया हो अथवा दूर दूर तक भी यह दर्शाता हो कि पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसके पीछे होने की संभावना है। पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन नकारात्मक है। यह भी देखा गया है कि तृतीय देश अपेक्षाकृत अधिक कीमतों पर निर्यात करते हैं। इस प्रकार से सही ढंग से यह माना जा सकता है कि निर्यातों के विपथन और वह भी पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन और क्षतिकारक कीमत पर किए जाने की कोई संभावना नहीं है।
 - याचिकाकर्ता ने पाटन और क्षति की संभावना पर किसी आधारों की पुष्टि नहीं की है और कुछ स्थानों गलत निर्णयों/ साक्ष्यों का उल्लेख किया है। लिखित और प्रतिउत्तर अनुरोध में किए गए विस्तृत विवरण का संदर्भ लिया गया है और संक्षिप्तता के वास्ते इसमें उसको दोहराया नहीं गया है।
- (v) **मैसर्स फूजीफिल्म प्रिंटिंग प्लेट (चीन) कं. लिमि. (एफ एफ पी एस), फूजीफिल्म (चीन) इन्वेस्टमेंट कं. लिमि. (एफ एफ सी एन) और मैसर्स फूजीफिल्म इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड (एफ एफ आई पी एल) का प्रतिनिधित्व करने वाली ए पी जे - एस एल जी विधि कार्यालय**
- प्रकटन विवरण से यह नोट किया जाता है कि इन निर्यातकों में से एक निर्यातक अर्थात् मैसर्स लकी हुआगवांग ग्राफिक्स कं. लिमि. के लिए पाटन मार्जिन नकारात्मक रहा है। इस संबंध में हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे कृपया पाटनरोधी नियमावली के अनुसार क्षति का विश्लेषण करते समय मैसर्स लकी हुआगवांग ग्राफिक्स कं. लिमि. के निर्यातों को अपविज्ञत करें।
 - प्रकटन विवरण के पैरा 30 के संबंध में, यह उल्लेख किया जाता है कि प्राधिकारी के उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद पर अनुचित लाभ प्राप्त करने की आशा कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग की चिंता

कथित पाटित आयातों के द्वारा उत्पन्न क्षति नहीं है बल्कि अत्यधिक मुनाफा अर्जित करने की उनकी अनुचित प्रत्याशा है। उपर्युक्त से यह भी स्पष्ट है कि एन आई पी घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना में कम रही है, जिसका अर्थ यह होता है कि घरेलू उद्योग पहले से ही एन आई पी की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक कीमतें वसूल रहा है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह माना है कि अंतिम निर्णायक समीक्षा के मामले में, केवल पाटन का होना पर्याप्त नहीं है जब उसके कारण घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई हो। वही स्थिति जापान और कतर के मूल के और वहां से निर्यात किए गए कास्टिक सोडा के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच (फा. सं. 14/312015 – डी जी ए डी, दिनांक 10.01.2018), चीन जन. गण., चीनी ताइपेई, मलेशिया, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड और कोरिया जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए नाइलॉन फिलामेंट यार्न के आयातों पर लगाये गये पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा (फा. सं. 15/17/2016 – डी जी ए डी, दिनांक 05.01.2018) और प्राधिकारी से विभिन्न अन्य जांच परिणामों सहित हाल में सम्पन्न की गई विविध जांचों से भी सामने आता है। यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी के लिए उन मामलों में जहां घरेलू उद्योग की कीमतें उनकी एन आई पी से अधिक है, जांच को समाप्त करने की स्थापित स्थिति से अलग हटने का कोई कारण नहीं है।

- घरेलू उद्योग को एम ओ यू के अंतर्गत हुए लेन देन के प्रतिशत और एम ओ यू के बाहर हुई लेन देन के प्रतिशत के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी को पर्याप्त सूचना दी जानी चाहिए थी ताकि यह घरेलू उद्योग के इन एम ओ यू और गैर एम ओ यू के प्रभाव की जांच उनके समग्र कीमत निर्धारण के संबंध में करने में सक्षम हो सके।
- घरेलू उद्योग को कम से कम एम ओ यू के अंतर्गत कीमत निर्धारण संबंधी पद्धति अथवा सूत्र, यदि उस पर स्वयं कीमत निर्धारण के संबंध में सहमति नहीं बनी हो, तब प्रकट करना चाहिए। इस प्रकार की सूचना के अभाव में हम घरेलू उद्योग की कीमतों पर एम ओ यू के प्रभाव के संबंध में अपनी टिप्पणियां देने की स्थिति में नहीं हैं। यह स्मरण किया जा सकता है कि सुनवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों ने स्पष्ट रूप से इस बात का उल्लेख किया था कि एम ओ यू के बारे में ऐसी कोई बात नहीं है जो गोपनीय हो। इस संदर्भ में कृपया दिनांक 19 मार्च, 2018 के प्रतिउत्तर विवरण में पैरा 8 में हमारी टिप्पणियों का संदर्भ लें।
- प्राधिकारी का विश्लेषण पैरा 31 में नीचे दिए गए अनुसार किया गया है :

“प्राधिकारी इस तथ्य को भी नोट करते हैं कि इन दो उत्पाद प्रकारों की कीमत कोडक द्वारा किए गए निर्यातों से सुरक्षित रही और इस पर कोई पाटनरोधी उपाय नहीं लगाया गया था और यह भी कि फूजीफिल्म ने यूरोपीय संघ और जापान में अपने अन्य उत्पादन संयंत्रों से तापीय और वायलट दोनों प्रकारों की आपूर्ति की है”

प्राधिकारी का उपर्युक्त विश्लेषण स्पष्ट रूप से यह सिद्ध करता है कि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर इन आयातों का कोई क्षतिकारक प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके अलावा, चूंकि प्राधिकारी पहले ही इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि विचाराधीन उत्पाद के दो प्रमुख संघटकों अर्थात् तापीय और वायलट प्लेटों की कीमतें इन आयातों से सुरक्षित हैं अतः यह माना जाता है कि घरेलू उद्योग को भी क्षति की कोई संभावना नहीं है।

- प्रकटन के पैरा 32 को देखते हुए यह नोट किया जाता है कि इन आयातों के द्वारा कीमत पर कोई दबाव/ उसमें ह्रास नहीं हुआ है। यह तथ्य इस बात के साथ साथ की घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति उनके एन आई पी से अधिक पर हुई है, पूर्ण रूप से घरेलू उद्योग के आयातों के कारण उन्हें हुई किसी मौजूदा क्षति के संबंध में किए गए दावे को समाप्त कर देता है।
- मांग और बाजार के हिस्से के संबंध में हम दोहराते हैं कि मांग में घरेलू उद्योग बाजार के हिस्से में केवल उनकी क्षमताओं के संबंध में उनकी सीमाओं के कारण कमी हुई है। क्योंकि वे बढ़ते हुए मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाए हैं। प्राधिकारी इस तथ्य को समझेंगे कि घरेलू उद्योग की मांग में हिस्सेदारी केवल उनकी मौजूदा क्षमताओं के साथ बाजार की मांग को पूरा करने में उनकी असमर्थता के कारण प्रभावित हुई है। यह तथ्य इस बात से और अधिक पुष्ट हो जाता है कि वे 95 प्रतिशत के क्षमता उपयोग से अधिक पर लगातार कार्य करते रहे हैं।
- संबद्ध देश के आयात की मात्रा और हिस्से के संबंध में दिए गए पैरा के संबंध में हम दोहराते हैं कि आयातों की मात्रा में वृद्धि बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग की असमर्थता के कारण हुई है। सदा बढ़ती हुई बाजार में स्थिर और सीमित क्षमता के साथ, घरेलू उद्योग बढ़ते हुए बाजार मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाया है। इस कारण से घरेलू उद्योग के कथन के ठीक विपरीत, आयातों में वृद्धि एक पूर्ण आवश्यकता रही है। इस तथ्य से यह तर्क भी सिद्ध हो जाता है कि गैर संबद्ध देशों से भी आयातों में वृद्धि हुई है।
- प्राधिकारी द्वारा पैरा 32 में किए गए विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू बिक्री कीमतों पर संबद्ध देशों से आयातों का दबावकारी अथवा ह्रासकारी प्रभाव नहीं पड़ा है। यह अनुरोध किया जाता है कि घरेलू बिक्री कीमतों पर इन आयातों का

दबावकारी/ ह्रासकारी प्रभाव का न होना एक मजबूत संकेतक है कि घरेलू उद्योग को कथित पाटित आयातों से कोई क्षति नहीं हुई है।

- प्राधिकारी द्वारा किए गए विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि कीमत में कटौती और कम कीमत पर बिक्री तापीय प्लेटों के संबंध में नकारात्मक रही है जो बाजार की भारी मांग होती है। ऐसे मामले के कारण यह मान लेना उचित है कि अन्य दो प्रकारों के प्लेटों पर भी कीमत पर किसी प्रकार के दबाव पड़ने की कोई संभावना नहीं है।
- प्राधिकारी के जांच से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता का उपयोग और घरेलू बिक्री की मात्रा में क्षति की अवधि की तुलना वृद्धि हुई है। स्पष्ट रूप से इन मापदण्डों के कारण भी घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।
- घरेलू उद्योग के मांग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। हालांकि, जैसा कि पूर्व में सिद्ध किया गया है, यह गिरावट एकमात्र रूप से घरेलू उद्योग की बढ़ती हुई बाजार मांग के अनुरूप उत्पादन बढ़ाने की असमर्थता के कारण हुई है। क्षति से संबंधित सूचकांक भी क्षति की जांच की पूरी अवधि के दौरान कमोवेश उसी प्रवृत्ति को दर्शाते हैं।
- यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा की गई जांच से यह स्पष्ट है कि क्षति से संबंधित प्रायः सभी मापदण्डों में क्षति की जांच की अवधि में सुधार देखा गया है। यद्यपि कुछ सूचकांकों के संबंध में कुछ गिरावट भी हुई है फिर भी उनका संबद्ध देशों से किए गए आयातों से कोई संबंध नहीं है। इसके अलावा, यह तथ्य की क्षति का मार्जिन चीन से किए गए आयातों के संबंध में नकारात्मक है, यह सिद्ध करता है कि कथित पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को स्पष्ट रूप से कोई क्षति नहीं हुई है।
- रिकार्ड पर उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राधिकारी की जांच से यह स्पष्ट है कि संबद्ध देश से संबंध वस्तुओं के आयातों से घरेलू उद्योग को पाटन अथवा क्षति के जारी रहने अथवा उसके फिर से होने की कोई संभावना नहीं है। इसके अलावा, पाटन और क्षति का न होना किसी वर्तमान पाटन अथवा परिणामी क्षति की संभावना को नकारता है।
- निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पैरा 68 का संदर्भ लिए जाने के संबंध में, यह अनुरोध किया जाता है कि फूजी फिल्म प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और घरेलू उद्योग द्वारा दी जाने वाली कीमतों के अनुरूप हमेशा अपने उत्पादों की कीमत का निर्धारण किया है। इसके अलावा, हम अनुरोध करते हैं कि घरेलू उद्योग यह सिद्ध करने में पूरी तरह से असफल रहा है कि उनकी कीमत प्राप्ति और आयात कीमतों में कोई संबंध है।
- इस प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए आयातों के संबंध में पैरा 15 में की गई टिप्पणियों के संबंध में हमारा अनुरोध है कि की गई टिप्पणी घरेलू उद्योग द्वारा इन आयातों के संबंध में हमारा तर्क घरेलू उद्योग के स्थान के संबंध में नहीं था। हम प्राधिकारी से यह अनुरोध करेंगे कि वे हमारे इस दावे के संदर्भ में इस मुद्दे की कृपया जांच करें कि घरेलू उद्योग भारतीय बाजार में बढ़ती हुई मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाया है और इसके पास अन्य गैर संबद्ध देशों से आयात करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। यह भी नोट करना समीचीन होगा कि ये आयात स्वीकार्य तौर पर केवल विचाराधीन उत्पाद का हुआ था क्योंकि घरेलू उद्योग ने आयात किए गए अलग रूपों और घरेलू उत्पादों की गैर प्रतिस्थापनीयता के संबंध में किसी मामले को सिद्ध नहीं किया है।
- जहां तक प्राधिकारी का "पूँजी निवेश प्राप्त करने के लिए घरेलू उद्योग की क्षमता" के संबंध में प्राधिकारी की टिप्पणी का प्रश्न है, हमारा अनुरोध है कि इस संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किसी अनुरोध के अभाव में, प्राधिकारी को यह निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि घरेलू उद्योग को इस अनिवार्य मापदण्ड के संबंध में कोई क्षति नहीं हुई है। प्राधिकारी इस बात को समझेंगे कि यह केवल इस कारण से जांच न किए गए अनिवार्य कारक को छोड़ नहीं सकते हैं क्योंकि उस मापदण्ड के संबंध में पक्षकारों द्वारा कोई टिप्पणी नहीं की गई है। इसके अलावा, यह घरेलू उद्योग के लिए है कि वह अनिवार्य मापदण्ड के संबंध में सूचना उपलब्ध कराये और इस जिम्मेदारी को उत्तर देने वाले पक्षकारों पर नहीं डाला जा सकता है। हम प्राधिकारी से यह अनुरोध करते हैं कि वे कृपया इस बात को रिकार्ड करें कि पूँजी निवेश प्राप्त करने की घरेलू उद्योग की क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
- आगे हम यह अनुरोध करते हैं कि रिकार्ड पर दिए गए तथ्यों से तथा प्राधिकारी द्वारा प्रकटन विवरण में किए गए विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू उद्योग को क्षति की जांच की अवधि के दौरान कोई क्षति नहीं हुई है। इसके अलावा, यह भी स्पष्ट होता है कि यह मानने की भी कोई संभावना नहीं है कि पाटन और क्षति के फिर से होने अथवा उसके जारी रहने की कोई संभावना है।
- हम प्राधिकारी से यह अनुरोध करते हैं कि वे कृपया इस जांच और मौजूदा शुल्कों को समाप्त कर दें और यह मान लें कि घरेलू उद्योग को कोई पाटन अथवा परिणाम क्षति नहीं हुई है और सतत पाटन एवं क्षति की भी कोई संभावना नहीं है।

- हम प्राधिकारी से यह भी अनुरोध करते हैं कि वे हमें इस बात की भी जानकारी दें कि यदि रिकार्ड किए गए तथ्यों में तथा वर्तमान प्रकटन विवरण में व्यक्त किए गए दृष्टिकोणों में कोई वास्तविक परिवर्तन हुआ है। हम अनुरोध करेंगे कि ऐसी स्थिति में हमें अंतिम जांच परिणाम जारी किए जाने के पूर्व इस प्रकार के बदले हुए दृष्टिकोण/ आंकड़ों पर अपनी टिप्पणियां करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

(vi) मैसर्स कोडक चीन ग्राफिक कॉम्यूनिकेशन कं. लिमि. ("के सी जी सी सी एल"), मैसर्स कोर्ड चीन इन्वैस्टमेंट कं. लिमि. ("के सी आई सी एल") और मैसर्स कोडक इण्डिया प्रा. लिमि. ("के आई पी एल") की ओर से मैसर्स दुआ एसोसिएट्स

- कोडक ने वर्तमान जांच में भाग लिया है और निर्यातक की प्रश्नावली, अंतिम निर्णायक समीक्षा से संबंधित प्रश्नावली और बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे ('एम ई टी') से संबंधित प्रश्नावली का उत्तर विधिवत प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त के अलावा, कोडक ने आयातक की प्रश्नावली का उत्तर भी प्रस्तुत किया है और प्राधिकारी द्वारा मांगी गई सूचना भी प्रस्तुत की है (जांच की अवधि के बाद के आंकड़ों, संबंध न रखने वाले ग्राहकों की के पी आई एल की पुनः बिक्री कीमत आदि के संबंध में सूचना सहित)।
- 9 अप्रैल, 2018 को जारी किए गए प्रकटन विवरण में प्राधिकारी ने कोडक के लिए (0-10) प्रतिशत की सीमा में एक नकारात्मक क्षति मार्जिन तथा संबद्ध वस्तुओं के एक उत्पादक और निर्यातक के रूप में के सी जी सी सी एल के लिए एक अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है। तदनुसार, अपेक्षाकृत कम शुल्क के नियम पर विचार करते हुए, यह निर्धारित किया गया है कि कोडक से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।
- यहां यह भी नोट करना समीचीन है कि प्राधिकारी ने (मूल जांच में) कोडक की हैसियत से नकारात्मक क्षति मार्जिन का निर्धारण किया है और पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश नहीं की है। इस कारण से मूल जांच के जांच परिणाम और वर्तमान समीक्षा जांच में नकारात्मक क्षति मार्जिन के निर्धारण को ध्यान में रखते हुए, कोडक के लिए किसी संदर्भ कीमत शुल्क की सिफारिश किए जाने की आवश्यकता नहीं है।
- वर्तमान जांच की अवधि के दौरान, कोडक ने विस्तृत क्षति संबंधी अनुरोध, मौखिक सुनवाई में लिखित अनुरोध, प्रतिउत्तर के रूप में अनुरोध आदि प्रस्तुत किया है। उक्त अनुरोधों को कोडक द्वारा प्रकटन विवरण के संबंध में टिप्पणियों के भाग के रूप में विचार किए जाने के लिए प्रस्तुत किया गया और उसकी पुनरावृत्ति इसमें नहीं की गई है।
- प्राधिकारी ने गलत तरीके से इस बात का निर्धारण किया है कि शंघाई मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की कीमत वास्तविक लागत को नहीं दर्शाता है: कोडक ने एम ई टी की प्रश्नावली के अनुसार इस प्रश्नावली के उत्तर में सभी सूचनाएं प्रस्तुत की हैं। उक्त सूचना पूर्ण है और इसका सत्यापन भी प्राधिकारी द्वारा मौके पर सत्यापन के दौरान तथा प्रकटन विवरण जारी किए जाने के पूर्व किया गया था। इस बात को दर्शाना भी समीचीन है कि चीन में एम ई टी के प्रश्नावली के उत्तर का मौके पर सत्यापन के दौरान, सत्यापन दल ने विशिष्ट रूप से लंदन मेटल एक्सचेंज, शंघाई मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की कीमतों और कोडक की घरेलू खरीद कीमतों का सत्यापन किया था। उक्त सत्यापन के आधार पर, प्राधिकारी (सत्यापन रिपोर्ट में) ने विधिवत इस तथ्य को दर्ज किया है कि 'के सी जी सी सी एल ने लंदन मेटल एक्सचेंज और शंघाई मेटल एक्सचेंज ने प्रचलित कीमत और के सी जी सी सी एल की खरीद कीमत के लिए एक तुलनात्मक ग्राफ प्रस्तुत किया है। के सी जी सी सी एल द्वारा इस बात का दावा किया गया है कि खरीद की कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत के साथ तुलनीय है।
- प्राधिकारी द्वारा जारी की गई सत्यापन रिपोर्ट से, इस पर कोई विवाद नहीं है कि प्राधिकारी ने शंघाई मेटल एक्सचेंज, लंदन मेटल एक्सचेंज और कोडक की खरीद कीमत जिसे कोडक द्वारा प्रस्तुत किया गया है, में एल्युमीनियम के लिए कीमतों का सत्यापन किया है। हालांकि, इस प्रकटन विवरण में प्राधिकारी ने मौके और सत्यापन के दौरान सत्यापित आंकड़ों की जांच नहीं की है और इसके अलावा कोडक द्वारा प्रस्तुत शंघाई मेटल एक्सचेंज और लंदन मेटल एक्सचेंज की कीमतों तथा सत्यापन के दौरान प्राधिकारी द्वारा सत्यापित कीमतों को अस्वीकार करने के लिए कारणों का उल्लेख नहीं किया है।
- प्रकटन विवरण में प्राधिकारी ने लंदन मेटल एक्सचेंज की प्रीमियम कीमत की तुलना शंघाई मेटल एक्सचेंज के वर्तमान एल्युमीनियम कीमतों (मूल्यवर्धित कर को घटाने के बाद) की है तदनुसार, यह अनुरोध किया जाता है कि उक्त तुलना एप्पल टू एप्पल आधार पर नहीं की गई है। यहां यह भी नोट करना समीचीन है कि लंदन मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की प्रीमियम कीमत भावी संविदाओं से संबंधित हैं जबकि शंघाई मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की कीमत (जैसा की प्राधिकारी द्वारा लिया गया है) वर्तमान लेन देन की कीमत को मूल्यवर्धित कर के घटाये जाने के बाद थी। इस कारण से लंदन मेटल एक्सचेंज की प्रीमियम कीमत शंघाई मेटल एक्सचेंज की एल्युमीनियम की कीमत (मूल्यवर्धित कर को घटाये जाने के बाद) से तुलनीय नहीं है।

- यह दर्शाना आवश्यक है कि लंदन मेटल एक्सचेंज की वेबसाइट में प्रीमियम कीमत और वर्तमान एल्युमीनियम कीमत में विशिष्ट रूप से अंतर किया गया है। उपर्युक्त अनुरोधों को आगे प्रमाणित करने के लिए, कोडक लंदन मेटल एक्सचेंज की वेबसाइट पर उपलब्ध उद्धृत सूचना उपलब्ध करा रहा है जो उक्त अंतर को दर्शाता है।
- लंदन मेटल एक्सचेंज में प्रीमियम संविदाओं पर प्रभार के रूप में प्रीमियम होने के कारण एल्युमीनियम की प्रीमियम कीमतें लंदन मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की वर्तमान कीमतों से बहुत अधिक हैं और इस कारण से इन दोनों में तुलना नहीं की जा सकती है। उपर्युक्त के समान, लंदन मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की प्रीमियम कीमतें शंघाई मेटल एक्सचेंज की वर्तमान एल्युमीनियम कीमत (मूल्यवर्धित कर को घटाये जाने के बाद) के साथ प्रकटन विवरण में प्राधिकारी द्वारा विचार किए गए अनुसार तुलना नहीं की जा सकती है। यह अनुरोध किया जाता है कि लंदन मेटल एक्सचेंज एल्युमीनियम की प्रीमियम कीमत और शंघाई मेटल एक्सचेंज की वर्तमान कीमत (मूल्यवर्धित कर घटाये जाने के बाद) व्यापार के उसी स्तर पर नहीं हैं और इस कारण से इनकी तुलना नहीं की जा सकती है।
- प्राधिकारी से यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे इस तथ्य को नोट करें कि लंदन मेटल एक्सचेंज एल्युमीनियम की प्रीमियम कीमत की चार अलग अलग श्रेणियों को दर्शाता है जो अलग अलग विनिर्देशनों के आधार पर है।
- यह स्पष्ट है कि लंदन मेटल एक्सचेंज ने प्रीमियम संविदा की प्रत्येक श्रेणी के आधार पर प्रीमियम प्रभार लगाया है। हालांकि, प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में प्रीमियम संविदा की श्रेणी को प्रकट नहीं किया है और लंदन मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की प्रीमियम कीमतों पर शंघाई मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम की कीमत के साथ तुलना करने के लिए संगत माना है।
- इसे पुनः दोहराया जाता है कि लंदन मेटल एक्सचेंज की प्रीमियम कीमत की तुलना शंघाई मेटल एक्सचेंज की वर्तमान कीमत (मूल्यवर्धित कर को घटाये जाने के बाद) से तुलना नहीं की जा सकती है। अतः प्राधिकारी से यह अनुरोध किया जाता है वे शंघाई मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम वर्तमान कीमतों (मूल्यवर्धित कर को घटाये जाने के बाद) से लंदन मेटल एक्सचेंज ने एल्युमीनियम की वर्तमान कीमत (18 प्रतिशत की दर से मूल्यवर्धित कर को अपवर्जित करते हुए) तुलना कर कोडक की एम ई टी दर्जे का फिर से मूल्यांकन करें ताकि एप्पल टू एप्पल तुलना की जा सके और एक उचित निर्धारण पर पहुंचा जा सके। इसके अलावा, प्राधिकारी से यह अनुरोध किया जाता है कि वे लंदन मेटल एक्सचेंज में प्रीमियम संविदा को प्रकट करें तथा प्रकटन विवरण में विचार किए गए शंघाई मेटल एक्सचेंज की एल्युमीनियम की कीमत से तुलना करने के लिए विचार किए गए एल्युमीनियम की कीमत को प्रकट करें।
- प्राधिकारी ने व्यापार विस्तार अधिनियम धारा 232 के संबंध में उल्लिखित संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा की गई जांच पर सही ढंग से विश्वास नहीं किया है।

कोडक के लिए एम ई टी के दर्जे का दावा अस्वीकार करते समय प्राधिकारी ने नोट किया है कि 'व्यापार वितार अधिनियम की धारा 232 के अंतर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा हालिया निर्धारण ने चीन में एल्युमीनियम की कीमतों को बाजार सख्तियों के प्रतिनिधि नहीं होने के रूप में दर्शाया है।' हालांकि, यह अनुरोध किया जाता है कि उक्त धारा 232 रिपोर्ट में इस बात को स्पष्ट रूप से नोट किया गया है कि 'धारा 232 के अंतर्गत एक जांच किसी पाटनरोधी जांच में अपनाए गए अनुचित प्रथाओं पर नजर डालने के बजाय राष्ट्रीय सुरक्षा के उनके खतरे के लिए अत्यधिक आयात को देखता है। इस कारण से व्यापार विस्तार अधिनियम की धारा 232 के अंतर्गत किसी जांच का उद्देश्य आयातों में हुए उछाल तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के संबंध में उसके प्रभाव की जांच करना है। उपर्युक्त को देखते हुए, प्राधिकारी की वर्तमान जांच के लिए धारा 232 रिपोर्ट पर विश्वास करना भ्रामक है।

- इस तर्क को मान लेने के बाद भी कि चीन में एल्युमीनियम की खरीद कीमत का निर्धारण बाजार शक्तियों द्वारा नहीं किया गया था, प्राधिकारी को एल्युमीनियम की सी जी सी सी एल की लागत का समायोजन के सी आई सी एल की खरीद की कीमत और तृतीय देश की बाजार अर्थव्यवस्था में एल्युमीनियम की कीमत में अंतर की सीमा तक करना चाहिए था। हालांकि, प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में उत्पादन आदि की लागत के संबंध में आंकड़ों का सत्यापन किए जाने के बावजूद के सी जी सी सी एल द्वारा दायर किए गए एम ई टी के समग्र उत्तर को अस्वीकार कर दिया है। इस संबंध में यह उल्लेख करना संगत है कि प्राधिकारी लकी द्वारा (जो महत्वपूर्ण सूचना को प्रस्तुत करने और उसका सत्यापन करने में असफल हो गया है) समग्र प्रश्नावली को अस्वीकार नहीं किया है और उपलब्ध तथ्यों को उस सीमा तक लागू किया है जो अलग अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए अपेक्षित

था। तदनुसार, प्राधिकारी को अन्य हितवद्ध पक्षकारों के लिए उसी पद्धति पर विचार करना चाहिए था तथा एल्युमीनियम की कीमत के आधार पर आवश्यक समायोजन करने के साथ इसकी लागत अथवा घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर कोडक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करना चाहिए था।

- प्राधिकारी ने लकी हुआग्वॉंग ग्राफिक्स कं. लिमि. ('लकी') को गोपनीय आधार पर कोडक द्वारा दायर बिजनेस प्रोपराइट्री सूचना प्रकट की है।

इस तथ्य पर कोई जवाब नहीं है कि के सी जी सी सी एल एकमात्र सहयोगी निर्यातक है जिसने कारखाने के बाद के खर्च के संबंध में पूर्ण सूचना उपलब्ध कराई है। हालांकि, बिजनेस प्रोपराइट्री सूचना का उपयोग प्राधिकारी द्वारा लकी के लिए कारखानागत निर्यात कीमत/ पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए किया गया है। यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी ने इस प्रकटन विवरण के अनुबंध ॥ (क) में लकी को कारखाने के बाद के खर्च के संबंध में कोडक की गोपनीय सूचना उपलब्ध कराई है। कोडक इसके माध्यम से प्राधिकारी से हितवद्ध पक्षकारों से पूर्व अनुमति प्राप्त किए गए बिना इस प्रकार प्रोपराइट्री सूचना को बांटने के लिए अनुरोध करता है।

- प्राधिकारी ने सही रूप में नीचे दिए गए कारणों से लकी की कारखानागत निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए के सी जी सी सी एल के आंकड़ों को नहीं अपनाया है :

सी टी ए की धारा 9क (6क) के संबंध में, प्रतिवादी निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण केवल इस प्रकार के प्रतिवादी निर्यातक द्वारा रखे गए रिकार्डों के आधार पर किया जा सकता है। इस कारण से, एक सहयोगी निर्यातक की सूचना को एक अन्य निर्यातक जो इस प्रकार की सूचना उपलब्ध कराने तथा उसका सत्यापन करने में असफल हो गया है, के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए अपनाया जा सकता है।

- इस जांच की तथ्यात्मक मैट्रिक्स बिना किसी संदेह के इस बात की पुष्टि करता है कि के सी जी सी सी एल लदान के पोस्ट के करीब स्थित है और इसे भारत में इन वस्तुओं का निर्यात करने के लिए मामूली धारा और अन्य कारखानों के पश्चात खर्च हुए हैं। इसके विपरीत लकी एक ऐसे क्षेत्र में स्थित है जो पहुंच के लिए बंदरगाह से दूर है। तदनुसार, यह संभव है कि लकी ने भारत में इन वस्तुओं का निर्यात करने के लिए कारखाने के पश्चात बहुत अधिक खर्च किए होंगे।
- चूंकि कोडक की सूचना अन्य निर्यातकों को उपलब्ध कराई गई है, अतः हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे उक्त सूचना को नष्ट करने के लिए लकी से लिखित आश्वासन लेते हुए (और उसके कानूनी प्रतिनिधियों से) उक्त गोपनीय प्रकटन विवरण (लकी को जारी की गई) को वापस लें ताकि उसके दुरुपयोग अथवा प्रसार से बचा जा सके।
- कोडक ने गोपनीय आधार पर भारत में इन वस्तुओं के निर्यात के संबंध में सूचना प्रस्तुत की है और उक्त गोपनीय सूचना को सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से डी जी सी आई एंड एस द्वारा विरोधी पक्षकारों को उपलब्ध कराया गया था।

पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 के संबंध में, किसी हितवद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना को प्राधिकारी द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता है। हालांकि, प्राधिकारी ने विरोधी हितवद्ध पक्षकारों को डी जी सी आई एंड एस से लेन देन वार आंकड़ों के रूप में उक्त गोपनीय सूचना को एकत्रित करने/ प्राप्त करने की अनुमति दी है। कृपया नोट करें कि लेन देन वार आयात संबंधी आंकड़े आयात किए गए सामानों, सामनों की मात्रा तथा आयात के मूल्य के संपूर्ण विवरण को प्रकट करते हैं। इस कारण से कोडक द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना को इस प्राधिकारी की अनुमति से विरोधी पक्षकारों को प्रकट किया गया था।

- उपर्युक्त के अलावा, यह नोट करना संगत है कि टेक नोवा ने स्वीकार्य रूप में उक्त सूचना का उपयोग किया है तथा उसका सारांश सार्वजनिक फाइल में भी दायर किया है। इस कारण से कोडक द्वारा प्रस्तुत की गई गोपनीय सूचना टेक नोवा और बाद में अन्य हितवद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया गया था जिन्होंने सार्वजनिक याचिका का निरीक्षण किया है (लकी और फूजीफिल्म सहित)।

- हालांकि इस संबंध में, कोडक यह भी चाहता है कि प्रकटन विवरण के पैरा 34 पर इस प्राधिकारी की नोटिंग को दर्शाया जाये। के आई पी एल द्वारा आयातों के संबंध में गोपनीय सूचना टेक नोवा को उपलब्ध कराये जाने के बाद, प्राधिकारी ने बीजक संख्या *** के विरुद्ध के आई पी एल द्वारा 'लिब्रा' प्लेटों के आयात के संबंध में एक प्रविष्टि के संबंध में कोडक से सूचना मांगी थी। कोडक ने तदनुसार प्राधिकारी के पास बीजक संख्या *** के संबंध में सभी सूचनाएं प्रस्तुत की हैं। हालांकि, चूंकि डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों में स्पष्ट रूप से 'लिब्रा' प्लेटों के आयात का उल्लेख किया गया था। अतः कोडक ने एक बार फिर अपने समग्र आंकड़ों की जांच की है और यह पाया कि बीजक संख्या *** के विरुद्ध जांच की अवधि के दौरान लिब्रा प्लेटों का कम मात्रा में आयात किया गया था। यह अनुरोध किया जाता है कि बीजक संख्या *** मैनुअल बीजक है जिसे के सी जी सी सी एल द्वारा भारत के जांच के उद्देश्यों के लिए नमूना प्लेटों को भेजने के लिए बनाए गए थे। उक्त लेन देन एक वाणिज्यिक लेन देन नहीं था और भारत में इसका आयात केवल परीक्षण के उद्देश्यों के लिए एक नमूने के तौर पर और किसी अन्य उद्देश्यों से नहीं किया गया था। इसकी पुष्टि उक्त बीजक की मामूली मूल्य से की जा सकती है जो केवल *** रूपए मात्र है जब इसकी तुलना के आई पी एल द्वारा आयात किए गए कुल आयात मूल्य और मात्रा से की गई। यह दर्शाना संगत है कि के आई पी एल ने उक्त नमूने के आयातकों के लिए कोई ध्यान नहीं दिया है। यह भी अनुरोध किया जाता है कि कोडक एस ए पी प्रणाली में केवल 10 अंकों के बीजकों की सूचना देने की कठिनाई है और चूंकि वर्तमान बीजक में बाद में "-1" जोड़ा गया था (परीक्षण के उद्देश्य से लागत बीजक का एक मैनुअल निःशुल्क बीजक होने के कारण) अतः उसमें के आई पी एल की प्रणाली नहीं दर्शायी गई। यह अनुरोध किया जाता है कि सामान्य मूल्य के उक्त लेन देन केवल वह लेन देन है जिसका संबंध जांच की अवधि के दौरान लिब्रा प्लेटों से है।
- प्राधिकारी को बहुत बाद के चरण में अनुरोधों को प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। जैसा कि सार्वजनिक फाइल से स्पष्ट है, टेक नोवा में 5 अप्रैल, 2018 को अर्थात् वर्तमान प्रकटन विवरण के जारी होने के दो कार्य दिवस पहले आयातों का सारांश और अन्य संगत आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। यह अनुरोध किया जाता है कि जांच के अंतिम चरण में टेक नोवा द्वारा इस प्रकार की महत्वपूर्ण सूचना प्रस्तुत करने की अनुमति प्रकटन विवरण के जारी किए जाने के पूर्व उपयुक्त टिप्पणियां/ अनुरोध करने के लिए कोडक सहित विरोधी हितबद्ध पक्षकारों को नहीं दी गई है। इस कारण से प्राधिकारी से यह अनुरोध किया जाता है कि वे इस जांच में आगे कोई सूचना/ आंकड़े/ दस्तावेज को प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं देने के लिए उपयुक्त कदम उठाएं।
- टेक नोवा ने इस प्राधिकारी द्वारा आवेदन प्रोफार्मा में मांगी गई सूचना छुपाई है और उसे केवल प्रकटन विवरण में प्रकट किया गया था। प्रकटन विवरण का अवलोकन करने से, कोडक यह नोट कर आश्चर्यचकित था कि टेक नोवा ने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की भारी मात्रा का आयात किया है। हालांकि, उक्त सूचना प्राधिकारी और अन्य हितबद्ध पक्षकारों से छुपाई गई थी जबकि उसकी जानकारी विशिष्ट रूप से आवेदन प्रोफार्मा के भाग II में मांगी गई थी।
- 6. (क) क्या इन याचिकाकर्ताओं में से कोई याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तुओं का आयात करता है। यदि हां, तो कृपया पिछले दो वर्षों के दौरान और वर्तमान वर्ष से इस तारीख तक आयातों की देश-वार मात्रा और मूल्य का ब्यौरा उपलब्ध कराएं।
- उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में टेक नोवा ने केवल इस बात का उल्लेख किया है कि 'याचिकाकर्ता ने चीन जन. गण. से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है' हालांकि प्रश्नावली के अनुसार, टेक नोवा से यह अपेक्षित था कि वह प्रत्येक देश (संबद्ध देश और गैर संबद्ध देश दोनों से) से संबद्ध वस्तुओं के आयात को प्रकट करे। इस कारण से पाटनरोधी आवेदन केवल इस आधार पर ही अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।
- जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद की अवधि में पाटन और क्षति का निर्धारण :

प्राधिकारी ने फूजीफिल्म के लिए पाटन अथवा क्षति मार्जिन का निर्धारण नहीं किया है क्योंकि उक्त निर्यातक ने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया। प्राधिकारी ने गैर-प्रतिवादी निर्यातकों के लिए एक शेष पाटन और क्षति मार्जिन का भी निर्धारण नहीं किया है। हम प्राधिकारी से यह अनुरोध करते हैं कि वे पाटनरोधी नियमावली के संबंध में फूजीफिल्म और अन्य गैर प्रतिवादी निर्यातकों के लिए उक्त शेष पाटन और क्षति मार्जिन को प्रकट करें।
- प्राधिकारी ने इस तथ्य को भी नोट किया है कि कोडक द्वारा निर्यात किए गए वस्तुओं की हैसियत से जांच की अवधि के बाद की अवधि के दौरान किसी प्रकार की क्षति की कोई संभावना नहीं है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने तृतीय देश से किए गए निर्यातों के आधार पर फूजीफिल्म के लिए पाटन और क्षति की संभावना का निराकरण किया है। हालांकि, अन्य भाग लेने वाले निर्यातक

अर्थात् लकी के लिए कोई निर्धारण नहीं किया गया है। तदनुसार, प्राधिकारी से यह अनुरोध है कि वह संगत कानूनी प्रावधानों के अनुसार पाटन और क्षति की संभावना का निर्धारण करे।

(vii) मैसर्स निप्पोन कॉलर

- उन प्लेटों पर जिनका निर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है, पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जायेगा :
- क. घरेलू उद्योग डिजिटल प्रिंटिंग प्लेटों जैसे प्रोसेस लेस थर्मल/ सी टी सीपी/ वायलट प्लेटों के सभी प्रकारों और उप प्रकारों का निर्माण नहीं करता है।
- ख. 0.25 एमएम की मोटाई वाले सभी डिजिटल प्लेटों जिसका निर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है, को भी छूट प्रदान की जानी चाहिए।
- ग. बडल लेयर यू वी सीटी सीपी डिजिटल प्लेटों और नकारात्मक रूप से कार्य करने वाले यू वी सी टी सी पी डिजिटल प्लेटों का भी निर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है और इन्हें पाटनरोधी के क्षेत्र से बाहर रखा जाना चाहिए।
- यह सुझाव देने के लिए कोई तथ्य नहीं है कि घरेलू उद्योग इन प्लेटों में से किसी प्लेट का निर्माण कर रहा है और इस प्रकार से ऐसे प्लेटों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना चाहिए जिनका भारत में निर्माण ही नहीं किया जाता है और इस प्रकार से किसी प्रकार की क्षति इससे उत्पन्न नहीं होती है, अनुचित और गैर-कानूनी है। इन वस्तुओं पर जिनका निर्माण भी भारत में नहीं किया जाता है, पाटनरोधी शुल्क लगाना कानून की दृष्टि में अनुमति दिए जाने योग्य नहीं है। इन्हें समरूप अथवा समान वस्तुओं के रूप में पाटित वस्तुओं के समकक्ष वस्तुओं के रूप में भी विचार नहीं किया जा सकता है। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संबंध होना है। जब इन वस्तुओं का निर्माण घरेलू उद्योग द्वारा बिलकुल नहीं किया जाता है तब क्षति और कारणात्मक संबंध का प्रश्न ही नहीं उठता।
- इण्डियन रिकैक्ट्री मेकर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी [2000 (119) ई एल टी 319] और जिप्सेमना कं. एल एल सी बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी [2016 (342) ई एल टी 566] के मामले में ट्रिब्यूनल के निर्णय का संदर्भ लिया जा सकता है।
- प्रकटन विवरण के पैरा 15 में आगे यह उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग ने स्वतः शिकायतकर्ता के यूरोपीय संघ में उनके तकनीकी सहयोगी से प्रोसेस लेस और केमिकल रहित प्लेटों का आयात किया था जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि इनका निर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया गया है। जब इनका निर्माण शिकायतकर्ता द्वारा नहीं किया गया है तब इस तर्क को अस्वीकार करना कि इन्हें पाटनरोधी शुल्क से बाहर रखा जाना चाहिए उचित नहीं है। तथ्य यह है कि इन वस्तुओं का आयात उनके तकनीकी सहयोगी से किया जा रहा है जो एक संबंधित पक्षकार हैं और भारत में अन्य गैर संबंधित आयातकों को बिक्री नहीं करते हैं, अपने आप में एक प्रतिबंधात्मक बाजार स्थिति है। यह उल्लेख करना कि 8 लाख वर्ग मीटर का आयात 'परीक्षण विपणन' के लिए किया गया है स्पष्ट रूप से गलत और भ्रामक है, परंतु यह इस बात को इंगित तो करता ही है कि ये नए प्रौद्योगिकीय उत्पाद हैं जो मुद्रण उद्योग का भविष्य हैं और इस कारण से इसे पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने से बाहर रखा जाना चाहिए। प्रौद्योगिकी में पाटनरोधी शुल्क लगाने की प्रथम जांच और वर्तमान जांच के बीच की अवधि में बदलाव आया है, जिसका संज्ञान नहीं लिया जा रहा है।
- इस कारण से प्रकटन विवरण के पैरा 10 सीमा शुल्क अधिनियम के संबंध में निर्धारित कानून के अनुसार नहीं है बल्कि वास्तव में यह सीमा शुल्क मूल्यांकन नियमावली 2007 के नियम 2(2) के संबंध में संबंधित पक्षकारों से किए गए आयातों का संरक्षण कर रहा है और यह प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों जो पिछले पांच वर्षों में हुए हैं, के मूल उद्देश्य के अनुसार नहीं है। जब इस उद्योग के पास विशिष्ट प्लेटों के इन उप प्रकारों का निर्माण करने की क्षमता नहीं है तब उसे प्रिंटिंग प्लेटों के जेनेरिक प्रकारों के साथ मिलाना सही नहीं है।
- संपूर्ण उत्पादन की बिक्री की जा रही है और क्षमता के विस्तार की योजना है :

प्रकटन विवरण और मौखिक सुनवाई से संबंधित कार्यवाही यह दर्शाता है कि कुल उत्पादन की बिक्री की जा रही है और घरेलू उद्योग द्वारा न बिके हुए भंडार को अगले वर्ष तक नहीं लाया गया है। इसके अलावा, यह अनुरोध किया गया था कि घरेलू उद्योग बाजारों की मांग को पूरा करने के लिए क्षमता का विस्तार कर रहा है और एक नया निर्माता भी बाजार में प्रवेश कर रहा है। यदि यह मामला पाटित आयातों का हुआ होता तब क्षमता में कोई विस्तार नहीं होगा क्योंकि पाटनरोधी को कभी भी सभी समयों के लिए एक सतत कार्य के रूप में नहीं देखा गया है। घरेलू उद्योग को विदेशी आपूर्तिकर्ताओं की कीमत और मापदण्डों के अनुरूप निर्माण करना है।

यह अनुरोध किया जाता है कि घरेलू उद्योग को बाजार की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने आप को तैयार करने हेतु पर्याप्त समय और वित्तीय प्रोत्साहन दिया गया है और तदनुसार, पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाना चाहिए।

- पाटनरोधी शुल्क लागत + लाभ के सूत्र के आधार पर होना चाहिए :

उजागर प्रिंट बनाम संघ सरकार के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने यह माना था कि जॉब वर्क के आधार पर निर्माण की गई वस्तुओं की लागत कच्चा माल की लागत + निर्माण की लागत + लाभ होना चाहिए। उसी सूत्र को लागू किया जाना चाहिए और चूंकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह पाया है कि शंघाई मेटल एक्सचेंज पर कीमतें सही रूप में अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को नहीं दर्शाती हैं अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी को लंदन मेटल एक्सचेंज में एल्युमीनियम सीटों की कीमत पर विचार कर सकते हैं और आयात के बंदरगाह पर सीमा शुल्क के अधिकारियों द्वारा जोड़े जाने के लिए 1 प्रतिशत सूत्र दे सकते हैं।

इस कारण से, निर्दिष्ट प्राधिकारी को पाटनरोधी शुल्क की एक निर्धारित मात्रा जो पूर्ण रूप से सही नहीं है और उक्त वस्तुओं के उत्पादन की सही लागत को नहीं दर्शाता है, के बजाय बंदरगाह पर सीमा शुल्क के अधिकारियों द्वारा अपनाई जाने वाली एक सूत्र के रूप में पाटनरोधी शुल्क देना चाहिए।

- तथाकथित प्रयोक्ता उद्योग जिसका प्रतिनिधित्व केवल हिन्दुस्तान टाइम्स और दैनिक जागरण द्वारा किया जाता है, ने इस तथ्य को जोड़ते हुए पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने के लिए एक मजबूत तर्क दिया है कि उनके लिए प्रमुख लागत कारक न्यूज प्रिंट (न कि प्रिंटिंग प्लेट्स) है। दोनों न्यूज पेपर संपूर्ण उद्योग नहीं होते हैं क्योंकि भारत में 500 से अधिक दैनिक समाचार पत्र हैं, जो अपने आप में एक विश्व रिकार्ड है। इस कारण से उनके द्वारा व्यक्त किए गए मतों तथा उस पर इस तथ्य का आवरण चढ़ाया गया है कि वे शिकायतकर्ता के साथ आपूर्ति संबंधी करार किया है, उनके अनुरोधों को संदिग्ध और महत्वहीन बना देता है।
- भारत में मुद्रण उद्योग का विकास कुछ दशकों विशेष रूप से कंप्यूटर के आगमन के पश्चात हुआ है। यह केवल समाचार पत्र उद्योग से बना हुआ नहीं है जो मुद्रण उद्योग का एक छोटा खंड है। प्रमुख प्रयोक्ता उद्योग विज्ञापन उद्योग, लेखन सामग्री उद्योग, प्रकाशन उद्योग आदि हैं। उन्होंने न तो अपने विचार दिए हैं और न ही उनके विचारों की मांग निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा की गई है। अपने मुद्रण लागतों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयोक्ता उद्योग होने के कारण, यह अनिवार्य है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी उनकी व्यावहार्यता पर भी विचार करें।
- निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रयोक्ता उद्योग के एक लघु खंड के अनुरोधों का संज्ञान नहीं लेना चाहिए और संपूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था पर विचार करते हुए एक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- प्रकटन विवरण स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि शिकायतकर्ता भी अपने उत्पादों के निर्यात में लिप्त है। ऐसा होने के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात की जांच करनी चाहिए कि क्या जिन कीमतों पर इन वस्तुओं का निर्यात किया जा रहा है वह शिकायतकर्ता के एन एस आर और संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद की पहुंच लागत से तुलना की जा सकती है। साक्ष्यों को प्रस्तुत करने की अवधि के दौरान हमने अनुरोध किया था कि तीसरे देशों से जो बाजार अर्थव्यवस्था हैं, यूवी – सीटी सी पी की पहुंच लागत केवल *** अमरीकी डॉलर प्रति वर्ग मीटर है और इस कारण से संबद्ध देश से इन वस्तुओं की पहुंच कीमत को लगभग *** अमरीकी डॉलर प्रति वर्ग मीटर तक लाने के लिए पाटनरोधी शुल्क निर्धारित किया जाना चाहिए।
- हमने वियतनाम से किए गए आयातों का साक्ष्य भी प्रस्तुत किया था जहां आयात शुल्क की दर शून्य है। उसमें इन वस्तुओं की कीमत चीन में प्रचलित कीमत की तुलना में थोड़ा अधिक है परंतु उसे शुल्क कारक के प्रति उक्त कीमत से *** प्रतिशत की कटौती करने के बाद एन आई पी की गणना करने के लिए एक बैंच मार्क कीमत के रूप में भी अपनाया जा सकता है।
- हमने अपने लिखित अनुरोधों में धरेलू उद्योग द्वारा इसके कार्यचालन में किए गए गणनाओं में विभिन्न त्रुटियां जो एक दूसरे के विरोधाभासी हैं और जिसके फलस्वरूप विसंगतियां उत्पन्न हुई हैं, का उल्लेख किया था। प्रकटन विवरण यह नहीं दर्शाता है कि हमारे द्वारा बताए गई उक्त त्रुटियों पर विचार किया गया है और इन गणनाओं को तदनुसार फिर से किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

71. प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के उत्तर में नीचे दिए गए अनुसार विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गए अनुरोध की जांच की है। इसके साथ ही पूर्ववर्ती पैरा में भी कुछ अनुरोधों का उल्लेख किया गया है :

- (i) जहां तक मैसर्स कोडक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिए जाने का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करना है कि राज्य के हस्तक्षेप से बाजार के संकेतों पर प्रभाव नहीं पड़े। एल्युमीनियम विचाराधीन उत्पाद के प्रमुख कच्ची सामग्रियों में से एक हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोडक ने यह दावा किया है कि एल्युमीनियम की कीमतों का सत्यापन मौके पर शंघाई फ्यूचर एक्सचेंज और लंदन मेटल एक्सचेंज दोनों के दल द्वारा किया गया था।
- (ii) प्राधिकारी यह मानते हैं कि निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का सत्यापन स्थल पर किया गया था, इसके विश्लेषण और कारखानागत निर्यात कीमत के अंतिम निर्धारण के बारे में उन तथ्यों के साथ साथ गोपनीय आधार पर बताया गया था जो बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे से संबंधित थी और उसे मुख्य प्रकरण विवरण में अगोपनीय पाठ के

रूप में प्रकट किया गया था। प्राधिकारी ने राज्य के हस्तक्षेप के संबंध में सामान्य मूल्य के पूर्ववर्ती पैरा में स्पष्ट किया गया है जो बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के लिए मैसर्स कोडक के दावे का समर्थन नहीं करता है।

- (iii) प्राधिकारी उपयुक्त रूप से एल्मुमीनियम की कीमत का समायोजन करने के लिए कोडक द्वारा किए गए अनुरोधों को नोट करते हैं और 'सामान्य मूल्य' को उस तरह से तय करने के लिए कोडक के आंकड़ों को स्वीकार करते हैं जिस प्रकार से प्राधिकारी ने निर्यात कीमत के समायोजनों पर लकी के आंकड़ों को स्वीकार किया है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि फूजी और लकी दोनों ने बाजार अर्थव्यवस्था मानने के लिए दर्जे का दावा नहीं किया है और सतत प्रथा के अनुसार 'सी एन वी' की गणना की गणना लकी के लिए की गई है। जहां तक लकी के निर्यात कीमत का प्रश्न है, जबकि निर्यात कीमत का सत्यापन स्थल पर किया गया था और तदनुसार पहुंच मूल्य की गणना की गई थी, विश्वसनीयता के साथ सिद्ध न किए गए निर्यात कीमत के संबंध में समायोजनों पर विचार प्राधिकारी द्वारा अपनाये गये सतत मानदण्डों के आधार पर किया गया है जो किसी उत्पादक/ निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिए जाने की स्थिति में 'सी एन वी' को तय करने से अलग है। प्राधिकारी ने बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिए जाने की स्थिति में सहयोग करने वाले सभी उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए एक साझा 'सी एन वी' पर विचार किया है।
- (iv) प्राधिकारी मैसर्स लकी के साथ बांटे गए समायोजन के संबंध में इसके गोपनीय आंकड़ों के संबंध में मैसर्स कोडक द्वारा किए गए अनुरोध को नोट करते हैं और साथ ही इसके आंकड़ों को समाप्त किए जाने की गोपनीयता के संबंध में उत्पाद विवरण में कोडक के ब्रांड नाम का उल्लेख करते हुए अनुरोध करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को डी जी सी आई एंड एस के लेन देन वार आयात संबंधी आंकड़ों की उपलब्धता के माध्यम से ही मैसर्स कोडक के अनुरोधों को नोट करते हैं। प्राधिकारी यह मानते हैं कि इसमें अपनी सतत मानदण्डों के अनुसार निर्यात कीमत के लिए तथा उनमें से एक समायोजन अर्थात् कोडक के समायोजन के लिए समुद्री भाड़ा के लिए कुछ समायोजनों पर विचार किया है और उसका उपयुक्त रूप से अन्य मामलों के अनुसार औसत राशि से मिलान किया गया है। यह सह-संबंध में किसी भी प्रकार से कोडक की आंकड़ों संबंधी किसी गोपनीयता से समझौता नहीं किया है। डी जी सी आई एंड एस के लेन देन वार आंकड़ों के संबंध में, प्राधिकारी यह मानते हैं कि यह घरेलू उद्योग सहित किसी जांच में सभी हितबद्ध पक्षकारों को इस प्रकार के आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए बिना किसी भेदभाव वाली नीति अपनाती है। कुछ मामलों में, उत्पाद के विवरण में निर्यात किए गए उत्पाद का ब्रांड नाम हो सकता है। 'डी जी सी आई एंड एस' आयात संबंधी अपरिपक्व आंकड़ों को आयातक का नाम तथा इसकी पहचान संख्या को हटाकर एन सी वी रूप में परिवर्तित करता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि नवंबर 2016 तक आयातों के लेन देन वार आंकड़ों का मिलान डी जी सी आई एंड एस को छोड़कर अनेक निजी एजेंसियों द्वारा भी किया जा रहा था जो वाणिज्यिक शर्तों पर सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा वैसा ही आंकड़े उपलब्ध करा रहे थे जिसका उपयोग विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा पाटनरोधी जांच एक गौण स्रोत साक्ष्य के रूप में किया जा रहा था। इन आंकड़ों को पाटनरोधी महानिदेशालय का अधिग्रहण लिए बिना सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा एकत्रित किया जा रहा था। इस प्रकार की निजी एजेंसियों के साथ सीमा शुल्क के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा इन आंकड़ों को साझा करने की प्रक्रिया बंद किए जाने के बाद, प्राधिकारी अनुरोध करने वाले सभी हितबद्ध पक्षकारों को डी जी सी आई एंड एस से अगोपनीय प्रकृति के लेनदेन वार आयात संबंधी आंकड़े प्राप्त करने के लिए अधिकार प्रदान करते रहे हैं। प्राधिकारी यह मानते हैं कि चूंकि उत्पादक/ निर्यातक ने मूल जांच में पूर्व में इस प्रकार की चिंताएं प्रकट नहीं की थी जब निजी एजेंसियां इस प्रकार के आंकड़े उपलब्ध करा रही थी और साथ ही इन उपायों के जारी रहने के दौरान, प्राधिकारी से यह आशा नहीं की जा सकती है कि वह गोपनीयता के कथित रूप से समाप्त होने के बारे में प्रकट के बाद के चरण में इस मुद्दे का समाधान करे। प्राधिकारी ने गोपनीय आधार पर पाटनरोधी महानिदेशालय को कोडक द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी आंकड़ों की गोपनीयता को सुरक्षा प्रदान की है जो इस प्राधिकारी की प्राथमिक जिम्मेदारी और दायित्व है।
- (v) प्राधिकारी नोट करते हैं कि मैसर्स के एंड टी विधि कार्यालयों ने घरेलू उद्योग को एकाधिकार वादी के रूप में और न की घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि के रूप में दर्शाया है, उच्च गोपनीयता के दावे, दुर्घटना की कमी और उन्हें सत्यापन रिपोर्ट उपलब्ध नहीं कराने को दर्शाया है तथा यह मानते हैं कि गोपनीय सत्यापन रिपोर्ट के संबंध में केवल संबंधित हितबद्ध पक्षकारों को और न कि किसी अन्य व्यक्तियों को साझा किया जाता है। पाटनरोधी नियमावली के प्रावधानों के अनुसार सभी हितबद्ध पक्षकारों को गोपनीयता की अनुमति दी गई है और यह कि क्षति और दुर्घटना का विश्लेषण प्राधिकारी द्वारा विभिन्न निर्धारित आर्थिक और वित्तीय मानदण्डों के संबंध में किया गया है।
- (vi) जहां तक निष्पन्न कलर द्वारा विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से प्लेटों की कुछ श्रेणियों का अपवर्जन किए जाने के लिए अनुरोध का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र वही रखा गया है जो मूल जांच में था। उसमें कोई विस्तार और न ही उसका कोई लोप किया गया है।

- (vii) जहां तक निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा समाचार पत्र को छोड़कर प्रयोक्ता के समूह को अवसर प्रदान नहीं किए जाने का प्रश्न है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि जांच किए जाने के बारे में सभी हितबद्ध पक्षकारों को पूरी जानकारी थी और यह संबंधित हितबद्ध पक्षकारों पर निर्भर करता है कि वे इसमें भाग लें। जहां तक सार्वजनिक याचिका के माध्यम से घरेलू उद्योग के आंकड़े और सूचना अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराये जाने के संबंध में अनुरोध का प्रश्न है और एन सी वी एक्सचेंज का सत्यापन किए जाने के संबंध में अनुरोध है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि इन्होंने घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का सत्यापन उपयुक्त रूप से उस सीमा तक किया है जिस सीमा तक उसे आवश्यक माना गया।
- (viii) प्राधिकारी मैसर्स टी पी एम द्वारा प्रकटन में आवश्यक तथ्यों को प्रकट न किए जाने के संबंध में किए गए अनुरोधों तथा प्रकटन के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को नोट करते हैं और यह मानते हैं कि कई हितबद्ध पक्षकारों ने इस प्रकटन के उत्तर में ठोस अनुरोध नहीं किए हैं। प्राधिकारी इस प्रकटन के उत्तर के आधार पर यह मानते हैं कि इन्होंने सभी उपयुक्त आवश्यक तथ्यों/ मानदण्डों का प्रकट किया है जिस पर यह अंतिम जांच परिणाम में विचार करेगा। हालांकि, किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा किया गया कोई अनुरोध जो विचार किए जाने के लिए आवश्यक तथ्य के भाग के रूप में इस प्रकटन में भूलबश नहीं प्रस्तुत किया गया है, प्राधिकारी में इस जांच परिणाम में उस पर विचार किया है।
- (ix) प्राधिकारी मैसर्स टी पी एम द्वारा यू वी – सी पी सी प्लेट्स के आयातों के संबंध में घरेलू उद्योग सूचित किए गए गलत आंकड़ों के संबंध में अनुरोधों, गलत घोषणा के संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोधों, मैसर्स लकी एवं मैसर्स कपूर इमेजिंग तथा अन्य आयातकों द्वारा एनालॉग प्लेटों के रूप में वर्गीकृत किए जा रहे यू वी – सी पी सी प्लेटों के आयात के संबंध में और उस पर सी आर आई की जांच के दौरान अपनाये गये क्षतिपूर्ति तंत्र को नोट करते हैं। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आयात किए जा रहे किसी वस्तु की गलत घोषणा एक घटना नहीं है जिसका समाधान अंतिम निर्णायक समीक्षा में अथवा मध्यावधि समीक्षा में भी किए जाने की आवश्यकता है क्योंकि इसका संबंध सीमा शुल्क प्राधिकारियों द्वारा अपनाए जाने वाले उचित विचार-विमर्श से है जिसे सही आई पी सी एच एस और नामकरण के अंतर्गत आयातों को किए जाने के लिए अपेक्षित है तथा देय सीमा शुल्कों अर्थात् मूल या पाटनरोधी/ प्रतिस्थापन/ सुरक्षात्मक शुल्क जो भी लागू होगा, को लागू करना अपेक्षित है। कोई भी आयात जो पाटनरोधी नियमावली में यथानिहित बचाव के विरुद्ध जांच के कार्यक्षेत्र के अधीन आता है, को घरेलू उद्योग द्वारा उसके लिए एक उपयुक्त याचिका दायर करना अपेक्षित है। वर्तमान मामले में, यू वी सी पी पी प्लेटों के आयातों की घोषणा गलत ढंग से की गई है जैसा कि सीमा शुल्क के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा कुछ मामलों में पुष्टि भी की गई है। इस प्रकार की गलत घोषणा के माध्यम से पाटनरोधी उपाय की प्रभावोत्पादकता को किसी उत्पाद के लिए लागू किसी व्यापार उपचारात्मक उपाय में किसी भी समय समाप्त हो सकता है। इसके लिए सुधारात्मक उपाय प्राधिकारी के पास इस प्रकार के उपाय को लागू करने के साथ है।
- (x) प्राधिकारी मैसर्स ए पी जे – एस एल जी जो फूजी फिल्म समूह (चीन) का प्रतिनिधित्व करते हैं द्वारा घरेलू उद्योग को क्षति न होने और न ही इसकी किसी संभावना, मांग को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग की असमर्थता तथा बाजार हिस्से को खोने के संबंध में उनके अवरोधों को नोट करते हैं जिसका साक्ष्य यूरोपीय संघ से उनके आयातों द्वारा प्राप्त हुआ है। प्राधिकारी ने इन सभी पहलुओं पर विचार किया है और अपने क्षति संबंधी विभिन्न मानदण्डों पर अपने निष्कर्ष में रिकार्ड किया है। जहां तक पूंजी जुटाने की क्षमता का प्रश्न है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग के स्थिर आर्थिक मानदण्डों के अपने निष्कर्ष को देखते हुए, पूंजी जुटाने की क्षमता को नुकसान नहीं पहुंच सकता है। जहां तक “समझौता जापान” के अधीन और समझौता जापान से बाहर लेन देन करने के लिए विश्लेषण का प्रश्न है प्राधिकारी यह मानते हैं कि समझौता जापान कीमत घरेलू उद्योग और प्रयोक्ता उद्योग के अधिकांश भाग के बीच आपस में तय की गई कीमत है और ‘एन आई पी’ वह है जो प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के अनुसार तय करते हैं। प्राधिकारी ने समझौता जापान के माध्यम से निर्धारित कीमत, एन आई पी और पहुंच मूल्य को ध्यान में रखकर प्राप्त की गई वास्तविक एन एस आर का विश्लेषण किया है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस मामले के तथ्यों के अंतर्गत उपलब्ध आंकड़े उसकी क्षति और दुर्घटना को सिद्ध करने के लिए बिलकुल पर्याप्त हैं।
- (xi) प्राधिकारी घरेलू उद्योग को क्षति और इसके जारी रहने की संभावना के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध को नोट करते हैं। इस संबंध में घरेलू उद्योग के मुख्य अनुरोध चीन के उत्पादकों के साथ विचाराधीन उत्पाद की बहुत अधिक अतिरिक्त, उनका उच्च निर्यात उन्मुखीकरण, भारत को छोड़कर अन्य देशों ने लकी की निर्यात कीमत, जांच की अवधि के बाद की अवधि में कोडक की कीमतों में गिरावट, पाटनरोधी शुल्क को वापस लिये जाने की स्थिति

जापान और यूरोपीय संघ से चीन में फूली फिल्म के निर्यात को स्थानांतरित करने की संभावना, यू वी - सी टी सी प्लेटों की एनालॉक प्लेटों के रूप में गलत रूप से घोषणा का समर्थन चीन के सीमा शुल्क निर्यात आंकड़ों, सीमा शुल्क के क्षेत्रीय कार्यालयों की रिपोर्ट/ डी आर आई की रिपोर्ट आदि रही है। प्राधिकारी ने नीचे दिए गए अनुसार नोट किया है।

- (xii) घरेलू उद्योग ऑल इण्डिया फेडरेशन ऑफ मेनिफेक्चर्स एसो. के साथ एक समझौता जापान (एम ओ यू) किया है जो अनेक संघों को शामिल करता है। समझौता जापान में एलुमीनियम की कीमतों से संबद्ध डिजिटल प्लेटों की कीमत का सूत्र तथा अन्य लागतों को शामिल करने का शर्त है। प्रयोक्ता उद्योग ने घरेलू उद्योग को यह सुनिश्चित करते हुए सहायता करने पर सहमति दी है कि वे चीन से पाटन की अनुचित व्यापार प्रथा का सामना करने के लिए अपने कानूनी उपाय प्राप्त करने में घरेलू उद्योग का विरोध नहीं करेंगे। प्रयोक्ता उद्योग ने इसके प्रति तथा प्रकटन विवरण में उनके उत्तर को भी उपलब्ध कराया है।
- (xiii) प्रयोक्ता उद्योग द्वारा किया गया समर्थन यह दर्शाता है कि 'समझौता जापान' की शर्तों को पूर्ण रूप दोनों पक्षकारों द्वारा माना जा रहा है। समझौता जापान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जिसमें घरेलू उद्योग अनुचित पाटित कीमतों पर अपनी बिक्री कीमत के अनुरूप कर सके क्योंकि समझौता जापान केवल दोनों पक्षों को स्वीकार्य आपसी सहमति के आधार पर कीमत निर्धारण सूत्र के आधार तथा कच्चे माल की आयात कीमत और अन्य लागतों तथा उस लागत से नहीं जो अन्य प्रचलित पाटित कीमत हैं, को सिद्ध करने के लिए किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि तापीय और वायलट प्लेटों के लिए जांच की अवधि के दौरान 'पहुंच मूल्य' तथा जांच की अवधि के बाद की अवधि दोनों के लिए 'एन आई पी' से अधिक है। घरेलू कीमतें जांच की अवधि में और जांच की अवधि के बाद की अवधि में भी 'एन आई पी' से अधिक घरेलू कीमतों को प्राप्त कर पाया है यद्यपि वे पहुंच मूल्य से कम है। 'समझौता जापान' फार्मूले के माध्यम से यथा निर्धारित कीमतें प्राप्त की गई एन एस आर की तुलना में अधिक है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग यह दावा करता है वे पाटित पहुंच कीमतों के कारण समझौता जापान के अंतर्गत निर्धारित पूरी कीमतों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं, न्यायोचित नहीं है क्योंकि 'समझौता जापान' के अंतर्गत कीमत का निर्धारण का कोई संबंध पाटित कीमतों से नहीं है और समझौता जापान केवल इस अनुचित प्रथा के प्रभाव को कम करने के लिए किया गया है। यदि इन दो पक्षकारों में से कोई पक्षकार असंतुष्टि हो जाता है तब समझौता जापान को समाप्त कर दिया गया होता जो यह मामला नहीं है। इसके अलावा, चूंकि घरेलू उद्योग का 'एन एस आर' उससे कम है जो एल वी का है और वह 'एन आई पी' से अभी भी अधिक है, निम्न एल वी के खतरे जिसके फलस्वरूप कम कीमत पर बिक्री करनी पड़ती है और परिणामस्वरूप क्षति होती है, को नहीं माना जा सकता है।
- (xiv) जहां तक 'वायलट' प्लेटों के आयात का प्रश्न है, प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में यह उल्लेख किया है कि कोडक ने पूर्ण जांच की अवधि में केवल तापीय प्लेटों का निर्यात किया है और जांच की अवधि के दौरान जब आंदोलन चल रहा था, वायलट प्लेटों का कोई आयात नहीं किया गया है और इसका प्रतिनिधित्व घरेलू उद्योग फिर से कर रहे हैं। प्राधिकारी पुनः विचार किए जाने पर और कोडक द्वारा किए गए प्रकटन का आगे विश्लेषण और उसके उत्तर में नोट करते हैं कि डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों में प्रविष्टि का एकमात्र बिल जो वायलट ब्रांड नाम को दर्शाता है, की सूचना डी जी सिस्टम के आंकड़ों में अलग अलग स्तर पर (बीजक वार) दिया गया है। डी जी सी आई एंड एस ने वायलट के रूप में 22098 वर्ग मीटर के रूप में दर्शाई गई विलय की हुई मात्रा वास्तव में *** प्रति वर्ग मीटर के पहुंच मूल्य पर वायलट श्रेणी का केवल 201 वर्ग मीटर है, जिसके लिए कोडक ने यह साक्ष्य उपलब्ध कराया है कि इसमें उस नमूने को जांच आधार पर आयात किया है। इस वायलट श्रेणी का 'पहुंच मूल्य' मोटे तौर पर डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों के आधार घरेलू उद्योग दावा किए गए 'पहुंच मूल्य' के साथ किया गया है। प्राधिकारी ने ऊपर दिए अपने निष्कर्ष के लिए कोडक के आयात साक्ष्य के अनुसार 'पहुंच मूल्य' को अपनाया है। इसके अलावा प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि फूजी फिल्म द्वारा जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद के दौरान यूरोपीय संघ और जापान में इसके अपने संयंत्रों से तापीय प्लेटों की पहुंच निर्यात कीमत 'एन आई पी' से अधिक है और वायलट की कीमत 'एन आई पी' से थोड़ा कम है। इन स्तर पर कीमतों के प्रचलित होने का प्रभाव इन दो प्लेटों के लिए घरेलू उद्योग की कीमत प्राप्ति पर नहीं पड़ा है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर कि ग्राहकों ने इस प्रकार की कीमतों का भुगतान किया है, चीन से फूलीफिल्म के निर्यातों का विपथन किए जाने की स्थिति में, प्रयोक्ता उद्योग के साथ घरेलू उद्योग का मौजूदा 'समझौता जापान' घरेलू उद्योग को अनुचित तथा, यदि यह फिर से उत्पन्न होता हो, के विरुद्ध समान अवसर प्रदान करेगा। फूलीफिल्म द्वारा कीमत की वर्तमान प्रवृत्ति घरेलू उद्योग को क्षति के फिर से होने की संभावना नहीं दर्शाता है। भारत में कोडक द्वारा निर्यात किए गए तापीय और वायलट प्लेटों का जांच की अवधि के बाद पहुंच मूल्य का संबंध डी

जी सी आई एंड एस के आंकड़ों से स्थापित किया गया है और यह नोट किया जाता है कि तापीय और वायलट दोनों प्लेटों के लिए कोडक का पहुंच मूल्य जांच की अवधि के दौरान नकारात्मक क्षति मार्जिन को दर्शाता है। जांच की अवधि के बाद की अवधि में, वायलट प्लेट की कीमतों का पहुंच मूल्य इसके एन आई पी से थोड़ा कम है परंतु चूंकि इनकी फिर से बिक्री कोडक इण्डिया द्वारा एस जी ए और मार्क-अप पर खर्च किए जाने के पश्चात किया जाता है, अतः इन आयातों से कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव नहीं होगा। घरेलू उद्योग तापीय और वायलट दोनों प्लेटों के लिए घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किए गए 'एन एस आर' इस निष्कर्ष को वैध ठहराता है। इस कारण से अत्यधिक क्षमताओं तथा कोडक और फूजीफिल्म के निर्यात उन्मुखीकरण तथा आयात की समग्र प्रवृत्ति के बावजूद प्राधिकारी यह मानते हैं कि इन प्लेटों अर्थात् चीन से तापीय और वायलट प्लेटों की इन दो श्रेणियों के लिए पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाने की स्थिति में किसी प्रकार की क्षति होने की कोई संभावना नहीं है। तापीय प्लेटों का जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद की अवधि में लकी की निर्यात कीमतों को भी क्षतिरहित कीमत के रूप में नोट किया गया है।

- (xv) प्राधिकारी आयातों के पुनः बिक्री कीमत पर परिशिष्ट 5 और 6 प्रस्तुत नहीं करने के लिए चीन के सीमा शुल्क के आंकड़ों के अनुसार निर्यात उत्पाद तथा उसके समान आयातक मैसर्स कपूर के निर्यात उत्पाद के विवरण में उनके द्वारा किए गए गलत घोषणाओं के साक्ष्य के आधार पर लकी द्वारा प्रस्तुत उत्तर को अस्वीकार करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों को भी नोट करते हैं। यह दावा किया गया है कि एक क्षतिपूर्ति व्यवस्था आयातक द्वारा की गई है और यह कि तापीय प्लेटों की उनकी निर्यात कीमत विश्वसनीय नहीं है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि सामानों की गलत घोषणा से सीमा शुल्क प्राधिकारियों के लिए उपयुक्त और विवेकपूर्ण प्रशासन करने की अपेक्षा होगी और इस प्रकार के मुद्दे पाटनरोधी महानिदेशालय के कार्यक्षेत्र में नहीं आते हैं। जहां तक निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर का संबंध है, उसका सत्यापन स्थल पर किया गया था और तापीय प्लेटों की कीमतों के संबंध में सीमा शुल्क प्राधिकारियों द्वारा प्रश्न उठाया गया है। प्राधिकारी ने जांच की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मैसर्स कपूर द्वारा की गई फिर से बिक्री के संबंध में अपने आप को संतुष्ट किया है जो कुछ स्थानों पर हानि और कुछ स्थानों लाभ के साथ कुछ लेन देन के साथ औसत आधार पर खरीद कीमत से अधिक रही है। इसके अलावा संबंधित एजेंसियों द्वारा गलत घोषणा के कारण अलग अलग उत्पाद प्रकारों के बीच किसी क्षतिपूर्ति व्यवस्थाओं के निर्धारण अथवा कोई निष्कर्ष संबंधी साक्ष्य नहीं रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यू वी - सी टी सी प्लेटों के लिए जांच की अवधि में और जांच की अवधि के बाद घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त की गई 'एन एस आर' समझौता ज्ञापन द्वारा यथानिर्धारित कीमत से कम पर हुई है। यह वैसा ही है जैसा कि तापीय और वायलट प्लेटों के मामले में देखा गया है। यू वी - सी टी सी प्लेटों का 'पहुंच मूल्य' जिसे बिना कोई संदेह के डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों में परिभाषित किया गया है और वे जो यू वी - सी टी सी प्लेट प्रतीत होते हैं परंतु उनकी घोषणा एनालॉक प्लेट के रूप में की गई है, पूर्ण रूप से तुलनीय हैं और जांच की अवधि में तथा जांच की अवधि के बाद 'एन आई पी' से कम है। हालांकि, घरेलू उद्योग का 'एन एस आर' जांच की अवधि में और जांच की अवधि के बाद की अवधि में 'पहुंच मूल्य' से बहुत अधिक है और जिसके माध्यम से यह संकेत मिलता है कि इन प्लेटों का 'पहुंच मूल्य' इस श्रेणी में घरेलू उद्योग की कीमतों पर दबाव नहीं बना रहा है और यह कि यदि समझौता ज्ञापन के अंतर्गत निर्धारित प्राप्ति को पूर्णरूप से पा लिया गया होता है तब इससे घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई होती। प्रयोक्ता उद्योग के साथ घरेलू उद्योग की समझौता ज्ञापन के प्रावधान पर दो अन्य श्रेणियों अर्थात् तापीय और वायलट के लिए उचित कीमत के संबंध में विचार किया गया हो, तब ऐसा नहीं माना जा सकता है कि यू वी - सी टी सी प्लेटों के पहुंच मूल्य से इस श्रेणी के लिए कीमत पर थोड़ा दबाव उत्पन्न हो गया है। जांच की अवधि और जांच की अवधि के बाद की अवधि के लिए समझौता ज्ञापन, एन आई पी, पहुंच मूल्य, प्राप्त एन एस आर के लिए आंकड़ों से संबंधित कीमत जिसकी सूचना एवं विश्लेषण उपर्युक्त पैरा में किया गया है, निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

रु./ वर्ग मीटर	जांच की अवधि			जांच की अवधि के बाद की अवधि (6 माह)		
	यूवीसीटीपी	तापीय	वायलट	यूवीसीटीपी	थर्मल	वायलट
समझौता ज्ञापन द्वारा निर्धारित कीमत	***	***	***	***	***	***
निवल बिक्री प्राप्ति	***	***	***	***	***	***

क्षति रहित कीमत	***	***	***	***	***	***
पहुंच मूल्य	167.17	282.35	302.42	146.5	301.29	313.84

निष्कर्ष एवं सिफारिशें

72. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच करने के बाद और उपर्युक्त तथ्यों, परिस्थितियों, विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी का निष्कर्ष नीचे दिया गया है :
- घरेलू उद्योग की वित्तीय और आर्थिक मापदण्ड (मात्रा और कीमत दोनों) स्थिर हैं और इसमें किसी प्रकार की गिरावट नहीं देखी गई है, जिससे पाटनरोधी शुल्क को जारी रखना अपेक्षित है।
 - प्रयोक्ता संघ/ प्रयोक्ता उद्योग के साथ घरेलू उद्योग द्वारा हस्ताक्षरित 'समझौता ज्ञापन' के फलस्वरूप अनुचित व्यापार के कारण संभावित रूप से होने वाली क्षति को कम किया गया है।
 - समझौता ज्ञापन के अंतर्गत सहमत कीमतों और जांच की अवधि तथा जांच की अवधि के बाद की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा वास्तव में प्राप्त की गई कीमत में कटौती को सिद्ध नहीं करते हैं।
 - सहयोगी निर्यातकों की कीमत प्रवृत्तियां और आयात प्रवृत्ति घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क वापस लिये जाने पर क्षति के फिर से होने की संभावना नहीं दर्शाता है।
 - याचिकाकर्ता द्वारा समझौता ज्ञापन के प्रावधानों के अनुसार पूरी कीमतों को प्राप्त नहीं कर पाना क्षति को कम नहीं करने का प्राथमिक कारण है जिसे सीमाशुल्क की स्वीकृति के दौरान उत्पाद के विवरण की गलत घोषणा से उत्पन्न होने वाले लीकेज के कारण यूवी-सीटीपी प्लेटों के लिए उत्पाद को कम कीमत पर बेचने के कारण नोट कर लिया है।
73. प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि इस उद्योग का क्षमता उपयोग, उत्पादन और समग्र लाभप्रदता क्षति के होने अथवा एक खराब आर्थिक स्थिति के होने को नहीं दर्शाता है। घरेलू उद्योग द्वारा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर क्षति के फिर से होने की संभावना के संबंध में प्रस्तुत किए गए कारकों को जांच की अवधि के दौरान और जांच की अवधि के बाद के दौरान विचाराधीन उत्पाद की कीमत प्राप्ति और कीमत प्रवृत्तियों द्वारा समर्थन नहीं किया जाता है। उपर्युक्त जांच के कारण प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पाटनरोधी शुल्क को जारी रखना इस उत्पाद के उपर्युक्त तीनों श्रेणियों में से किसी एक लिए आवश्यक नहीं है और इसके माध्यम से दिनांक 2 जून, 2017 के सीमाशुल्क अधिसूचना संख्या 24/2017 – सीमाशुल्क (पाटन रोधी शुल्क) के माध्यम से विचाराधीन उत्पाद पर लगाये गये पाटनरोधी शुल्क को जारी नहीं रखने की सिफारिश करते हैं।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi the 23rd April, 2018

FINAL FINDINGS**Subject: Sunset Review of Anti-Dumping Duty imposed on imports of Digital Offset Printing Plates originating in or exported from China PR**

F. No. 15/24/2016/DGAD.— 1. Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Rules) thereof; the original investigation concerning imports of the subject goods from the subject country was initiated by the Authority vide Notification 14/7/2011-DGAD, dated 13.06.2011 and the final finding was notified by the Authority vide Notification No. 14/7/2011-DGAD dated 03.10.2012. Accordingly, Customs Notification No. 51/2012-Customs (ADD) dated 03.12.2012 was issued imposing duty on the basis of reference price.

2. And whereas, M/s TechNova Imaging Systems (P) Limited (hereinafter also referred to as “Petitioner” or “Applicant” or “domestic industry”) filed an application in the present case before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) in accordance with the Act and the Rules for initiating sunset review of the anti-dumping duty on imports of Digital Offset Printing Plates (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from China PR (hereinafter also referred to as the subject country) and requested for continuation of anti-dumping duties on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country.
3. And whereas, the Authority on the basis of prima facie evidence submitted by the Applicant to justify initiation of sunset review investigation issued a public notice vide Notification No. 15/24/2016-DGAD dated 25th April, 2017 to examine whether the expiry of the said duties on the import of the subject goods originating in or exported from the subject country is likely to lead to the continuation or recurrence of injury to the domestic industry. The validity of the anti-dumping duty on the imports of the subject goods from the subject country was extended by the Central Government upto 3rd June, 2018, vide Notification No. 24/2017-Customs (ADD), dated 2nd June, 2017.
4. The scope of the present review covers all aspects of the original investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country.

A. PROCEDURE

5. Procedure described below has been followed with regard to this investigation, after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority:
 - i. The Authority notified the Embassies/Representatives of the subject country in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.
 - ii. The Authority sent a copy of the initiation notification to the embassy of the subject country in India, known producers/exporters from the subject country, known importers/users in India, other Indian producers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
 - iii. Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters and to the Embassy of the subject country in India in accordance with Rule 6(3) of the Rules supra.
 - iv. The Embassy of the subject country in India was also requested to advise the exporters/producers from the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to the Embassy along with the names and addresses of the known producers/exporters from the subject country.

- v. The Authority sent Exporter's Questionnaire and Supplementary Questionnaire to the following known producers/exporters to elicit relevant information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - a. Kodak (China) Graphic Communication, China PR
 - b. Fujifilm Printing Plate (China) Co. Ltd., China PR
 - c. Xingraphics, China PR
 - d. The Second Film Factory of Lucky Group, China PR
- vi. In response to the above notification, the following exporters/ producers responded and submitted questionnaire responses.
 - a. M/s FUJIFILM (China) Investment Co., Ltd.
 - b. M/s Fuji Films Printing Plates (China) Co., Ltd.
 - c. Kodak (China) Investment Co. Ltd.
 - d. Kodak (China) Graphic Communication Co. Ltd.
 - e. Lucky Huaguang Graphics Co Ltd
- vii. The Authority sent Importer's Questionnaires to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - a. Kodak India Private Ltd., Mumbai
 - b. Fujifilm India Private Ltd., New Delhi
 - c. Newstech (India) Pvt. Ltd., Mumbai
 - d. Kapoor Imaging Private Ltd., Chennai
 - e. Heidelberg India Pvt. Ltd., Chennai
 - f. Bennet, Coleman & Co. Ltd., Mumbai
 - g. Jagran Prakashan Ltd., Kanpur
- viii. The following importers of the subject goods responded by filing questionnaire responses.
 - a. Fuji Film India Private Limited
 - b. Kodak India Private Limited
 - c. Kapoor Imaging Private Limited
 - d. Nippon Color
- ix. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- x. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to provide the transaction-wise details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigation, which was received by the Authority. The Authority has relied upon the DGCI&S data for computation of the volume of imports and required analysis after due examination of the transactions. The Authority also obtained data from DG Systems of POI to correlate with the DGCI&S data wherever required.
- xi. The Non-Injurious Price (NIP) based on the optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-dumping Rules has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- xii. The Authority held an oral hearing on 27th February, 2018 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance with Rule 6 (6), which was attended by the representatives of domestic industry and other interested parties. All the parties who presented their views in the oral hearing were requested to file written submissions of their views expressed orally. The parties were also advised to collect written submissions made by the opposing parties and were requested to submit their rejoinders thereafter.
- xiii. The verification of the information provided by the domestic industry was carried out to the extent considered necessary. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon.
- xiv. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review investigation is April 2016 – March 2017 (12 months). The examination of trends in the context of injury analysis covered the periods 2013-14, 2014-15, 2015-16, POI and post POI (6 months) for likelihood analysis.
- xv. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been addressed by the Authority, in this final findings.
- xvi. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever

possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.

- xvii. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the views/observations on the basis of the facts available.
- xviii. The Authority issued a disclosure statement under Rule 16 on 9th April, 2018 and provided an opportunity to give comments to the disclosure statement till 16th April, 2018.
- xix. In this final findings, ‘***’ represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules. () bracket in this final findings indicates negative number/range.
- xx. The exchange rate for the POI has been taken by the Authority as Rs.67.96 = 1 US\$.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

B.1 Views of the Domestic industry

6. The views of the domestic industry are as follows:

- i. The product under consideration was defined by the Authority as under in its final finding dated 3rd October 2012 in the original investigation. The description of the subject goods or its use has not undergone any change during the past five years. This being a investigation for reviewing the need for continuation of anti-dumping Duty, the scope of the PUC should be maintained as in the original investigation. The scope of PUC cannot be changed in a sunset review.
- ii. There is no known difference in the PUC exported from China PR and that produced by the Indian industry. In the present case, both the imported and the domestic product have comparable characteristics in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification, etc.
- iii. Digital Plates are classified under Tariff Item ‘8442.50.20’ of the Customs Tariff. However, there have been imports of the subject goods under other Tariff Items such as 3701.30.00, 3704.00.90, 3705.10.00, 7606.91.91, 7606.92.90, 8442.50.10, 8442.50.39, 8442.50.90, 3701.99.90, 3705.90.90, 3701.91.90, 7606.92.90, 7610.90.20, 7606.12.00, 7606.11.90 and 7616.99.90 as well.
- iv. No new evidence has been brought forward by any of the interested parties for altering the scope of PUC. No evidence has been adduced by the importer who argued during the public hearing that certain grades of digital plates are not manufactured by the Petitioner.
- v. The Petitioner manufactures all types and grades of digital plates as has also been verified by the Authority during the on-site verification.

B.2 Views of the other interested parties

7. The following interested parties have made submissions as follows:

- i. M/s TPM Consultants on behalf of Kapoor Imagings Pvt. Ltd., Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. and Shangai Strong State Printing Equipment Ltd. has submitted that there are three types of the product under consideration and the duties have also been levied on benchmark basis separately for the three types of the product under consideration. However, petitioners have provided no data for the three types separately.

- ii. M/s Nippon Color has submitted the following:

It was earlier pointed out by us that there are different types of Digital Plates, some of which are not even manufactured by the DI and hence imposition of ADD on such plates is improper. It is further requested that even if the ADD Notification is being extended, then products which are definitely not manufactured by the DI such as Processless Thermal/CTcP/Violet Plates in all thickness and sizes, PS/CTcP/Thermal & Violet Plates in thickness of 0.24mm, Double Layer CTCP plates in all thickness & Sizes & Negative working CTcP/PS/Thermal Plates in all thickness & Sizes should be specifically exempted from the ADD since the field custom officials stop all consignment of CTCP/Thermal/Violet plates without any such distinction.

It bears mention that the ADD Notification is specific to three types of Digital Plates. The DI in his application has not bifurcated the data as to the manufacture & sale of various types of digital plates, thickness wise. Since the market is based on different types of plates and the thickness is a relevant factor for purchase and sale of such digital plates, the application is defective for not revealing full & proper data and hence the application itself is defective and the proceedings for extension of anti-dumping should be dropped as being ab-initio void.

B.3 Examination by the Authority

8. The product under consideration in the present investigation is Digital Offset Printing Plates (hereinafter also referred to as "Digital Plates"). Digital Plates are used in the printing industry for transferring data as an image (dot patterns or text) onto paper or on non-absorbent substrates like tin sheets or poly films etc. In the printing process using digital plates, the digital workflow enables direct transfer of image from a 'computer to the plate' (CtP) using lasers unlike the analogue workflow that requires an intermediary film to transfer the image. Digital plates are made from high-purity litho-grade aluminum coils coated with a chemical coating. Digital plates may be either positive (non-exposed area forms image) or negative (exposed area forms image) working plates. The coating components, also known as 'sensitizers' vary for different types of plates.

9. All types of digital plates in all dimensions are covered within the scope of the product under consideration.

10. Thus, the Authority holds that the subject goods produced by the applicant domestic industry is like article to the product under consideration exported from the subject country, in accordance with the AD Rules.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

C.1 Views of the domestic industry

11. Following submissions have been made by the domestic industry:

- i. The petition has been filed by M/s TechNova Imaging Systems (P) Limited (hereinafter also referred to as "TechNova"). TechNova accounts for substantial share (around 98%) in production of the product concerned in India.
- ii. There are some other small producers of subject goods in the country. In addition there are several other entities which are in the process of setting up plant for subject goods, which will certainly increase the domestic production capacity in India.
- iii. Further, two of the domestic producers of the subject goods in India: M/s. Metrostar Prints Solutions Pvt Ltd, Mumbai and M/s Orion Photosensitive Systems, Satara have filed their respective letters supporting the continuation of anti-dumping duty on imports of the subject goods from the subject country.
- iv. In effect, there is no change in the composition of the domestic industry as compared to the original investigation.

C.2 Views of the other interested parties

12. The following interested parties have made submissions as follows:

- i. M/s Metrostar Print Solutions Pvt. Ltd. has submitted the following:

The company has invested more than Rs. 30 crores, out of which the promoters have put in more than Rs. 22 crores of their own funds, in a state of the art plant in Maharashtra ensuring jobs to more than 80 families in the professional, skilled and semi-skilled category. The initial installed capacity of the unit is 4.0 million m² and the factory will support more than 100 different vendors for their daily requirement. We completed the erection and commissioning of the plant by June, 2017 and commercial production was streamlined by August, We have therefore not only ensured job creation but also created an eco-system of vendors and customers that will expand the GDP of Maharashtra and India.

The petitioner i.e. TechNova imaging Systems Pvt. Ltd (TechNova) has made detailed submission on injury during the period of investigation and also on likelihood of dumping and injury to the domestic industry. MPSPL strongly supports; the submissions made by TechNova.

- ii. M/s TPM Consultants on behalf of Kapoor Imagings Pvt. Ltd., Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. and Shangai Strong State Printing Equipment Ltd. submitted that the petition claimed only two other domestic producers other than the petitioner, i.e., Orion Photosystems, and Transtech Imaging. Metro Star Print Solutions Pvt. Ltd is a new producer named by the petitioner at this stage. Further public records shows that the said company came into existence on 24th March 2011 and thus is not a new producer. Petitioner has misrepresented the facts before the Authority.
- iii. M/s Orion Photosensitive Systems submitted that they were manufacturers of Digital Offset Printing Plates since 2013 and had invested approximately Rs.2500 Lakh capital and provided direct employment to 20 workers and indirect employment to 30 people. They mainly produce two categories of the PUC i.e. UV (CtCP) and Thermal Printing Plates.

They have already provided full support to the Domestic Industry M/s TechNova Imaging Systems (P) Ltd in this investigation to seek an extension on Anti-dumping duties for further 5 years.
- iv. M/s Nippon Color submitted during the hearing that some of the persons holding themselves to be representatives of newspaper industry had requested for continuation of the ADD. The printing industry is not confined to the newspaper industry only, but includes the entire gamut of printing industry, which is involved in the utilization of such plates and their interests ought to be taken into consideration as well.

C.3 Examination by the Authority

13. The petition has been filed by M/s TechNova Imaging Systems (P) Limited which accounts for substantial share (around 98%) in production of the product concerned in India. The Petitioner has neither imported the subject goods from the subject country nor is it related to any importer or exporter of the subject goods.
14. The production by the Petitioner constitutes 'a major proportion' of Indian production of the like product. It is thus, determined that the application has been made by and on behalf of the domestic industry and the application satisfies the requirements of 'standing' under Rule 5 of the AD Rules. Thus, the Petitioner constitutes 'Domestic Industry' in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.
15. The Authority notes that Domestic Industry has also imported 8 lakh sqm of process less and chem free digital plates (both violet and thermal) from EU during POI, from their technology collaborator which is about ***% of their total production in POI. These are at prices comparable with prices of subject goods from other non-subject countries, prices of other producers from EU including imports from subject countries. The product has been imported for test marketing of this new product type. The Authority notes that the import prices of these grades from EU are at CIF prices of ***US\$/sqm (thermal) and ***US\$/sqm (violet) which are higher than the prices at which cooperating producer/exporter from China have exported similar goods to India. On the basis of these imports from non-subject countries at above mentioned price levels, the Authority holds that this does not affect the standing of Domestic industry. The domestic industry or any other interested party has not filed any mid-term review during the currency of the ADD measure from subject country, nor any petition has been filed to claim dumping of subject goods having shifted to non-subject countries. The import of subject goods by domestic industry from EU at prices comparable with other above mentioned sources have neither been claimed as dumped nor injurious. The Authority holds that the quantum and price of these imports have not been a cause of injury to them nor have affected the standing of the petitioner.

D. MISCELLANEOUS ISSUES

D.1. Views of the Domestic Industry

16. The following miscellaneous submissions have been made by the Domestic industry:
 - i. The MoU executed between the Petitioner and the All India Federation of Master Printers (the association of users) does not bind the user industry to procure plates exclusively from the Petitioner. The user industry is free to purchase plates from any supplier.
 - ii. The MoU provides a fair and transparent pricing methodology for the digital plates which aims to protect the interests of both the Petitioner and the user industry.
 - iii. The allegation that injury has been caused due to drop in aluminium prices, the same is devoid of any merits. While it is true that LME prices witnessed fall for certain part of the injury period, the prices have been thereafter moving north as shown in the chart. As and when the LME price moved downwards, the Petitioner lowered its prices of the

PUC; however, the Petitioner had to offer much lower prices than what it could have realized based on the MoU given the Chinese producers have been clearing PUC at much lower prices by mis-declaring UV CtP plates as PS Analog plates.

D.2. Views of other interested parties

17. The following miscellaneous submissions have been made by other interested parties in this regard –

- i. M/s APJ-SLG Law offices representing M/s FUJIFILM Printing Plate (China) Co. Ltd. (FFPS), FUJIFILM (China) Investment Co., Ltd. (FFCN) and M/s FUJIFILM India Private Limited (FFIPL) has submitted the following:
 - Fixing of a very high reference price has resulted in creating a sanctuary market for Domestic Industry and a particular exporter namely, Kodak. At the same time, the fixation of an unreasonably high price has blocked the exports of all other suppliers. The sole objective of anti-dumping duties is to remove the adverse effects of injurious dumping and not to create sanctuary markets for certain exporters and the Domestic Industry. It is also understood that the selling prices of both Kodak and the Domestic Industry are nowhere close to the reference prices fixed for all other suppliers.
 - In their application for sunset review, the Domestic Industry very conveniently “forgot” to mention about the mid-term review investigation carried out by the Authority in the present case. As per the Final Findings of the said mid-term review, the said review was terminated on the pretext of a Memorandum of Understanding between the Domestic Industry and the applicants of the said mid-term review. That termination of the said mid-term review on the pretext of a Memorandum of Understanding itself was improper because such termination presumes that by such Memorandum of Understanding the change in circumstances shall be restored to the original position. It is an established legal position that mid-term review investigations are initiated on the submission of change in circumstances as to dumping and injury. It is beyond the understanding of the responding parties as to how a Memorandum of Understanding between Domestic Industry and users restores the changed circumstance. However, the Domestic Industry and the some user associations, in the garb of the said Memorandum of Understanding were able to mislead the Authority to terminate the mid-term review investigation which would have terminated the duties in the present case at that time itself. It goes without saying that while such kind of understanding between a segment of users and the Domestic Industry defeats the purpose of anti-dumping duties, which is to create a fair competitive market, it also can never be in the larger interest of the overall industry.
 - The existence of the Memorandum of Understanding also established that any price injury on account of the imports claimed by the Domestic Industry is completely baseless. It is this very Memorandum of Understanding which keeps the Domestic Industry from increasing their prices and as a result, the Domestic Industry is selling the subject goods at a price which is far lower than the reference price fixed by the Authority.
 - The scheme of arrangements stated by the Domestic Industry in their written submissions in itself proves that the MoU is nothing but an unfair trade arrangement between the Domestic Industry and a segment of the user industry to keep the exporters and other users out of the market. This is also reflected by the timelines of the MoU provided by the Domestic Industry in the said paragraph. As per the self-admission of the Domestic Industry, the MoU relating to PS analogue plates was entered into by the Domestic Industry and the user industry on 17.12.2007 (3 months after the anti-dumping duties were levied on PS analogue plates by DGAD vide Notification No.14/6/2006-DGAD, dated 23.08.2007). The same parties further entered into an MoU relating to the subject goods on 14.01.2014 (around 14 months after anti-dumping duties were levied on the subject goods by DGAD vide Notification No. 14/7/2011-DGAD, dated 03.10.2012).
 - The fact that the Domestic Industry alongwith a segment of user industry entered into an understanding relating to pricing, after imposition of duties on each of the products manufactured by them i.e digital plates (subject goods) and analogue plates (which are also manufactured through same plant and machinery), indicates an unfair collusion between a segment of user industry and the Domestic Industry to keep the other exporters and users out of the business. Further, the termination of the mid-term review on the pretext of the same MoU also indicates to the unfair trade methodologies adopted by the petitioner and the segment of user industry, which in their own terms is a “win-win” situation for both. The fact is that the Domestic Industry has very cleverly got anti-dumping duty imposed on PS analogue plates and the Digital offset plates, claiming price suppression and depression from the imported goods. While on the same time they also managed the user industries by entering into an understanding relating to pricing with them, thereby effectively suppressing and depressing their own prices in terms of the said MoU’s.

- The Domestic Industry has itself admitted in their written submissions that the “prices are typically established between buyer and seller on the methodology linked to the cost of production and reasonable margin”. In other words it is completely frivolous to say that the imports are affecting the prices of the subject goods in any manner whatsoever or even there is a threat of the imports affecting the prices of the subject goods in the domestic market. Therefore, as per the self-admission of the Domestic Industry, there is no possibility of any price injury to the Domestic Industry due to the imported goods.
 - The petitioner has mistaken itself to believe that the anti-dumping duties also protect their expectations out of some MoU. The protection under the anti-dumping is limited to protecting the Domestic Industry from the negative effects of dumping, the claims of the Domestic Industry proves that they are repeatedly indulging in taking the undue advantage of the anti-dumping duties which is nothing short of abusing the system.
- ii. M/s Dua Associates on behalf of M/s Kodak China Graphic Communication Co. Ltd. (“KCGCCL”), M/s Kodak China Investment Co. Ltd. (“KCICL”) and M/s Kodak India Pvt. Ltd. (“KIPL”) has submitted the following:
- TechNova had initially filed an application proposing POI as October 2015 to September 2016 for initiating sunset review investigation. However, the Authority at the time of issuing the Initiation Notification dated April 25, 2017 expanded the POI and determined the same to be as April 1, 2016 to March 31, 2017. Therefore, it is evident that sufficient data for extended POI was not made available by TechNova to the Authority prior to the initiation of present investigation and therefore, there was insufficient data on record to prima facie examine the claim of injury and dumping, requisite for initiation of present investigation. In view of the same, the initiation of present investigation is contrary to Rule 5 (3) of AD Rules.
 - The revised application for the extended POI was filed by TechNova at much belated stage and the same was made available to interested parties after 63 days from date of initiation.
 - Collective reading of the submissions filed by TechNova and the user industry i.e. All India Federation of Master Printers (‘AIFMP’) reflects that domestic manufacturer and users have entered into MOU to arrive at domestic selling price. The terms of MOU specifically provides that “*the prices are typically established between buyer and seller on the methodology linked to the cost of production and reasonable margin*”. Therefore, it is an admitted position that domestic selling prices were not influenced by the import price as the same were based on quarterly prices of Aluminium.
 - Ability to raise investment: The Applicant at Para 15 of the written submissions has confirmed that it proposes to enhance its capacity to the tune of 10 million sqm. In light of the said submission, it is self-evident that there is no adverse impact of imports on the performance of domestic industry and its ability to raise capital investments.
 - In the original investigation, Kodak had not exported Violet or CtCP Plates; and therefore the Authority had not determined anti-dumping duty/benchmark price for the grades / sub-category not exported by Kodak. It is also necessary to note that the aforesaid determination of the Authority was specifically challenged by TechNova before CESTAT, however, after detailed submissions of various interested parties, Hon’ble CESTAT upheld the final findings including the decision of Authority of not recommending benchmark price for such grades. In view of the same, the Authority is requested not to recommend anti-dumping duty for the grades not exported by Kodak during the POI of the present investigation.
- iii. M/s TPM Consultants on behalf of Kapoor Imagings Pvt. Ltd., Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. and Shangai Strong State Printing Equipment Ltd. has submitted the following:
- Petitioner has referred to anti-dumping duty imposed on China by other jurisdictions such as Brazil and South Korea. It is however pertinent to note that the Anti-dumping duty imposed by these countries are on PS plates and not subject goods.
 - Once the petitioner has claimed that MoU has been signed in and the prices are on the basis of such MOU, the petitioner cannot now claim that the MoU has become meaningless

- PS plate is also attracting ADD and the form of duty is fixed quantum. Thus even if the goods are declared as PS Plate there will be ADD payable on the same. In any case, this becomes an issue of evasion of duty and is thus a custom fraud issue. The correct remedy is not continuation of ADD
 - There is no basis to claim export data of China as confidential. Further, selective exports to few countries does not show the behaviour of the exporters in China and in particular the behaviour of such exporters towards India in the event of cessation of anti-dumping duty
 - The capacity information of the producers in China cannot be claimed confidential. Without disclosure of such crucial information the right of the interested parties to participate effectively in the investigation has been hampered
- iv. M/s Nippon Color has submitted that the data has been shown to be confidential and hence it is not possible to challenge the correctness of the same. It is expected that the DGAD will get the same examined with the help of Qualified Chartered Accountants to examine the correctness of the same in relation to the Balance Sheet data. It however, bears mention that from Table 4 relating to manufacture & sale, it is seen that almost the whole quantity manufactured on YOY basis has been sold by the applicant. Hence the so-called dumping has not materially affected the manufacture of the goods by the applicant.

The Anti-dumping duty on digital plates may be discontinued. If, at all, the same is extended, then it should be imposed only on those specific goods which are manufactured by the DI & the ADD should be based on the formula of Previous month closing LME Aluminium price (Thickness based) + Conversion Charges + reasonable profit, as held by the hon'ble Supreme court in the case of Ujagar Prints vs. UOI (1989 AIR 516).

- v. M/s K&T Law offices on behalf of Kohli Graphic Systems ("KGS") has submitted the following:
- Too much confidentiality in disclosing true statistics and data in regard to its price fixing of the subject good produced by the domestic industry and non-supply of the investigation report prepared by the DGAD in regard to its inquiry conducted for the SSR to make an informed response may amount to grave prejudice and miscarriage of justice.
 - The Authority must provide the abovementioned documents to the parties and KGS and other parties must be given an opportunity to respond to such documents and refute submissions (if any), that have been made falsely.
 - In the presence of the MOU between the sellers of the subject goods and its buyers, it is apparent that they share a strong business relationship which may be continued even in the absence of any intervention by the DGAD in the form of an ADD.
- vi. M/s HT Media Limited has submitted the following:
- Hindustan Times Group prints from 19 locations across India and is one of the biggest consumers of Digital Printing Offset Plates in India.
 - Historically, in 2008, local manufacturers such as Technova started manufacturing Violet plates in India. Before this significant change, HT Media was completely dependent on plate technology & consumables imported from various countries thereby adding a strain on our operation & financial including cash flows.
 - With the introduction of digital violet plates technology by local manufacturers, the cost of such plates have dropped by almost 30% with an added advantage of reduced inventory timelines from an earlier 120 for imports to just 30 days.
 - As a leading Newspaper Publishing house, we request you to please consider the following crucial requirement for newspaper printing, which practically are impossible for imports to substitute:-
 - (a) Dedicated technical support with 24 hrs X 7 days a week coverage.
 - (b) Constant need for technology upgrade & customization of Products to meeting custom domestic market requirements.
 - (c) Supply Chain: Our local manufacturers provide inventory support of < 4 weeks (~ 30 days) & readily available stocks nearby to our printing locations inventory levels. Such support for low inventory lead time is impossible with import options and that too with local costs.
 - (d) Fair Price Mechanism: Local manufacturers such as Teachnova have implemented a very mature, fair & transparent pricing mechanism linked to direct cost input parameters such as Forex and LME referencing. Again, such fair and

transparent pricing shall never be available from importers thereby putting us at a risk of abuse by importers and exporters of digital plates if there is no alternative left for supply from domestic manufacturers.

- (e) **Value Added Services:** It is a given fact that localized presence, knowledge and experience of Indian Manufacturers like Technova compliments our support needs with respect to services such as safety, Environmental Audits, technology and other consulting services which is unique to our needs. Such Support is not possible from the importers of the digital plates.
- The reason we need the domestic manufactures like Technova to survive would be further elucidated by abusive and unfair practice of exporters from time to time. We would like to quote a recent example on how high dependence on imports has affected us in recent past:-
 - (a) In early 2017, FUJI India, our minor supplier for plates from Netherlands, unwarrantedly & unilaterally decided to increase their prices by almost 30% without any legitimate reasoning. Ultimately, they used it as an excuse to withdraw from the Indian markets. Had it been a situation of domestic manufacturers not being available in strength, we would have been in a grave situation.
 - (b) Newsprint (paper) is the main raw material and our dependence on foreign imports is almost 70%. The import prices of Newsprint have gone up by almost 60% in last two quarters with no future predictability. We are completely at the mercy of foreign suppliers.
 - If the current anti-dumping duties on imports of digital plates are allowed to expire, the newspaper printing industry would be left solely at the mercy of exporters from China. From our experience of dealing with the exporters, we can assert that their pricing behaviour is erratic, unpredictable, unfair and often abusive such that they would take benefit of non-supply from local manufacturers to their advantage. Therefore, it is in our interest to protect local suppliers from dumping of the plates from China. In the short term, the cheap imports would appear attractive, however HT Media is not here for short term and has a very responsible role in making relevant information available in time to crores of India population. In the long run, once the Chinese exporters are able to kill the domestic suppliers like Technova, they would increase prices unilaterally and we would be completely left at their mercy.
 - M/s Dainik Jagran has also reiterated similar submissions as made by M/s HT Media.

D.3 Examination by the Authority

18. The general issues raised by the parties to the investigation are examined and addressed as provided hereunder:

- i. Information provided by the domestic industry as well as other interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to the other interested parties. While placing 'NCV' version of various documents in public file the Authority has followed its consistent practice on considering claims of confidentiality as per AD Rules by different interested parties.
- ii. The Authority notes submissions made by DI and other interested parties on the MOU signed between DI and the printers association viz. All India Federation of Master Printers. The said MOU was signed in January 2014 while the MTR filed by two members of association (importers) was initiated in September 2014. The intent of the MOU reflects fixation of price of subject goods by DI to users which is linked to the LME prices of Aluminium. The Authority has examined the price determined by MOU and that actually realised by the DI amidst the prices offered by other sources i.e. producers/exporters from China and also other countries. The evaluation as to whether the arrangement of MOU has addressed the concerns of the DI and also need for continuance of ADD has been examined in later paragraphs of this finding.
- iii. The Authority notes that CESTAT has upheld the original findings of the Authority and therefore the Authority has adopted the same methodology on evaluating dumping margin/injury margin for 3 product types separately for cooperating producer/exporter on the product type exported by them.
- iv. The Authority noting the submissions by various interested parties and the recent Trade Notice dated 15th March, 2018 issued by DGAD also made available to them the import data analysed by DI through the public file and also a

copy of MOU (NCV version) signed between Domestic Industry and the user association.

E. MARKET ECONOMY TREATMENT (MET), NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DETERMINATION OF DUMPING MARGIN

E.1. Views of the Domestic Industry

19. The domestic industry inter alia submitted as follows:

- i. There are three producer entities/ groups from China PR who have partially responded to exporter's questionnaire in the present investigation. None of the producers/ exporters entities have filed a complete response to the exporter's questionnaire to warrant co-operative status, and therefore, the Authority must not accord them individual dumping margin, based on past precedents.
- ii. Kodak Group must be treated as non-cooperative. While Kodak India Pvt. Ltd has filed importer's questionnaire response, it has not filed transaction-wise data for sales made in India to independent customers. Export price between Kodak (China) Investment Co. Ltd. and Kodak India Pvt. Ltd (which are related parties) is unreliable.
- iii. The export price for Fujifilm Group is not available, and the same must be constructed on the basis of third country sales.
- iv. While Art. 15(a)(ii) of China's Accession Protocol expired on December 11, 2016, the Authority must treat China PR as a non-market economy (NME) in the present investigation for the following reasons:
 - a. A major part of the POI (almost nine months) was prior to December 11, 2016;
 - b. The issue of the legal effect of expiry of Section 15(a)(ii) of the Accession Protocol is *sub judice* before the WTO's Dispute Settlement Body;
 - c. Most member countries within the WTO have not yet recognized that the expiry of Section 15(a)(ii) would mean an automatic migration to a market economy for China PR;
 - d. The Authority has also adopted a similar approach for other investigations.

E.2 Views of the interested parties

20. The following submissions have been made with regard to normal value, export price and dumping margin –

- i. M/s Dua Associates on behalf of M/s Kodak China Graphic Communication Co. Ltd. ("KCGCCL"), M/s Kodak China Investment Co. Ltd. ("KCICL") and M/s Kodak India Pvt. Ltd. ("KIPL") has submitted the following:
 - Kodak (China) Graphic Communications Company Limited (KCGCCL) is the producer/exporter of subject goods to India. KCICL is a trader of subject goods, engaged in domestic sales in China PR and KIPL is the importer and trader of subject goods exported by KCGCCL from China PR to India. KCGCCL & KCICL has filed their response to exporter's questionnaire, market economy questionnaire and sunset review questionnaire. In addition to above, KIPL (related importer) has also submitted IQR and additional information, as sought by the Authority. The information filed by Kodak has been duly verified by DGAD officials during on-spot verification.
 - During the POI of the ongoing review investigation, out of the three sub-categories of subject goods, Kodak has only exported Thermal Plates.
 - The Applicant has claimed LME Aluminium price during Apr-Jun 2014 in range of 2200-2250 USD/MT. However, the LME website reflects the Aluminium price for the said time period to be in the range of 1750-1850 USD/MT.
 - The average LME Aluminium price during the POI and injury period has remained in tune of 1800 USD/MT. However, the Applicant has claimed quarterly average price beyond the highest price that prevailed during the corresponding time period.
 - During the POI and injury examination period, the maximum Aluminium price as reported on the LME website was 2113 USD/MT (on August 29, 2014). However, the Applicant has claimed the average Aluminium LME prices to the extent of 2400 USD/MT (Jul – Dec 2015). Therefore, it is apparent that the Applicant has filed false and misleading data to reflect higher quarterly average aluminium prices.

- Post the POI period (i.e. Apr-Jun 2017), the Applicant has claimed average LME Aluminium price in tune of 2000 USD/MT. However, the highest price during the corresponding period as reported on the website was 1960 USD/MT (on April 5, 2017).
 - In view of the above and to ensure the accurate determination of Normal Value and NIP, the Authority is requested to disclose the aluminium prices considered for determination of dumping and injury margin.
 - LME vs. SME: The price of aluminium as reported at Shanghai Metal Exchange ('SME') corresponds with the LME prices and therefore, the claim of the Applicant that Chinese producers were unduly benefitted on account of lower raw material price is baseless and merits rejection. During the injury POI, there is only a difference of 1 % in monthly average prices (during the injury period and POI) on the SME and the LME respectively. Therefore, the claim of the Applicant that the Chinese producers are procuring raw material at unfair prices is contrary to the data on record and should to be rejected.
- ii. M/s TPM Consultants on behalf of Kapoor Imagings Pvt. Ltd., Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. and Shangai Strong State Printing Equipment Ltd. has submitted the following:
- The petitioner has emphasised various issues viz Circumvention significantly, import statement showing therein volume, value and average price of imports of the product concerned, product type wise normal value, export price and dumping margin, or a clarification whether the dumping margin was determined on the basis of weighted average only
 - The price reported by the petitioner is not representative of actual export price of the subject goods as co related from the secondary source. Imports have occurred at a much higher price than what has been claimed by the domestic industry. Once correct export price is adopted, the dumping margin and injury margin are negative.
 - The import analysis done by us using the data procured from secondary source and that done by the petitioner shows significant difference in the import price to such an extent that whereas the petitioner has claimed positive injury margin, the import price as per secondary sources (which corroborates with the export price reported by Lucky) shows that the injury margin is negative. Analysis by us shows that imports have occurred at a much higher price than what has been claimed by the domestic industry.
 - There is significant decline in Aluminium price on global basis (prices given are as per LME) since the period of investigation considered in the original investigation which forms the major cost of raw material. Thus, with decline in raw material price, the benchmark fixed has become much more than the margins determined earlier.
 - It is without any basis to anticipate the effect of section 232 measure imposed by USA on aluminium prices in China. Moreover, petitioner assumed that whereas section 232 measures would lead to decline in input prices in China, it would not be so in India! No basis whatsoever for such an assumption.
 - Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd had in the original investigation claimed MET. However the same was denied by the Authority and thus the petitioner has provided all relevant information to determine its export price.
- iii. M/s Nippon Color has submitted the following:
- M/s Nippon Color has filed importer questionnaire response detail imports of Aluminium PS plates during POI from China and CTCP plates from non-subject countries i.e. Vietnam, Spain and Taiwan. The importer has mentioned one of the imports from China is in appeal in CESTAT.
 - The International Price of Similar Goods from other countries such as Europe, Vietnam, Taiwan & Korea are much less than that fixed by the DGAD i.e. about US \$ 2.65 for CTcP and US \$ 3.00 for Thermal Plates as against US\$ 4.87 for CTcP Plates and US \$ 5.39 for Thermal Plates fixed, hence the ADD is unreasonable. It is therefore submitted that there is no dumping of the goods in India and that there is no case of continuation of ADD as prayed by DI.
 - There is no verifiable data presented by the DI as to the local market price of the goods in China. In such cases, it would be appropriate to take either the international price of such traded goods or the export price of the DI, since he himself is an exporter of such goods. It has been represented during the hearing by the DI & two of the users from Newspaper industry that the products produced by the DI is world class, that being so, it would be appropriate to adopt the International price of such goods for fixing the ADD.

- We had vide our earlier letters sought data as to the import data and the financials of the applicant, without which it is difficult to make sense out of the tables submitted by the DI. The so-called DGCIS data may kindly be got examined to verify the correctness of the averments made in the application. The DGCIS data may be inclusive of all types of printing plates including analog plates etc. and other goods falling under the said HS Code. In such a case, it would be improper to consider such data for purpose of verifying the dumping, if any.
- The total Ex-factory Export Price does not seems to be proper. There is no empirical data to show that the goods are imported at Rs. *** in any port in the POR. Without such data as to the exact item imported whether it is Digital or Analog or whether CTCP or Violet or Thermal etc, it appears that the applicant has suppressed the price of the goods sold to India.
- It is also not known as to how the ocean freight has been calculated at Rs. 7.56/Sq Mt, when the applicant has not imported a single consignment from China himself. He ought to have taken the customs valuation rule methodology of taking 20% of FOB price when the same is unascertainable. If one take 20% from the alleged CIF price, the ex-factory export price becomes 154.86 (US \$ 2.27), which is absurd. Hence the application itself is defective in its pronouncements.
- The data provided by the applicant is not backed by any data as to the price at which various types of Digital Plates are being imported from China. The manner in which the price has been arrived at Rs. 238/- is also not revealed. The applicant has not indicated their own domestic sale prices so as to reveal the extent of undercutting. However, by working out the undercutting margin indicated in the said Table, it appears that the applicant has given his domestic sale price at Rs. 214 – 203/Sq Mtr. In any case, if the price undercutting is only about 10%-15%, then there is no need to impose ADD since efficiencies of scale & fluctuation of prices of Aluminium will automatically influence the prices.
- The applicant states that the quality of goods manufactured by them are comparable to international quality standard. If there is dumping by China into India, then how the manufacturer is able to compete in the international market by exporting up to 2 Million Sq mtrs, is a question to be pondered. The export price data of the applicant should be obtained to verify whether it is comparable with that of Chinese Import price data. If both are near matching, then there is no dumping.
- During the hearing, it was stated by DI and supported by some of the representatives of Newspaper industry that they have signed an Agreement with the Applicant for fixing the price @ LME Aluminium Price + conversion charges. It is therefore requested that if at all ADD is continued it should be based on the same formula.

iv. M/s K&T Law offices on behalf of Kohli Graphic System has submitted the following:

After taking into account all the submissions of the major exporters/importers, KGS has arrived at the following conclusion-

- The Price, cost and inputs in the exporting country and decided on market signals without any state interference.
- The Production costs / financial situations are not distorted.
- The producer / exporter are subject to bankruptcy and property law which guarantees legal certainty and stability for operations of the firms.
- Exchange conversions are carried out at market rate.
- There has not been a fair comparison between export price and normal value.

E.3 Examination by the Authority

E.3.1 Examination of Market Economy Claims

21. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-*
 - (a) *comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an*

appropriate third country as determined in accordance with the rules made under subsection (6); or

- (b) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

22. The Authority notes that Article 15 (a) (i) of the China's Accession Protocol requires a producer/exporter to establish its claim for market economy treatment. Para 7 and Para 8 of the Annexure I to the AD Rules also stipulates requirements for such claims.
23. On comparing the Shanghai Future Exchange ("SHFE") prices with London Metal Exchange prices on an apple to apple basis, the Authority notes that SHFE prices of Aluminium (excluding VAT) are lower than the LME prices (including relevant premium) and therefore the costs of subject goods (where Aluminium is a major raw material) from China are not representative of actual costs. Also the recent determination by US under Section 232 of the Trade Expansion Act has highlighted the prices of Aluminium in China being not representative of market forces. The Authority holds 'SHFE' prices are future prices inclusive of VAT, the comparison of which has been made on apple to apple basis with LME premium prices. The premium considered is of the relevant geographical zone i.e. Tokyo. Further as referencing to US 232 findings the Authority holds that state interference by China through export tax on raw aluminium export has spiralled an ecosystem of incentivisation for value added exports of 'Aluminium' which includes the current Product Under Investigation. 'Aluminium' is a major raw material and a state interference of this nature impacts the decision making of firms to produce value added products of Aluminium with respect to costs and prices. The Authority has therefore on the basis of comparative SHFE prices and LME prices along with facts as also contained in US 232 determination has not granted market economy status to Kodak. The verification report issued post on site verification also does not certify or accord grant of market economy status to Kodak. The Authority has therefore consider all producers/exporters of China not qualifying for market economy treatment including Kodak which has though claimed market economy treatment. The Authority has therefore evaluated the normal value for all producers/exporters on the basis of Rule 6 (8) i.e. best available information of the AD Rules which reads as "*In a case where an interested party refuses access to, or otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the designated authority may record its findings on the basis of the facts available to it and make such recommendations to the Central Government as it deems fit under such circumstances.*"

Accordingly the normal value for the subject goods has been constructed considering optimum consumption norms for the major raw materials and utilities, international prices of purchased raw materials, prices of captively produced raw material, including reasonable conversion cost, interest, SGA, and reasonable profit etc. The normal value for the 3 product types i.e. Thermal, violet and UV-CTC plates is constructed as *** Rs./sqm, *** Rs./sqm and *** Rs./sqm respectively.

F.3.2 Determination of Normal Value and Export Price for cooperating producers and exporters in China PR

A. M/s Kodak China Graphic Communication Co. Ltd. ("KCGCCL"), M/s Kodak China Investment Co. Ltd. ("KCICL") (hereinafter referred as "Kodak" group)

24. M/s Kodak China Graphic Communication Co. Ltd. ("KCGCCL") is the producer/ exporter of subject goods. Its related company is M/s Kodak China Investment Co. Ltd. ("KCICL") is engaged in domestic sales in the subject country. The goods exported by KCGCCL are imported by Kodak India Pvt. Ltd. ("KIPL") which are subsequently sold to unrelated end customers.

The Authority has undertaken onsite verification of data filed by both M/s KCGCCL and M/s KCICL on various aspects of cost of production, domestic selling price, export price to India and other countries and adjustments claimed on export price to India.

The Producer/Exporter has claimed market economy treatment for computing 'normal value' on the basis of their domestic sales in China.

The Authority considered the normal value, exfactory export price and landed value as under:

(a) Normal value

During POI, KCGCCL has made entire sales in domestic market through KCICL who has further sold subject goods to end customers in domestic market. M/s KCICL has sold ***sqm of thermal plates in domestic market to unrelated customers at a value of *** USD at an average price of *** USD/sqm. The producer has claimed cost of production for thermal plates at *** US\$/sqm (for each subgrade) which was verified onsite. However as stated above the cost of Aluminium claimed by the producer/exporter is not reflection of true costs and hence claim of M/s Kodak for market economy treatment is not admitted. The Authority holds that 'SHFE' prices, the Shanghai future exchanges future prices are inclusive of VAT, the comparison of which has been made on apple to apple basis with LME premium prices. The premium considered is of the relevant geographical zone i.e. Tokyo. Further as regards US 232 findings the Authority holds that state interference through export tax on raw aluminium export has spiralled an ecosystem of incentivisation for value added exports of 'Aluminium' which includes the current Product Under Investigation. 'Aluminium' is a major raw material and a state interference of this nature impacts the decision making of firms to produce value added products of Aluminium with respect to costs and prices. The Authority has therefore on the basis of comparative SHFE prices and LME prices along with facts as also contained in US 232 determination has not granted market economy status to Kodak. The verification report issued post on site verification also does not certify or accord grant of market economy status to Kodak. The Authority therefore adopted constructed normal value on the basis of best available information as per Rule 6 (8) of AD Rules as per its consistent practice. The constructed normal value for thermal plates is considered as *** Rs./sqm.

(b) Export price

M/s KCGCCL has almost exported *** sqm of Thermal Digital Plates to M/s KIPL (related importer) at a value of *** USD/Sqm at ex-factory level. To arrive at above ex-factory export price, all post factory expenses including freight, credit cost, bank charges etc. are adjusted to an extent of ***US\$/sqm, ***US\$/sqm, ***US\$/sqm respectively.

For the purpose of weighted average CIF, the exports by KCGCCL have been compared with response filed by the importer. The weighted average CIF is ***US\$/sqm.

The total imports by the related importer i.e. KIPL during POI is reported as ***sqm at a CIF value of ***USD/sqm. M/s KIPL has sold the above imported subject goods to various unrelated customers with a markup of ***% on an average at a value of Rs ***/sqm (***US\$/sqm). All transactions by M/s KIPL to independent buyers in India are noted to be profitable.

The landed value has been computed by adding landing charges and thereafter the basic customs duty and cess as *** US\$/sqm.

Since a small consignment of 201 sqm has been identified as of violet category the ExEP, CIF and LV for this is computed as *** US\$/sqm, *** US\$/sqm and *** US\$/sqm respectively on the basis of data provided by Kodak and appropriately correlated with DG Systems.

B. M/s Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. ('Lucky')Normal Value

The producer/exporter has not claimed market economy treatment and accordingly the Authority adopted the constructed normal value as per best available information in accordance with Rule 6 (8) of the AD Rules. Since the producer/exporter has claimed having exported only thermal digital plates the Authority has referenced the constructed normal value for thermal plates as *** Rs./sqm for POI, for evaluating dumping margin.

Export Price

M/s Lucky, the producer/exporter has exported *** sqm at a value of *** US\$ Thermal plates to India during POI. These subject goods have been exported to M/s Kapoor Imagings Pvt. Ltd. who have also filed importer response. The Authority had conducted an onsite verification to verify exporter's export price/quantity of subject goods. The same has also been correlated with the questionnaire response of the importer. As regards various adjustments on export price to arrive at exfactory export price, the Authority notes that as various back up evidence was not made available

in the ERP system during on site verification, the Authority referenced best available information on adjustments to arrive at the exfactory export price.

The Authority has referenced ocean freight, ocean insurance, inland freight, credit cost and bank charges to an extent of ***US\$/sqm, ***% of CIF, ***% of FoB, *** days credit cost at ***% bank interest rate and ***% of FOB on the basis of data of other cooperating producers and norms as adopted consistently for such adjustments. The exfactory export price after above adjustments comes to ***US\$/sqm and landed value as ***US\$/sqm after applying applicable landing charges and basic customs duty/cess.

C. M/s FUJIFILM Printing Plate (China) Co. Ltd. (FFPS), FUJIFILM (China) Investment Co., Ltd. (FFCN) (“Fujifilm”)

25. M/s FUJIFILM Printing Plate (China) Co. Ltd. (FFPS) (producer) and its related exporter i.e. FUJIFILM (China) Investment Co., Ltd. (FFCN) have filed exporter questionnaire response along with its related importer i.e. FUJIFILM India Private Limited (FFIPL). During the POI M/s FFCN has not exported the subject goods to India. The Authority had carried out onsite verification of the data filed by FFPS and FFCN related to global exports and domestic sales by FFCN. The producer/exporter have not claimed market economy treatment for the purpose of determining ‘normal value’ on the basis of their domestic sales.

F.3.3 Dumping Margin

26. The dumping margin for subject goods has been determined by comparing constructed normal value and net export price at ex-factory level for the subject goods. The table below shows the weighted average dumping margins for the cooperating producers/exporters of the subject country for thermal plates.

Table

Producer/Exporter	Product Type	Export Price in US\$/Sqm	Dumping Margin in US\$/Sqm	DM %	DM % in Range
Kodak (China) Graphic Communications Company Ltd. and M/s Kodak (China) Investment Co. Ltd.	Thermal	***	***	***	5 - 10
	Violet		***	***	0 - 5
M/s FUJIFILM (China) Investment Co., Ltd. and M/s Fuji Films Printing Plates (China) Co., Ltd.		No Exports			
M/s Lucky Huaguang Graphics Co Ltd	Thermal	***	***	***	(5 – 10)

G. DETERMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

G.1 Views of the Domestic industry

27. As regards injury and causal link, the domestic industry has made submissions as under:
- Despite the levy of anti-dumping duties, imports from the Subject Country have increased substantially. Imports have increased in both, absolute terms (by 72 indexed points) and relative to production (by 45 indexed points) and consumption (by 27 indexed points) in India during the POI.
 - the domestic industry continues to suffer material injury on account of dumped imports and particularly due to misdeclaration of UV CtP Plates as PS Analog plates in the assessed period of investigation and injury period
 - Market share of the Petitioner has been declining since the base year 2013-14, the market share of imports from China PR has been increasing continuously. The market share of the Petitioner has decreased from 76% to 69% whereas, the market share of imports from the Subject Country has increased from 15% to 19%.

- iv. Imports from China PR have continued to undercut the domestic sales price of the Petitioner through much of the injury period. Although there was negative undercutting in the beginning of the injury period, the dumped imports continue to undercut prices of the Petitioner during the POI.
- v. While the cost of production has marginally declined in the POI, the landed price of imports from China PR has taken a nose-dive with a decline of 19 indexed points when compared to a decline of 2 indexed points in the cost to make and sell. Given the steep decline in import prices, the Petitioner has been forced to lower its prices which is below the MoU prices as agreed with the user industry.
- vi. the landed value of UV CtP Plates exported from China PR are so low that it does not even cover the Petitioner's cost of litho grade aluminium based on LME prices.
- vii. Due to the price undercutting and price suppression effects, the Petitioner's profitability has reduced considerably over the injury period.
- viii. During the POI, return on capital employed declined by 40 indexed points and return on capital employed per unit declined by 48 indexed points. The above financial parameters indicate that Petitioner has continued to be materially injured throughout the injury period mainly due to mis-declaration of goods and consequent evasion of anti-dumping duty.
- ix. there has been rampant mis-declaration of UV CtP Plates as PS Analog plates, i.e. the UV CtP Plates are imported into India from China PR as PS Analog Plates and thereby nullifying the protection of the anti-dumping duty on the PUC.
- x. One may achieve full capacity utilization and yet suffer losses or fall in profits as capacity utilization has no relations with injurious price effects. The imports are not coming in at fair prices which is the sole reason to petition for an imposition of anti-dumping duties.

G.2 Views of other interested parties

28. Submissions made by the other interested parties are as under:

- i. M/s Metrostar Print Solutions Pvt. Ltd. has submitted the following:
 - The printing industry is susceptible to unmitigated flow of imports across the spectrum of Printing consumables. The promoters took the risk primarily because the finished products were under anti-dumping duty and hence they would be protected from unscrupulous traders and dealers who import cheap products from China through misdeclaration and other devious means. The imports of UVCTP continues under the misdeclared route in a very big way and is severely injuring our company. Already the company is facing stiff losses on account of lower capacity utilization on account of misdeclared imports and consequent lower prices, which makes manufacturing unviable. If the support and protection given by the anti-dumping duty is withdrawn the plant will have to be closed down leading not only to job losses but also a financial burden for the promoters to repay banks who have taken exposure to the unit.
 - The data submitted by TechNova clearly shows injury during the POI. It may be noted that MPSPL currently manufactures and supplied UV CtP plates. The data and evidence presented by TechNova would show that injury in UV CtP plate is much more pronounced given the rampant mis-declaration of goods and routing of Chinese goods through other countries not subject to anti-dumping duty. On the issue of likelihood, TechNova has submitted extensive evidence showing the huge capacities available with China and their readiness to sell the PUC at cheap prices.
 - MPSPL has made huge investments on the expectation that the Hon'ble Authority would protect small manufactures like us from the onslaught of unfair trade practices of the Chinese producers. MPSPL is planning to make additional investments to the manufacture and supply other types of digital plates i.e. Thermal and Violet. If the duties are allowed to expire, Chinese manufactures will completely destroy small manufactures like MPSPL.
 - We reiterate that we are extremely vulnerable to Chinese dumping given we are a small manufacture. MPSPL is ensuring jobs to more than 80 families in the professional, skilled and semi-skilled category. Besides this the factory intends to support more than 100 different vendors for their daily requirements. If the duties are allowed to expire, it will not only fail the "Make in India" mission and loss of jobs but would also risk promoters of MPSPL defaulting on bank loans.

- With the support of the anti-dumping duty, MPSPL will not only give quality Indian products to Indian customers but will also be encouraged to set up additional capacities to take care of enhanced demand and exports.
 - We request the Authority to recommend continuation of the anti-dumping duty and support the vision of young entrepreneurs like us who are proud to Make in India and service the local printing industry.
- ii. M/s TPM Consultants on behalf of Kapoor Imagings Pvt. Ltd., Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. and Shangai Strong State Printing Equipment Ltd. has submitted the following:
- Imports from various other countries having volume above de-minimis level and at lower price than the subject country, such as Europe, Japan, Korea and Taiwan. However, these prices are admittedly not causing injury to them.
 - Imports are almost equal to the quantum of demand supply gap in the country. Thus increases in imports and decline in market share of the domestic industry is natural
 - Import price has declined in view of decline in cost of sales.
 - The industry is running at optimum levels and its production, sales and capacity utilization improved over the injury period. No injury can be claimed in this regard
 - The domestic industry has been earning profits throughout the period. The domestic industry has claimed that the profitability started declining in 2015-16 because of increase in imports at low price.
 - The domestic industry was charging abnormally high price earlier but with the initiation of mid term review investigation initiated on 26th Sept., 2014, the petitioner entered into an MOU with the importers and consumers and had to relink their prices to raw material prices in some mutually agreed proportion. Thus the profits declined since 2015-16.
 - Subject goods are incurring benchmark form of duty, thus imports cannot enter at a price below the level of benchmark fixed. Thus any alleged injury cannot be caused by the subject imports
 - The raw material prices have declined which forms the major cost of production of subject goods, however, even then the cost of the domestic industry has shown an increase. The Authority is requested to kindly ascertain the reasons for increase in cost
 - The NIP of the domestic industry must have significantly declined since the investigation period earlier considered by the Authority as the cost of production of the domestic industry should have declined due to increase in production and capacity utilization. However, as a worst situation, if NIP of the PUC is considered the same and is adjusted for raw material costs injury margin will be negative.
 - Mere existence of injury and dumping does not lead to the conclusion that there exists likelihood of dumping and injury. It needs to be seen whether or not the injury being suffered by the domestic industry is on account of imports. If the injury is not on account of imports then certainly claim cannot be made that existence of current dumping and injury (on account of other reasons) will lead to recurrence of injury to the domestic industry
 - The claim of huge capacity is not substantiated. Further huge capacity is different from freely disposable capacities. Further, as held by the Authority in past investigations, mere surplus capacity is not sufficient to establish likelihood. It should be substantiated as to why such capacity will be directed to the Indian market.
 - It has been claimed that many of the users have not returned to who they had supplied earlier. It is however submitted that they have not shown whether the orders to historical customers have declined. The production and sales have increased.
 - The article submitted on decline in demand shows that the demand started declining since 2012. However, imports have not shown significant increase since then. The imports equals to the demand supply gap in the nation.
 - If import of Violet and Thermal printing plates from the EU were coming virtually at the same prices as China PR price then the remedy cannot be extension of antidumping duty on imports from China.

- As regards the claim that Kodak started dumping which attracts NIL duty, it is submitted that the domestic industry should have sought mid-term review investigation to address this, however, no efforts were made by the domestic industry in this context
 - The imports are to the extent of demand supply gap prevalent in the country. Even if it is to assume that the claims of the domestic industry about new producers coming up is true, then it appears that the domestic industry has taken away the share of other new producers as the estimation of other producers sales have been 0.61 million sqm throughout the injury period.
 - The domestic industry does not have sufficient capacity to meet the domestic demand and thus the decline in market share is natural. Rise in market share of imports can be directly attributed to the demand-supply gap in the Country.
 - The domestic industry has been earning profits throughout the period. Further, as stated earlier, imports are not the cause of decline in profit. Any other factor that has led to decline in profitability should not be attributed to imports. More importantly, subject goods are attracting benchmark form of duty. Thus imports cannot enter at a price below the level of benchmark fixed.
 - The NIP of the domestic industry must have significantly declined since the investigation period earlier considered by the Designated Authority as the cost of production of the domestic industry should have declined due to increase in production and capacity utilization and decline in the raw material prices. Thus the injury margin and injury margin would be negative.
 - Any reliance to the findings issued by the Brazilian and Korean Authority is misplaced as the findings pertain to PS plate and not Digital Plates. Mere surplus capacity is not sufficient to establish likelihood. It should be substantiated as to why such capacity will be directed to the Indian market.
- iii. M/s APJ-SLG Law offices on behalf of M/s FUJIFILM Printing Plate (China) Co. Ltd. (FFPS), FUJIFILM (China) Investment Co., Ltd. (FFCN) and M/s FUJIFILM India Private Limited (FFIPL) has submitted the following:
- The Domestic Industry has shown tremendous improvement with regard to almost all the injury parameters. The absence of existence of current injury is a robust indicator that the injury is not likely to recur particularly when the prices offered by the Domestic Industry are nowhere close to the reference prices so fixed by the Authority.
 - As regards the claim of huge idle capacities in China, it may be mentioned here that the domestic industry has failed to provide any evidence in this regard. It is the settled law that any claim as to the injury must be based on material evidences and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The domestic industry has clearly failed to fulfill their obligation under law to substantiate their claims as to the injury. In any case, existence of spare capacity cannot *per se* lead to conclusion of likelihood of injury.
 - Unsubstantiated and hollow claims have been made with regard to the lost orders by the domestic industry. The petition of the domestic industry clearly reveals a starkly contradictory situation. As against the hollow claims of lost orders by the domestic industry, the production, sales and capacity utilization of the domestic industry has increased substantially. Even if such fictitious and baseless claim is assumed to be true, it is beyond our understanding that how the Domestic Industry would have supplied to the said orders when they have already achieved the peak of their production, capacity utilization and sales.
 - Regarding the claim of the domestic industry that Brazil has extended the duties on the exports of subject goods from China, it is submitted that the duties in any other country do not have any effect on the exports of China in Indian market. It has been clearly demonstrated above that despite the existing reference price duty, the domestic industry in the Indian market sells the subject goods in the same vicinity as of the prices offered by the Chinese producers. There is virtually no difference between the imported price and the domestic prices.
 - As regards the claim of declining demand in China, we respectfully submit that there is no reliable basis to make such a claim. The report which has been relied upon is in the context of newsprint and not the subject goods. There is not even a whisper about the likely demand for the subject goods. Further, the data submitted by us, which has been duly verified by the Authority, clearly establishes that there has been increase in our domestic sales in China. In our

understanding, the same is the case with other Chinese producers as well which can only be on account of increased domestic demand of the subject goods in China.

- The decline in the landed value of the imports cannot be seen in isolation unless the cost factors are also simultaneously examined. The fall in landed value is almost wholly on account of steep decline in aluminium prices - the major raw material for the product under consideration. The same could also be ascertained from the fact that there is a decline in the selling prices of the Domestic Industry as well.
- There is a fall of around 25% in the aluminium prices when we compare the prevailing prices during the period of investigation in original investigation to the prevailing prices during the period of investigation during the current investigations. It is a matter of record that the primary raw material used in the manufacturing of the product under consideration is aluminium and it comprises of around 70% of the total cost of the product under consideration.
- Despite the low prices offered by the domestic industry during this period, the profitability of Technova increased significantly to Rs. 4600 lacs in FY-2015-16 from Rs. 1997 lacs in FY-2010 which is a whopping increase of 130%. This rise in the profitability is evident of the fact that the domestic industry chose to sell the subject goods at lower prices but increased their overall profitability by capturing the market share to the full extent of their own capacity.
- It is apparent that injury, if any, has been caused solely on account of other reasons and any injury on account of other reasons should not be permitted to be attributed to imports from subject country. Imports from China PR did not create any adverse effect on volume or the price parameters of the DI. In any case causal link needs to be seen in view of the fact that the Non-PUC and Exports sales of the domestic industry has fallen down drastically in the injury period and any injury to the domestic industry is on account of the same.

M/s Dua Associates on behalf of M/s Kodak China Graphic Communication Co. Ltd. ("KCGCCL"), M/s Kodak China Investment Co. Ltd. ("KICL") and M/s Kodak India Pvt. Ltd. ("KIPL") has submitted the following:

- Negative price undercutting - Exports by Kodak from China PR to India has not adversely impacted the prices of the domestic industry. Moreover, the landed value of goods exported by KCGCCL has remained above the sales price of Technova throughout the POI.

Particulars	Source	2014-15	2015-16	POI
Landed Value of PUC from China PR	NCV Application	272	252	238
Price undercutting range	NCV Application	0-5%	5-10%	10-15%
Domestic sales price at the highest range	<i>Derived</i>	286	277	274
CIF value of goods exported by KCGCCL	KIPL response (Annexure 2)	***	***	***
Landed value of goods exported by KCGCCL	KIPL response (Annexure 1&2) KIPL assessable value +BCD	***	***	***
Price undercutting		Negative	Negative	Negative

- Negative Price underselling: The landed value of goods exported by Kodak is above the NIP claimed by TechNova and there is negative price underselling.

Particulars	Source	2014-15	2015-16	POI
Landed Value of PUC from China PR	NCV Application	272	252	238
NIP injury margin	NCV Application	-	-	15-25%

Estimated NIP at highest margin	<i>Derived</i>	-	-	285
Landed value of goods exported by L response (Annexure 1&2) KCGCCL	PL assessable value +BCD	***	***	***
Price undercutting		-	-	Negative

- Price Suppression / Depression – There is no price suppression or depression caused by exports from Kodak to India. The same can be appropriately derived from the Kodak's landed value when compared with the cost to make and sell of Technova.
- The volume of exports by Kodak has remained almost constant during the entire injury examination period. Therefore, there is no surge of imports from Kodak which may have caused any injury to the domestic industry.

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	POI
Imports from China PR	Million Sqm.	5.6	7.73	7.3
Trend	Indexed	100	138	130
Export from Kodak	Million Sqm.	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	108
Domestic Sales	Million Sqm	23.6	24.9	26.6
Trend	Indexed	100	106	113
Kodak export volume relative to Technova domestic sales	% Range	10 - 20	10 - 20	10 - 20

- Negative volume injury: There is no volume injury to domestic industry on account of subject imports or imports from Kodak. During the injury POI, TechNova has reached the level of optimum capacity utilisation and there is no further scope for increasing market share. Even otherwise, the market share of domestic industry is displaying a positive trend.

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	POI
Demand/Consumption	Million Sqm.	32.3	36.2	37.9
Trend	Indexed	100	112	117
Export from Kodak	Million Sqm.	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	108
Domestic Sales	Million Sqm	23.6	24.9	26.6
Trend	Indexed	100	106	113
Kodak exports relative to demand	% range	10 - 20	10 - 20	10 - 20

- No surge in exports from Kodak: The percentage share of exports of subject goods by Kodak has significantly reduced in relation to the demand during the POI. Therefore, it is submitted that the exports by Kodak has no impact on the market share of the domestic industry. Further, Kodak does not possess unutilized production capacity and there are no plans for enhancement of product capacity. In the light of the above, there is no likelihood of surge in export volume from Kodak.

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	POI
Exports by Kodak	Million Sqm.	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	108
Domestic Production	Million Sqm.	29.94	27.34	28.53
Trend	Indexed	100	110	114
Kodak export relative to domestic production	% Range	10 - 20	10 - 20	10 - 20

- Demand supply Gap: TechNova has achieved production at optimum levels. The importers/users are bound to import subject goods on account of huge demand supply gaps:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Technova Capacity	Million Sqm.	34.77	34.77	34.77	34.77
Domestic Production	Million Sqm.	23.88	24.94	27.34	28.53
Capacity utilization Total	%	95	95	97	94
Demand	Million Sqm.	28.47	32.27	36.24	37.91

- No likelihood of fall in export price to India: A perusal of Kodak export price reflects that price of subject goods to third countries (except India) is on the higher side with reference to export price to India. Accordingly, there is no possibility or rationale for Kodak to sell subject goods to India at a lower price.

S.No	Export Price (USD)	ELEC XD	AEM	SW	CAP GT	Sonora	TNG
1.	India	***	***	***	***	***	***
2.	Third Country	***	***	***	***	***	***

- Chinese market reflects a steady demand for goods produced by Kodak: Kodak has seen no decline in the domestic sales of subject goods during the entire injury examination period.

S.No	Year	Kodak Sales in China PR (Value in USD)
1.	FY 2015	***
2.	FY 2016	***
3.	POI	***

- Breakdown of volume and value of import on sub-category basis: In the original investigation, the Authority had classified subject goods into three sub-categories namely Thermal, Violet and CtCP. However, the Applicant in present investigation has not furnished a breakdown of the volume and value of imports under each of three sub-categories. In view of the same, the Domestic Industry has failed to provide a reasonable understanding of the submissions /claims. It is also necessary to note that the determination of volume and value of imports on sub-category basis is required to determine that the injury is being suffered on account of subject imports and not on account of non-subject imports. In any event, it is submitted that Kodak has only imported Thermal plates during the POI and not violet or CtCp.

- Mis-declaration: It is pertinent to note that the Applicant has admitted mis-declaration as a cause of injury. More specifically, TechNova has submitted that *“the Petitioner has been unable to derive the full benefit of the MoU given that the rampant mis-declaration of the UV CtP Plates and as also change in the country of origin by one of the exporter – Fujifilm, who until recently was selling Violet and Thermal printing plates from the EU at virtually the same prices as China PR.”* It is therefore evident that the Applicant is also suffering injury on account of mis-declaration of CtCP plates when imported into India by other exporters. It is reiterated that Kodak does not export CtCP plates into India.
- Other country imports: Import volume and value of the PUC from non-subject countries as submitted by the Applicant also suggest that import from non-subject countries is taking place at a price which is almost 20-40 percent lower than the price from China. It is also evident that non-subject countries (collectively from Malaysia, Taiwan, and Korea) are exporting goods in the Indian market at substantially low prices. Moreover, the trend analysis of the import volume and value from Malaysia, Taiwan, and Korea, during the injury POI reflects that subject imports from non-subject countries has risen sharply and also remained above the de-minimums level.
- In line with the original investigation, the Authority is requested to compute NIP for subject goods (after due adjustment/deduction on account of pre-press chemicals) so as to arrive at dumping and injury determination at the same level of trade. The Authority is also requested to arrive at NIP computations after excluding expenses incurred on account of post-manufacturing expenses such as commission, discount, freight outward, research and development, post-sales services/technical support for subject goods, as well as other expenses incurred on non-subject goods.
- Kodak’s export price of subject goods is in line with change in raw material prices. It is also pertinent to note that Kodak’s export price during the original investigation was INR ***/sqm and the landed value during period of review is INR ***/sqm. The said miniscule difference is only on account of exchange rate. Furthermore, KIPL’s selling price to unrelated customers is above the selling price of TechNova. Therefore, the injury to TechNova is not on account of imports from Kodak.

v. M/s Orion Photosensitive Systems has submitted the following:

- We have been facing immense financial strains on account of the rampant dumping of the Digital Offset Plates particularly of the category of plates produced by us from the subject country. Due to the dumped prices some of our customers force us to compete with the Chinese import prices which do not even allow us to make a reasonable margin. Further, there have been instances where we have found that the Chinese supplier and some of the unscrupulous importers have been conniving by misdeclaring UV (CtCP) plates to avoid anti-dumping duties which are in force. We request the authority to seek further information from the customs and DRI Authorities to substantiate the same. Both these issues clearly do not allow us to grow and have sustainable business under the Make in India plan announced by the Government.
- We believe that in case the current Anti-dumping duties get withdrawn, there will be a huge influx of cheap Chinese Digital Offset Printing Plates into the country which will virtually wipe out the domestic industry.
- If the existing duties are removed then the end of Domestic Manufacturers engaged in production of Digital Plates will be imminent.
 - 1) The Capital Invested,
 - 2) Pains and Efforts taken to develop these New Technologies,
 - 3) Jobs of workers,
 - 4) Outstanding loans of Banks, all these will be lost forever.
- Destruction of Domestic Manufacturers will seriously damage local Printing Industry as then the Indian Printing Industry will be at the Mercy of Digital Plates Imported from China.

vi M/s Nippon Color has submitted the following:

- The applicant has no data about other manufacturers in India. He makes an estimate of 0.60 M Sq Mtr without any knowledge of the same. Being in the same industry, the applicant ought to have some data of the competitors and co-manufacturers. Hence the same ought not to be accepted.
- The applicant has in his data indicated that there is a 19% increase in the sales of the applicant and as pointed out by one of the exporting parties, there is almost 97% capacity utilization. If there is such a high capacity utilization,

then there is no question of dumping. In the absence of Balance Sheet data, it is also not possible to verify whether there has been a Capital Expansion during the period and hence it is requested that the same may be got verified.

- The total imports from China are less than 25% of the production of the applicant, but the manner in which the same has been arrived at & for which type of plate is not known since the DGCIS Raw Data is not supplied to us and hence the allegation that there is continued dumping is far-fetched and improper.
- The applicant has worked out the total sale of the product without detailing as to the type of plate and its thickness. Without such proper data supply, the application itself is defective and merits rejection. The import data from other countries has not been backed by data from the DGCIS nor the same has been shared with other Interested Parties.
- We had provided Invoices of sale of the goods of the applicant in the local market, which clearly showed that the applicant himself was selling the goods at Rs. 230/Sq Mtrs while the ADD was to the extent of Rs. 350/- indicating that the real price of the goods is about Rs. 230/Sq mtr and hence the ADD imposed is improper.
- The table on price depression has not been backed by any empirical data as to the domestic sales price by the applicant. The data ought to have been backed by actual sale price data for each type of the Digital Plate, thickness wise being manufactured by the applicant.
- The Table on Price Suppression does not indicate as to how the cost of manufacture for each type of Digital plate viz., CTCP, Thermal & Violet, thickness wise has been arrived at. The whole data is shown to be confidential and hence it is not possible to comment on the correctness of the data supplied by the DI to the DGAD.
- The whole row on indexed change in cost on YOY basis seems to be incorrect. The calculation appears incorrect viz., $100 - 24 - (264)$
- Whereas the cost is said to have changed from 101 – 101 – 98. Similarly, the index change in sale on YOY basis also seems to be incorrect. The calculation appears incorrect viz., $100 - (129) - (184)$ whereas the sale is said to have changed from 102 – 99 – 96. Even in the price suppression, the figure of 450 seems incorrect. In view of the same, the whole table appears to have been wrongly calculated/projected and hence the application merits rejection.
- The conclusion drawn that there is 15% increase from China appears incorrect since there is actually a fall in the imports from 21% to 19% in the POR & not increase of 15%.

vii M/s K&T Law offices on behalf of Kohli Graphics System has submitted the following:

- The increase in the import of the subject goods in domestic market even after imposition of ADD, in our view is not because that the domestic market is dumped unlawfully ;and unfairly with the subject good from the subject country but because they can't cater to the capacity requirements/growing need of the domestic market. Thus, the domestic market is compelled to fulfil its growing requirements/needs by importing the subject goods in India from the subject country even after paying exorbitant and excess duty by way of ADD.
- The Authority in the interest of domestic market should consider whether there has been a significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative in production or consumption in India but such a defense will not hold good if the imports are meeting the capacity requirements/ domestic demands of the country/domestic market as opposed to the imported goods being cheaper.
- In a scenario where the domestic industry is unable to fulfil the domestic demand, any imposition of ADD will be completely unjustified as the domestic demand holds sacrosanct before the protection of the monopolistic design and aspirations of a domestic industry.
- There has been a marked change in circumstances since imposition of ADD in 2012 and the same and their consequence have been enumerated herewith for convenience
- Despite the imposition of ADD, there is no price of volume injury to the domestic market. In fact there is a 4 index points decrease in value of imports for Kodak & 7 index points increase for the domestic industry.
- When Duty was imposed upon the subject good, the price of Aluminum was \$2,200 per tonne which have now come down to \$1,700 per tonne which is almost a 40% decline in prices.
- Technova has not been able to provide any proof of whether they can go beyond 97% capacity to meet the increasing demand of the Indian/domestic markets.

- That the domestic value of prices in Korea and other countries were much lower than that of China.
- The domestic producer is conveniently silent on the prices of goods imported by them from other countries. The values that have been provided by the domestic producer i.e. the GCNS values were in \$ which is questionable.
- That the ADD being charged presently is very high as the international price of the subject good is between \$ 2 1/1- \$3 and thus, there is no logical reasoning behind having such a high ADD especially when it's an admitted fact that despite there being ADD upon the subject goods, the share of the subject goods imported in the domestic market is on rise as there is a gap between the domestic demand visa-viz the production made by the domestic industry.
- That the fact that China now being no longer a Non Market Economy as the WTO Protocol declaring China a Non Market economy has expired with efflux of time and that has to be able be taken into Account.
- That Technova being the only player in the market accounting for 97% of the domestic production and vide present SSR it wants to ensure that the ADD stays as the same helps it to continue with its monopolistic designs.
- The prices of Digital Plates imported in India are the lowest in the world.
- They stated that as per providing volumes in the market, Technova stands comfortably above the rest by providing 24-25 million sq. mtrs. Of the subject good which accounts for 70% of the market. The other manufacturers provide about 0.5 million sq. mtrs. Of the subject good which accounts for about 1% of the market. The import from the subject country is around 7.5 million sq. mtrs. Which is about 21% of the market and import from other nations is around 3 million sq. mtrs. Which accounts for around 8% of the entire market.
- They state in the while Technova is comfortably the leading producer of the subject good in India, since the imposition of ADD, three new players i.e. Akshay Imaging, Metrostar and Kapoor Imaging have also come into the market.
- The fact that China admittedly still accounts for around 21% imports of the total 30% imports in domestic market herein in India is a clear indicator that Technova despite claiming to produce at 97% capacity and the other domestic manufactures constituting a miniscule minority can still hardly fulfil the massive demand of the subject good in India. Lastly, despite the so called new players emerging in the domestic, they, on face of it, still only constitute not more than even 1% of the entire production by the domestic industry which speaks volume in itself.
- There is no Causal Link between the alleged injury claimed to be caused to the domestic industry visa-viz the facts revealed by the exporters stating that no subsidy is being provided to the domestic industry in China for making subject goods available for its export to India has to be considered by the Authority.

G.3 Examination by the Authority

29. The Authority has taken note of the submissions made by various interested parties and domestic industry with regard to the injury in accordance with the Antidumping Rules.
30. The Authority notes that the price according to MOU during POI is higher than the net sales realisation (NSR) attained by DI for all the 3 types of digital plates. In case of Thermal and violet product types the 'NSR' in POI is higher than the 'NIP' determined for these 2 product types during POI which therefore does not indicate any price depression. Further, the injury margin for 'Thermal' digital plates during POI is noted to be negative. The violet plates are not imported during POI. The ones claimed as violet plates by DI to an extent of 22098 sqm in DGCIS data were mainly thermal plates as verified by the Authority but one of the consignment of 201 sqm only is of violet category when verified through DG Systems data and the corresponding invoice/evidence obtained from M/s Kodak.
31. The Authority also notes that price of these two product types remained immune from the exports by Kodak which did not have an AD measure and that Fujifilm also supplied both Thermal and Violet types from their other production plants in EU and Japan. However in case of UV-CTCP the 'NSR' achieved by DI during POI remained suppressed below the NIP with Injury Margin also being positive.

32. The Authority also notes that domestic industry has realised domestic prices of Thermal and violet during POI which do not indicate any price suppression. The ongoing imports of subject goods from the subject country and imports of subject goods from non-subject country have not led to a price suppression for Domestic industry for the 2 product types i.e. violet and thermal during POI. Also no misdeclaration for these 2 product types have been reported or claimed by Domestic Industry.
33. The Authority notes that price of any product in a country is established by various competitive sources be it dumped or non-dumped. Further in event of a dumped source being subjected to an AD measure, the customers in a country may shift to other sources viz. domestic or other sources without an AD measure. In the instant case, the landed values of subject goods from non-dumped sources during POI and post POI have been considered to establish possibility of any likelihood of injury by analysing price suppression effect on DI's prices during POI and post POI keeping in view the prices of subject goods from non-dumped sources, prices from subject country of producers/exporters not subjected to an AD measure and likely adverse effect of misdeclaration of product types on sales of domestic industry (both quantum and value).
34. The Authority notes that during the POI imports of product types i.e. CTCP, Thermal and a miniscule quantity of violet plates have taken place. DI has claimed that imports of violet digital plates as well of a small quantity from China. However the Authority after verifying the data filed by the cooperating producers/exporters i.e. M/s Kodak and DG Systems notes that the product type violet is in fact imported only to a quantity of *** sqm. Hence the imports of subject goods during POI have been largely of only 2 types i.e. Thermal and UV-CTCP plates.
35. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority has considered relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules. The Authority notes as under:

G.3.1 Volume Effect of dumped imports and impact on domestic industry

A. Demand and Market Share

36. The demand or consumption of the product in India is the sum of domestic sales of all the Indian producers and imports from all sources as assessed in the table below.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Sales of Domestic Industry	Sqm	21,451,992	23,610,884	24,913,963	26,603,132
Sales of Other Indian Producers	Sqm	539,076	568,037	546,798	559,514
Imports from the Subject country	Sqm	4,245,703	5,467,025	7,611,422	7,319,298
Imports from other Countries	Sqm	2,144,859	2,492,027	5,037,583	4,102,556
Demand/consumption	Sqm	28,381,630	32,137,973	38,109,765	38,584,500
Market share in demand					
Domestic Industry	%	76	73	65	69
Other Indian Producers	%	2	2	1	1
Subject country	%	15	17	20	19
Other Countries	%	8	8	13	11
Demand/consumption	%	100	100	100	100

37. The Authority notes that the demand for the product under consideration has increased throughout the injury period. The share of imports from the subject country in domestic demand/consumption has also increased. The share of the domestic industry in demand has, on the other hand, declined as compared to base year. However as capacity

utilization of Domestic Industry has been of 95% plus level, the fall in market share needs to be appreciated in context of capacity constraint as well and not as an adverse impact of dumping.

B. Import volumes and share of subject country

38. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The volume of imports of the subject goods from the subject country have been analyzed as under:

Import Volume	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
China PR	Sqm	4,245,703	5,467,025	7,611,422	7,319,298
Other Countries	Sqm	2,144,859	2,492,027	5,037,583	4,102,556
Total Imports	Sqm	6,390,562	7,959,052	12,649,004	11,421,854
Market Share in Imports					
Subject country	%	66	69	60	64
Others	%	34	31	40	36
Total Imports	%	100	100	100	100
Indian Production	Sqm	24,476,404	25,539,456	27,938,007	29,128,095
Demand	Sqm	28,381,630	32,137,973 36,240,861	38,109,765 36,240,861	38,584,500
Imports from the subject country in relation to-					
Indian Production	%	17%	21%	27%	25%
Consumption	%	15%	17%	20%	19%

39. It is noted that the import volume from the subject country has increased over the injury period in absolute terms, except for a slight decline in the POI. Imports from other countries have also increased. The volume of imports from the subject country both as a proportion of consumption and production has also increased in the injury period, except for a slight decline in the POI. The imports quantum has been considered on the basis of DGCIS data with appropriate consideration of UV-CTCP plates being misdeclared as Analog plates. This has been validated with the description considered as a misdeclaration by the Custom Authority for considering UV-CTCP plates as analog.

F.3.2 Price Effect of dumped imports and impact on domestic industry

40. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it is required to be analyzed whether there has been a significant price undercutting by the alleged dumped imports as compared to the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices or prevent price increases, which otherwise would have occurred in normal course. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and depression. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country as under:

Price suppression and depression effects of the dumped imports

41. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period.

The position is shown as per the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Cost of Sales	Rs/sqm	***	***	***	***
<i>Trend</i>	Index	100	101	101	98
Selling Price	Rs/sqm	***	***	***	***
<i>Trend</i>	Index	100	102	99	96
Landed Price	Rs/sqm	295	275	254	237
<i>Trend</i>	Index	100	93	86	81

The selling price have been above the landed price and also the cost of sales indicating no price suppression.

42. The Authority has carried out the analysis of price undercutting and price underselling for 3 product types separately.

a) Price Undercutting and Price Underselling

43. Price undercutting has been determined by comparing the landed price of imports from the subject countries with the net sales realisation of the domestic industry in India. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject country.

Particulars		2016-17 POI			
		CtCp	Thermal	Violet	
Landed price of imports	Rs/sqm	167	282.5	-	
NSR achieved	Rs/ sqm	***	***	***	
MOU determined price	Rs/ sqm	***	***	***	
Non Injurious Price	Rs/ sqm	***	***	***	
Price Undercutting (Range)	Rs/ sqm	30 - 40	0 to (10)	-	
Price Underselling (Range)	Rs/ sqm	50 - 60	(15 to 25)	-	

The small quantity of violet plates imported during POI have been considered in above analysis. The Authority notes that both price undercutting and underselling of Thermal and Violet plates are negative.

F.3.3 Examination of Economic Parameters relating to Domestic Industry

44. Annexure II to the AD Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the AD Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits,

output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

45. Accordingly, various economic parameters of the domestic industry are analysed herein below:

A) Actual and potential impact on Production, Capacity, Capacity utilization and Sales

The performance of the domestic industry with regard to production, capacity, capacity utilization and sales are as follows:

Particulars		2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Capacity		3,47,70,000	3,47,70,000	3,47,70,000	3,47,70,000
Indexed		100	100	100	100
Production (PUC + NON PUC)		***	***	***	***
Indexed		100	100	102	101
Production - PUC		23,876,404	24,939,456	27,338,007	28,528,095
Indexed		100	104	114	119
Capacity Utilization (PUC+Non-PUC)		***	***	***	***
Indexed		100	100	102	101
Sales – domestic		2,14,51,992	2,36,10,884	2,49,13,963	2,66,03,132
Indexed		100	110	116	124
Demand/consumption		2,83,81,630	3,21,37,973	3,81,09,765	3,85,84,500
Indexed		100	113	134	136

46. The Authority notes that domestic industry has utilized its capacity at a significantly high level over the injury period. Production, capacity utilization and domestic sales volume the DI increased over the injury period.

B) Market Share in demand

47. The effects of the dumped imports on the market share of the domestic industry have been examined as below. It is noted that the market share of the domestic industry has declined throughout the injury period, and the market share of the Other Indian Producers has remained at a very marginal level. Market share of imports from China PR have increased throughout the injury period. Market share of imports from other countries have remained at the same level and is less than 10% throughout the injury period.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Domestic Industry	%	76	73	65	69
Other Indian Producers	%	2	2	1	1
Subject country	%	15	17	20	19
Other Countries	%	8	8	13	11
a. Demand/consumption	%	28,381,630	32,137,973	38,109,765	38,584,500

The decline in DI's share during POI is not an indicator of adverse impact of dumped imports but the capacity constraints of DI in view of increasing demand.

C) Inventories

48. The Authority notes that the average inventory levels of the domestic industry have increased in the injury period, both in

absolute terms and as a proportion of the domestic industry's total sales. . The rise in inventory is not that significant to consider it as an indicator of injury to the Domestic Industry.

Particulars	UOM	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Average Stock	Sqm	***	***	***	***
Indexed		100	84	110	129
Total sales of the domestic industry		23,493,354	25,083,738	26,498,569	28,131,448
Inventory as a proportion of total sales of the domestic industry	%	10	8	10	11
Indexed		100	78	98	108

D) Profits, return on investment and cash flow

49. Performance of the domestic industry with regard to profit, return on investment and cash flow is as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Profit/(Loss) per unit	Rs./Sqm	***	***	***	***
	Indexed	100	116	64	62
Profit/(Loss) – total	Rs. Lakhs	***	***	***	***
	Indexed	100	127	74	77
Cash profits	Rs. Lakhs	***	***	***	***
Cash profits (Rs. Lakhs)	Indexed	100	113	76	74
Profit before Interest and Tax	Rs. Lakhs	***	***	***	***
	Indexed	100	107	74	65
Return on Capital Employed	%	***	***	***	***
	Indexed	100	92	67	60

50. After an increase from the base year to the subsequent year, the domestic industry's economic performance based on the above parameters has declined. However the Authority has analysed whether the 'NSR' has been suppressed when compared to 'NIP' determined for POI. The profitability and cash profits have though reduced but the industry cannot be qualified to have suffered losses due to dumping as 'NSR' of the industry is above NIP and therefore these parameters do not imply injury to Domestic Industry.

E) Employment and Productivity

51. It is noted from the table below that the employment has remained at the same level with only a marginal increase over the injury period.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Employment	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	102	102	103
Productivity	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	102	112	116

Both employment and productivity indices are noted to be stable and healthy.

F) Growth

52. The table below shows that the domestic industry has registered positive growth for both production and sales. However, other parameters such as capacity utilization, profitability and return on investment have shown slight decline in growth terms which when seen in context of absolute numbers and the 'NIP' determined for industry and NSR attained, do not conclude any injury.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Production	%	-	4%	10%	4%
Domestic Sale	%	-	10%	6%	7%
Capacity utilization	%	-	0%	3%	-1%
Profit/(Loss) per unit	%	-	16%	-45%	-3%
Return on investment	%	-	-8%	-27%	-11%

G) Ability to raise Capital Investment

53. No submissions have been made by any of the interested parties concerning the domestic industry's ability to raise capital investments. The Authority in view of various well doing parameters hold that the industry is not impaired on this in view of its economic condition.

H) Level of dumping & dumping margin (DM)

54. The Authority has evaluated specific DM's for cooperating exporters and also for residual category to the extent considered appropriate in the factual matrix of this case. In this regard the Authority holds that in the present scenario, as the parameters of injury evaluated for DI are not found to be supportive of continuance of Anti-Dumping Duty as also detailed in later paras, the evaluation of dumping margin and injury margin for residual category producers/exporters seems unwarranted. Nevertheless, the Authority has evaluated dumping margin/injury margin for such category on the basis of DGCI&S data and least price transaction as per cooperating producer/exporter data as available for exported types of PUC. The same is summarized below.

	DM (Rs./Sqm.)	DM% (Rs./Sqm.)	DM% Range	IM (Rs./Sqm.)	IM% (Rs./Sqm.)	IM% Range
UVCTP (for all producers/exporters including cooperative)	***	***	50 - 60	***	***	30 - 40
Thermal	***	***	50 - 60	***	***	20 - 30

(for residual category)						
Violet (for residual category)	***	***	0 - 10	***	***	(0 – 10)

I) Factors affecting domestic Prices

55. The Authority has evaluated domestic prices levels due to imports from subject country and non subject countries, and also impact of MOU signed by DI with user association in realization of prices in domestic market.

K) Magnitude of Injury and Injury Margin

56. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority in terms of Annexure III to the AD Rules has been compared with the landed value of the imports from the subject country for determination of injury margin during the POI and the injury margin so worked out is as under:

(Thermal Plates)

Producer/Exporter	Plate Type	Landed Value in US\$/sqm	NIP in US\$/sqm	IM US\$/sqm	IM %	I00M % (Range)
Kodak	Thermal	***	***	***	***	(0-10)
	Violet*	***	***	***	***	(0-10)
Lucky	Thermal	***	***	***	***	(20-30)

*included in response to post disclosure comments/data/analysis

J) Other Known Factors & Causal Link

57. Having examined the volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting and price suppression and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti-Dumping have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry, as follows

a) Volume and prices of imports from third countries:

58. The Authority notes that imports from the subject country have increased. However, the volume of imports from the other countries as a share of total imports into India has remained at almost the same level throughout the injury period. Also the volume of imports from the other countries as a share of the overall demand in India has remained at the same level throughout the injury period and is less than 15%.

Particulars of Other Countries	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Market Share	%	8	8	13	11
Import Volume	Sqm	2,144,859	2,492,027	5,037,583	4,102,556
Market Share in Imports	%	34%	31%	40%	36%

b) Change in demand

59. There has been rise in demand of the product concerned over the injury period. Therefore this parameter is not a cause of injury to the DI.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Domestic Industry	%	75.58	73.47	65.37	68.95
Other Indian Producers	%	1.90	1.77	1.43	1.45

Subject country	%	14.96	17.01	19.97	18.97
Other Countries	%	7.56	7.75	13.22	10.63
Demand	Sqm	28,381,630	32,137,973	38,109,765	38,584,500

The table above shows the total demand of the subject goods in India. Demand for the subject goods has increased. Market share of imports from China PR has decreased in the injury period while the domestic industry has also lost its market share in the POI. The Other Producers market share has also reduced in the POI.

c) Developments in technology

60. Technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, developments in technology cannot be regarded as a factor causing injury to the domestic injury.

d) Conditions of competition and trade restrictive practices

61. There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the Domestic Industry.

e) Export performance of the domestic industry

62. The Authority notes that DI has exported all 3 product types at an average FOB (USD/sqm) of 2.905, 3.992 and 4.359 for UV-CTCP, Thermal and Violet respectively. The export performance of the domestic industry is as under:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17 POI
Domestic Industry's Export Sales	Sqm	***	***	***	***
Indexed		100	72	78	75

The export prices of Thermal and violet of DI corroborate with import prices from subject country and therefore contention of DI that Thermal and Violet plates prices are not credible is not justified.

f) Performance of other products produced and sold by the domestic industry

63. The performance of other products being produced and sold by the domestic industry has not affected the assessment made by the Authority of the domestic industry's performance. The information considered by the Authority is with respect to the product under consideration only.

G. DETERMINATION OF LIKELIHOOD OF CONTINUATION OR RECURRENCE INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY

G.1 Views of the domestic industry

64. The following views have been made by the domestic industry:

- The present sunset review has been initiated pursuant to Rule 23(1B) which stipulates that the Hon'ble Authority is required to examine the likelihood of "continuation or recurrence" of dumping and injury if duties are terminated:

"23. Review. – (1) Any anti-dumping duty imposed under the provision of section 9A of the Act, shall remain in force, so long as and to the extent necessary, to counteract dumping, which is causing injury.

...

(1B) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) or (1A), any definitive antidumping duty levied under the Act, shall be effective for a period not exceeding five years from the date of its imposition, unless the designated authority comes to a conclusion, on a review initiated before that period on its own initiative or upon a duly substantiated request made by or on behalf of the domestic industry, within a reasonable period of time prior to the expiry of that period, that the expiry of the said anti-dumping duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry." (Emphasis supplied)

- It is evident that the letter of the law clearly requires the establishment of any one of the two likelihood factors:

- a. Continuation of dumping and injury; or
- b. Recurrence of dumping and injury

- In fact, it is trite in law to state that likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury is the primary examination to be conducted in a sunset review investigation. The Hon'ble Authority has, in past investigations¹, continued duty on the basis of likelihood even if dumping and injury margins in POI and post POI periods were negative. On this point, the relevant paragraph from the Final Findings in the *Sunset Review of anti-dumping duty imposed on import of Zinc Oxide originating in or exported from China PR* dated 25 June 2013 is reproduced below:

“85. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the domestic industry and facts available before the Authority and on the basis of above analysis including analysis of likelihood of continuation of dumping and injury and post Disclosure Statement submissions made by the Domestic Industry, the Authority concludes and recommends that:

- (i) The performance of the domestic industry in terms of production, domestic sales, market share, inventories and capacity utilization has remained positive during the period of investigation.
- (ii) Performance of the Domestic Industry in terms of profits, return on investments, cash flow etc. has shown improvement. However, though the domestic industry is earning profits, its profitability has declined in the POI as compared to the previous years.
- (iii) The subject goods from the subject country are not entering the Indian market at dumped prices in the POI, and dumping margin is negative.
- (iv) Price undercutting and price underselling are negative without adding the anti-dumping duties. Further, the injury margin is also negative, and the imports are not causing injury to the domestic industry in the POI.
- (v) However, based on the analysis of actual production and the consumption of the subject goods in the Chinese domestic market, disposable capacity, export orientation and potential exports volume of Chinese producers to India and price attractiveness of the Indian market for the Chinese producers, the Authority determines that the subject country has surplus disposable capacities for production of the subject goods and in the event of withdrawal of the anti-dumping duties, there is likelihood of the surplus disposable capacities being utilized by the companies in China PR to enhance the exports of the subject goods to India at dumped prices whether directly or through transshipment.

...

- (vii) The Authority, thus, in order to remove likely injury to the domestic industry, considers it necessary to recommend continuation of definitive anti-dumping duty on all imports of the subject goods from the subject country levied by the Central Government vide its Notification No.64/2007-Customs dated 7th May 2007.”
- It is also important to take into consideration the fact that continuation and recurrence are both inherently mutually exclusive conditions. If there is a case of continuing dumping and injury, then there cannot possibly be a recurrence of dumping and injury, since the latter would inherently require an absence of dumping to allow it to recur. It logically follows that once a continuation of dumping and injury has been established, there should be no need to establish a likelihood of recurrence. This position has been supported by the Hon'ble Designated Authority² in a prior investigation:

“70. The Authority notes that in the present investigation, there is the continuous dumping of the subject goods from China PR, causing continued injury to the domestic industry, which ipso facto indicates the likelihood of dumping and injury from the subject country in the event of cessation of the anti-dumping duty. In view of the above position and due to favorable market conditions prevailing in the Indian market as far as demand and price for the subject goods are concerned, the Authority has reason to believe that in the event of cessation of anti-dumping duties, dumping may intensify from China PR. Moreover, China PR being a major producer of

¹ Final Findings in the Sunset Review of anti-dumping duty imposed on import of Zinc Oxide originating in or exported from China PR dated 25th June, 2013, paragraph 85.

² Final Finding Sunset Review (SSR) of Anti-Dumping duties imposed on the imports of 'Barium Carbonate', originating in or exported from China PR, Notification No.15/27/2014-Hon'ble Designated Authority dated February 23, 2016, paragraph 70.

subject goods in the world and being the sole exporter to India and anti-dumping duties having been imposed by USA and EU against Chinese imports, in the event of cessation/revocation of anti-dumping duty by India, the entire Indian demand can be met by the Chinese imports and the domestic industry may have to go out of the market. Although likelihood analysis is not a necessity in the present review investigation due to continued dumping and continued injury to the domestic industry on account of such dumping, the Authority has made the following likelihood analysis to reinforce the argument that cessation/revocation of the existing anti-dumping duty may result in intensified dumping and injury.” (Emphasis supplied)

- In view of the above legal position, reliance is placed on the considerable submissions and information already placed on record which sufficiently establishes that dumping and injury have *continued* even after the levy of duties. Therefore, the Petitioner submits that the said continuation sufficiently fulfil the requirements of Rule 23, and there should now not be any burden upon the Petitioner to also prove *recurrence* of the injury.
- Without prejudice to the above, the Petitioner submits that there is sufficient evidence to establish a likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury. While the parameters of likelihood are not explicitly identified in the AD Rules, Paragraph (vii) of Annexure II has been interpreted³ as the governing provision on factors of likelihood. The paragraph reads as follows:

“(vii) A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances which would create a situation in which the dumping would cause injury must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the designated authority shall consider, inter alia, such factors as:

- (a) a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;*
- (b) sufficient freely disposable, or an imminent, substantial increase in, capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;*
- (c) whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and*
- (d) inventories of the article being investigated.”*

- Accordingly, the Hon'ble Designated Authority has examined the above parameters as part of its likelihood analysis in recent sunset review investigations. In its Findings issued in the Certain Rubber Chemicals sunset review⁴ as well as the Sodium Nitrite sunset review⁵, the Hon'ble Designated Authority continued duties on the following grounds of likelihood:
 - (i) There had been an increase of subject imports indicating a likelihood of increased importation;
 - (ii) The domestic industry filed sufficient evidence to demonstrate spare capacities in Subject Country which are likely to be diverted to India if duties are removed;

³ As held by the Hon'ble High Court of Gujarat in *Nirma Limited vs. Union of India and Others*, 2017 (358) E.L.T. 146 (Guj.) dated February 23, 2017 at paragraphs 33.9, 33.9, 34 and 40.

⁴ *Final Findings in the case of Sunset Review investigation of Anti-dumping duty imposed on the imports of Certain Rubber Chemicals, namely, TDQ & PX-13 originating in or exported from the European Union and MOR and MBTS originating in or exported from the Peoples Republic of China Notification No. F. No. 15/5/2016- DGAD dated September 2, 2017, paragraphs 172 to 174.*

⁵ *Final Finding in the Sunset Review of Anti-dumping duty imposed on the imports of Sodium Nitrite originating in or exported from China PR Notification F. No. 15/06/2016/Hon'ble Designated Authority dated July 19, 2017, paragraphs 85 to 89.*

- (iii) There was price undercutting during POI without anti-dumping duty in case of each of the subject rubber chemicals whereas the same was positive with anti-dumping duty for part of the product scope – this also showed a depressing / suppressing effect.
- (iv) The facts available on records do not contain any dependable evidence on inventories of the article being investigated.
- Apart from the above parameters, the Hon'ble Designated Authority has also analysed other parameters in a recent investigation⁶:
 - (i) Dumping margin in previous investigations;
 - (ii) Price Attractiveness of the Indian market;
 - (iii) The vulnerability of the domestic industry in terms of price sensitivity of the product and Indian market
 - Each of the above parameters is accordingly analysed in view of recent investigations as well as information placed on record by the domestic industry.
- (a) *A significant rate of increase of dumped imports indicating the likelihood of substantially increased importation*
- The Petitioner draws the attention of the Hon'ble Authority on import data analysis in the injury section which shows that imports have increased by 69% from China PR in the POI when compared to the base year even after the imposition of anti-dumping duties.
 - That the Chinese imports will hit Indian market at intensified dumped prices is also evident from the growing chasm between LME and ShFE prices. The LME prices have been moving north since the first quarter of 2017, and in Oct-Dec 2017 it reached USD 2219 per MT, i.e. as high as April-June 2014. Further, with the recent US tariff on imports of aluminium from China PR, ShFE prices (which are typically lower than LME) has taken a further dip.⁷ This means that the cost of production of the PUC in China PR will further come down whereas the cost of production in India will be increasing with the LME prices moving higher. Therefore, the likelihood that imports would further increase at dumped prices once the anti-dumping duties are terminated is imminent. Non-extension of the anti-dumping duties will put the Petitioner in more vulnerable position than where it stands today.
 - The Hon'ble Authority would note that Fujifilm (China) stopped exports of the PUC from China after the imposition of anti-dumping duty. However, Fujifilm shifted its exports from European Union and very soon realized that it cannot continue its business on erstwhile Chinese prices from Netherlands and decided to increase prices by 30% to 40%. The Hon'ble Authority may verify this from some of the user industry or Fujifilm itself. Therefore, if the anti-dumping duties are allowed to expire, it is quite obvious that Fujifilm will resume exports from China at dumped prices.
- (b) *Robust Domestic Industry requires Trade Remedial Measures*
- Countries where there remains viable producers of the PUC, have imposed/extended trader remedial measures. Imports of digital plates from China PR have been made subject to anti-dumping duties in countries such as Brazil and South Korea. In fact, Brazil has extended AD duty for further five years in recently concluded sunset review with regard to imports from China PR. Further, anti-dumping duties have also been levied in South Korea on imports of the digital plates from China PR recently in 2017. With the anti-dumping measures put in place by South Korea and Brazil, should the anti-dumping duties be terminated in India, the Chinese exporters would naturally divert their exports from these markets to India given the huge demand in India. In other words, due to the operation of these duties (which limit export markets for Chinese producers), India will become an easy target if it removes its anti-dumping duties.

⁶ *Final Finding in the Sun Set Review (SSR) of the Anti-Dumping duty in force concerning imports of "Polytetrafluoroethylene or PTFE" originating in or exported from China PR Notification No. 15/11/2016-DGAD dated June 23, 2017, paragraphs 69 to 80.*

⁷ SHFE aluminium prices dip on lack of clarity regarding future capacity cuts, March 7, 2018, <https://www.fastmarkets.com/base-metals-news/aluminium/shfe-aluminium-prices-dip-lack-clarity-regarding-future-capacity-cuts/>

- Further, the fact that Chinese producers are willing to offload their excess capacities at throwaway prices is also evidenced from quotations received by the Petitioner from one of the major producers from China PR. A perusal of the quotation would show that the Chinese producer is offering UV CtP and Thermal plates in the range of USD *** to *** per SQM which is far below the net sales realization of the Petitioner.
 - Furthermore, an analysis of export price from China PR to certain other markets such as Africa and SAARC will show that these prices are lower than the prices at which imports are coming to India. Data on export prices from China PR to some of these select markets has been examined. A perusal of the information contained would show that some of the Chinese producers are selling UV CtP and Thermal plates in the range of USD *** to USD *** per SQM which is far below the current net sales realization of the Petitioner.
 - Additionally, while the anti-dumping duty in reference form has been able to provide some limited relief to the Petitioner with respect to Thermal and Violet plates, the pricing behavior of the Chinese producers in third countries clearly show that in absence of the anti-dumping duty, the domestic industry will be unable to match the low prices (backed by lower ShFE, Government support and huge surplus capacities) offered by Chinese producers. That it is impossible to keep the business viable in the face of Chinese dumped prices is evidenced by the decision of Fujifilm (Netherlands) when it found that it could not compete with Chinese prices and intended to raise its prices by 30%. Given the excessive pressure from Chinese low prices, eventually, Fujifilm (Netherlands) could not increase its prices and withdrew from the Indian market. This issue can be examined by the Hon'ble Authority, and relevant information may be sought by the user industry.
 - Should the current anti-dumping duties be removed, Chinese producers are going to intensify dumping and flood Indian market at rock bottom prices. With the rise in LME prices, it will be impossible for the Petitioner to match the prices from China PR and thus, the domestic industry will suffer irreparably and will perish.
- (c) *Sufficient disposable capacities (or an imminent increase of capacities) in Subject Country likely to lead to the increased importation*
- As per the market information available to the Petitioner, huge excess and idle capacity are available in China PR. These capacities are far higher than the total consumption in China PR. The total Indian market for the subject goods is around 38 million SQM per annum. The excess capacity available to the producers in China PR is more than the total domestic demand in India. An analysis of the capacity figures of the Chinese producers would show that Chinese annual capacity is approximately 381 million SQM as opposed to the domestic consumption of approximately 150 to 200 million SQM. This means that China PR has a surplus capacity of approximately 180 to 230 million SQM, part of which is already being exported at dumped prices. It is obvious that once the anti-dumping duties are removed, Chinese producers will dump this surplus in India at throwaway prices similar to what they have been doing in other export markets where there is no anti-dumping duty.
 - There has been major shift in global plate industry scenarios over the last 15 years. New plate manufacturing capacities have substantially been added in China PR which now is Approximately 381 Million SQM which accounts for approximately 60% of the global demand. The predatory pricing practices adopted by the Chinese manufacturers backed by NME conditions prevalent in China PR has led to the Chinese manufacturers being able to gain market share in various countries including India. This has resulted in the closure of several plate manufacturer in Europe and Other Countries. In some countries having local manufacturers like in Brazil and Korea, respective authorities have given higher protection in the form of Anti-dumping duty.
 - China's excess capacity is also evident from the fact that nine producers from China PR participated in Brazilian anti-dumping investigation whereas only three producers have purportedly participated in the current sunset review investigation before the Hon'ble Authority. Further, approximately 70% of the domestic demand of the PUC in the Korean market is being served by Chinese imports. The market size of Korea approximately stands at USD 111 million. This shows the huge capacities available to the Chinese producers. Given the growing technology and access to the internet, RISI analytics has predicted that the demand for newsprint in China PR will decline by 7.6 per cent per year over next ten years and printing & writing paper demand will decrease 0.7 per cent per year, leading to a total demand

loss of 3.5 million tonnes.⁸ With the decline in domestic newsprint and plate consumption in China PR and two major markets, i.e. Brazil and Korea being blocked through anti-dumping duties, Chinese producers have a surplus capacity which they would offload in the Indian market at throwaway prices, should the anti-dumping duties in India be allowed to expire.

(d) Export Orientation of Producers from Subject Country

- The spare capacities in China PR are most likely to be utilized for targeting the market in India for two main reasons. Firstly, demand in China PR itself is declining considerably. As per RISI analytics data (referred above), the demand in China PR of subject goods is declining. To substantiate this, the relevant RISI report has already been placed on record for the Hon'ble Designated Authority's consideration. In such a scenario, producers in China PR have to look for other alternative markets to dispose of the excess production. India would be a natural choice for Chinese producers as demand in India would remain strong in future. Secondly, as stated above, Korea and Brazil having imposed anti-dumping duties on imports of the PUC from China PR, the Chinese producers would divert their exports to India in the absence of anti-dumping duty.

(e) Price Suppression or Depression

- As established in the injury analysis above, there is considerable undercutting observed in most of the injury period, as well as in the POI. This has led to notable price suppression and depression as also demonstrated above.

(f) Inventories of Article Being Investigated

- While the Petitioner has limited information regarding inventories available with specific producers from China PR, the various cooperating producers (who represent a prominent share of producers in China PR) may have filed this information in Appendix 4, and the same may have been verified by the Hon'ble Authority. We request the Hon'ble Authority to consider the same in order to assess the inventory available to the producers from China PR.

(g) Price Attractiveness of the Indian Market

- The subject goods are being imported into India at a price substantially lower than domestic price. In terms of actual prices realised, India should not be an attractive market. The Chinese exporters continue to dump the PUC at very low prices due to non-availability of any other attractive market.

(h) The vulnerability of the domestic industry in terms of price sensitivity of the product and Indian market

- The market dynamics for the PUC are significantly impacted by price, i.e. the market is quite price sensitive. This is readily seen by the market share analysis provided by the Petitioner above. The subject imports have been able to take away nearly 6% of the Petitioner's market share by virtue of their undercutting. Further, this undercutting has led to a significant decline in profitability for the Petitioner – the same may also be evidenced from the profit analysis provided above.
- Several customers who bought from the Petitioner during the year 2014-15 and 2015-16, did not buy from the Petitioner during the POI despite repeated price enquiry proposals received from them. It is not as though they ceased to use the PUC. It is likely that they opted for cheaper mis-declared goods from China.
- The Petitioner also submits that in the absence of anti-dumping duty, the entire domestic industry will most certainly cease operations. The Petitioner relies on the pricing behaviour of the Chinese producers in third country markets, the huge surplus available to the Chinese producers and the growing demand in India. The data with respect to Chinese export prices to the third country is already part of the Written Submission dated 12 March 2018. Further, the quotations received by the Petitioner from Chinese producers. A study of the above information will show that Chinese producers are ready to offer UV CtP, Thermal and Violet plates at *prices which are totally unrealistic when operating in a market economy. These prices are also way below the non-injurious price of the domestic industry.* Currently, the Petitioner is operating under the protection of anti-dumping duty from the unfair practice of Chinese producers (even though such protection has been largely evaded by the Chinese producers through misdeclaration of UV CtP plates as Analog plates). Should the anti-dumping duties be allowed to expire, Chinese producers will be free to dump all types of plates,

⁸ China's newsprint demand expected to decline by 7.6 per cent per year over next decade, Nov. 30, 2015, <http://www.wan-ifra.org/articles/2015/12/01/china-s-newsprint-demand-expected-to-decline-by-76-percent-per-year-over-next-de>

i.e. UV CtP, Thermal and Violet at the prices which will be far below the cost of sales of the Petitioner. The dumping by Chinese producers will be further augmented in the light of LME prices moving north and ShFE moving south assisted by several incentives from the Chinese Government. The demise of the Petitioner will have a negative impact on the health and competitiveness of the downstream user industry particularly commercial printers and newspaper printers.

- That the unfair practices of Chinese producers have destroyed local markets in several countries is evident from the fact that many countries in Europe and North America, who had earlier a thriving local manufacturing industry, are today largely dependent upon Chinese imports which accounted for a meagre share in global trade in printing plates two decades back. Should the anti-dumping duties which are meant to offset the unfair trade practices of the Chinese producers be allowed to expire, India, will be unable to sustain local manufacturer, will have yet another industry in great distress causing loss of jobs, something dialectical to the objectives of “Make in India” campaign.
- The above factors indicate that the Petitioner as well as the new entrants in to the market are in a vulnerable position and needs continued protection from dumped and predatory imports from the subject country.
- As demonstrated above, all the parameters deemed relevant under the AD rules as well as the decisional practice of the Hon'ble Designated Authority indicate that there is a strong likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury if the present duties are removed.

A. Consequences of expiry of Anti-dumping Duty

(a) Closure of the domestic industry

- Historical evidence shows that dumping from China has led to closure of plants worldwide. Based on market intelligence, it would be seen that there were over 100 printing plate producers a decade ago across the globe and China had none. In last 10 years, the aggressive dumping supported by non-market practices of the Chinese Government, the plate manufacturers worldwide have reduced to less than 10, whereas China has seen a drastic growth in plate producers. Today, the Chinese capacity stands at approximately 525 million sq. m. accounting for almost 70% of the global capacity as opposed to a meagre share in world market a decade ago.

G.2 Views of other interested parties

65. The following views have been made by other interested parties:

- a. It is not possible for the allegedly dumped Chinese imports to cause any injury to the domestic industry owing to the reference price duty fixed in the original investigation and the fact that the prices of Domestic Industry as well as imports are far lower than the reference prices.
- b. The domestic industry has failed to provide any evidence regarding the claim of huge idle capacities in China.
- c. Unsubstantiated and hollow claims have been made with regard to the lost orders by the domestic industry. Claims of lost orders, if any, starkly contrast the production, sales and capacity utilization of the domestic industry has increased substantially.
- d. Duties in any other country (Brazil) do not have any effect on the exports of China in Indian market.
- e. There is no reliable basis to make a claim of decline in demand for the subject goods in China.
- f. There is increase in domestic demand and also increase in domestic sales of domestic Chinese producers of the subject goods.
- g. If existing duties are removed then the capital investment, pains and efforts to develop new technologies, employment of workers, outstanding loans of banks, will all be lost forever. Impetus of domestic manufacturers to develop new technologies will be destroyed.
- h. Destruction of domestic manufacturers will seriously damage local printing industry as then the Indian printing industry will be at the mercy of imports from China.

Examination by Authority

66. The Authority notes the trend of export prices by M/s KCGCCL's during previous 2 years of POI and also post POI. The Authority notes that the exporter's prices to countries other than India during POI of different grades are on an average higher than the prices to India which therefore do not indicate possibility of diversion to India on withdrawal of Anti-Dumping Duty. Moreover this issue in case of Kodak is trivial as it is not subjected to an AD measure and its trade pattern does not depict any tendency on Kodak's part having diverted its exports from other global destinations to India in situation of AD measure not existing on them. Further the landed value of exports by Kodak neither led to price suppression/depression on DI's sales as both price undercutting and injury margin are observed to be negative.
67. The Authority notes that Fujifilm has exported the subject goods to India from its other production facilities in EU and Japan post levy of ADD on China. The producer/exporter was requested to also provide exports made by them of subject goods from their other production facilities in Japan and EU during POI and post POI to India. The producer/exporter and its associated importer have provided data on quantum and value of these exports during POI and post POI (6 months). The Authority notes price realisation of subject goods by the Domestic Industry is contingent on import prices from different sources, be it dumped or non-dumped. The customers of subject goods are concerned about the landed values irrespective of sources. Fujifilm as a group have priced and supplied the subject goods during POI and post POI to its customers in India from EU and Japan and not from China, the subject country. The Authority holds that in event of an Anti-Dumping Duty not existing on imports from China, Fujifilm as a group would maintain these price levels from China as customers would be interested in final price levels rather than source as the group exporting the subject goods is the same. The Authority notes that despite competition the DI has been able to realise domestic prices above the NIP evaluated for POI. The Authority therefore holds that exports by Fujifilm during POI and post POI will not lead to price suppression on Domestic Industry prices and cause injury thereof and that there is no likelihood of Injury to DI in event of withdrawal of Anti-Dumping Duty.
68. For the purpose of likelihood evaluated above, the Authority has also examined as to whether the Domestic Industry has been able to realise prices which enables them reasonable return to prevent injury. For this purpose the Authority looked at 'NIP' determined for POI and also estimated for post POI (6 months) period. While doing so, the Authority has also examined the prices indicated by 'MOU' and import prices from different competing sources (dumped/non-dumped).

Post disclosure comments**69. Submissions made by the domestic industry**

- The Hon'ble Authority has rightly maintained the scope of the product under consideration in the present review.
- The Petitioner humbly requests Authority not to consider the import prices from EU to determine causality between imports from subject country and Injury to the Petitioner. There is only one major exporter of the product from EU, i.e. FujiFilm, and in all likelihood, they have had a record of shifting the originating country at intervals. Therefore any comparison would be a temporary phenomenon. If at all the Hon'ble Authority is to consider the import prices from EU for the purpose causality between Import prices from EU and Import prices from subject country, then it should exclude the imports from EU made by Petitioner.
- The Petitioner has not been able to achieve the prices agreeable as per MoU because of price pressures on account of the low landed value of mis-declared imports of Product Under Consideration.
- As regards the Authority's finding at paragraph 18(iii), the CESTAT has specifically upheld the methodology adopted by the Hon'ble Authority for evaluating the dumping margin/injury margin separately for three types of plates for cooperating producers/exporter on the product type exported by them. Without prejudice, it is also to be appreciated that the methodology adopted in the original investigation can be revisited given the facts that are presented and verified by the Authority.
- The Petitioner submits that it is in agreement with the Authority's finding on market economy treatment. The Authority is requested to maintain this determination in the final finding.
- There should be no reason to withhold the confidential version of the normal value calculation from the Petitioner since the data being used is either general international price data or the Petitioner's information.
- The Petitioner requests the Hon'ble Authority to confirm that the - extensive data on Aluminium Prices on London Metal Exchange (LME) inclusive of premium as well as conversion charges as provided by the Petitioner, has been

taken into consideration for determining normal value, and if not, the normal value should be recalculated based on this evidence.

- Petitioner submits that due to limited information available, the Authority should consider the highest of the profit margin earned by the Co-operating exporters for determining the normal value.
- Kodak blatantly misrepresented to the Authority by stating that it has exported only Thermal Plates to India when in fact Kodak has exported Violet Plates to India during the period of investigation under the garb of Thermal Plates. In light of the above, Kodak's response ought to be completely rejected, and the residual margin of dumping should accordingly be applied under Rule 6(8) of the Anti-dumping Rules.
- Without prejudice to the above, should the Hon'ble Authority continue with the present finding as per the disclosure statement, it is strongly submitted that no individual margin should be recommended on the product types not exported to India by Kodak during the POI and Post POI, since there was no export price to either calculate dumping margin or injury margin on the basis of which it should be given benefit of doubt.
- The Petitioner strongly opposes the methodology of the Hon'ble Designated Authority using limited data from incomplete Importers questionnaire response filed without Appendices 5 and 6 by the sole importer, i.e. Lucky. It is surprising to find that the Hon'ble Designated Authority is relying upon the export price volume and value without taking into consideration the onward price re-sale information of the types of plates imported into question and accepting the export price of Lucky which also remains unverified as per the records of the Hon'ble Designated Authority. The following facts of the case require re-consideration: (a) on what basis did the Authority conduct the verification at the premises of Lucky when they had provided incomplete responses? (b) on what basis of law and precedents is the Hon'ble Designated Authority re-calculating the export price to dump margin when it is a matter of fact that the ERP did not provide backup data? (c) on what basis of law and precedents, the data of sole importer i.e. Kapoor Imaging is being considered when the questionnaire response remains incomplete as well as their domestic operations are under surveillance by revenue authorities for mis-declaration and/or customs valuation issues?
- The Petitioner humbly requests the Hon'ble Authority to reject the export price data and information provided by Lucky since the information relied on by Lucky vide its questionnaire response could not be verified.
- Lucky has an exclusive importer in India namely, Kapoor Imaging Private Limited ("**Kapoor**") involved in onward sales of the product as a trader in India. Kapoor imports digital plates from Lucky at a high price and then sells to its Indian customers at a considerably lower price.
- Lucky, with assistance from Kapoor, has engaged in an elaborate arrangement to avoid paying anti-dumping duties. The price reported by Lucky to the Hon'ble Authority is not appropriately representative of the price paid by customers. The Hon'ble Authority must take cognizance of the evidence being provided for Lucky's malpractice and reject its response with immediate effect.
- Lucky has claimed to export only Thermal Plates to India during the period of investigation. However, the Petitioner has provided ample evidence to prove that Lucky exported UV CtP Plates to India and mis-declared the same as PS Analog Plates to avoid anti-dumping duties.
- It is the well-established practice of the Hon'ble Authority that incorrectly reported data is rejected, and the party misreporting such data is held to be non-cooperative. Contrary to the law and established a practice, the Hon'ble Authority has proposed to give an individual margin to Lucky.
- Within the facts of the present case, there is confirmed data made available to the Hon'ble Designated Authority that the volume data of mis-declared UV CtP plates do not match or has manipulated to seek individual margin by the said exporter and importer in question which is covered within the scope of the investigation and therefore the so-called cooperating parties cannot merit any individual dumping margin.
- The Petitioner strongly submits to the Hon'ble Authority that given glaring inadequacies and responses filed by Lucky and Kapoor there is no reason to grant special status to Lucky which merits individual margin.
- The Petitioner submits that if a producer/exporter does not export the subject goods during the POI, then an individual margin cannot be accorded to the responding producer/exporter. Therefore, the Petitioner humbly requests the Hon'ble Authority to reject the questionnaire response and not calculate an export price for Fujifilm as it did not export the subject goods during the POI.

- The Petitioner has already provided detailed averments on the export of Violet Plates in the period of investigation from China; the same is relied upon and reiterated. It is also reiterated that Kodak has mis declared its Violet Plates exports as Thermal Plates.
- While historically the Petitioner may have appeared to be ‘immune’ to Kodak’s exports, there is a strong likelihood that Kodak’s export price is now starting to become suppressive, which is bound to have a negative impact on the Petitioner as well.
- The fact that Fujifilm supplied Thermal and Violet Plates from other production plants demonstrates that Fujifilm is keen on continuing exports to India – it is only because of the existing duties that it has changed the location from where it exports the goods. Based on its focus on the Indian market, it can reasonably be assumed that Fujifilm will promptly resume low-priced exports from China as soon as duties are removed.
- With regard to the Petitioner’s realization of Thermal and Violet Plates indicating an absence of price suppression, it is submitted that a perceived absence of price suppression must not be construed to imply that there is no longer a requirement for anti-dumping duties, for the following reasons:
- The Petitioner has filed ample evidence to establish that if duties are allowed to expire, there will be a severely recurrent injury. The positive injury margin in the post-POI period demonstrates that the Petitioner is already facing enough pressure from imports.
- The perceived absence of price suppression itself is on account of the existing anti-dumping duties. This should not be misconstrued to mean that there is no longer a requirement of duties.
- The market share of the Domestic Industry and the other Indian Producers has been witnessing a decline while the market share of the Subject Country and other countries has observed an increase from the base year to the POI.
- There are more than 75 major producers in China (details of which are already placed on record) with considerable disposable capacities. If duties are allowed to expire, their exports are likely to be directed to India at injurious and dumped prices.
- Kodak started Violet Plates exports in POI which increased substantially in the Post-POI period by **%. During this period of increase in quantities, Kodak’s prices also reduced slightly. Further, these exports were made at a price notably below the NIP of the Petitioner. This indicates a strong likelihood of dumped and injurious imports if duties are allowed to expire.
- The same major players from China are also capable of applying price pressures from their other export locations, allowing them to control the Indian market and keep prices low. If duties are allowed to expire, this will compound the likelihood of recurrence of the injury, rendering the last few years of duty completely futile.
- The Petitioner submits that the trend with respect to the “exports made by them of subject goods from their other production facilities in Japan and EU during POI and post POI to India” should be made available to the Petitioner in a non-confidential form to facilitate meaningful analysis.
- The exports made by Fujifilm from EU and Japan would be made through China which would have a lower cost of production thus being a more economical and viable option to export from rather than EU and Japan.
- The Authority has not concluded on the likelihood of continuance of recurring injury for exports made by Lucky. In this behalf, the Petitioner submits that there is great threat and likelihood of continued injury which can be substantiated by the pricing behavior of Lucky to third countries. In this regard, the Petitioner draws the attention of Authority to Exhibit 1, wherein the Petitioner has furnished some sample export invoices to third countries. The same clearly demonstrates the pricing behavior of Lucky and imminent threat to the Domestic Industry.
- The Petitioner submits that the Authority has rightly acknowledged the Petitioner’s reasons for miniscule imports made from the EU, as well as quantities and values thereof, in the disclosure.
- If at all the Hon'ble Authority must use prices from EU for its causal link analysis, the Petitioner requests the Hon'ble Authority to exclude those imports which were made by the Petitioner. The primary reason for this exclusion would be that the Hon'ble Authority is proposing to use EU imports for examining causality between subject imports and injury to the Domestic Industry. In such a case, it is important to exclude those imports which were made by the Domestic Industry itself i.e. imports which (irrespective of price) could not have injured the Domestic Industry as it was not

competing against these imports. Further, the Petitioner submits that since these imports are merely ***% of production as also ***% of demand of country any analysis of imports made by the Domestic Industry for examining the causality would be in appropriate and illogical in the view of the facts of the case. This is also confirmed from the analysis that the price comparison clearly shows that limited types of plate imports made from EU (excluding imports made by the Domestic Industry) are entering in the market at much higher prices than imports from the subject country.

- In the view of the above, the Petitioner humbly requests the Hon'ble Authority not to consider the import prices from EU for the purpose of determining causality between imports from subject country and Injury to the Petitioner. Further it is also a matter of fact that the exports from EU are clearly dependent upon the continuation of the anti-dumping duty in the present investigation. There is only one major exporter of the product from EU i.e. Fuji and in all likelihood, they have had a record of shifting the originating country at intervals, therefore any comparison would be a temporary phenomenon. If at all the Hon'ble Authority is to consider the import prices from EU for the purpose causality between Import prices from EU and Import prices from subject country, then it should exclude the imports from EU made by Petitioner.
- The Hon'ble Authority, at Paragraph 18(ii) of the Disclosure statement, there appears to be a typographical error when addressing 'other subject countries' since there is no other subject country in the present review apart from China.
- With regard to the Hon'ble Authority's proposal to examine price under the MoU and the price realized by the Petitioner with the prices offered by other sources, the Petitioner submits that prices in the market remained vulnerable to the import prices from the subject country i.e. China. The Petitioner has not been able to achieve and realize the agreed MoU prices for most of the injury period. Provided below is a comparison of the prices as per MoU, Landed Value of subject goods from China and Net Sales Realisation of the Petitioner for the POI and Post POI for each grade of product under consideration.

Table

Values in INR/SQM

Particulars	UV CtP		Thermal		Violet	
	POI	Post POI	POI	Post POI	POI	Post POI
NSR as per MoU	***	***	***	***	***	***
Actual NSR	***	***	***	***	***	***
Landed cost	***	***	***	***	***	***

Source: DGCI&S Import Data

- It is clear from the above that the Petitioner have not been able to achieve the prices agreeable as per MoU because of price pressures on account of the low landed value of mis-declared imports of Product Under Consideration.
- The intent of the MoU was to link the price of the product under consideration to Aluminium Prices in order to provide assurance to the users that Petitioner will not arbitrarily increase its price after the protection of Anti-dumping duties. However, as can be seen from the above table, the Petitioner has never been able to achieve/realise the stipulated prices because of the price pressures from Chinese imports.
- At paragraph 24 of the Disclosure Statement, the Hon'ble Authority notes that Kodak has exported only Thermal Plates to India. It is respectfully submitted that this determination is factually incorrect and based on false and misleading information filed by Kodak. In this behalf, the Petitioner has filed compelling evidence vide communication dated April 12, 2018, which proves beyond a shadow of doubt that Kodak has actually exported Violet Plates to India during the period of investigation under the garb of Thermal Plates. Not only has Kodak attempted to deceive Indian Customs but has also blatantly misrepresented to the Hon'ble Authority, in light of which their response ought to be completely rejected and the residual margin of dumping should accordingly be applied under Rule 6(8) of the Anti-Dumping Rules.

- Without prejudice to the above, should the Hon'ble Authority continue with the present finding as per the disclosure statement, it is strongly submitted that no individual margin should be recommended on the product types not exported to India by Kodak during the POI and Post POI, since there was no export price to either calculate dumping margin or injury margin on the basis of which it should be given benefit of doubt. Accordingly, Kodak (and indeed all other exporters) should receive the residual margin of dumping for all those products which it did not export to India during the prescribed period, given that the Hon'ble Designated Authority has recommended individual margins for all the types of products.
- The Hon'ble Authority has calculated the export price for Lucky even though no evidence was provided by Lucky in order to substantiate the adjustments claimed by it:
- The Petitioner submits that the Hon'ble Authority should not accord an individual margin for a producer/exporter when the party's ERP system and documentation failed to substantiate the data filed for adjustments. Considering that Lucky only filed export price data, it had a lesser burden in terms of verification since it did not have to justify its domestic sales, cost or other parameters. In such a case, with only export price needed to be verified, the Hon'ble Authority should at least have scrutinized Lucky's claims vigilantly. In fact, Lucky has not even responded to Part II of the questionnaire response which is mandatorily required to be responded to in a sunset review investigation.
- In view of the above, the Petitioner humbly requests the Hon'ble Authority to reject the export price data and information provided by Lucky since the information relied on by Lucky vide its questionnaire response could not be verified. The Hon'ble Authority in the *Final Finding in the Sunset Review Investigation of anti-dumping duty on Nylon Filament Yarn*, did not determine an individual margin for the responding exporter as back up documents and information was not provided by the producer and exporter.
- It is unprecedented and surprising to find that the Authority in view of its own precedence in cases where the Exporter has not co-operated has gone ahead and has accepted the data of Lucky. This is in complete violation of the judgment by the Hon'ble Supreme Court *Haldor Topsoe* where the Hon'ble Court laid down a clear precedent on the principals of non-cooperation. Further, it is to be appreciated that the conduct of Lucky and its sole importer in India Kapoor Imaging requires reconsideration given that in spite of filing an incomplete questionnaire response and failing to substantiate its own data, Lucky has been accorded an individual margin.
- The Petitioner strongly opposes the methodology of the Hon'ble Designated Authority using limited data from incomplete Importers questionnaire response filed without Appendices 5 and 6 by the sole importer i.e. Lucky. It is surprising to find that the Hon'ble Designated Authority is relying upon the export price volume and value without taking into consideration the onward price re-sale information of the types of plates imported into question and accepting the export price of Lucky which also remains unverified as per the records of the Hon'ble Designated Authority. The following facts of the case require re-consideration: (a) on what basis did the Authority conduct the verification at the premises of Lucky, when they had provided incomplete responses? (b) on what basis of law and precedents is the Hon'ble Designated Authority re-calculating the export price for the purposes of dumping margin when it is a matter of fact that the ERP did not provide backup data? (c) on what basis of law and precedents, the data of sole importer i.e. Kapoor Imaging is being considered when the questionnaire response remains incomplete as well as their domestic operations are under surveillance by revenue authorities for mis-declaration and / or customs valuation issues? All of these questions merit response, as the best practices of the Hon'ble Designated Authority in the normal course deny any individual margin treatment to a particular producer/exporter.
- Without prejudice to the above, even if the data of Lucky is accepted despite not meeting the requirement of verification and substantiation, the Petitioner submits that there are other fatal misrepresentations in the data reported by Lucky and its sole importer Kapoor Imaging.
- Price of Thermal Plates to India is Over-Invoiced: It is a well-known fact that Lucky has an exclusive importer in India namely, Kapoor Imaging Private Limited ("**Kapoor**") involved in onward sales of the product as a trader in India. However, Lucky has not disclosed to the Hon'ble Authority that the prices at which it exports material to Kapoor are substantially inflated - a fact readily verified by Kapoor's onward sales price in the same period. In other words, Kapoor imports digital plates from Lucky at a high price, and then sells to its Indian customers at a considerably lower price.
- To prove this suspicious behaviour, the Petitioner presents the following evidence for the Hon'ble Designated Authority's serious consideration:

- Proof of Lucky's prices of the same product (i.e. Thermal Plates) to Indonesia: It can be seen that the prices of Lucky to Indonesia are much lower than the prices to India even though there are no duties in Indonesia. As can be seen from submitted evidence, there is a difference of *** in the prices.
- Proof of Kapoor's price to Indian Customers: The invoices and quotations of Kapoor to its customers for Thermal Plates imported from Lucky, show that the prices are much lower than those reported by Lucky. There are only two possibilities here: either Kapoor is deliberately running into losses or Kapoor and Lucky have tried to evade duties by illegally inflating the import price. Needless to say, this compensatory arrangement between the two should not be allowed to continue as they are simply attempting to render the anti-dumping duties futile.
- Price between Kodak and Lucky: Another peculiar difference can be observed in the prices offered by Kodak or FujiFilm and prices offered by Lucky for the Thermal Plates in the POI. There is a conspicuous difference of more than *** between prices of Kodak and Lucky and more than *** between the prices of FujiFilm and Lucky, i.e. prices of Lucky are again suspiciously higher.
- In view of the above, it is clear that Lucky, with assistance from Kapoor, has engaged in an elaborate arrangement to avoid paying anti-dumping duties. Most critically, the price reported by Lucky to the Hon'ble Authority is not appropriately representative of the price paid by customers. The Hon'ble Authority must take cognizance of the evidence being provided for Lucky's malpractice and reject its response with immediate effect.
- Misdeclaration of UV CtP Plates as PS Analog Plates: It is well known that Lucky has claimed to export only Thermal Plates to India during the period of investigation. However, the Petitioner has provided ample evidence to prove that Lucky exported UV CtP Plates to India and mis-declared the same as PS Analog Plates to avoid anti-dumping duties.
- The Petitioner refers to the evidence found by the Hon'ble Authority which contains an acknowledgement by the Directorate of Revenue and Intelligence ("DRI") and Customs Authorities that there has been mass mis-declaration of UV CtP Plates as PS Analog Plates in the POI to the extent of *** million Sqm. The Hon'ble Authority is also aware, through the above communications, that out of the *** million sqm of mis-declared plates, *** million sqm were exported by Lucky. The Petitioner had also made other critical arguments substantiating its claim on misdeclaration such as demand in India, the brand (Topaz) of goods in question etc. The misdeclaration of UV CtP plates as Analog plates have been noted by the Hon'ble Authority at paragraph 39 of the Disclosure Statement. In view of the same, the Hon'ble Authority is requested to reject the submissions made by Lucky and must not accord individual margin to Lucky.
- However, if there is an acknowledgement of the misdeclaration, that means UV CtP Plates were indeed exported by Lucky in the period of investigation. However, the Hon'ble Authority has paradoxically stated at paragraph 24(B) that Lucky has exported only Thermal Plates to India in the period of investigation. The question that begs consideration is: if indeed there was misdeclaration of the data, should Lucky not have reported the sales correctly in Appendix 2 that it filed with the Hon'ble Authority?
- The Petitioner is perplexed as to how Lucky's data was even accepted when it reported only Thermal Plate sales to India, even when the Authority knew that it had exported UV CtP plates during the period of investigation. It is the well-established practice of the Hon'ble Authority that incorrectly reported data is rejected, and the party misreporting such data is held to be non-cooperative. Contrary to the law and established practice, the Hon'ble Authority has proposed to give an individual margin to Lucky.
- In order to substantiate the same, the Petitioner submits it has received one test certificate from an independent government recognized lab certifying the plates being imported as PS Analog Plates bearing the Topaz brand (an exclusive brand of Lucky and Kapoor) are in fact UV CtP Plates. It is interesting to note that the outer label of the same also reflects that the same are UV Plates which are nothing but UV CtP Plates.
- The Petitioner draws the Hon'ble Authority's attention to the communication dated April 12, 2018, where the Petitioner has submitted the detailed submissions concerning the above and same are not repeated for the sake of brevity.
- The Petitioner also relies upon the Final Finding recommended by the Hon'ble Designated Authority in the *investigation concerning imports of Tyre Curing Presses for Tyres originating in or exported from China PR* wherein based on the

similar facts wherein the volumes of the exports and imports do not tally, thus there is no questions of according individual treatment to the said exporter.

- Within the facts of the present case, there is confirmed data made available to the Hon'ble Designated Authority that the volume data of mis-declared UVCtP plates do not match or has been declared by the said exporter and importer in question which is covered within the scope of the investigation and therefore the so-called cooperating parties cannot merit any individual dumping margin.
- In light of the above arguments, the Petitioner strongly submits to the Hon'ble Authority that in view of glaring inadequacies and responses filed by Lucky and Kapoor there is no reason to grant special status to lucky which merits individual margin.
- The Hon'ble Authority has observed that Fujifilm has not exported the subject goods to India during the POI:

"25. ... During the POI M/s, FFCN has not exported the subject goods to India. The Authority had carried out onsite verification of the data filed by FFPS and FFCN related to global exports and domestic sales by FFCN. The producer/exporter have not claimed market economy treatment to determine 'normal value' by their domestic sales."

- The Petitioner submits that if a producer/exporter does not export the subject goods during the POI, then an individual margin cannot be accorded to the responding producer/exporter. The Hon'ble Authority in the *Sunset Review of Anti-Dumping Duty imposed on Viscose Staple Fibre* did not determine an export price for the exporters who did not export the subject goods in the POI even though they filed their questionnaire response:
- In light of the above, the Petitioner humbly requests the Hon'ble Authority to reject the questionnaire response and not calculate an export price for Fujifilm as it did not export the subject goods during the POI.
- The Petitioner respectfully submits that the statement in para 30 of the disclosure appears to be contradicted by the facts on record. The Petitioner has already provided detailed averments on the export of Violet Plates in the period of investigation from China; the same is relied upon and reiterated. It is also reiterated that Kodak has mis declared its Violet Plates exports as Thermal Plates.
- The Hon'ble Authority noted that Fujifilm had exported Thermal Plates and Violet Plates from its production plants in EU and Japan:
- While the Hon'ble Authority may have found that Kodak's prices are above Petitioner's NIP during the period of investigation, it is important to note that Kodak prices in the post-POI period were below the NIP. This is a strong indication of the fact that while historically the Petitioner may have appeared to be 'immune' to Kodak's exports, there is a strong likelihood that Kodak's export price is now starting to become suppressive, which is bound to have a negative impact on the Petitioner as well.
- Further, the fact that Fujifilm supplied Thermal and Violet Plates from other production plants demonstrate that Fujifilm is keen on continuing exports to India – it is only because of the existing duties that it has changed the location from where it exports the goods. Based on its focus on the Indian market, it can reasonably be assumed that Fujifilm will promptly resume low-priced exports from China as soon as duties are removed, whereby there is a need to continue duties to protect the Domestic Industry from predatory dumped prices.
- With regard to para 32 of disclosure, it is stated the Petitioner's realization of Thermal and Violet Plates indicating an absence of price suppression, it is submitted that a perceived absence of price suppression must not be construed to imply that there is no longer a requirement for anti-dumping duties, for the following reasons:
 - The primary examination in a sunset review pertains to likelihood. In other words, it is not just important to examine whether the Domestic Industry is injured, but also whether the removal of duties will lead to a likelihood of recurrence of the injury. The Petitioner has filed ample evidence to establish that if duties are allowed to expire, there will be a severely recurrent injury. The positive injury margin in the post-POI period demonstrates that the Petitioner is already facing enough pressure from imports.
 - The perceived absence of price suppression itself is on account of the existing anti-dumping duties. This should not be misconstrued to mean that there is no longer a requirement of duties. As mentioned above, there is sufficient evidence on record to establish that the removal of duties will lead to a recurrence of price suppression.
- In view of the above the statement, the conclusions drawn by the Hon'ble Authority at paragraphs 30 to 34 of the Disclosure Statement ought to be revisited as they are not corroborated by the facts on record.

- The Hon'ble Authority has observed *that there has been a rise in demand for the product concerned over the injury period.*
- As can be observed hereinabove, the market share of the Domestic Industry and the other Indian Producers has been witnessing a decline while the market share of the Subject Country and other countries has observed an increase from the base year to the POI.
- At the outset, the Petitioner relies upon the considerable evidence it has placed on record to establish that there is a strong likelihood of continuation or recurrence of injury to the Domestic Industry in case duties are allowed to expire.
- There are more than 75 major producers in China (details of which are already placed on record) with considerable disposable capacities. If duties are allowed to expire, their exports are likely to be directed to India at injurious and dumped prices. The Petitioner has filed sufficient evidence to substantiate its claims in this behalf.
- However, the Hon'ble Authority, in its likelihood analysis, has not conducted any analysis or disclosed the data it proposes to rely upon. There does not appear to be any analysis of the Exports made by the Co-operating entities from their China/ Netherland/Japan plants to other third countries to assess whether there is any likelihood of dumping or injury insofar as Thermal and Violet Plates are concerned.
- The Hon'ble Authority has noted a possibility that the export price of Kodak to India would not reduce:

"67. The Authority notes that the trend of export prices by M/s KGCCL's during previous 2 years of POI and also post POI. The Authority notes that the exporter prices to countries other than India during POI of different grades are on an average higher than the prices to India which therefore do not indicate the possibility of diversion to India on withdrawal of Anti-Dumping Duty. Moreover, this issue in case of Kodak is trivial as it is not subjected to an AD measure and its trade pattern does not depict any tendency of kodak's part having diverted its exports from other global destinations to India in a situation of AD measure not existing on them. Further, the landed value of exports by Kodak neither led to price suppression/depression on DI's sales as both price undercutting, and injury margin are observed to be negative."

- The Petitioner submits that Kodak started Violet Plates exports in POI which increased substantially in the Post-POI period by *** %. During this period of increase in quantities, Kodak's prices also reduced slightly. Further, these exports were made at a price notably below the NIP of the Petitioner. This indicates a strong likelihood of dumped and injurious imports if duties are allowed to expire.
- The Hon'ble Authority has held as follows at paragraph 68 of the Disclosure Statement:

"The Authority notes that Fujifilm has exported the subject goods to India from its other production facilities in EU and Japan post-levy of ADD on China. The producer/exporter was requested to also provide exports made by them of subject goods from their other production facilities in Japan and EU during POI and post POI to India. The producer/exporter and its associated importer have provided data on quantum and value of these exports during POI and post POI (6 months). The Authority notes price realisation of subject goods by the Domestic Industry is contingent on import prices from different sources, be it dumped or non-dumped." (Emphasis Supplied)

- The Petitioner submits that the Hon'ble Authority has rightly concluded that the Petitioner is vulnerable to import prices. It is also important to keep in mind that the same major players from China are also capable of applying price pressures from their other export locations, allowing them to control the Indian market and keep prices low. If duties are allowed to expire, this will compound the likelihood of recurrence of the injury, rendering the last few years of duty completely futile.
- The Petitioner submits that the trend with respect to the "exports made by them of subject goods from their other production facilities in Japan and EU during POI and post POI to India" should be made available to the Petitioner in a non-confidential form in order to facilitate meaningful analysis.
- The Authority, vide the Final Finding of the *Sunset Review on anti-dumping duty imposed on DVD-R and DVDRW*, recommended an anti-dumping duty on Hong Kong even when there were no imports from Hong Kong during the POI due the fact that the subject goods would get diverted through Hong Kong in the event the anti-dumping duty is removed:

"129.As far as Hong Kong is concerned, though there are no imports from that country during the investigation period it has been established that there is a strong likelihood of goods of other origins being diverted through Hong Kong if the

duties are removed on Hong Kong, keeping in view that this country does not have any production capacity for the subject goods and most of the goods exported from this country are actually manufactured elsewhere.” Similarly, in the present investigation, the exports made by Fujifilm from EU and Japan would then be made through China which would have a lower cost of production thus being a more economical and viable option to export from rather than EU and Japan. Moreover, in the present investigation, unlike the abovementioned finding, Fujifilm has plants in China due to which Fujifilm would not have to divert the PUC rather it would manufacture it in China and thus not incurring any additional costs as well.

- The Authority has not concluded on the likelihood of continuance of recurring injury for exports made by Lucky. In this behalf, the Petitioner submits that there are great threat and likelihood of continued injury which can be substantiated by the pricing behaviour of Lucky to third countries. In this regard, the Petitioner draws the attention of Hon’ble Authority to invoices filed by them. The same clearly demonstrates the pricing behaviour of Lucky and imminent threat to the Domestic Industry.
- The Petitioner has made the detailed submission with respect to Likelihood of continued injury or recurrence of injury in its Written Submission dated March 12, 2018, and Rejoinder Submission dated March 19, 2018, which have not been considered by the Hon’ble Authority in the disclosure statement. The summary of the same is reiterated below, and detailed submissions are not reproduced here for the sake of brevity.
 - A significant rate of increase of dumped imports indicating the likelihood of substantially increased importation
 - Likelihood of trade diversion from China PR and price injury
 - Sufficient disposable capacities (or an imminent increase of capacities) in Subject Country likely to lead to the increased importation
 - Pricing behaviour of the Chinese producers to third countries
 - Offers from Chinese producers to India at predatory prices
 - Export Orientation of producers from Subject Country
 - ADD Measures continues against China by two major markets Product under Consideration: i.e. Korea RP and Brazil
 - Price Suppression and Depression
 - Inventories of Article being investigated
 - Price attractiveness of the Indian market
 - The vulnerability of the Domestic Industry in terms of price sensitivity of the product and Indian market.

70. **Submissions made by the exporters, importers and Other Interested Parties/ other Parties**

Comments by various interested parties are as follows:

(i) **M/s Metrostar Print Solutions Pvt. Ltd.**

- We would like to reiterate that we began our operations mainly because of the support by the way of Anti-dumping duty that was given by your good office on Products Under Consideration (PUC) against cheap Chinese imports. If the support and protection of the Anti-dumping duty is withdrawn, we will not be in the position to compete with the Chinese goods which are dumped at utter cheap prices.
- On the perusal of the Discloser statement issued by your good office, it was surprising to find that M/S Lucky has exported only Thermal Plates, whereas it is a well-known fact in the market and our market intelligence that the Kapoor is the one of the largest supplier of the UV CtP Plates in India under the brand name of Topaz. We would be happy to provide evidence should the Authority require the same.
- Further, we were in dismay after finding that Lucky has been given negative dumping margin despite providing incomplete and wrong information to your good office. Also, we note that the accounting system of Lucky could not provide the backups of the export price calculation.
- We request the Authority, that, being a newly established company, we need the protection of the Anti-dumping duties on all three types of plates, against the Chinese producer’s conduct and unfair trade practices of misdeclaration and MIS-representation. Therefore, the Authority is requested to reject the claim of Lucky and levy the duties to lucky and all other Chinese exporters.

(ii) All India Federation of Master Printers

- The various injury parameters disclosed show that if anti-dumping duty is not continued in this case, there is a strong likelihood that injury to the domestic industry shall continue which in turn adversely affect the users i.e. Indian Printing Industry at large. In absence of Domestic Manufacturers, the Indian Printing Industry would lose its competitiveness. This is evident from the injury parameters listed in the disclosure statement.
- While sales of the domestic industry increased by 24% during the injury period, imports from the subject country increased by 72%, three-times the increase of sales of the domestic industry. Even though sales of other Indian producers increased by 4% and imports from third countries increased by 91% in the same period, the share held by these two categories was only 1% and 11%, respectively. The domestic industry was not facing injury from other producers in India.
- On the other hand, market share of imports from the subject country increased from 15% in the base year to 19% during the POI. The domestic industry lost its market share to imports of the subject goods, as its market share reduced drastically from 76% in the base year to 69% during the POI. This does not reflect well on the health of the domestic industry.
- While the demand of the subject goods increased by 38% in the injury period, the domestic industry lost 7% market share in the same period, while imports from the subject country gained market share and had captured 19% of the market by the POI.
- From the Disclosure Statement, one can easily understand that the profitability of the domestic industry also does not look good.
- Profitability per unit declined from 100 indexed points in the base year to 62 indexed points during the POI. Total profitability declined from 100 indexed points to 77 indexed points during the POI. Case profits followed a similar trend reporting a decline from 100 indexed points in the base year to 74 indexed points during the POI. Profit before interest and tax showed a sharp decline from 100 indexed points in the base year to 65 indexed points during the POI. Return on capital employed declined from 100 indexed points in the base year to 60 indexed points during the POI.
- In the interest of the domestic industry and users in India, we request the Designated Authority to recommend continuation of the anti-dumping duty on the subject goods. We await the Designated Authority's kind recommendation in this regard.

(iii) M/s Orion Photosensitive Systems

- The various injury parameters disclosed show that if anti-dumping is not continued in this case, there is a strong likelihood that injury to the domestic industry shall continue. This is evident from all the injury parameters listed in the disclosure statement.
- The market share of imports from the subject country increased from 15% in the base year to 19% during the POI. The domestic industry lost its market share to imports of the subject goods, as its market share reduced drastically from 76% in the base year to 69% during the POI. This has mainly happened due to the rampant dumping and mis declaration practices which has impacted the domestic industry very badly.
- Though the demand of the subject goods increased by 38% in the injury period, the domestic industry lost 7% market share in the same period, while imports from the subject country; gained market share and had captured 19% of the market by the POI.
- We observed in the Disclosure statement that Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd has been given a negative Dumping margin. But in fact Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd is bringing in huge quantity of UV CtCP plates by mis declaring them as Analog. (P. S. Plates)
- We request you that Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd and all other Chinese manufactures be included in Anti-Dumping Duty on similar category with all other Chinese manufacturers and exporters.
- We are manufacturers Offset Printing Plates which include UV(CtCP) Digital Plates and Thermal Digital Printing Plates. We are manufacturing Analogue offset printing plates since 2006, and digital plates since 2012.
- We M/S. Orion Photosensitive Systems are facing immense financial strains on account of the rampant dumping of the digital offset plates, particularly of the UV (CtCP) variety from China PR. In spite of the currently existing Anti-Dumping Duty. This is happening because importers find ways and means to circumvent the Anti-Dumping Duty and continue to evade the legitimate duties. This is done by mis declaring the goods as P.S. Plates, though they are in fact UV CtCP plates.
- We believe that in case the current Anti-dumping duties get withdrawn, there will be a huge influx of cheap Chinese digital plates into the country which will virtually wipe out the domestic industry.
- If the existing duties are removed, then the end of Domestic Manufacturers engaged in production of Digital Plates will be imminent.

- We request to extend Anti-Dumping Duty on all the Three types of Digital plates namely 1) UV CtCP 2) Thermal CTP and 3) Violet CTP. This provision is essential to prevent mis declaration by importers and causing huge loss to domestic industry.

(iv) M/s TPM Consultants on behalf of Kapoor Imagings Pvt. Ltd., Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. and Shangai Strong State Printing Equipment Ltd.

- Article 6 in its relevant part states that the authority shall, before a final determination is made, inform all interested parties of the essential facts under consideration which form the basis for the decision whether to apply definitive measures. In WTO Panel Report, WT/DS-414/R in China – Countervailing and Anti-Dumping Duties on Grain Oriented Flat-Rolled Electrical Steel from the United States, it was observed that in order to apply definitive measures at the conclusion of anti-dumping investigations, an investigating authority must find dumping, injury and a causal link. Therefore, the “essential facts” underlying the findings and conclusions relating to these elements form the basis of the decision to apply definitive measures and should be disclosed.

- Thus, findings on facts relevant to determine dumping, injury and causal link needs to be disclosed by the Authority. The Authority has merely provided the year on year trends on various economic parameters such as production, sales and capacity utilisation, etc. It is submitted that the Authority’s conclusion on these injury parameters constitute “essential fact”. Without disclosure of these facts, we are not able to make meaningful comments. For making meaningful comments an effective disclosure of all the facts that form the basis of the final finding are required to be made. In this regard the judgment in the matter of Nirma Limited Vs. Union of India of the Hon’ble High Court of Gujarat at Ahmadabad is also relevant and the same is reproduced herein below:

“while Article 6.9 does not prescribe a particular form for the disclosure of the essential facts, it does require in all cases that the investigating authority disclose those facts in such a manner that an interested party can understand clearly what data the investigating authority has used, and how those data were used to determine the margin of dumping. The disclosure statement, therefore, contains the intermediate findings and conclusions of the designated authority on the essential facts which would form the basis for the decision whether or not to apply definitive measures and not final conclusions on whether or not definite measures are required to be applied. In the opinion of this court, as rightly submitted by the learned counsel for the petitioners, the disclosure statement should contain the conclusions of the designated authority on those essential facts which would form the basis for its decision as to whether or not to apply definitive measures and not its conclusions on the basis of those essential facts. The conclusions on the basis of the essential facts are to be recorded in the final findings, viz., whether or not on the basis of such facts definitive measures are required to be applied.”

- The Designated Authority therefore needs to conclude on facts before issuing disclosure statement, the Designated Authority need not conclude on the investigations at the stage of disclosure statement. Some of the examples of essential facts under consideration of the Designated Authority are

“Scope of the product under consideration, Scope of the like article offered by the domestic industry, Scope of the petitioners to constitute domestic industry, Dumping & dumping margin, Whether the domestic industry has suffered continued injury. If not so, whether injury to the domestic industry is likely, Whether the injury to the domestic industry is due to other known listed factors, Whether the injury to the domestic industry is due to factors other than dumped imports of known listed factors, Whether the injury to the domestic industry is due to dumped imports, Whether there are factors that establish likelihood of dumping and injury”

- The disclosure statement has at various parts have stated that they propose to consider certain facts for arriving at a conclusion, however have not provided what those facts are. Thus the Authority has provided what are parameters that the Authority proposes to consider as essential fact. The Authority has therefore not provided essential facts under consideration.
- The Authority has stated with regard to MOU prices of the DI that
 - “The Authority proposed to examine the price agreeable under MOU and that realised by the DI amidst the prices offered by other sources i.e. producers/exporters from China and also other subject countries to evaluate whether the arrangement of MOU has addressed the concerns of the DI and also whether there was a need for continuance of ADD”.
- The Authority has therefore not disclosed what the comparison between MOU prices, DI prices and by non-dumped sources shows which is admittedly an essential fact under consideration and shall form the basis of final finding.
- The Authority states as follows with regard to third country imports

In the instant case, the landed values of subject goods from non-dumped sources during POI and post POI are proposed to be considered to establish possibility of any likelihood of injury by analysing price suppression effect on DI’s prices

during POI and post POI keeping in view the prices of subject goods from non-dumped sources, prices from subject country of producers/exporters not subjected to an AD measure and likely adverse effect of misdeclaration of product types on sales of domestic industry (both quantum and value). Authority has conducted price undercutting analysis. However, the disclosure statement does not state whether there is undercutting on account of imports from subject countries or on account of non-subject countries. Further undercutting has also been worked out considering the MOU prices, however the undercutting range has not been disclosed.

- Similarly, disclosure statement contains a table of trends in costs, selling price and landed price of imports for examination of price suppression and depression. However, it is not clear whether there is suppression/depression in the present case.
- The disclosure statement states as follows with regard to profits of the domestic industry:

“However the Authority proposed to consider whether the ‘NSR’ has been suppressed when compared to ‘NIP’ determined for POI.

- It is however not clear whether NSR is below NIP or above NIP. It is our understanding, considering the performance of the domestic industry, which the NIP should be well below NSR. However, we request disclosure of the same.
- With regard to factors affecting domestic prices, the disclosure statement does not contain eventual conclusion of the analysis undertaken.
- It is however, not clear whether POI and post POI injury margin is negative (which is our understanding about the market situation) or whether the imports had suppressing or depressing effect in post POI. These are the essential facts on which the final findings will be based. Thus we request disclosure of the same.
- The Disclosure Statement issued suggests that the followings have been considered as facts, whereas these are either parameters or information
 - i. Trends in volume of imports in absolute terms or in relation to production or consumption in India;
 - ii. Whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry;
 - iii. Whether the imports are suppressing or depressing the prices of the domestic industry in the market;
 - iv. Whether the performance of the domestic industry shows actual or potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments, etc.
 - v. whether the ‘NSR’ has been suppressed when compared to ‘NIP’ determined for POI
 - vi. Landed values of subject goods from non-dumped sources during POI and post POI
 - vii. Price suppression effect on DI’s prices during POI and post POI keeping in view the prices of subject goods from non-dumped sources, prices from subject country of producers/exporters not subjected to an AD measure

- Whether there is any adverse effect of misdeclaration of product types on sales of domestic industry (both quantum and value) – incidentally, on this issue, we are enclosing herewith relevant extracts from the disclosure statement recently issued by the Designated Authority in the matter of Viscose Filament Yarn (VFY), wherein the Designated Authority has held as follows –

(e) Circumvention of subject good by the producers from the subject country.

119. The exporter has earlier been alleged to have circumvented the subject good to India in the name of “embroidery yarn.” Further, it has been alleged that evasion of duty continues in spite of clarifications. It is noted that evasion of duty is a separate investigation that may be addressed at the appropriate forum. The alleged act of circumvention cannot clearly establish an intention to dump subject goods in India.

- In VFY case, the Designated Authority had accepted circumvention of antidumping duty to such an extent that the Designated Authority had earlier gone to the extent of suo motu issuing clarification (which implies that the fact of circumvention was very well accepted by the Designated Authority). Despite the same, the above observation of the Designated Authority is evident.
- Interested party submits that the above do not constitute essential facts under consideration of the Designated Authority. The above constitutes only parameters or information that are relevant to establishment of facts. Thus, a reading of the disclosure statement makes it evident that essential facts under consideration with regard to injury to the domestic industry have not been disclosed in the disclosure statement. The disclosure statement therefore does not meet the requirements and obligation under Rule 16.

- It would thus be seen that disclosure statement has provided parameters that are relevant for establishment of essential facts. Thus, a reading of the disclosure statement makes it evident that essential facts under consideration with regard to injury and likelihood thereof to the domestic industry have not been disclosed in the disclosure statement. Thus we request the disclosure of such information to enable us to provide effective comments.
- Interested party requests the Authority to kindly issue a meaningful disclosure for the domestic industry to provide meaningful comments. Interested party shall be highly grateful for the above disclosures so that the interested party can offer its comments on the disclosure statement. Further, the interested party reiterates their request for an hearing and additional time for offering comments in view of several factual unresolved issues of the case and the need to appropriately bring these before the Designated Authority.
- It is evident from the disclosure document that the facts gathered by the Designated Authority clearly establishes that –

The dumping margin and injury margin is negative for M/s Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd.

Performance of the domestic industry has improved on account of sales and production.

Profitability and ROI has declined. We submit that these are not account of dumped imports.

Third country export prices provided by the exporters shows that third country export prices are at a higher price than the export price to India.

NSR is higher than NIP.

- The Authority has not considered/examined the following issues
 - a. The import price provided by the petitioner is unreliable: One of the fundamental points raised by us was with regard to (a) import volume and (b) import price. It was contended that (a) the import volume reported by petitioner is excessively high, whereas (b) import price reported by the petitioner is excessively low. Further, we had collected import data from DGCI&S. While it is appreciated that it was only for the classification meant for the PUC, in any case, it cannot be contended that imports of the PUC in the classification meant for PUC are not even one tenth of total imports of the PUC. While it is possible that imports of the product may be reported in different classifications, it is impossible that 80-90% imports get classified under a classification not meant for PUC. In any case, the import price as per Indian Customs data is materially higher than the import price claimed by the petitioner. The issue remains unresolved. It appears that petitioner have carried their thinking about alleged mis-declaration of the product in claiming an import price which is not supported by import data. Further, the petitioner has reported imports of a product which is not product under consideration. We are enclosing herewith import data of PS plates. It would be seen that in fact these imports pertains to imports of PS plates. Thus, petitioner is misleading the Authority in believing that imports of PS plates are imports of digital plate. In any case, we submit that there is no justification for disputing the claims accepted by customs authorities. The Designated Authority will not sit on the judgement of the customs authorities. If customs authorities have accepted some import description, volume and price, the petitioner cannot request rejection of the same. One authority cannot question correctness and appropriateness of the work done by other authority. The issue is much different from what was found by the authority in the matter of Melamine wherein the authority in fact found that the DRI has rejected the declaration made to customs authorities and had collected additional customs duties. In the present case, there is no such instance of collection of duties by DRI.

Another fact which is relevant for assessment of import volume and value is that there are primarily three suppliers of digital printing plate from China – Kodak, Fujifilm and Lucky. Admittedly, Fujifilm has shifted entire volumes from China to other sources (Japan and Europe). Further, Kodak was attracting NIL rate of duty and therefore did not have any compulsion to resort to any kind of circumvention/evasion. As regards Lucky, the questionnaire response filed by Lucky has already been verified and the same clearly showed that the volume of import exported by Lucky are materially lower than the volume provided by the petitioner. Such being the case, we wonder who has imported 71 lacs sqm when there is no Chinese exporter who has supplied goods to this extent. Kodak alone could not have supplied this much volumes. In any case, Kodak has also participated in the present investigation and the questionnaire response filed by them is on record. The authority may kindly co-relate the questionnaire response filed by Kodak and Lucky to compare with the import volumes reported by petitioner. It would readily establish that petitioner has increased import volumes exorbitantly and have reduced import price unreasonably low in order to establish their case.

- b. Import volumes reported by the petitioner is highly overstated.

- c. Imports from other countries are at prices below the prices of subject country and are not causing injury to the domestic industry.
 - d. Imports are being made equals to the existing demand supply gap in the nation.
 - e. Raw material cost has declined thus cost of production should also have declined. The increase in cost is on account of other factors.
- There is no current dumping and injury as well as likely dumping and injury on account of imports from M/s Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd
 - As is established from the disclosure statement the dumping margin and injury margin on exports from M/s Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd is negative. Further, upon directions, the exporter had provided post POI export information as well. It would be seen that the dumping margin in POI as well as Post POI is negative. The Authority is requested to kindly consider post POI data provided by M/s Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd. Thus, the exports from M/s Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd is not causing any injury to the domestic industry nor is likely to cause injury to the domestic industry in the event of cessation of anti-dumping duty.
 - No injury to the domestic industry
 - It is reiterated that there is no injury to the domestic industry, and injury, if any, is on account of other sources.
- i. Sales, production and capacity utilization of the domestic industry shows significant improvement.
 - ii. The market share of subject imports has increased and that of domestic industry has declined. However, since the domestic industry does not have sufficient capacity to meet the domestic demand and thus the decline in market share is natural.
 - iii. As per the disclosure statement, as against the claim of positive undercutting by the domestic industry, undercutting is negative for Thermal digital plates and there are no imports of violet digital plates. It is emphasized here that M/s Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd has exported only thermal digital plates.
 - iv. The price suppression/depression is not on account of imports.
 - v. The domestic industry has been earning profits throughout the period. Subject goods are incurring benchmark form of duty, thus imports cannot enter at a price below the level of benchmark fixed. Thus any alleged injury cannot be caused by the subject imports. The reason for decline in profits is thus not subject imports, but the MOU. Further, as regards the contention that antidumping duties are being evaded in the form of importing goods after declaring them as PS plates, as stated earlier, this issue is a customs issue and extension of anti-dumping duty is not a correct remedy and the petitioner should go to the appropriate forum.
 - vi. Inventory with the domestic industry has shown marginal increase.
- Disclosure statement issued suggests that there are no factor that established or even remotely indicate likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury. The dumping margin and injury margin is negative. It is also seen that third country exports are at higher prices. Thus, it can be fairly assumed that there is no likelihood of diversion of exports and that too at dumped and injurious price in the event of cessation of anti-dumping duty.
 - The petitioner has not substantiated any grounds on likelihood of dumping and injury and has at some places referred to incorrect judgments/evidences. The detailed submissions made in the written and rejoinder submission is referred and is not repeated herein for sake of brevity.
- (v) **APJ-SLG Law offices representing M/s FUJIFILM Printing Plate (China) Co. Ltd. (FFPS), FUJIFILM (China) Investment Co., Ltd. (FFCN) and M/s FUJIFILM India Private Limited (FFIPL)**
- It is noted from the disclosure statement that dumping margin for one of the exporters, i.e., M/s Lucky Huaguang Graphics Co Ltd, has been negative. In this regard, we humbly request the Authority to kindly exclude the exports of M/s Lucky Huaguang Graphics Co Ltd while doing the injury analysis in accordance to the Anti-dumping Rules.
 - With regard to para 30 of the disclosure statement, it is stated that it is evident from the above-mentioned analysis of the Authority that the Domestic Industry is expecting to attain unreasonable profits on the Product under Consideration. It seems that the concern of the Domestic Industry is not the injury caused by the alleged dumped imports but their unreasonable expectation of earning huge profits. It is also clear from the above that the NIP has been lower than the net sales realization of the Domestic Industry, meaning thereby, that the Domestic Industry is already recovering prices higher than the NIP. The Designated Authority has held that in sunset review cases, the mere existence of dumping is not enough when the same has not caused any material injury to the Domestic Industry. The same position also emerges from various recently concluded investigation including the Anti-Dumping Investigation concerning imports of Caustic Soda originating in and exported from Japan and Qatar (F. No. 14/31/2015-DGAD, dated 10.01.2018), Sunset Review of Anti-dumping duty imposed on the imports of Nylon Filament Yarn originating in or exported from China PR,

Chinese Taipei, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea RP (F. No. 15/17/2016-DGAD, dated 05.01.2018) and various other findings of the Authority. It is humbly submitted that there is no reason for the Authority to deviate from the established position of terminating the investigation in cases where the Domestic Industry's prices are above their NIP.

- The Domestic Industry should have given sufficient information to the Hon'ble Authority regarding the percentage of transactions that happened under the MOU and the percent of transaction outside the MOU to enable it to examine the impact of these MOU and non-MOU transactions of the Domestic Industry on their overall pricing.
- The Domestic Industry should at least disclose the pricing methodology or formulae under the MOU, if not the agreed pricing itself. In the absence of such information, we are not in a position to offer our comments on the effect of the MOU on the prices of the Domestic Industry. It may be recalled that the interested parties during the hearing had categorically stated that there is nothing confidential about the MOUs. In this context, please refer to our comments in the rejoinder statement dated March 19, 2018, para 8.
- The Authority's analysis in para 31:

"The Authority also notes that price of these two product types remained immune from the exports by Kodak did not have an AD measure and that Fujifilm also supplied both Thermal and Violet types from their other production plants in EU and Japan...."

The above analysis of the Authority clearly proves that there is no injurious effect of the imports on the performance of the Domestic Industry. Further, since the Authority has already come to the conclusion that the prices of the two main components of the Product under Consideration, i.e., thermal and violet plates are immune from the imports, it follows that there is no likelihood of the injury to the Domestic Industry as well.

- In view of para 32 of disclosure it is noted that there has been no price suppression/depression by the imports. This fact, coupled with the fact that the Domestic Industry's net sales realization has been above their NIP, completely shatters the claim of the Domestic Industry regarding any existing injury to them on account of imports.
- With regard to demand and Market share, we reiterate that the share of the Domestic Industry in demand has decreased only due to their limitations with respect to their capacities as they have not been able to cater to the increasing demand. The Authority would appreciate that the share of Domestic Industry in demand has solely been affected due to their inability to meet the market demand with their existing capacities. This fact also gets strengthened from the fact that they have been consistently operating above the capacity utilization of 95%.
- With regard to the para on import volumes and share of subject country we reiterate that the increase in imports volume has solely been on account of the inability of the Domestic Industry to cater to the increasing demand. With the stagnant and limited capacity in the ever-increasing market, the Domestic Industry has not been able to cater to the increasing market demand. Therefore, as opposed to the narrative of the Domestic Industry, the increase in imports has been an absolute necessity. This contention also gets proved by the fact that there has been increase in imports from non-subject countries as well.
- It is clear from the analysis carried out by the Authority in para 32 that there has been no suppressing or depressing effect of the imports from the subject countries on domestic selling prices. It is submitted that the absence of suppressing/depressing effect of the imports on domestic selling prices is a robust indicator that there has been no injury to the Domestic Industry from the alleged dumped imports.
- It is clear from the analysis carried out by the Authority that price undercutting and price underselling has been negative with respect to Thermal plates which constitutes the bulk of the market demand. That being the case, it is reasonable to assume that there is no likelihood any price pressure on the other two types of plates also.

- It is clear from the examination of the Authority that the Production, capacity utilization and domestic sales volume of the Domestic Industry has increased over the injury period. Clearly, there has been no injury to the Domestic Industry on account of these parameters as well.
- The market share in demand of the Domestic Industry has declined. However, as already been established, the decline is solely on account of the inability of the Domestic Industry to keep-up with the growing market demand. The indices relating to injury also show more or less same trend throughout the injury investigation period.
- It is submitted that it is clear from the examination carried out by the Authority that almost all the parameters relating to injury have shown improvement in the injury investigation period. Although, there have been few dips too with regard to certain indices, the same do not have any nexus to the imports from the subject countries. Further, the fact that the injury margin is also negative with respect to the imports from China, proves that there has clearly been no injury to the Domestic Industry from the alleged dumped imports.
- From the examination of the Authority on the basis of the facts on record, it is clear that there is no likelihood of continuation or recurrence of dumping or injury to the Domestic Industry from the imports of subject goods from subject country. Further, the absence of dumping and injury rules out the possibility of any current dumping or consequent injury.
- In regard of DA's resending in para 68, it is submitted that Fujifilm as a group has always priced their products in line with the prevailing international prices and the prices offered by the Domestic Industry. We further submit that the Domestic Industry has miserably failed to establish that there is any nexus between their price realization and the import prices.
- With regard to the observation of the Authority in para 15 regarding the imports made by Domestic Industry, we humbly submit that our contention with regard to the imports by Domestic Industry was not in relation to the standing of Domestic Industry. We would request the Authority to kindly examine this issue in the context of our claim that the Domestic Industry has not been able to cater to the increasing demand in the Indian market and had no choice but to import from other non-subject countries. It is also pertinent to note that the imports were admittedly of the PUC only as the Domestic Industry has not made out any case with regard to the non-substitutability of the imported variants and the domestic products.
- As regard the observation of the Authority regarding "ability of the Domestic Industry to raise capital investment", we submit that in the absence of any submission in this regard by the Domestic Industry, the Authority has to conclude that there has been no injury to the Domestic Industry with respect to this mandatory parameter. The Authority would appreciate that it cannot leave a mandatory factor unexamined merely because there has been no comment by parties with regard to that parameter. Further, it is for the Domestic Industry to provide information regarding the mandatory parameter and the onus cannot be shifter to the responding parties. We request the Authority to kindly record that there has been no effect on the ability of the Domestic Industry to raise capital investment.
- We further submit that from the facts on record and the analysis carried out by the Authority in the disclosure statement, it is clear that there has been no injury to the Domestic Industry during the injury investigation period. Further, it is also clear that there is no possibility to even assume that there is any likelihood of recurrence or continuation of dumping and injury.
- We request the Authority to kindly terminate the investigation and the existing duties and hold that there has been no dumping or consequent injury to the Domestic Industry and there is no likelihood of continued dumping and injury as well.
- We also request the Authority to let us know in case there is any material change in the facts recorded and the views expressed in the present disclosure statement. We would request that in such a situation, we should be allowed to make our comments on such changed views/data before the issuance of Final Findings.

(vi) **M/s DUA Associates on behalf of M/s Kodak China Graphic Communication Co. Ltd. (“KCGCCL”), M/s Kodak China Investment Co. Ltd. (“KCIICL”) and M/s Kodak India Pvt. Ltd. (“KIPL”)**

- Kodak has participated in the present investigation and duly filed response to the Exporter’s Questionnaire, Sunset Review Questionnaire and Market Economy Treatment (‘MET’) Questionnaire. In addition to the above, Kodak has also filed importer’s questionnaire response and furnished information (including information concerning KIPL’s resale price to unrelated customers, data concerning post POI, etc.) sought by the Authority.
- In the Disclosure Statement issued on April 09, 2018, the Authority has determined a negative injury margin for Kodak in range of (0-10) percent and an individual dumping margin for KCGCCL as a producer and exporter of subject goods. Accordingly, in terms of the lesser duty rule, it has been determined that imports from Kodak have not caused any injury to the Domestic Industry.
- It is also pertinent to note that the Authority (in the original investigation) has determined negative injury margin qua Kodak and not recommended anti-dumping duty. Therefore, in view of the findings in the original investigation and determination of negative injury margin in the instant review investigation, no reference price duty for Kodak is required to be recommended.
- During the course of the present investigation, Kodak has filed detailed injury submissions, oral hearing written submission, rejoinder submissions, etc. The said submissions filed by Kodak to be considered part of the comments to Disclosure Statement and the same are not repeated herein.
- The Authority has incorrectly determined that aluminium price at shanghai metal exchange is not representative of actual cost: Kodak has submitted all information in the questionnaire response as per the MET Questionnaire. The said information was complete and also verified by the Authority during the on-spot verification as well as prior to the issuance of the Disclosure Statement. It is also pertinent to highlight that during the on-spot verification of MET Questionnaire Response in China, the verification team had specifically verified aluminium prices at London Metal Exchange, Shanghai Metal Exchange and Kodak’s domestic procurement prices. On the basis of said verification, the Authority (in the verification report) has duly recorded that ‘KCGCCL has submitted a comparative graph for KCGCCL purchase price and price prevalent at London Metal Exchange and Shanghai Metal Exchange. It was claimed by the KCGCCL that purchase price are comparable with international price’.
- From the verification report issued by the Authority, it is undisputed that the Authority had verified the prices for aluminium at Shanghai Metal Exchange, London Metal Exchange and Kodak’s procurement price, as submitted by Kodak. However, the Authority in the Disclosure Statement has not examined the data verified during on-spot verification and has further not elaborated the reasons for rejection of SME and LME prices submitted by Kodak and verified by the Authority during the verification.
- In the Disclosure Statement, the Authority has compared LME premium price with SME current aluminium prices (after VAT deduction). It is accordingly submitted that the said comparison is not conducted on an apple to apple basis. It is also pertinent to note that LME premium aluminium price relates to future contracts whereas the Shanghai Aluminium prices (as taken by the Authority) were current transaction price, after deduction of VAT. Therefore, LME premium price are not comparable to SME aluminium price (after VAT deduction).
- It is necessary to highlight that the LME website specifically differentiates premium price and current aluminium price. To further authenticate the above submissions, Kodak is providing the extracted information available at LME website which illustrates the said difference.
- The LME aluminium premium prices are substantially above LME current aluminium prices, on account of premium being charges on premium contracts and therefore, the two are not comparable. Similar to the above, LME aluminium premium prices are not comparable with SME current aluminium price (after VAT deduction), as considered by the Authority in the Disclosure Statement. It is submitted that LME aluminium premium price and SME current price (after VAT deduction) are not at same level of trade and therefore cannot be compared.
- The Authority is also requested to note that London Metal Exchange reflects four different categories of premium aluminium price which are based on different specifications.

- It is evident that LME has levied premium charges based on each category of a premium contract. However, the Authority in the Disclosure Statement has not disclosed the category of premium contract and LME aluminium premium prices considered relevant for the comparison with SME aluminium price.
- It is reiterated that LME premium price is not comparable to SME current price (after VAT deduction). Therefore, the Authority is requested to re-evaluate Kodak MET status by comparing LME current aluminium price (excluding VAT @ 18 %) with SME current aluminium prices (after VAT deduction), so as to conduct apple to apple comparison and to arrive at a fair determination. Additionally, the Authority is requested to disclose the category of LME premium contract and the aluminium prices considered for the comparison with SME aluminium price, considered in the Disclosure Statement.
- Authority has incorrectly relied on investigation conducted by United State in terms of section 232 of Trade Expansion Act:

While rejecting the MET status claim for Kodak, the Authority has noted that ‘the recent determination by US under Section 232 of the Trade Expansion Act has highlighted the prices of Aluminium in China being not representative of market forces’. However, it is submitted that the said Section 232 Report categorically notes that ‘an investigation under Section 232 looks at excessive imports for their threat to the national security, rather than looking at unfair trade practices as in an antidumping investigation’. Therefore, the object of an investigation under Section 232 of the Trade Expansion Act is to examine surge in imports and impact thereof on the national security. In view of the above, the reliance of the Authority on Section 232 Report for the present investigation is misplaced.

- Even assuming arguendo that aluminium purchase price in China were not determined by market forces, the Authority ought to have adjusted the KGCCL’s cost of aluminium, to the extent of difference between KCICL purchase price and aluminium price in market economy third country. However, the Authority in the Disclosure Statement has rejected the entire MET response filed by KGCCL despite having verified the data concerning cost of production etc. In this regard, it is pertinent to state that the Authority has not rejected the entire questionnaire filed by Lucky (who has failed to file and verify crucial information) and applied facts available to the extent required for determination of individual dumping margin. Accordingly, the Authority ought to have considered the same methodology for other interested parties and should have determination of Normal Value for Kodak, based on its cost or domestic selling price, with necessary adjustments on account of aluminium price.
- The Authority has revealed business proprietary information filed by Kodak on a confidential basis to Lucky Huaguang Graphics Co. Ltd (‘Lucky’).

There is no dispute that KGCCL is the sole co-operative exporter which has provided complete information concerning post factory expenses. This business proprietary information however, has been used by the Authority for determination of Ex-Factory Export Price/Dumping Margin for Lucky. It is submitted that the Authority has provided Kodak’s confidential information concerning post factory expenses to Lucky in confidential Annexure II (a) of the Disclosure Statement. Kodak hereby requests the Authority to not share such proprietary information without seeking prior permission from the interested parties.

- The Authority has incorrectly adopted KGCCL’s data for determination of Lucky’s Ex-factory export price for the reasons stated below:

In terms of Section 9A (6A) of CTA, the dumping margin for responding exporter can only be determined on basis of the records maintained by such responding exporter. Therefore, information of one co-operative exporter cannot be adopted for determination of dumping margin for another exporter who has failed to provide/verify such information.

- The factual matrix of the investigation unambiguously confirms that KGCCL is located near the port of shipment and incurred nominal freight and other post factory expenses for export of goods to India. On the contrary, Lucky is located in landlocked area far from the port of lading. Accordingly, Lucky is likely to have incurred very high post factory expenses for exporting goods to India.

- Since Kodak's information has been made available to other exporters, we request the Authority to withdraw the said confidential disclosure statement (issued to Lucky) with an undertaking from Lucky (and their legal representatives) to destroy the said information, so as to avoid misuse or dissemination of the same.
- Kodak has filed information concerning exports of goods to India on confidential basis and the said confidential information was made available to opposing parties by DGCI&S, with the approval of the authority:

In terms of Rule 7 of AD Rules, the information filed by any interested parties on confidential basis cannot be disclosed by the Authority. However, the Authority has allowed opposing interested parties to collect/procure the said confidential information in form of transaction wise data from DGCI&S. Please note that transaction wise import data discloses the entire description of imported goods, volume of goods as well as the import value. Therefore, the information filed by Kodak on confidential basis was disclosed to opposing parties with permission of the Authority.

- In addition to above, it is pertinent to note that TechNova has admittedly used the said information and also filed the summary of the same in the public file. Therefore, the confidential information filed by Kodak was made available to TechNova and subsequently to other interested parties who have inspected the public file (including Lucky and FujiFilm).
- In this regard however, Kodak also wishes to highlight the noting of the Authority at paragraph 34 of the Disclosure Statement. After the confidential data relating to imports by KIPL was provided to Technova, the Authority had sought information from Kodak regarding one entry concerning import of 'Libra' plates by KIPL against Invoice No. ***. Kodak had accordingly submitted all information relating to Invoice No. *** with the Authority. However, since the DGCI&S data categorically mentioned the import of 'Libra' plates, Kodak has once again sieved through its entire data and found a small quantity of Libra plates imported during the POI against Invoice No. **. It is submitted that the Invoice No ** is a manual invoice raised by KCGCCL for sending sample plates for trial purposes of India. The said transaction was not a commercial transaction and was only imported into India as a sample for testing purposes and nothing else. The same can be confirmed by the insignificant value of the said invoice which is merely INR ** only when compared to the total import value and the quantity imported by KIPL. It is pertinent to highlight that KIPL has not paid any consideration for the said sample imports. It is also submitted that Kodak SAP system has a constraint of reporting only 10 digit invoices and since the present invoice had an added suffix "-1" (being a manual free of cost invoice for testing purpose), the same did not reflect in KIPL's system. It is submitted that the said transaction of a nominal value is the only transaction concerning Libra plates during POI.
- The authority should not allow filing of submissions at much belated stage as evident from the public file, TechNova has filed the summary of imports and other relevant data on April 5, 2018 i.e. two working days prior to issuance of present Disclosure Statement. It is submitted that filing of such crucial information by TechNova at fag end of the investigation has disallowed opposing interested parties including Kodak to make appropriate comments/submissions prior to the issuance of the Disclosure Statement. Therefore, the Authority is requested to take appropriate measures to disallow filing of any further information/data/ documents in the investigation.
- Technova has concealed information sought by the authority in application performa and the same was disclosed only in the disclosure statement: From the perusal of the Disclosure Statement, Kodak was surprised to note that TechNova has imported substantial quantity of subject goods during the POI. However, the said information was concealed from the Authority and other interested parties despite the same being specifically sought for in Part II of the application proforma:
- 6. (a) Do any of the petitioner(s) import the subject goods. If yes, please provide details of country-wise volume and value of imports during the last two years and in the current year to date.
- In reply to the aforesaid question, TechNova merely stated that 'the Petitioner has not imported the product under consideration from China PR'. However, as per the questionnaire, TechNova was required to disclose import of subject goods from each country (both from subject country and non-subject country). Therefore, the anti-dumping application should be rejected on this count alone.

- Determination of dumping and injury during POI & post POI period:

The Authority has not determined a Dumping or Injury Margin for Fujifilm since the said exporter did not export the subject goods from subject country during the POI. The authority has also not determined a residual Dumping and Injury margin for non-responding exporters. We request the Authority to disclose the said residual dumping and injury margin for FujiFilm and other non-responding exporters in terms of Anti-Dumping Rules.

- The Authority has also noted that there is no likelihood of any injury during the Post POI period qua goods exported by Kodak. Further, the Authority has dealt with the likelihood of dumping and injury for FujiFilm, based on third country exports. However, no determination is made for other participating exporter i.e. Lucky. Accordingly, the Authority is requested to determine likelihood of dumping and injury as per the relevant legal provisions.

(vii) M/s Nippon Color

- ADD not to be imposed on Plates which are not manufactured by the DI:
 - a. The Domestic Industry does not manufacture all types and sub-types of Digital Printing Plates such as Processless Thermal/CTcP/Violet plates.
 - b. All the Digital Plates of thickness of 0.25 mm, which is not manufactured by the DI should also be exempted.
 - c. Double Layer UV CTcP Digital Plates and Negative working UV CTcP Digital Plates are also not manufactured by the DI and should fall out of purview of ADD.
- There is nothing to suggest that the DI is manufacturing any of these plates and thus imposition of ADD on such plates, which are not even manufactured in India and thus do not cause any kind of Injury is improper and illegal. Such imposition of ADD on goods, which are not even manufactured in India is not permissible in Law. These cannot even be considered as goods akin to the dumped articles either as identical or similar goods. There has to be causal link between the dumped imports and the injury to the DI. When these goods are not at all manufactured by the DI, then the question of injury and Causal Link does not arise.
- The Tribunal Decision in the case of Indian Refractory Makers Association Vs DA [2000(119)ELT319] and Gypsemna Co LLC Vs DA [2016(342)ELT566], refer.
- It is further stated in Para 15 of the Disclosure Statement that the DI itself had imported Processless and Chemical Free plates from their technical collaborator in the EU of the complainant, which clearly indicates that these are not manufactured by the DI. When these are not manufactured by the Complainant, then rejecting the argument that these should be kept out of ADD is not proper. The fact is that the goods are being imported from their Technical Collaborator, who is a related party and does not sell to other unrelated importers in India is itself a restrictive market condition. To state that 8 Lakh Sq Mtr has been imported for 'test marketing' is clearly false and misleading, but it does point out that these are new technological products, which is the future of the Printing Industry and hence ought to be kept out of imposition of ADD. Technology has changed in the period between the first ADD investigation and the present investigation, which is not being taken cognizance of.
- Hence Para 10 of the Disclosure Statement is not in accordance with the law laid down in terms of the Customs Tariff Act, 1975, is in fact protecting imports made from related parties in terms of Rule 2(2) of the Custom Valuation Rules, 2007 and is not in essence with the technological changes that have taken place in the past five years. When the industry does not have the capability to make these sub-types of specialized plates, clubbing of the same with generic types of Printing Plates is incorrect.
- The whole production is being sold and there is plans for expansion of capacity:

The Disclosure Statement and the Oral Hearing proceedings indicate that the whole of the production is being sold and there is no carried out over unsold stocks by the DI. It was further submitted that the DI is expanding capacity to cater to the markets and a new manufacturer is also entering the market. Had the case been of dumped imports, then there would not be any capacity expansion, since Anti-dumping is never envisaged as a continuing affair for all times to come. The DI has to come up to the price and standards of the foreign suppliers.

It is submitted that DI has been given enough time and financial incentive to gear itself up to face to the market challenges and accordingly, the ADD ought to be discontinued.

- ADD should be based on the formula of cost + profit:

The Hon'ble Supreme Court in the case of Ujagar Prints Vs UOI had held that the cost of goods manufactured on Jobwork basis should be cost of Raw Material + Manufacturing Cost + Profit. The same formula ought to be applied and since the DA has found that the prices on Shanghai Metal Exchange are not truly reflective of the International Prices, the DA could take the LME price of Aluminum Sheets and give a Percentage Formula to be added by the Customs Officials at the port of Import.

Hence, the DA should give ADD as a formula to be adopted by the Port Custom Officials instead of a fixed quantum of ADD, which is totally unrealistic and is not reflective of the true cost of production of the said goods.

- The so called User Industry represented only by Hindustan Times & Dainik Jagran made a strong pitch for continuation of the ADD, by adding that the major cost factor for them is Newsprint (Not Printing Plates!!!!). Two newspapers do not make up the whole industry, since India is home to more than 500 daily Newspapers, which is itself a world record. Hence the views expressed by them, colored by the fact that they have entered into supply agreements with the complainant, makes their submissions suspect and unworthy.
- The Printing Industry in India has evolved over the decades especially after the advent of Computerization. It is not made solely of the Newspaper Industry, which is a small segment of the printing industry. The major user industry is the advertisement Industry, Stationery industry, publishing industry etc. They have not given their views nor are their views solicited by the DA. They being an important user industry for their printing costs, it is imperative that the DA consider their viability as well.
- The DA should not take cognizance of the submissions of a minor segment of user industry and take a view taking the whole Indian Economy into consideration.
- The Disclosure Statement clearly indicates that the Complainant also indulges in Export of his products. That being so, the DA ought to examine whether the price at which the goods are being exported are comparable to the NSR of the Complainant and the landed cost of the PUC from the subject country. During the course of submission of evidences, we had submitted that the landed cost of UV-CTcP from third countries, which are market economies, is only US \$ ***/Sq Mtr and hence the ADD ought to be fixed to bring the landed cost of the goods from the subject country to about US \$ ***/Sq Mtr.
- We had also submitted evidences of imports from Vietnam, where the import duty rate is Zero. The price of the goods therein is slightly higher than that from China but the same can also be adopted as a benchmark price for calculating the Nip after deducting ***% from the said price towards duty element.
- WE had in our written submissions had pointed out various errors in the calculations made by the DI in its workings, which are contradictory to each other and result in absurdity. The Disclosure Statement does not indicate that the said errors pointed out by us has been taken into consideration and the calculations have been reworked accordingly.

Examination by the Authority

71. The Authority has examined submissions made by various interested parties in response to the disclosure statement as under. Also some submissions have been mentioned in foregoing paras as well.
- (i) As regards grant of market economy status to M/s Kodak, the Authority notes that as per the Anti-Dumping Rules, the Authority has to ensure that state interference does not impact the market signals. Aluminium is one of the major raw materials of the product under consideration. The Authority notes that Kodak has claimed that the Aluminium prices were verified on spot by the team both of Shanghai future exchanges and London metal exchange.
 - (ii) The Authority holds that while data submitted by the exporter was verified onsite, its analysis and final determination of exfactory export price was disclosed on a confidential basis along with the facts related to market economy status were disclosed in the main disclosure statement, the non-confidential version. The Authority has in the foregoing para of normal value clarified regarding state interference which does not support the claim of M/s Kodak for market economy status.

- (iii) The Authority notes submissions made by Kodak to adjust the aluminium price appropriately and accept Kodak's data to construct 'Normal Value' the way Authority has adopted Lucky's data on export price adjustments. The Authority holds that both Fuji and Lucky have not claimed Market Economy Treatment status and 'CNV' as per consistent practice has been computed for Lucky. As regards export price of Lucky while the export price was verified onsite and accordingly the landed value was computed, the adjustments on export price not established with credibility have been considered on the basis of consistent norms adopted by Authority which is different from constructing 'CNV' in event of Market Economy Treatment not being accorded to a producer/exporter. The Authority has considered a common 'CNV' for all cooperating producers/exporters in a situation of Market Economy status not having been granted.
- (iv) The Authority notes submissions by M/s Kodak regarding its confidential data on adjustment having been shared with M/s Lucky and also that through availability of DGCIS Transaction wise import data to requesting interested parties by virtue of figuring of brand name of Kodak in the product description the confidentiality of its data has been eroded. The Authority holds that it has considered certain adjustments for export price as per its consistent norms and for one of the adjustments i.e. ocean freight the adjustment of Kodak has been appropriately correlated with the average amount as per other cases. This correlation has in no way compromised any data confidentiality of Kodak. As regards DGCIS transaction wise data, the Authority holds that it follows a non-discriminatory policy for making available such data to all Interested Parties in an investigation including Domestic Industry. In some cases, the product description may contain brand name of the exported product. 'DGCIS' converts the raw import data to an NCV form by removing name of importer and its identity number. The Authority notes that transaction wise data of imports till November 2016 was being collated by a number of private agencies other than DGCIS also who were also making available similar data to all Interested Parties on commercial terms which was being used by various Interested Parties as a secondary source evidence in Anti-Dumping investigation. This data was being collected by all Interested Parties without any authorisation of DGAD. Post discontinuation of data sharing by field offices of customs with such private agencies, the Authority has been authorising all requesting Interested Parties to obtain transaction wise import data of non-confidential nature from DGCIS. The Authority holds that since the producer/exporter did not raise such concerns earlier in the original investigation when private agencies were making available such data and also during the currency of measure, the Authority cannot be expected to address at a stage of post disclosure the alleged erosion of confidentiality. The Authority has protected confidentiality of all data filed by Kodak to DGAD on a confidential basis which is the prime responsibility and obligation of the Authority.
- (v) The Authority notes that M/s K & T Law offices has highlighted Domestic Industry being a monopoly, not representative Domestic Industry, claim of high confidentiality, lack of causality and not making the verification reports available to them and holds that the confidential verification reports are shared only with the concerned interested parties and not with others. The confidentiality has been granted to all Interested Parties as per the provisions of AD Rules and that analysis of injury and causality has been undertaken by Authority on various stipulated economic and financial parameters.
- (vi) As regards submissions by Nippon Color to exclude certain categories of plates from the scope of PUC, the Authority notes that the scope of PUC has been kept the same as was in original investigation. There has been no expansion nor a deletion in the same.
- (vii) As regards Designated Authority not providing opportunity to group of users other than newspaper, the Authority holds that the conduct of investigation was well known to all interested parties and it is up to the concerned interested parties to participate. As regards submission that data and information of Domestic Industry available to other Interested Parties through public file and NCV exchanges should be verified, the Authority holds that it has verified the data filed by Domestic Industry and other Interested Parties appropriately to the extent considered necessary.
- (viii) The Authority notes the submissions by M/s TPM regarding non-disclosure of essential facts in disclosure and submissions by other interested parties on the disclosure and holds that many interested parties have made substantive submissions in response to the disclosure. The Authority on the basis of response to the disclosure holds that it has disclosed all appropriate essential facts/parameters which it would rely upon in the final findings. However any submission made by an interested party which has got inadvertently missed out in the disclosure as part of essential fact to be considered, the Authority has in this finding considered the same.
- (ix) The Authority notes the submissions by M/s TPM on inaccurate data reported by Domestic Industry on UV-CTC Plates imports, submissions of Domestic Industry on misdeclaration, compensatory mechanisms adopted by M/s Lucky and M/s Kapoor Imaging and other importers on import of UV-CTC plates being classified as analog plates and DRI's investigation on the same. The Authority notes that misdeclaration of an article being imported is not a phenomena

which needs to be addressed in an SSR or even MTR investigation since it concerns due diligence to be adopted by the Custom Authorities who are required to clear imports under the correct ITC HS and nomenclature and applying liable custom duties viz. Basic or Anti-Dumping/Countervailing/Safeguard Duty as would be applicable. Any imports which fall within the scope of an Anti-Circumvention investigation as contained in the Anti-Dumping Rules requires Domestic Industry to file an appropriate petition for the same. In the instant case, the imports of UVCTP plates have been misdeclared as has been also in certain cases confirmed by Customs field offices. The erosion of efficacy of an AD measure through such a misdeclaration can happen for any product, at any time in any trade remedial measure put in place. The remedy for this lies with the Authority implementing the application of such a measure.

- (x) The Authority notes the submissions by M/s APJ-SLG representing Fuji Film group (China) regarding no injury to Domestic Industry nor any likelihood, inability of Domestic Industry to cater to demand and losing in market share which is evidenced by their imports from European Union. The Authority has considered all these aspects and recorded its finding on various injury parameters. As regards ability to raise capital, the Authority holds that in view of its conclusion of stable economic parameters of domestic industry, the ability to raise capital is also not impaired. As regards undertaking analysis for transactions under 'MOU' and outside MOU, the Authority holds that MOU price is a mutually expected price between Domestic Industry and major proportion of user industry and 'NIP' is what Authority establishes as per AD Rules. The Authority has analysed the actual NSR realised keeping in view the MOU determined price, NIP and landed values. The Authority considers that under the facts of the case, data available is quite sufficient to establish injury and causality for the same.
- (xi) The Authority notes submissions by the Domestic industry regarding injury to Domestic Industry and likelihood of its continuance. In this regard the main submissions of Domestic Industry have been excessive surplus capacity of PUC with Chinese producers, their high export orientation, export prices of Lucky to countries other than India, declining prices of Kodak in post POI, likely shifting of Fujifilm's exports from Japan and EU to China in event of withdrawal of Anti-Dumping Duty, significant misdeclaration of UV-CTC plates as analog plates supported by evidence of China Customs export data, reports of Customs field offices/DRI etc. The Authority notes as under
- (xii) The Domestic Industry has entered into a Memorandum of Association (MoU) with All India Federation of Manufacturers Association which covers a large number of associations. The 'MoU' stipulates the price formula of digital plates linked to Aluminium prices and to cover other costs. The user industry has agreed to support the Domestic industry by ensuring that they would not oppose Domestic Industry in seeking their legal remedy to combat unfair trade practice of dumping from China. The user industry has provided support towards this and even in their response to the Disclosure statement as well.
- (xiii) The support by user industry indicates that 'MoU' conditions are being fully honoured by both the parties. The MoU does not contain any provision wherein the Domestic Industry is to match its selling price with the unfair dumped prices as the MoU has been entered into only to establish prices based on a mutually agreed pricing formula acceptable to both sides and linked to the import price of Raw material and other costs and not to other prevailing dumped prices. The Authority notes that for thermal and violet plates, the 'landed values' during POI are above 'NIP' for both POI and post POI. The Domestic prices has been able to realise domestic prices above the 'NIP' in POI and also in post POI even though they are lower than landed values. The prices as determined through the 'MOU' formula are higher than the NSR attained. The Authority holds that DI's claims that they could not attain full prices determined under MOU because of dumped landed prices is not justified as the price setting under 'MoU' has no connect with the dumped prices as the MoU has only been entered to mitigate this unfair practice. In case of any of the two parties having being unsatisfied, the MOU would have been terminated, which is not the case. Further Since DI's 'NSR' being lower than LV's is still above respective 'NIP', the threat of low LV's leading to price underselling and consequential injury is not tenable.
- (xiv) As regards 'violet' plates imports, the Authority in the disclosure has stated that Kodak has exported thermal plates only in POI and that there has been no imports of violet plates during POI which has been agitated and represented by Domestic Industry again. The Authority on a reconsideration and further analysis and response to disclosure made by Kodak, notes that a single bill of entry in DGCIS data which evidences violet brand name, is reported at a granular level (invoice wise) in DG-Systems data. The clubbed quantity indicated as 22098 sqm as violet in DGCIS is in fact only 201 sq. m. of violet category at a Landed Value of Rs. ***/sqm for which Kodak has provided evidence to have imported it on a sample trial basis. The 'Landed Value' of this violet category broadly correlates with the 'Landed Value' claimed by DI on DGCIS data basis. Authority has adopted the 'landed value' as per Kodak's import evidence for its conclusion reported above. Further the Authority also notes that landed export prices of Thermal plates by Fujifilm from its plants in European Union and Japan during POI and post POI are above the 'NIP' and those of violet are slightly below the

‘NIP’. The prevalence of these level of prices have not impacted the price realisation of Domestic Industry for these two plates. Keeping in view the fact that customers have paid such prices, in event of diversion of exports of Fujifilm from China, the existing ‘MOU’ of Domestic Industry with the user industry would provide the similar buffering to the Domestic Industry against unfair trade if it resurfaces. The current price trend by Fujifilm does not indicate a likelihood of recurrence of injury to Domestic Industry. The post POI landed value of Thermal and violet plates exported by Kodak to India has been correlated with the DGCIS data and is noted that the landed values of Kodak for both Thermal and Violet plates evidence negative Injury Margin during POI. In post POI, the Landed Value of violet plate prices is slightly lower than its NIP, but as these are resold by Kodak India after incurring SGA and a mark-up, these imports are not liable to create price underselling effect. The ‘NSR’ realised by Domestic Industry for both Thermal and violet plates validates this conclusion. Therefore, despite surplus capacities, and export orientation of Kodak and Fujifilm and the overall import trend the Authority holds that there is no likelihood of any injury for these 2 category of plates i.e. Thermal and Violet from China in event of withdrawal of ADD. The export prices of Lucky during POI and post POI of thermal plates are also noted to be non-injurious.

- (xv) The Authority also notes submissions by Domestic Industry to reject the response filed by Lucky on the basis of evidence of misdeclaration made by them in description of export product as per China Customs data and his counterpart importer M/s Kapoor for not filing Appendix 5 and 6 on the resale price of imports. It has been claimed that a compensatory arrangement has been entered into by the exporter and that his export price of Thermal Plates is also not credible. The Authority holds that any misdeclaration of goods would require the Custom Authorities to undertake appropriate and diligent administration and such an issue is not under the purview of DGAD. As regards response filed by exporter, the same was verified onsite and prices of Thermal Plates have not been questioned by the Custom Authorities. The Authority has satisfied itself on the resale made by M/s Kapoor of the PUC during POI which has been above the purchase price on an average basis with some transactions being at loss and some at profit. Further there has not been any conclusive evidence or determination on any compensatory arrangements between different product types on account of mis-declaration by the concerned agencies. The Authority notes that the ‘NSR’ realised by Domestic Industry in POI and post POI for UV-CTC plates have been lower than as determined by MOU. This is similar to what is witnessed for Thermal and Violet plates. The ‘Landed Values’ of UV-CTC plates as unambiguously defined in DGCIS data and those which appear to be UV-CTC plates but are declared as analog plates quite comparable and lower than the ‘NIP’ both in POI and post POI. The ‘NSR’ of Domestic Industry is however much above the ‘Landed Values’ in POI and Post POI thereby indicating that ‘Landed Value’ of these plates is not depressing the prices of Domestic Industry in this category and that if realisation determined under MOU was fully attained, it would not cause any injury to Domestic Industry. The provisions of MOU of Domestic Industry with user industry if has taken care of fair prices for two other categories i.e. Thermal and Violet, it cannot be held that Landed Values of UV-CTC plates have caused the slight price suppression for this category. The price related data for MOU, NIP, Landed Value, realised NSR for POI and post POI as reported and analysed in above paras is tabulated below.

Rs./Sqm.	POI			Post POI (6 months)		
	UVCTP	Thermal	Violet	UVCTP	Thermal	Violet
MOU determin ed price	***	***	***	***	***	***
Net Sales Realisati on	***	***	***	***	***	***
Non Injuriou s Price	***	***	***	***	***	***
Landed Value	167.17	282.35	302.42	146.5	301.29	313.84

Conclusions and Recommendations:

72. Having examined the contentions of various interested parties and on the basis of the above facts, circumstances, and analysis, the Authority concludes as under:
- (i) The financial and economic parameters of Domestic Industry (both volume and price) are stable and not evidencing deterioration requiring continuous of Anti-Dumping Duty.
 - (ii) The 'MOU' signed by the Domestic Industry with the user association/user industry have led to mitigation of likely injury due to unfair trade.
 - (iii) The prices agreed under MOU and actually realised by Domestic Industry during POI and post POI do not establish price underselling.
 - (iv) The price trends of cooperating exporters and the import trend do not indicate a likelihood of recurrence of injury to Domestic Industry if ADD is withdrawn.
 - (v) Non realization of full prices in accordance with the provisions of the MoU by the petitioner is the primary reason for non-mitigation of injury that has been noted on account of product underselling for UV-CTP plates due to leakages emanating from misdeclaration of product description during custom clearance.
73. The Authority also holds that capacity utilisation, production and overall profitability of the industry do not indicate existence of injury or a deteriorated economic condition. The factors submitted by Domestic Industry on likelihood of recurrence of injury on withdrawal of ADD are not supported by the price realisations and price trends of PUC during POI and post POI. The Authority on account of the aforesaid examination concludes that continuance of Anti-dumping duty is not warranted in any of the three categories of the product and hereby recommends dis-continuance of the ADD levied on the PUC vide Customs Notification No. 24/2017 – Customs (ADD) dated 2nd June, 2017.

SUNIL KUMAR Addl. Secy & Designated Authority